शौकत सिद्दीकी
جانگلوس
जांगलूस
निगार्मेट 98

लेखक: शौकत सिद्दीकी

प्रस्तावना (कार्ल मार्क्स का उद्धरण): यह साबित करना बहुत कठिन है कि जागीरों और निजी संपत्तियों के मौजूदा अधिकार न्यायसंगत बुनियाद पर आधारित हैं। सबसे पहला दस्तावेज़ तो तलवार की नोक से लिखा गया, जिसे जनरलों और सिपाहियों ने अपने हाथों से लिखा और कीमत के बदले तलवार, खंजर और नेज़ों के वार करके इंसानी खून की मुहरें लगाईं। वे सज्जन जो यह कहते हैं कि समय ही नाजायज को जायज बना देता है, कृपया इस सवाल का संतोषजनक उत्तर दें कि किसी गुनाह को नेकी बनने के लिए कितना समय चाहिए और किस वार्षिक दर से एक गैर-कानूनी सौदा कानूनी बन जाता है?

— कार्ल मार्क्स

जांगलूस

-- पहला भाग

हवा का एक तेज़ झोंका आया। पतझड़ के सूखे पत्ते पेड़ों से टूटकर गिरे और दूर-दूर तक बिखर गए। यह 1952 के पतझड़ की एक सुनसान रात थी। लारी स्टैंड वीरान था, दुकानें बंद थीं। रोशनी बुझ चुकी थी। दो लोग अंधेरे में सांस रोके खड़े थे। ड्राइवर होटल के सामने लकड़ी की बेंच पर चादर ओढ़े लेटा था। पास ही एक आवारा कुत्ता हड्डी चबा रहा था। अंधेरे में वे दोनों साये की तरह धुंधले दिख रहे थे। एक का कद थोड़ा छोटा, बदन गठीला और रंग गेंहुआ था—यह रहीम दाद था। दूसरा लाल दीन था, जिसे सब लाली कहते थे; वह मजबूत कद-काठी का जवान था। दोनों की दाढ़ी बढ़ी हुई थी और बाल बिखरे हुए थे।

लाली ने बेंच पर लेटे आदमी की चादर धीरे से खींची।

वह आदमी चौंक गया और नींद में बुदबुदाया, "ओए, तंग मत कर।"

लाली और रहीम दाद वहीं ठहर गए। जब कोई आहट नहीं हुई, तो वे दबे पांव आगे बढ़ गए।

चलते-चलते रहीम दाद ने लाली से पूछा, "रात कितनी बाकी है?" उसके लहजे में थकान थी।

"अभी बहुत रात है," लाली ने तारों को देखकर उत्तर दिया।

उसने रहीम दाद को टोकते हुए कहा, "अड़ियल गधे मत बनो, मर्दों वाली चाल चलो।"

रहीम दाद ने विरोध किया, तो लाली ने मजाक में कहा, "यहीं लेट जा, मैं तेरे पैर दबा देता हूँ।"

रहीम दाद झुंझलाकर चुपचाप उसके पीछे चलने लगा।

आधी रात तक दोनों मिंटगुमरी जेल में कैदी थे। रहीम दाद को दंगे और हत्या के प्रयास के जुर्म में तीन साल की सजा हुई थी। जेल में ही उसकी मुलाकात लाली से हुई, जो डेढ़ साल से सजा काट रहा था। लाली ने ही रहीम दाद को जेल से भागने की योजना बताई थी। रहीम दाद पहले डरा हुआ था, लेकिन आजादी की चाहत ने उसके डर को हरा दिया। जब रात के 12 बजे पहरा बदला, तो लाली ने अपनी कला दिखाई और वे दोनों जेल की ऊँची दीवारों को पार कर बाहर निकल आए। भागे हुए दो घंटे बीत चुके थे। उन्हें यकीन था कि सुबह की गिनती तक किसी को खबर नहीं होगी। वे जल्द से जल्द बहुत दूर निकल जाना चाहते थे। वे आरिफ वाला रोड होते हुए लारी स्टैंड तक पहुँचे थे। अब सड़क वीरान थी और दोनों तरफ पेड़ों से सूखे पत्ते गिर रहे थे।

लाली और रहीम दाद नंगे पैर थे और कई घंटों से लगातार चलने के कारण थक चुके थे। उन्हें इलाके और छिपने के ठिकानों का कोई अंदाजा नहीं था।

रहीम दाद ने थक कर पूछा, "लाली, यह तो बता कि हम जा कहाँ रहे हैं?"

लाली ने बेपरवाही से कहा, "यह तो मुझे भी नहीं पता।"

रहीम दाद के दोबारा पूछने पर लाली ने उसे हौसला दिया और कहा कि डरने से काम नहीं चलेगा। तभी पीछे से हॉर्न की आवाज़ आई। सड़क के मोड़ पर रोशनी दिखी। वे तुरंत सड़क से नीचे उतरकर एक घनी झाड़ी के पीछे छिप गए। रहीम दाद बहुत डरा हुआ था। एक जीप उनके सामने आकर रुकी, जिसमें चार हथियारबंद रेंजर्स सवार थे। जीप से ड्राइवर और एक रेंजर नीचे उतरा। रेंजर उसी झाड़ी के पास पेशाब करने लगा जहाँ वे छिपे थे। वे दोनों सांस रोककर बैठे रहे। हवा के झोंकों से छींटे उनके चेहरों पर गिर रहे थे, लेकिन वे हिले तक नहीं। ड्राइवर जीप के टायर को देख रहा था। रहीम दाद को अचानक खांसी महसूस हुई, उसके गले में घरघराहट होने लगी, तो लाली ने तुरंत हाथ से उसका मुँह दबा लिया।

ड्राइवर बोला, "पंक्चर तो नहीं है, पर एक पहिये में हवा कम है।"

झाड़ी के पास खड़े रेंजर ने गर्दन घुमाकर ऊँची आवाज़ में कहा, "स्टेशन तक तो पहुँच ही जाएगी । वहीं पेट्रोल पंप से पहिये में हवा भरवा लेना ।"

वह पतलून के बटन लगाता हुआ मुड़ा और जीप की ओर बढ़ने लगा । लाली और रहीम दाद झाड़ी की ओट से उसे देखते रहे । ड्राइवर और रेंजर जीप में दाखिल हुए और अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए । रात के सन्नाटे में जीप का इंजन ज़ोर से गड़गड़ाया । जीप आगे बढ़ी और तेज़ी से सड़क पर दौड़ने लगी । थोड़ी देर बाद वह नज़रों से ओझल हो गई । लाली गर्दन उठाए उसे दूर तक देखता रहा । फिर रहीम दाद की पीठ पर ज़ोर से धौल जमाकर बेतकल्लुफी से बोला : "तूने तो मरवा ही दिया था रहीम ।"

"सुअर का बच्चा बिल्कुल मुँह पर खड़ा होकर पेशाब कर रहा था ।" रहीम दाद ने मुँह बिगाड़कर बेज़ारी से कहा । "पर तेरी खाँसी से तो बेड़ा ही गर्क हो जाता । वह तो मैंने तुरंत तेरे मुँह पर हाथ रख दिया, वरना दोनों फिर जेल की हवा खाते ।"

लाली उठकर खड़ा हो गया । उसने रहीम दाद का हाथ पकड़कर खींचा, "अब यहीं बैठा रहेगा? जल्दी कर, अभी तो बहुत चलना है ।"

रहीम दाद भी खड़ा हो गया, लेकिन खामोश रहा । लाली ने पूछा, "किस सोच में पड़ गया रहीम ?"

"सोच रहा हूँ, ये पुलिस वाले इधर कैसे आ गए? कहीं उन्हें हमारे जेल से फरार होने का तो पता नहीं चल गया ?"

"पुलिस वाले तो नहीं थे, वर्दी से तो रेंजर लग रहे थे । पर हमें यहाँ से जल्द ही दूर निकल जाना चाहिए ।"

"हमें जाना कहाँ है?" रहीम दाद ने एक बार फिर अपनी परेशानी जाहिर की ।

लाली ने उसका हौसला बढ़ाया, "परवाह मत कर, बस ज़रा कदम बढ़ाकर चल ।"

दोनों झाड़ी से निकलकर सड़क पर आ गए और सूखे पत्तों को रौंदते हुए आगे बढ़ने लगे । उन्होंने दो-ढाई मील रास्ता तय किया होगा कि बंजर और उजाड़ इलाका खत्म हो गया । अब खेतों का सिलसिला शुरू हो गया था । सड़क पर चलना खतरे से खाली न था । दोनों सड़क से उतरकर खेतों के बीच से गुज़रने वाले कच्चे रास्ते पर चलने लगे । यह एक 'पेहा' (पगडंडी) था । यह इतना चौड़ा कच्चा रास्ता था कि दोनों साथ-साथ चल सकते थे । रास्ते के दोनों तरफ गेहूं और जौ की फसलें सिर उठाए खड़ी थीं । हवा फराटे भरती हुई चलती तो गेहूं और जौ की बालियां झूमने लगतीं । खेतों में दूर तक लहरें उभरती और डूबती नज़र आतीं । हवा की सरसराहट से फसलों में सीटियाँ बजतीं । लाली और रहीम दाद हर आवाज़ पर चौंक पड़ते । उनके कदम डगमगा जाते ।अचानक इन आवाज़ों में एक नई आवाज़ उभरी । यह गीदड़ों का बेढंगा शोर था । वे ज़ोर-ज़ोर से चीख रहे थे । थोड़ी ही देर बाद गीदड़ों का एक झुंड खेतों से निकलकर उनके पास से गुज़रा । रहीम दाद और लाली ठिठक कर खड़े हो गए । दोनों कुछ देर बाद

आगे बढ़े । रास्ता ज़्यादा लंबा नहीं था, मुश्किल से दो-ढाई फर्लांग का रास्ता था । दोनों बहुत चौकन्ने थे और किसी अनजाने डर से सहमे हुए थे । पगडंडी खत्म हो गई । वे खेतों से निकलकर बाहर आ गए । सामने एक खुला मैदान (रड़) था । उस खुले मैदान के उस पार पेड़ों का एक झुरमुट था । झुरमुट के पीछे मिट्टी के बने हुए कच्चे मकान थे । मकानों के बीच से गली गुज़रती थी । गली के नुक्कड़ पर दो मंज़िला पक्का मकान (माड़ी) था । उसके बगल में फूस की छत का एक लंबा बाड़ा था । बाड़े में मवेशी थे, जिनकी गर्दनों में पड़ी हुई घंटियाँ रुक-रुक कर सन्नाटे में बज रही थीं । वे आगे बढ़े, मैदान पार किया और पेड़ों के नीचे पहुँचकर अंधेरे में खड़े हो गए । मकान की एक खिड़की से रोशनी निकलकर अंधेरे में बिखर रही थी । वे धुंधली रोशनी में आसपास का जायज़ा लेने लगे ।

अचानक कदमों की आहट हुई । एक व्यक्ति बहुत ही संदिग्ध हालत में उनके सामने से गुज़रा । उसके चेहरे पर ढाटा (कपड़ा) बंधा था, सिर्फ आँखें नज़र आ रही थीं । वह चौकन्नी नज़रों से इधर-उधर देखता हुआ बाड़े के पास जाकर खड़ा हो गया । लाली और रहीम दाद आँखें फाड़कर उसे सहमी नज़रों से देखते रहे । वह आगे बढ़ा और अंधेरे में गायब हो गया ।

रहीम दाद कुछ देर तो हैरानी से सुन्न रहा, फिर उसने लाली के कान के पास मुँह ले जाकर धीरे से पूछा, "लाली यार, ये चक्कर क्या है ?"

"मवेशी चोर जान पड़ता है ।"

लाली का ख्याल ठीक ही निकला । कुछ देर बाद वह व्यक्ति मवेशियों के बाड़े से बाहर आया । उसके एक हाथ में रस्सी दबी थी । वह आगे आया तो पीछे से एक भैंस भी नज़र आई । वह किसी और दिशा में जाने के बजाय सीधा पेड़ों के झुरमुट की ओर बढ़ा । उसे अपनी ओर आता देखकर लाली एक पेड़ के तने की ओट में दुबक गया और हाथ पकड़कर रहीम दाद को अपनी पीठ के पीछे कर लिया । वह व्यक्ति धीरे-धीरे चलता हुआ पास आता गया । जब वह बिल्कुल उनके नज़दीक पहुँच गया तो लाली ने झपटकर बाएँ हाथ से उसका मुँह दबोच लिया उस व्यक्ति ने बहुत फुर्ती से अपनी धोती के फोल्ड से चाकू निकाला, लेकिन लाली ने चाकू खोलने की मोहलत नहीं दी । झट से उसका हाथ पकड़कर मरोड़ दिया । चाकू ज़मीन पर गिर पड़ा । रहीम दाद हैरानी से यह तमाशा देख रहा था ।

लाली ने चाकू की ओर इशारा करते हुए डाँटकर रहीम दाद से कहा, "खड़ा मुँह क्या ताक रहा है? उठा और इसे खोल ले ।"

रहीम दाद ने तुरंत उसके निर्देश पर अमल किया । झुककर चाकू उठाया, उसे खोला और उस व्यक्ति के पास पहुँच गया । अब रहीम दाद के हाथ में दबे हुए चाकू की नोक उस व्यक्ति की कमर से लगी हुई थी । लाली ने उसके मुँह से हाथ हटा लिया वह घबराकर दोनों को फटी-फटी आँखों से देखने लगा । दोनों जेल के कैदियों की वर्दी में उसके सामने इस तरह खड़े थे कि अंधेरे में भूतों की तरह डरावने लग रहे थे ।

वह कुछ पल हक्का-बक्का रहने के बाद हकलाते हुए बोला, "तुम कौन हो ?"

लाली ने तड़ाक से उसके मुँह पर थप्पड़ मारा । "सीधी तरह बात कर, तेरा नाम क्या है ?"

"भेंजा ।" उसने धीरे से अपना नाम बताया ।

लाली ने पास खड़ी भैंस की ओर हाथ से इशारा करते हुए पूछा, "इसे उठा लाया है न? सच-सच बता ।"

"हाँ जी ।" उसने धीरे-धीरे अपनी गर्दन हिलाई ।

"यार भेंजा, तू तो बड़ा कलाकार लगता है ।" लाली ने बेतकल्लुफी से कहा, "साफ उड़ा लाया भैंस, ज़रा भी आहट न हुई ।"

"बस जी, ऊपर वाले की मेहरबानी है ।" वह आसमान की तरफ हाथ उठाकर गर्व से बोला, "जिस जानवर पर हाथ फेर दिया, समझो वह अपना हो गया ।" वह भैंस की गर्दन और पीठ पर धीरे-धीरे हाथ फेरने लगा ।

लाली ने रहीम दाद के हाथ से चाकू लेकर अपने कब्ज़े में किया ।

भेंजा से पूछा, "तुझे अब कहाँ जाना है ?"

उसने जवाब देने के बजाय उल्टा लाली से सवाल किया, "तुम यह क्यों जानना चाहते हो ?"

लाली चिढ़कर बोला, "थाने में तेरे खिलाफ रिपोर्ट लिखवानी है न!"

भेंजा ने दोनों का ऊपर से नीचे तक जायज़ा लिया । धुंधली रोशनी में वे आधी आस्तीन के कुर्ते और घुटनों तक ऊँचे जांघियानुमा पजामे पहने हुए थे । कुर्तों पर जेल के नंबर नज़र आ रहे थे ।

"तुम थाने कैसे जा सकते हो?" भेंजा उन्हें संदिग्ध नज़रों से घूरने लगा ।

"तूने फिर टेढ़ी बात की ।" लाली ने खुला चाकू उसके सामने कर दिया ।

भेंजा डर गया और आज़िज़ी से बोला, "मुझे अब जाने दो, शोर मच गया तो सारा काम गड़बड़ हो जाएगा ।" उसने दोनों हाथ जोड़ दिए । "गलती हो गई तो माफ कर दो, मुझे अभी बहुत दूर जाना है ।"

"मैं तो पूछ रहा हूँ कि तुझे कहाँ जाना है?" इस बार लाली का लहजा नरम था ।

"मैंने अहर (बाड़ा/ठिकाना) जाना है ।" भेंजा ने उत्तर दिशा की ओर हाथ उठाया, "इधर पाँच मील दूर झंगड़ में है । तुम्हें तो पता ही होगा, चोरी के जानवर उठाने के बाद अहर ही में छिपाकर रखे जाते हैं । आगे मुझे भी ऐसा ही करना है, भैंस अहर में ले जाकर रखूँगा ।"

"यह बात है तो फिर हाथ मिला !" लाली ने चहक कर कहा और गरमजोशी से उसका हाथ थाम लिया । "जा, एक और उठा ला ।"

भेंजा ने इनकार में गर्दन हिलाई, "ना जी ना, एक ही बहुत है । मैं दो भैंसें अकेले लेकर जा भी तो नहीं सकता, लंबा रास्ता है, आगे नहर है ।"

"परवाह मत कर, हम दोनों जो तेरी मदद को मौजूद हैं । अहर तक तेरे साथ ही चलेंगे ।" लाली ने उसे धीरे से ठोंका, "फटाफट जा, देरी मत कर ।"

"भैंस यहीं छोड़ दूँ ?"

"छोड़ दे छोड़ दे, कहीं नहीं जाएगी ।" लाली ने मुस्कुराकर बेपरवाही से कहा । "हमने मवेशी चोरी नहीं करनी, हम ऐसा घटिया धंधा नहीं करते, फिक्र मत कर, वापसी पर तुझे यहीं मिलेगी ।"

भेंजा कुछ न बोला, खामोशी से बाड़े की ओर बढ़ा और एक बार फिर अंधेरे में गायब हो गया ।

रहीम दाद अब तक खामोश खड़ा था, मन ही मन लाली की हरकतों पर कुढ़ रहा था । जब बर्दाश्त न हुआ तो झुंझलाकर बोला, "यार लाली, तूने ये क्या चक्कर चलाया है, खामखा इतना समय खराब किया, अब तक तो हम बहुत दूर निकल जाते ।"

"कहाँ निकल जाते? न रास्ता मालूम न जगह का पता ।" लाली ने रहीम दाद के कंधे पर हाथ रख दिया । "रहीम, तू बेकार में अपना दिमाग खराब न कर, तू ये बातें नहीं समझ सकता । तुझे पता नहीं, भेंजा अपने बहुत काम आएगा ।"

"क्या काम आएगा?" रहीम दाद के लहजे में अभी भी झुंझलाहट थी ।

"अहर में भेंजा जहाँ मवेशी छिपाता है, वहीं हम भी छिप सकते हैं । पहले कहीं छिपने का ठिकाना मिलना चाहिए । उसका बंदोबस्त भेंजा कर देगा, आगे भी वह काम आएगा । वह भी मुजरिम, हम भी मुजरिम और मुजरिम की मदद मुजरिम ही कर सकता है, क्या समझा ?"

रहीम दाद की समझ में लाली की बात आ गई, उसने कुछ न कहा । भैंस उनसे कुछ कदम की दूरी पर चुपचाप जुगाली कर रही थी । पूंछ हिला-हिला कर मच्छर उड़ा रही थी । रहीम दाद और लाली उस दिशा में देख रहे थे जिधर भेंजा गया था । लेकिन इस बार भेंजा जल्दी नहीं लौटा । उसे देर हुई तो रहीम दाद को चिंता हुई । उसने अपने डर का इज़हार किया, "भेंजा अभी तक नहीं आया, ऐसा न हो कोई गड़बड़ हो जाए ।"

"हौसले से काम ले ।" लाली ने रहीम दाद को तसल्ली दी

कुछ समय और गुज़र गया । दोनों भेंजा की वापसी का बेचैनी से इंतज़ार करते रहे । रात ढलती जा रही थी । हवा के झोंकों से पेड़ों के सूखे पत्ते खड़खड़ाहट पैदा कर रहे थे । अब लाली भी परेशान हो गया था ।

अचानक बाड़े की तरफ कोई ज़ोर से खँखारा, साथ ही आवाज़ उभरी, "ओए, कौन है ?"

लाली और रहीम दाद ने घबराकर देखा । भेंजा बाड़े के छप्पर से बाहर निकला । अंधेरे में उसकी सफेद धोती और कमीज़ दूर से नज़र आ रही थी । उसके पीछे-पीछे मवेशियों का रखवाला भी बाड़े से निकला । उसके हाथ में लंबी लाठी (डांग) थी । वह लाठी संभाले भेंजा के पीछे दौड़ा और ऊँची आवाज़ में "चोर-चोर" चिल्लाता रहा । लाली और रहीम दाद इससे ज़्यादा कुछ न देख सके । वे घबराकर जिधर मुँह आया उधर सरपट भागे । न उन्होंने पास खड़ी चोरी की भैंस पर ध्यान दिया और न भेंजा की तरफ । वे जल्द से जल्द गाँव से निकल जाना चाहते थे ।

तड़के का दूधिया उजाला फैल रहा था । रात विदा हो रही थी, सुबह का आगमन था । लेकिन सुबह की आमद के साथ लाली और रहीम दाद के लिए खतरा भी करीब आता जा रहा था । दिन की रोशनी में वे घूम-फिर नहीं सकते थे । उनके शरीर पर जेल की विशेष वर्दी थी, जो दूर से ही चुगली करती थी कि वे फरार कैदी हैं । समय कम था और उन्हें जल्द से जल्द छिपने के लिए किसी ठिकाने की तलाश थी । लाली ने इधर-उधर नज़र दौड़ाई । उसे नीचे कुछ दूरी पर एक सूखा नाला नज़र आया । यह बरसाती नाला अब सूखा और उजाड़ था । उसके एक किनारे पर फराश और सरस के घने पेड़ थे जो ऊँचाई पर दूर तक फैले हुए थे । लाली पेड़ों को गौर से देखता रहा, उसे यह जगह छिपने के लिए सही लगी । उसने मुड़कर रहीम दाद को देखा । वह ज़मीन पर बेसुध पड़ा था और गहरी-गहरी साँसें ले रहा था ।

लाली ने झुककर उसे झकझोरा, "बहुत आराम कर चुका, अब उठ के बैठ ।"

रहीम दाद ने करवट बदली और थके हुए लहजे में बोला, "मुझे तो झपकी लग रही है ।"

लाली ने उसका हाथ पकड़कर खींचा, "नहीं उठा तो मैं अकेला ही चला जाऊँगा ।"

रहीम दाद झटपट खड़ा हो गया । आँखें मलते हुए बोला, "ये तो बता जाना किधर है? सवेरा हो रहा है, उजाला फैलता जा रहा है ।"

लाली ने नीचे उतरते हुए कहा, "मेरे पीछे-पीछे चला आ, नाले के उस पार जो जंगल (झल) है, दिन वहीं गुज़ारेंगे ।" उसने एक हाथ उठाकर पेड़ों के दूर तक फैले हुए सिलसिले की ओर इशारा किया ।

यह घना जंगल था और पास भी था । रहीम दाद चुपचाप लाली के साथ नीचे उतरने लगा । दोनों आगे बढ़े, नाले पर पहुँचे । कुछ दूर जाने के बाद एक 'टोबा' (तालाब) मिला । उसमें अभी भी पिछली बरसात का पानी मौजूद था, पर ज़्यादा गंदा नहीं था । दोनों तालाब के किनारे बैठ गए । अंजलि भर-भर कर पानी पिया, मुँह धोया, हाथ धोए और ताज़ा होकर पेड़ों की ओर बढ़े । अब पूर्व में रोशनी का लाल घेरा दिखने लगा था, सूरज उग रहा था । मगर जंगल के पेड़ों के नीचे अभी भी अंधेरा था । वे आगे और आगे बढ़ते गए, उजाला फैलता गया । उन्हें एक पुराना पेड़ नज़र आया, जिसका तना काफी चौड़ा था और अंदर से खोखला भी था । लेकिन उसमें सिर्फ एक ही आदमी के छिपने की जगह थी ।दोनों देर तक इधर-उधर घूमते रहे । अब पेड़ों के पत्तों से धूप छन-छन कर नीचे बिखरने लगी थी । हर तरफ परिंदे चहचहा रहे थे । थकान से दोनों का बुरा हाल था, अंग-अंग टूट रहा था । नींद हावी थी और भूख भी सता रही थी । उन्हें एक पगडंडी नज़र आई । वे धीरे-धीरे पगडंडी पर चलने लगे । कुछ ही दूर गए होंगे कि उनकी नज़र लकड़ी के तख्तों की बनी एक पुरानी झोंपड़ी पर पड़ी । पहले तो वे पास जाते हुए डरे, मगर लाली ने इस बार भी हिम्मत से काम लिया । उसने झोंपड़ी के पास पहुँचकर दरवाज़े को धीरे से धक्का दिया । दरवाज़ा चरचराता हुआ खुल गया । दोनों ने अंदर झाँका । झोंपड़ी बिल्कुल खाली थी । फर्श पर सूखी घास बिछी थी । जगह-जगह घोड़े की लीद बिखरी हुई थी । वे अंदर दाखिल हुए और ढाल होकर फर्श पर गिर पड़े ।

लाली कुछ देर खामोश लेटा रहा, फिर उठकर दरवाज़े के पास गया और वहीं बैठ गया । उसने मुड़कर देखा, रहीम दाद आँखें बंद किए खामोश पड़ा था । लाली ने दरवाज़ा खुला रखा और चौकन्नी नज़रों से बाहर देखता रहा । हर तरफ गहरा सन्नाटा था । जंगल 'सांय-सांय' कर रहा था । वह कुछ देर जागता रहा, फिर नींद ने हमला किया । वह झूमते-झूमते एक तरफ लुढ़क गया । दरवाज़ा खुला था । लाली और रहीम दाद बेखबर सो रहे थे । दोपहर हुई, तीसरी दोपहर हुई, दिन ढलने लगा, साये लंबे हो गए ।

अचानक सन्नाटे में पगडंडी पर कदमों की आहट हुई । लाली की आँख खुल गई । खतरे का एहसास डर बनकर उसके चेहरे पर मँडराने लगा । उसने धीरे से रहीम दाद को झकझोरा, वह झट से उठकर बैठ गया । आहट उसने भी सुन ली थी । दोनों बिल्कुल खामोश थे, अनजाने डर से सहमे हुए थे । लाली के पास भेंजा का चाकू मौजूद था । उसने चाकू खोला और दरवाज़े की ओट में सतर्क होकर खड़ा हो गया । रहीम दाद भी उसके पीछे ही खड़ा था । आहट करीब आती गई, इतनी करीब कि उन्हें अंदाज़ा हो गया कि आने वाला अकेला है और भारी बूट पहने हुए है । मगर वह उनकी तरफ नहीं आया, आगे निकल गया । उसकी आहट सूखी घास पर देर तक सुनाई देती रही और जब सन्नाटे में डूबकर खत्म हो गई, तो दोनों के चेहरों का डर मिट गया ।

वे थके हुए से फर्श पर बैठ गए । ज़रा सुकून मिला तो भूख ने परेशान किया । घास पर इधर-उधर चने के दाने बिखरे हुए थे । रहीम दाद की उन पर नज़र पड़ी तो चुन-चुन कर खाने लगा, लाली भी खाने लगा । उन्होंने ढूंढ-ढूंढ कर एक-एक दाना खा लिया । दाने सूखे और कड़े थे, मुट्ठी भर भी न थे । भूख तो क्या मिटती, अलबत्ता प्यास तेज़ी से बढ़ी । मगर वे दरवाज़े से बाहर न निकल सकते थे । दिन की रोशनी अभी तक फैली थी और रोशनी में निकलना खतरे को दावत देना था । सूरज डूब गया, शाम का धुंधलका हर तरफ फैल गया । प्यास से लाली और रहीम दाद के हलक में काँटे चुभ रहे थे । जब अंधेरा थोड़ा गहरा हो गया तो दोनों झोंपड़ी से बाहर आए । हवा तेज़ थी और पेड़ों में सनसनाती हुई गुज़र रही थी । सूखे पत्ते उड़-उड़ कर शोर मचा रहे थे । दोनों खामोशी से पगडंडी पर चलते रहे । वे तालाब की ओर जा रहे थे । लेकिन लाली ने इस बार नीचे पहुँचने के लिए दूसरा रास्ता चुना । मील, सवा मील का फासला तय करके दोनों ढलान से नीचे उतरने लगे । तालाब ज़्यादा दूर नहीं था, मगर रास्ता खराब था । नीचे उतरते हुए रहीम दाद का पैर फिसला और वह दूर तक लुढ़कता चला गया । चोट ज़्यादा नहीं आई, लेकिन वह लंगड़ा-लंगड़ा कर चल रहा था । तालाब पर पहुँचकर उन्होंने इस बेकरारी से पानी पिया कि उनके पेट फूल गए ।

दोनों तालाब के किनारे ही लेट गए और देर तक बेसुध पड़े रहे । इस बार तालाब का पानी पीकर लाली का जी मिचलाने लगा । मगर उसने खुद को संभाला और उठकर खड़ा हो गया । रहीम दाद भी चलने के लिए तैयार हो गया । दोनों आगे बढ़े, लेकिन वे ज़्यादा दूर न जा सके । लाली की तबीयत फिर बिगड़ी । वह उबकाइयां लेने लगा और एक झाड़ी के पास ढाल होकर गिर पड़ा । उस पर बेहोशी सी छा गई थी । थोड़ी देर वह ज़मीन पर लेटा गहरी-गहरी साँसें लेता रहा, फिर उसने आँखें बंद कीं और सो गया । रहीम दाद उसके पास ही बैठ गया और धीरे-धीरे लाली का सिर दबाने लगा । कुछ ही समय गुज़रा था कि उजाला फैलने लगा । चाँद पेड़ों के पीछे से धीरे-धीरे निकल रहा था । देखते-देखते चाँदनी हर तरफ फैल

गई । तालाब का पानी झिलमिलाने लगा । लेकिन चाँदनी जिस तरह निखरती जा रही थी, रहीम दाद उतना ही डरता जा रहा था । उसने इधर-उध नज़रें दौड़ाईं तो उसे अंदाज़ा हो गया कि वह बिल्कुल असुरक्षित जगह पर बैठा है । हर तरफ खुला रेतीला मैदान था ।

झाड़ी भी ज़्यादा घनी नहीं थी । उसकी परेशानी बढ़ती जा रही थी, मगर लाली हर खतरे और आशंका से बेखबर गहरी नींद सो रहा था । कुछ समय और गुज़र गया । चाँद चढ़कर पेड़ों के ऊपर आ गया और रेत के कण झिलमिलाने लगे । साये सिमट गए और सन्नाटा बहुत गहरा था । अचानक रात के गहरे सन्नाटे में कोई ज़ोर से खँखारा । साथ ही सूखे पत्तों पर आहट हुई जो धीरे-धीरे पास आती गई । कोई ढलान से नीचे उतर रहा था । मगर वे एक नहीं, दो थे । रहीम दाद ने उन्हें दूर से ही देख लिया था । जब वे उसी तरफ आने लगे तो रहीम दाद बहुत घबराया । उसने लाली को आने वाले खतरे से आगाह करने के लिए उसे ज़ोर-ज़ोर से झकझोरा । मगर लाली नहीं जागा, करवट बदलकर बेखबर सोता रहा । आने वाले नज़दीक आते गए और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे । रहीम दाद और भी बदहवास हो गया । एक पल ऐसा भी आया जब उसने उठकर भागना चाहा, लेकिन वह ऐसा न कर सका । अपनी जगह सुन्न बैठा रहा । उसने देखा उनमें एक पुरुष है और दूसरी महिला । पुरुष आगे-आगे चल रहा था । उसके सिर पर बड़ी सी गठरी थी और महिला की गोद में बच्चा था । दोनों ने रहीम दाद को देख लिया था, मगर वे खामोशी से चलते रहे ।

जब वे बिल्कुल नज़दीक पहुँच गए तो महिला पल भर को रुकी । उसने गर्दन घुमाकर रहीम दाद को देखा और उसके पास पड़े लाली को भी । हिचकिचाते हुए बोली, "कोई इंसान जान पड़ता है ।" "होगा कोई, सीधी-सीधी चल ।" पुरुष ने उसे डाँटा । दोनों ने और कोई बात नहीं की । चुपचाप रहीम दाद और लाली के पास से गुज़रकर आगे बढ़ गए । अलबत्ता महिला मुड़-मुड़ कर देखती रही । दोनों दूर जाते-जाते अंधेरे में खो गए । उनकी आहट देर तक सूखे पत्तों पर गूंजती रही । उनके जाने के बाद भी रहीम दाद का डर खत्म नहीं हुआ । वह चौकन्नी नज़रों से बार-बार उसी दिशा में देखता रहा जिधर वे गए थे । हर आहट पर उसके कान खड़े हो जाते और दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगता । बहुत देर हो गई, कोई नहीं आया । चाँद चढ़ते-चढ़ते आसमान के बीचों-बीच पहुँच गया । रात पूरी तरह जाग रही थी और लाली सो रहा था । वह आधी रात के बाद जागा । उठकर बैठा तो रहीम दाद ने पूछा, "अब तेरी तबीयत कैसी है?"

लाली ने अंगड़ाई लेकर जवाब दिया, "ठीक ही है ।" उसने आँखें फाड़कर चाँद को देखा, "बहुत रात हो गई, मुझे जगाया भी नहीं ।"

"बहुत जगाया तुझे, अपना होश ही कब था ।"

"तबीयत बहुत गड़बड़ हो गई थी ।"

लाली उठकर खड़ा हो गया, "रहीम खड़ा हो जा, अपने पास चलने के लिए रात ही है, दिन में कहीं छिपकर आराम करेंगे ।"

रहीम दाद चुपचाप खड़ा हो गया । दोनों आगे बढ़े और कहीं रुके बिना लगातार चलते रहे । चाँद डूब गया और अंधेरा छा गया । रास्ता कठिन हो गया, वे सूखे नाले के रास्ते पर चल रहे थे । ज़मीन रेतीली और ऊबड़-खाबड़ थी । दोनों तरफ ऊँचे-नीचे टीले थे । कहीं-कहीं बबूल और बेरी के पेड़ थे । जंगली झाड़ियों के झुरमुट थे । उन्होंने सुस्ताने की ज़रा भी कोशिश नहीं की, आगे बढ़ते गए ।

जब सुबह का हल्का-हल्का उजाला फैला और अंधेरा छटा, तो वे ऐसी जगह पहुँच चुके थे जहाँ घास और सरकंडों के ऊँचे-नीचे पौधे थे । ज़मीन दलदली थी, इतनी नरम और पोली कि पैर अंदर धँसते थे । उनमें दलदल पार करने की हिम्मत नहीं थी, दोनों थकान से निढाल हो रहे थे । सूरज भी उगने वाला था । उन्होंने आगे जाने का इरादा छोड़ दिया और एक ऊँचे टीले पर चढ़ गए । हर तरफ वीरानी छाई थी । दोनों ने ऊँचाई से देखा कि दलदल के उस पार बहुत बड़ा तालाब (टोबा) है, जो सुबह की रोशनी में पारदर्शी झील की तरह झिलमिलाता हुआ दूर तक फैला है । कुछ दूर आगे नाले पर पुल था जिस पर सड़क गुज़रती थी । यह 'पाक पट्टन रोड' थी । लाली कुछ देर रहीम दाद के साथ टीले पर खामोश खड़ा रहा । उसके चेहरे पर थकान के साथ-साथ संतोष भी झलक रहा था । उसे किसी ऐसे ही स्थान की तलाश थी जो सड़क के पास हो और सुरक्षित भी । यह ऐसा ही सुरक्षित इलाका था । दूर-दूर तक आबादी का नामोनिशान न था । न कोई पगडंडी थी न रास्ता । हर तरफ टीले थे और जंगली झाड़ियाँ थीं । कहीं-कहीं फराश के इक्का-दुक्का पेड़ भी थे । दोनों ने इधर-उधर घूमकर टीलों के बीच छिपने का ठिकाना ढूंढने की कोशिश की । जल्द ही उन्हें एक ठिकाना मिल गया । यह एक चौड़ी और इंसान के कद जितनी गहरी गुफा थी । उन्होंने बाहर से गुफा का जायज़ा लिया, अंदर दाखिल हुए और बंजर ज़मीन पर आँखें बंद करके लेट गए ।

वे दिन भर गहरी नींद सोते रहे। आँख खुली तो शाम धीरे-धीरे टीलों पर उतर रही थी। दलदल पर उगी हुई ऊँची-ऊँची घास और सरकंडों के पौधे धुंध में लिपटे हुए थे। गुफा से निकल कर दोनों बाहर आए। सूरज टीलों के दूर तक फैले हुए नाबराबरी के सिलसिले के पीछे डूब चुका था। पश्चिम में गहरी लाल रोशनी फैली थी, जिसमें रहीम दाद किसी डरावने साये जैसा लग रहा था। उसकी आँखें अंदर धँसी हुई थीं और गालों की हड्डियाँ उभर आई थीं। भूख के मारे उसका बुरा हाल था। लाली भी भूख से निढाल था,

मगर उस वीराने में खाने के लिए क्या मिलता। इस वक्त उन्हें पेट की आग शांत करने की चिंता सता रही थी। दलदल पार करना खतरनाक था और टीलों के बीच रास्ता बनाना भी आसान नहीं था।

मगर अंधेरा बढ़ने से पहले वे आगे निकल जाना चाहते थे, क्योंकि झुटपुटे में चलना खतरे से खाली नहीं था। उन्हें टीलों की ऊँचाई पर दूर से ही देखा जा सकता था। सड़क पर गुज़रने वाली गाड़ियों की आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी। अंत में बहुत सोच-विचार के बाद उन्होंने कहीं जाने का इरादा टाल दिया और गुफा के मुहाने पर बैठकर चाँद निकलने का इंतज़ार करने लगे। रात का एक पहर गुज़रा और चाँद निकला, तो दोनों गुफा से बाहर आए और चाँदनी में टीलों के बीच चलने लगे। वे धीरे-धीरे सड़क की ओर बढ़ रहे थे, मगर रास्ता इतना पेचीदा और कठिन था कि उन्हें संभल-संभल कर चलना पड़ रहा था। आखिर टीले पार करने के बाद वे नीचे उतरे। सामने चाँदनी में झिलमिलाता हुआ तालाब था, जिसके एक किनारे पर ऊँची घास और पीछे दलदल थी। तालाब से कोई एक फर्लांग की दूरी पर पुल था। सड़क पर आवाजाही करीब-करीब खत्म हो चुकी थी। दोनों पुल की ओर बढ़ने लगे। तभी सन्नाटे में दूर से हॉर्न की आवाज़ आई। वे वहीं रुक गए। सड़क के मोड़ पर रोशनी झिलमिलाई। एक कार बहुत तेज़ रफ्तार से सड़क पर दौड़ रही थी। पलक झपकते ही वह पुल पर पहुँची और एक ज़ोरदार धमाका हुआ। लाली और रहीम दाद ने हैरान होकर देखा—कार बेकाबू होकर पुल के जंगले से टकराई और ढलान पर तेज़ी से लुढ़कती हुई नीचे आने लगी। साथ ही इंसानी चीखें उभरीं।

एक और धमाका हुआ, जो पहले से भी ज़्यादा भयानक था। लुढ़कती हुई कार से ऊँची लपटें उठीं और कार टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गई। इसके बाद गहरा सन्नाटा छा गया। लाली और रहीम दाद बुत बने खड़े रहे। काली सड़क सुनसान थी और चाँदनी में जली हुई कार का ढांचा एक धब्बे जैसा दिख रहा था। अचानक खामोशी में किसी के कराहने की आवाज़ आई। लाली आवाज़ की तरफ बढ़ा और रहीम दाद भी उसके पीछे-पीछे चला। पास जाकर उन्होंने देखा कि कार के ढांचे के नीचे एक लाश दबी है। आधा धड़ कार के नीचे से बाहर निकला था। चेहरा और हाथ जलकर काले पड़ गए थे और मांस जलने की तेज़ बू फैली थी।

चाँदनी में रहीम दाद ने कोई चीज़ देखी और उस पर झपटा। यह एक मुड़ी-तुड़ी रोटी थी। रहीम दाद ने उसे उठाया और मिट्टी साफ किए बिना ही बेताबी से खाने लगा। रेत के कण उसके दाँतों तले किरकिरा रहे थे, मगर वह जल्दी-जल्दी निवाले निगलता गया। लाली भी उसके पास पहुँचा और रहीम दाद ने रोटी का एक टुकड़ा उसे भी दिया। रोटी बासी और ठंडी थी, मगर वे उसे मज़े से खाते रहे। इसके बाद उन्होंने तालाब पर जाकर पानी पिया। अब उनके शरीर में कुछ ताकत आई। उन्होंने कार के मलबे के आसपास

खाना ढूंढना शुरू किया। जल्द ही उन्हें एक पलटी हुई टोकरी में खुला हुआ नाश्तादान मिल गया, जिसमें भुना हुआ गोश्त, उबले अंडे और तीन मोटे पराठे थे। उसमें डबल रोटी और बिस्कुट के पैकेट भी थे। खाना देखकर उनकी आँखों में चमक आ गई। रहीम दाद ने हाथ बढ़ाया तो लाली ने टोका—"सब मत खा जाना, कई दिनों का राशन है।"

रहीम दाद ने मुस्कुराकर आधा पराठा लाली को दिया और कहा, "ठीक कह रहे हो, आगे की फिक्र करनी चाहिए।"

दोनों ने पराठे और गोश्त खाकर नाश्तादान मुश्किल से बंद किया और उसे टोकरी में रख दिया। फिर तालाब पर जाकर पानी पिया। पानी पीकर लाली डकार लेने लगा।

रहीम दाद को डर लगा और वह बोला, "रोटी तो खा ली, अब चलना चाहिए।"

लाली ने पूछा, "कहाँ चलें? सड़क का रास्ता ठीक नहीं है, खतरा है।" उसने कहा कि रोटी का इंतज़ाम तो हो गया, अब पानी का राशन रखना होगा।

लाली कार के ढांचे की ओर गया, रहीम दाद भी उसके साथ था। लाश की बू इतनी तेज़ थी कि रहीम दाद दूर ही ठहर गया। लाली को ढांचे के पास एक चमकता हुआ डिब्बा नज़र आया, जो रेडिएटर में पानी डालने के लिए था। लाली ने उसे उठाया और रहीम दाद को देकर कहा, "ले भाई, अपना काम बन गया। इसमें पानी भर ले, कई दिन चलेगा।" रहीम दाद ने डिब्बे को धोकर उसमें पानी भर दिया। पानी से भरा डिब्बा भारी था। वह धीरे-धीरे लाली के पास पहुँचा जो ढांचे से दूर एक टीले के पास खड़ा था। वहाँ ज़मीन पर एक आदमी पड़ा था।

उस आदमी का चेहरा मिट्टी से लथपथ था और दाहिना हाथ कोहनी के पास से कट गया था। उसने सफेद बुश-शर्ट और नीली पतलून पहनी थी और वह सरकारी अफसर लग रहा था। लाली ने बिना कुछ कहे उस आदमी के हाथ से घड़ी उतारी और अपनी कलाई पर बाँध ली। फिर उसके जूते उतारे और पतलून भी उतार ली। पतलून की जेब से चमड़े का बटुआ निकला, जिसमें नोट थे। लाली ने बटुआ तालाब की तरफ फेंक दिया और नोट अपनी जेब में रख लिए। जब वह शर्ट उतारने लगा, तो लाश में हलकी हरकत हुई और सांस लेने की आवाज़ आई।

रहीम दाद चीखा, "यह तो अभी ज़िंदा है!"

लाली ने उसे डाँटा—"चुपचाप खड़ा रह।"

उसने शर्ट और बनियान भी उतार ली, जो खून से लथपथ थे। शर्ट पर खून के धब्बे कम थे। ज़ख्मी आदमी के कटे हाथ से खून बहकर रेत पर काला धब्बा बना रहा था। लाली कपड़े लेकर तालाब की ओर गया और शर्ट धोने लगा। वह पतलून के धब्बे धोने ही वाला था कि सड़क पर किसी गाड़ी के दौड़ने की आवाज़ आई। दोनों को खतरे का एहसास हुआ। लाली ने कपड़े समेटे और दोनों तेज़ी से टीलों की ओर दौड़े। तभी ब्रेक लगने की आवाज़ आई। एक ट्रक पुल पर ठहर गया था। ड्राइवर और एक अन्य व्यक्ति नीचे उतरकर पुल से नीचे झाँकने लगे। फिर वे ढलान से नीचे उतरने लगे। रहीम दाद और लाली एक टीले की ओट में छिप गए। मगर चाँदनी तेज़ थी और वे वहां सुरक्षित नहीं थे। आने वाले लोग पहले कार के मलबे के पास गए और ढांचे के नीचे दबी लाश को देखा। एक बार वे उस टीले के बहुत करीब पहुँच गए जिसके पीछे रहीम दाद और लाली छिपे थे। लाली ने चाकू खोल लिया था और रहीम दाद ने एक पत्थर उठा लिया था। लेकिन आने वाले लोग वहां ज़्यादा देर नहीं ठहरे। उन्होंने कार के दो पहिए उठाए और वापस ऊपर जाने लगे। जब वे ट्रक की तरफ जा रहे थे, लाली और रहीम दाद भी धीरे-धीरे ऊँचाई की तरफ खिसकने लगे। एक घनी झाड़ी के पीछे पहुँचकर उन्होंने देखा कि ट्रक अभी भी खड़ा है। थोड़ी देर बाद वे दोनों लोग फिर से नीचे आए और कार के मलबे से बाकी पहिए निकालने की कोशिश करने लगे।

लाली और रहीम दाद उन्हें ऊँचाई से देख रहे थे। वे जल्द से जल्द गुफा में पहुँचना चाहते थे, मगर झाड़ी से निकलना खतरनाक था। चाँद धीरे-धीरे डूब रहा था और साये लंबे हो रहे थे। अंधेरा होने पर गुफा तक पहुँचना मुश्किल होता। जब चाँद क्षितिज के पास पहुँचा, लाली और बेचैन हो गया। उसने एक बड़ा पत्थर उठाया और पूरी ताकत से कार के ढांचे की ओर फेंका। पत्थर ढांचे से टकराया और "टन" की आवाज़ हुई। नीचे काम कर रहे दोनों आदमी घबराकर सीधे खड़े हो गए। वे बुरी तरह डरकर ट्रक की तरफ भागे और ट्रक स्टार्ट करके तेज़ी से निकल गए।

ट्रक के जाते ही लाली ज़ोर से हँसा। उसने अपना सामान उठाया और दोनों संभलकर टीलों पर चढ़ने लगे। रहीम दाद पानी का डिब्बा उठाए लाली के पीछे चल रहा था। जब वे गुफा पहुँचे, तो हर तरफ अंधेरा फैल चुका था। रहीम दाद थककर लेट गया। मगर लाली नहीं लेटा। उसने गीली शर्ट को झटक कर गुफा के मुहाने पर सूखने के लिए पत्थर से दबाकर फैला दिया। चाँद एक टीले के पीछे डूब रहा था, जो एक जलते हुए अलाव जैसा दिख रहा था। लाली ने चाँद की आखिरी रोशनी देखी और गुफा के अंदर चला गया।

अब उनके पास बिस्कुट का सिर्फ एक पैकेट बचा था और डिब्बे का पानी भी खत्म होने वाला था। वे घूँट-घूँट कर पानी पीते थे। दोपहर की तेज़ धूप में टीले गरम हो जाते और उन्हें बार-बार प्यास लगती। जब पानी बहुत कम रह गया, तो दोनों के बीच स्वार्थ जाग उठा। वे पानी पीते समय एक-दूसरे को घूरते और कभी-कभी छीना-झपटी भी करते। लाली अक्सर ज़्यादती करता और रहीम दाद के बुदबुदाने पर बेशर्मी से हँस देता। उस शाम उन्होंने दो-दो बिस्कुट खाए और तय किया कि सुबह तक कोई कुछ नहीं खाएगा।

रात को रहीम दाद की आँख खुली, उसे बहुत भूख लगी थी। लाली सो रहा था। रहीम दाद धीरे से गुफा के बाहर आया और फिर वापस अंदर जाकर बिस्कुट खाने लगा। जैसे ही उसने पानी पीने के लिए डिब्बा मुँह से लगाया, किसी ने उसकी गर्दन दबोच ली।

यह लाली था, जो उसे गुस्से से घूर रहा था। उसने चिल्लाकर कहा—"ओए कंजर! यह धोखाधड़ी?"

रहीम दाद झेंप कर बोला—"यार, गर्दन तो छोड़।"

लाली ने ज़ोर से धक्का दिया और रहीम दाद का सिर गुफा की दीवार से टकरा गया। रहीम दाद गुस्से में उठा और पानी का डिब्बा और बिस्कुट बाहर फेंकते हुए बोला—"ले जा सब, मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

लाली और चिढ़ गया और उस पर झपटकर लात-घूँसे बरसाने लगा। रहीम दाद ने भी पलटकर वार किया और दोनों गुत्थमगुत्था हो गए। लाली को अंदाज़ा हुआ कि रहीम दाद उतना कमज़ोर नहीं है जितना वह समझता था।

लड़ाई के दौरान लाली ने ज़ोर से धक्का दिया और रहीम दाद का सिर फिर दीवार से टकराया, जिससे वह कराहता हुआ गिर पड़ा। रहीम दाद बेसुध पड़ा था। लाली का गुस्सा शांत हुआ और वह परेशान होकर रहीम दाद को सहलाने लगा। बहुत देर बाद रहीम दाद की आँख खुली।

लाली ने प्यार से पूछा—"तबीयत कैसी है?"

रहीम दाद खामोश रहा।

लाली ने माफी माँगते हुए कहा—"यार, ज़्यादती हो गई, माफ कर दे। गुस्सा बहुत बुरी चीज़ है।"

वह बाहर गया और बिस्कुट व पानी वापस लाकर रहीम दाद के सामने रख दिया और उसे खाने को कहा।

रहीम दाद ने कहा—"मुझे कुछ नहीं खाना।"

वह चेहरा छिपाकर सिसकियाँ भरने लगा। लाली ने उसे चुप कराया और पानी पीने को कहा। रहीम दाद खामोशी से उठा और गुफा के बाहर जाने लगा।

लाली ने पूछा—"कहाँ जा रहा है?"

रहीम दाद ने कहा—"जेल!"

लाली उसकी तरफ लपका और बोला—"दिमाग खराब हो गया है क्या?"

रहीम दाद ने अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा—"ऐसी ज़िंदगी से तो जेल भली है।"

लाली ने उसे समझाया कि अभी कुछ ही दिनों की बात है, सब ठीक हो जाएगा। मगर रहीम दाद अड़ा रहा कि वह अब इस रास्ते पर नहीं चल सकता और अपनी बाकी सज़ा काट लेगा। लाली ने उसे डराया कि अब सज़ा दोगुनी होगी और कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। फिर लाली ने उसे मज़ाक में "बेवफा" कहा और उसे खींचकर वापस अंदर ले आया।

रहीम दाद बोला—"लाली, मुझे यह ज़िंदगी पसंद नहीं।"

लाली ने माना कि यह ज़िंदगी वाकई बुरी है, मगर अब कुछ करना होगा। वह खड़ा हुआ और बोला —"तैयार हो जा, बिस्कुट खा ले और पानी पी ले।"

लाली ने अपनी जेल की वर्दी उतारी और उस मृत अफसर की पतलून व शर्ट पहन ली।

जूते ढीले थे, तो उसने जेल का कुर्ता फाड़कर पट्टियाँ बाँधीं और जूते पहन लिए। उसने रहीम दाद से पूछा —"कैसा लग रहा हूँ?"

रहीम दाद ने कहा—"बिल्कुल साहब बहादुर।"

लाली ने जेब से 140 रुपये से ज़्यादा नोट निकाले और कहा—"बेचारा मरने वाला अपने पीछे हमारे लिए ये रुपये छोड़ गया।"

फिर उसने बचा हुआ राशन रहीम दाद को खिला दिया। मगर डिब्बे में पानी की सिर्फ कुछ बूंदें ही बची थीं। प्यास के मारे गला सूख रहा था।

उन्होंने जेल की वर्दी एक भारी पत्थर के नीचे छिपाई और नाज़ुक टीलों पर चलने लगे। वे फिर से उसी तालाब और पुल के पास पहुँचे। वहाँ से लाशें हटाई जा चुकी थीं, मगर कार का जला हुआ मलबा वहीं था।

उन्होंने पानी पिया और पुल पर खड़े होकर सोचने लगे कि किस तरफ जाना चाहिए। रहीम दाद हमेशा की तरह खामोश था, फैसला लाली को ही करना था। लाली भी उलझन में था कि कौन सा रास्ता सुरक्षित होगा। रात ढल रही थी।

लाली ने रहीम दाद से सलाह माँगी—"तू बता किधर चलें? तेरा तो घर-बार भी है।"

रहीम दाद ने दुखी होकर बताया कि उसकी पत्नी, एक बेटी और दो बेटे हैं। वह अपनी बेटी को बहुत याद करता है, मगर घर जाने के रास्ते उसने खुद बंद कर दिए हैं।

रहीम दाद ने बिस्कुट का पैकेट लाली की तरफ बढ़ा दिया और बार-बार इनकार करने के बावजूद ज़िद करके बचे हुए बिस्कुट उसे खिला दिए । मगर जब लाली ने पानी पीने के लिए डिब्बा उठाकर मुँह से लगाया तो मुश्किल से कुछ बूँदें निकलीं । उसे सख्त झुंझलाहट हुई । बिस्कुट खाने से गला सूख गया था और प्यास अचानक बढ़ गई थी । उसने जल्दी से जेल की वर्दी एक भारी पत्थर के नीचे छिपाई । टिन का डिब्बा उठाकर दूर फेंका और रहीम दाद के साथ गुफा से निकलकर ऊबड़-खाबड़ टीलों पर चलने लगा । दोनों एक बार फिर ढलान की ओर उतर रहे थे । सामने चाँदनी में झिलमिलाता हुआ तालाब था । आगे पुल था और सड़क वीरान थी । तालाब के पास पहुँचकर उन्होंने देखा कि हादसे में मरने वालों की लाशें उठाई जा चुकी हैं । अलबत्ता कार का जला हुआ ढांचा अभी भी अपनी जगह मौजूद था ।

उसके टूटे-फूटे टुकड़े इधर-उधर बिखरे हुए थे । उज्ज्वल चाँदनी में सब कुछ साफ नज़र आ रहा था । लाली और रहीम दाद ने झुककर तालाब से पानी पिया, मुँह-हाथ धोए और तरोताज़ा होकर धीरे-धीरे चढ़ाई चढ़ते हुए पुल पर पहुँच गए । दोनों कुछ देर पुल पर खामोश खड़े रहे और सोचते रहे कि उन्हें किस दिशा में जाना चाहिए । मगर यह फैसला लाली ही कर सकता था । रहीम दाद ऐसे मौकों पर खामोश रहता था । जिधर लाली चलता, वह बिना किसी बहस के उसके पीछे चल देता । लेकिन लाली भी उस समय दुविधा में था । उसे नहीं पता था कि वह कहाँ है । उसे यह अंदाज़ा भी नहीं था कि कौन सा रास्ता दोनों के लिए सुरक्षित रहेगा । रात ढलती जा रही थी । पाक पट्टन रोड बिल्कुल सुनसान थी । कई मिनट गुज़र गए । लाली कोई फैसला नहीं कर सका ।

उसने रहीम दाद से सलाह ली । "रहीम! मेरा तो दिमाग काम नहीं कर रहा, तू बता किधर चलें?" ।

"मैंने क्या बताना है, जिधर तू कहेगा तेरे साथ चल दूँगा" ।

"मगर तुझे कहीं तो जाना ही होगा, तेरा तो घर-बार भी है" ।

"है, मैंने तुझे बताया भी है । घरवाली है, एक बेटी है और दो बेटे हैं । बेटी मुझे बहुत प्यार करती है और याद भी बहुत आती है" । रहीम दाद अपनी बात कहते-कहते दुखी हो गया । "मगर मैं उसके पास कैसे जा सकता हूँ, घर जाने के सारे रास्ते तो मैंने खुद ही बंद कर दिए हैं" ।

"यार तेरा तो पूरा परिवार है, मैंने यह झंझट पाला ही नहीं । तेरी तरह कुछ यार-दोस्त हैं, उन्हीं के साथ गुज़रती रही" ।

दोस्तों के ज़िक्र पर लाली को शादू याद आ गया । वह उसका बहुत अच्छा दोस्त था । अरसा हुआ वह भी उसकी तरह ह अपराधी था । चोरी और डकैती करता, कभी अकेले तो कभी लाली या दूसरों के साथ मिलकर । उनका एक बाकायदा गिरोह बन गया था । लाली भी शादू के साथ उस गिरोह में शामिल था । उन्होंने लूटपाट का बाज़ार गर्म किया । निडर होकर डाके डाले और खूब ऐश की । मगर एक तांगे वाले की मुखबिरी (सूचना) पर वे पकड़े गए । मुकदमा चला और सजाएँ हुईं । जब वे जेल से निकले तो गिरोह तितर-बितर हो चुका था । शादू ने जेल काटने के बाद ऐसी तौबा की कि फिर कभी उस तरफ रुख नहीं किया । लेकिन पुलिस उसे बराबर परेशान करती रही । इलाके में कोई भी चोरी या डकैती होती, उसे ज़रूर थाने बुलाया जाता । उससे पूछताछ होती और उसे डराया-धमकाया जाता । अब शादू लायलपुर में रहता था और साइकिलों की मरम्मत का काम करता था । उसने शादी कर ली थी और अब वह दो बच्चों का बाप बन चुका था । लाली उससे बरसों नहीं मिलता था । मगर जब भी मिलता, शादू हमेशा लाली के साथ प्यार से पेश आता । एक बार लाली डकैती की एक वारदात के बाद दो हफ्ते तक शादू के घर में छिपा रहा । हालाँकि उसकी बीवी घर में लाली के रहने पर खुश नहीं थी और हर वक्त किच-किच करती रहती थी । शादू कभी उसे प्यार से समझाता तो कभी नाराज़ होता, उनके बीच अक्सर झगड़ा रहता था । लेकिन शादू के मन में कभी खोट नहीं आया । वह लाली का हर तरह से ख्याल रखता था । लाली पुल पर खड़ा-खड़ा शादू के बारे में सोचता रहा । वह किसी न किसी तरह शादू के पास लायलपुर पहुँचना चाहता था । लायलपुर जाने के लिए बस स्टैंड या रेलवे स्टेशन तक पहुँचना ज़रूरी था । उसका ख्याल था कि जेल से फरार हुए इतने दिन हो चुके हैं कि पुलिस ने रास्तों की नाकेबंदी और स्टेशनों की निगरानी खत्म कर दी होगी । लेकिन सबसे बड़ी मुश्किल यह थी कि कपड़े बदलने के बाद लाली तो कहीं भी जा सकता था, मगर रहीम दाद की जेल वाली वर्दी लगातार एक खतरा थी । लाली कहीं जाने से पहले रहीम दाद को इस खतरनाक वर्दी से निजात दिलाना चाहता था । सिर्फ इसी सूरत में दोनों सफर करने के काबिल हो सकते थे । लाली को यह काम जल्द से जल्द करना था ।

रहीम दाद भी कुछ देर पुरानी यादों में खोया रहा । मगर जब लाली गुमसुम खड़ा रहा और आगे नहीं बढ़ा तो रहीम दाद ने उसे टोका । "तू किस सोच में पड़ गया? रात कम रह गई है" ।

लाली उसकी बात सुनकर चौंक पड़ा, "ठीक कह रहा है" ।

"मगर तू कब तक यहाँ खड़ा रहेगा?" रहीम दाद ने अपनी बेचैनी ज़ाहिर की । "कहीं तो चलना ही होगा, यहाँ इस तरह खड़ा रहना भी खतरनाक है" ।

लाली आगे बढ़ा । रहीम दाद उसके साथ चला । दोनों पाक पट्टन रोड पर कुछ दूर तक चलते रहे, फिर ढलान की ओर उतर गए और जंगली झाड़ियों के बीच से गुज़रने वाली एक पगडंडी पर चलने लगे । इलाका बंजर और वीरान था । जगह-जगह पौधों के झुंड थे । दोनों पश्चिम की दिशा में बढ़ रहे थे । अब वे पाक पट्टन रोड से बहुत दूर जा चुके थे । पेड़ों के पीछे कहीं-कहीं रोशनी झिलमिला रही थी । कोई बस्ती थी । हर तरफ गहरा सन्नाटा छाया था । लाली और रहीम दाद आगे बढ़े । अब बस्ती के निशान साफ होते जा रहे थे । चिरागों की टिमटिमाहट बढ़ गई थी । इक्का-दुक्का मकान साफ दिखाई दे रहे थे । दोनों ने बहुत सावधानी और होशियारी से मैदान पार किया और गाँव में दाखिल हो गए । गाँव काफी बड़ा था । दूर तक मकानों का सिलसिला फैला था । अधिकांश मकान मिट्टी के बने हुए थे । इक्का-दुक्का पक्के और कुछ आधे पक्के थे । मगर वे मकानों के करीब नहीं गए । रहीम दाद डर से सहमा हुआ था, लेकिन लाली मुस्तैद नज़र आ रहा था । उसने गर्दन घुमाकर आसपास का जायज़ा लिया । वह रहीम दाद के साथ दबे पाँव आगे बढ़ा और एक घने पेड़ के नीचे पहुँचकर रुक गया । सामने एक कच्चा मकान था जो गाँव के नुक्कड़ पर था और दूसरे मकानों से अलग-थलग भी था । लाली कुछ पल ठहरकर आगे बढ़ा । रहीम दाद उसके पीछे-पीछे चला । दोनों उस मकान के पास पहुँचे और दीवार से लगकर अंधेरे में चुपचाप खड़े हो गए । लाली ने झुककर अपने जूते उतारे और रहीम दाद को थमा दिए । उसने गर्दन उठाकर दीवार की ऊँचाई का अंदाज़ा लगाया । दीवार ज़्यादा ऊँची नहीं थी । लाली ने दोनों हाथ ऊपर उठाए, उछला और हाथों से दीवार का ऊपरी हिस्सा थाम लिया । वह पैरों का सहारा लेकर धीरे-धीरे ऊपर पहुँच गया । दीवार पर पहुँचकर उसने अंदर का जायज़ा लिया । कुछ देर वह दीवार से चिपका झाँकता रहा, फिर खामोशी से आँगन में उतर गया और दीवार के साथ एक जगह बैठ गया ।

हर तरफ गहरा सन्नाटा छाया था । जब देर तक कोई आहट नहीं हुई तो लाली उठा और उस दरवाज़े की ओर बढ़ा जो बाहर गली में खुलता था । लाली ने दरवाज़ा खोला, गर्दन बाहर निकाली, धीरे से सीटी बजाई और हाथ के इशारे से रहीम दाद को अपने पास बुलाया । रहीम दाद उसके पास गया और घर के अंदर दाखिल हो गया । लाली ने दरवाज़ा बंद कर दिया, मगर कुंडी नहीं लगाई । दरवाज़े के सामने आँगन था । एक तरफ शीशम का पेड़ था, जिसके नीचे एक खूँटा था जहाँ एक भैंस बंधी थी । आँगन से सटा हुआ दालान था । उस पर फूस की एक झुकी हुई छत थी । दालान के पीछे एक दरवाज़ा था । उसका एक पल्ला थोड़ा सा खुला था । रोशनी छन-छन कर बाहर आ रही थी । लाली ने रहीम दाद को बाहरी दरवाज़े

पर रुकने का इशारा किया। वह खुद धीरे-धीरे दालान में पहुँचा और दरवाज़े से सटकर अंदर झाँकने लगा। कुछ देर वह खामोश खड़ा रहा, फिर धीरे से दरवाज़ा खोलकर अंदर दाखिल हो गया। छत से लालटेन लटक रही थी, मगर उसकी रोशनी कम थी। लाली ने मद्धम रोशनी में देखा कि दीवार के पास एक चारपाई थी जिस पर बिस्तर बिछा था, मगर बिस्तर खाली था। कमरे में कोई नहीं था। एक और दरवाज़ा भी था जो बगल वाली कोठरी में खुलता था। उस दरवाज़े का एक पल्ला खुला था और अंदर मद्धम रोशनी थी। कमरे में एक अजीब सी अनजानी गंध फैली थी, ऐसी गंध जिसे लाली ने पहले कभी महसूस नहीं किया था। इस रहस्यमयी गंध ने कमरे के माहौल को डरावना बना दिया था।

किसी अनजाने डर से लाली का दिल धड़कने लगा। उसका मन हुआ कि वापस चला जाए। ठीक उसी समय कोठरी के अंदर से गहरी-गहरी साँसें लेने की सरसराहट सुनाई दी। लाली ने धीरे से चाकू निकालकर खोला और कोठरी के दरवाज़े की ओर चौकन्नी नज़रों से देखने लगा। एक मिनट गुज़रा, फिर दूसरा, मगर कोई नहीं आया। गहरी साँसों की सरसराहट भी बंद हो गई। लाली की नज़र उस लकड़ी के संदूक पर पड़ी जो चारपाई से थोड़ी दूर रखा था। संदूक देखते ही लाली ने वापस जाने का इरादा छोड़ दिया। उसने हाथ बढ़ाकर लालटेन की लौ और मद्धम कर दी। वह आगे बढ़ा और संदूक के पास उकड़ू बैठ गया। संदूक की कुंडी में ताला लगा था, मगर ताला खुला था और उसमें चाबी भी लगी थी। लाली को थोड़ी हैरानी हुई, मगर उस पर ध्यान देने के बजाय उसने धीरे से एक हाथ से ढक्कन उठाया और दूसरा हाथ अंदर डालकर कपड़े ढूँढने लगा। कपड़े नीचे थे और ऊपर एक मोटी चादर तह करके रखी गई थी।

लाली ने नीचे से एक कपड़ा निकालने की कोशिश की, तभी अचानक उसे अपनी पीठ के पीछे आहट सुनाई दी। साथ ही आवाज़ आई, "ओए कौन है?"।

लाली ने पलटकर देखा कि कोठरी के दरवाज़े के बीचों-बीच एक औरत खड़ी थी। उसके बाल बिखर कर चेहरे पर आ गए थे। उसकी आँखें जंगली कबूतर की तरह गहरी लाल थीं। उसके दाहिने हाथ में एक छुरी थी जो खून से सनी हुई थी। धुंधली रोशनी में वह औरत खूँखार और डरावनी लग रही थी। वह धीरे-धीरे लाली की तरफ बढ़ी। लाली उसे देखकर बुरी तरह घबरा गया। वह संदूक के अंदर पड़ा हाथ भी बाहर नहीं निकाल सका। वह जिस हालत में था, उसी हालत में पत्थर बनकर बैठा रहा।

लाली को खामोश देखकर वह औरत गरजी, "सुअर के बच्चे! चोरी करने आया था?"।

लाली कुछ कह न सका और न ही उसकी तरफ देख सका। उसने गर्दन झुका ली और खामोशी से फर्श ताकने लगा।

वह औरत उसके सिर पर आकर खड़ी हो गई और उसी कड़वे लहजे में बोली, "तेरे भी टुकड़े करके इसके बराबर लिटा दूँगी" । उसने हाथ उठाकर कोठरी की तरफ इशारा किया, "देखेगा? चल देख ले, खड़ा हो" ।

लाली चुपचाप खड़ा हो गया । औरत ने खूँखार नज़रों से उसे देखा और कोठरी के दरवाज़े की तरफ उंगली उठाकर बोली, "उधर चल" ।

लाली उसके आदेश पर किसी प्रशिक्षित जानवर की तरह लड़खड़ाते कदमों से दरवाज़े की तरफ बढ़ा । दरवाज़े के करीब पहुँचा तो औरत ने उसे डाँटकर अंदर जाने को कहा । लाली खामोशी से अंदर चला गया और औरत भी उसके पीछे-पीछे अंदर आ गई । कोठरी साफ-सुथरी थी । ताखे (आले) में एक चिराग जल रहा था । उसकी पीली रोशनी में सामने चटाई पर कोई लेटा था । उसका पूरा शरीर चादर से ढका था । औरत ने आगे बढ़कर उसके चेहरे से चादर हटा दी । लाली ने डर के मारे देखा कि लेटे हुए व्यक्ति की गर्दन कटी हुई थी । वह मद्धम अनजानी गंध अचानक तेज़ हो गई । मृतक की आँखें खुली हुई थीं और वे इतनी डरावनी थीं कि लाली उन्हें ठीक से देख न सका । वह औरत लाश के सरहाने बैठ गई । उसका चेहरा पसीने से तर था । वह धीरे-धीरे हाँफ रही थी ।

लाली सहमा हुआ खामोश बैठा रहा ।

कुछ देर बाद उसने हिचकिचाते हुए पूछा, "इसे किसने कत्ल कर दिया?" ।

"कौन करेगा इसे कत्ल?" औरत ने लाली को सुर्ख नज़रों से घूरा और पागलों की तरह सीने पर हाथ मारकर बोली, "इसे मैंने कत्ल किया है, हाँ मैंने किया है" ।

उसने खून से सनी छुरी लाली के सामने कर दी । उसने लाली की आँखों में आँखें डाल दीं, "यह भी पूछ, यह कौन है?" ।

उसने थोड़ा रुक कर कहा, "यह मेरा यार है" ।

लाली ने कुछ नहीं कहा । औरत ने भी कोई बात नहीं की । वह अभी तक गहरी-गहरी साँसें भर रही थी । लाली उसे देखता रहा । वह अपनी उम्र की उस सरहद पर थी जब जवानी की दोपहर का सूरज ढलने लगता है । उसके हाथ सख्त और खुरदरे थे । शरीर कसा हुआ और मज़बूत था । चेहरा कड़ी मेहनत और तेज़ धूप से सांवला होकर संदली हो गया था । बड़ी-बड़ी आँखें बुझकर धुंधला गई थीं । चिराग की धुंधली रोशनी में लाली को अब वह निढाल और थकी हुई नज़र आ रही थी । कोठरी के एक कोने में मटका रखा था और उस पर एल्युमिनियम का गिलास भी था ।

लाली ने नरम लहजे में कहा, "पानी पी ले" ।

"पिला दे," औरत ने लाली की ओर देखे बिना कहा । इस बार उसके लहजे में पहले जैसी दरुश्ती (कठोरता) नहीं थी । लाली ने मटके का ढक्कन हटाकर गिलास अंदर डाला और पानी से भरा हुआ गिलास बढ़ाकर उसके होंठों से लगा दिया । वह पूरा गिलास इस तरह गटागट पी गई जैसे बहुत देर से प्यासी हो । पानी पीने के बाद उस औरत के चेहरे पर छाई हुई वहशत कम हो गई । उसने दीवार से पीठ टिका ली और कुछ पलों तक आँखें बंद किए बैठी रही । मगर जल्द ही उसने आँखें खोल दीं और खोई-खोई नज़रों से लाश को देखने लगी ।

उसने धीरे से कहा, "देख तो कैसा सुंदर है" ।

लाली ने लाश के चेहरे की ओर एक बार फिर देखा । घुंघराले लंबे-लंबे बाल, गोरा रंग, तीखे नैन-नक्श और मुड़ी हुई रौबीली मूँछें । वाकई वह बड़ा वजीह (आकर्षक) और बांका जवान था ।

औरत रुक-रुक कर कहती रही, "अब तो कुछ भी नहीं रहा । पहले इतना सुंदर था, ऐसा रंग-रूप था कि हाथ लगाओ तो मैला हो जाए । कोई देखे तो देखता रह जाए" । औरत उसके ज़िक्र में आनंद महसूस क .रही थी । उसकी आँखों की सुर्खी (लाली) धीरे-धीरे कम होती जा रही थी । "मेरी इससे यारी-पहचान हो गई, जाने कैसे हो गई । बस हो गई, फिर वही हुआ जो होता है" । उसने ठंडी साँस भरी, "जब बहुत बदनामी हुई तब मैं एक रात इसके साथ घर से निकल गई । हाय कैसी काली रात थी । उसी रात मैं जहांगीरा आ गई, इस गाँव का नाम जहांगीरा है" ।

वह लाश को देखती रही और इस तरह रुक-रुक कर धीरे-धीरे बोलती रही जैसे नींद में बुदबुदा रही हो ।

लाली ने उसका बदला हुआ अंदाज़ और धीमा लहजा महसूस किया । "तूने इसका खून क्यों कर दिया?" ।

औरत ने चौंककर इस तरह हैरानी से लाली को देखा जैसे उसे बिल्कुल भूल चुकी हो । वह खामोश बैठी रही । उसने लाली की बात का कोई जवाब नहीं दिया । मगर लाली ने उसे खामोश नहीं रहने दिया, वह चाहता था कि औरत सब कुछ कह डाले । वह सारी बातें कह देती तो ठंडी पड़ जाती । न उसकी आँखें खूँखार रहतीं न चेहरा वीरान नज़र आता ।

बहुत दिनों की बात है, एक बार हवालात में उसके साथ एक क़ातिल भी बंद था । वह सारी रात जागता था । खा जाने वाली नज़रों से घूरता था । जंगली जानवर के अंदाज़ में गहरी-गहरी साँसें भरता था । दूसरे मुलज़िमों (आरोपियों) का गला घोंटने के लिए झपटता था । मगर जब उसने पुलिस के सामने सब कुछ

उगल दिया तो वापसी पर हवालात में आकर धड़ाम से फर्श पर गिर गया । मुर्दे की तरह ठंडा पड़ा रहा । ऐसी गहरी नींद सोया कि दूसरे दिन ज़ोर-ज़ोर से झकझोरने पर जागा ।

लाली ने ज़िद करके औरत से पूछा, "बोलती क्यों नहीं? तूने इसका खून क्यों कर दिया?" ।

"यह न पूछ," औरत की आँखों में एक बार फिर शोले भड़कने लगे । वह ज़ोर-ज़ोर से हाँफने लगी । "उसने मेरी ओर से आँखें बंद कर लीं, मुझे धोखा दिया," वह शिकायत करने के अंदाज़ में कहने लगी । "मैंने इसके कारण घर-बार छोड़ा, अपने दो छोटे बच्चे छोड़े, घरवाले को छोड़ा । वह बुरा आदमी नहीं था, जान छिड़कता था मुझ पर । जो कहती करती थी । बस ज़रा..." उसने निहायत बेबाकी से गाली दी और सामने पड़ी हुई लाश की ओर इशारा करके नफरत और गुस्से से मुँह बिगाड़ा, "यह धोखेबाज़ निकला" । "एकदम हरामख़ोर, न काम का न काज का । हर वक़्त मांग निकालता, मूँछें मरोड़ता, आड़ा-तिरछा होकर आईना देखता । गलियों में इतराता फिरता । शहर जाकर रोज़ सिनेमा देखता । मैंने इससे कुछ भी नहीं माँगा । अपने ज़ेवर और कपड़े-लत्ते बेचकर एक भैंस खरीद ली । दिन-रात मेहनत करती । नंबरदार की हवेली में काम-काज करती । अपना पेट पालती और इसके नखरे भी पूरे करती" ।

उसने गहरी साँस भरी, "इसके लिए मैंने क्या नहीं किया, अपनी ज़रा भी परवाह नहीं की । मैं ऐसी नहीं थी, मेरा ऐसा रूप-रंग नहीं था । सब कुछ जलकर कोयला हो गया और उसने मुझे क्या दिया? । मेरा घर बर्बाद करके कहीं और आँख लड़ाई" । औरत बात करते-करते रुक गई । लाश को घूरने लगी । उसका लहजा तीखा हो गया, "कहता था शादां! तेरे बिना ज़िंदा नहीं रह सकता । रेल के नीचे लेट जाऊँगा, गले में फंदा डालकर मर जाऊँगा" । औरत के लहजे में कड़वाहट बढ़ती गई । उसका चेहरा वहशतनाक (डरावना) हो गया, "झूठा मक्कार! मुझे छोड़कर उस कंजरी (वेश्या) के साथ चुपके से निकाह कर लिया । हफ्तों न आता, जब आता तो हाथ फैलाए हुए । कुछ लिए बिना न मिलता । मैं जान-बूझकर धोखा खाती रही" ।

वह खामोश होकर गहरी सोच में डूब गई । उसके हाथ में खून सनी छुरी अभी तक दबी हुई थी । मगर लाली को अब उससे डर नहीं लग रहा था । औरत अपना खोल (आवरण) तोड़कर धीरे-धीरे बाहर आ रही थी । लाली चाहता था कि वह कुछ भी अपने दिल में न रखे, हर बात कह डाले । खरे सिक्के की तरह टुन-टुन बोलने लगे ।

लाली ने उसे कुरेदा, "यह तो बता आज क्या हुआ?" ।

वह खोई-खोई नज़रों से लाली को देखती रही, फिर धीरे-धीरे कहने लगी, "आज शाम पूरे तीन महीने बाद आया था । पहले तो ढेर सारा प्यार जताया, वही एक्टरों वाली फिल्मी बातें, जो रोज़ सिनेमा देखता था ।

कहने लगा अपनी भैंस बेच दे, उसे उधार चुकाना था। मैंने बार-बार इनकार किया, वह न माना, अपनी ही कहता रहा। मुझे एकदम तैश आ गया। उठी और रसोई से छुरी निकाल लाई। छुरी उसके सामने डालकर बोली, तूने मेरा घर बर्बाद ही करना है तो यह छुरी ले और मेरे गले पर चला दे। मैं जीते-जी तो अपनी भैंस बेचूँगी नहीं"।

वह पल भर रुक कर बोली, "ईमान से बता, अपनी भैंस बेच दूँगी तो मेरा क्या बनेगा?"।

बात अधूरी ही छोड़कर वह फिर खामोश हो गई। लाली ने बेचैन होकर पूछा, "शादां! तेरा नाम शादां ही है ना? तू चबा-चबा कर क्यों बात करती है? यह बता इसका खून क्यों कर दिया?"। वह धीरे-धीरे बेतकल्लुफ (सहज) होता जा रहा था।

"उसने एक ऐसी बात कही कि मैं गुस्से से पागल हो गई," शादां अपनी बात कहते-कहते एक बार फिर रुकी। "मैंने तुझे इसका नाम तो बताया ही नहीं"।

लाली ने बेपरवाही से कहा, "होगा कोई नाम"।

"बाला," उसने लाश की ओर इशारा किया, "यह पड़ा है बाला। अब तो बस नाम ही रह गया है"।

लाली बेज़ारी (खीज) से बोला, "इसका मुँह ढंक दे, आगे बता"।

शादां ने झुककर बाला की लाश का चेहरा चादर से ढंक दिया। "हाँ तो मैं कह रही थी, छुरी देखकर वह ठहाका मारकर हँसा। जब नहीं रुका तो मुँह टेढ़ा करके बोला, बुढ़िया डग्गी (बूढ़ी गाय/भैंस) के गले पर तो कोई छुरी चलाता है? मैं ऐसा काम नहीं करता। कसाई के पास चली जा, भैंस मेरे हवाले कर दे। सुना तूने, उसने क्या कहा?"।

वह लाली की आँखों में आँखें डालकर बोली, "उसने मुझे बुढ़िया डग्गी कहा। क्या मैं बुढ़िया डग्गी लगती हूँ?"। उसका चेहरा बुझकर धुआं-धुआं हो गया। उसने गहरी साँस भरी और तड़प कर बोली, "हाँ मैं बुढ़िया डग्गी ही लगती हूँ। पर बुढ़िया डग्गी भी तो मैं उसके हाथों बनी। उसने मेरा सब कुछ छीन लिया और आँखें भी फेर लीं। एक नंबर का कंजर (नीच) निकला"।

शादां की आँखें फिर खूँखार हो गईं, उसने छुरी मज़बूती से पकड़ ली। "मैं कुछ न बोली, छुरी उठाई और रोती हुई बाहर चली गई। उसने मुझे रोका भी नहीं। आईना उठाकर अपना हुस्न (सुंदरता) देखने लगा, मूँछें मरोड़ने लगा। मैं देर तक अंधेरे में बैठी रोती रही। न वह बाहर आया न मेरे आँसू पोंछे। वापस आई

तो बिस्तर खाली था । कोठरी में जाकर देखा तो आराम से सो रहा था । वह मेरे साथ सोना भी नहीं चाहता था, बुढ़िया डग्गी के साथ क्यों सोता?" ।

"फिर क्या हुआ?" लाली ने बेकरारी से पूछा ।

"होना क्या था, मैं खड़ी उसे घूरती रही । फिर धीरे-धीरे उसके पास गई और सरहाने बैठ गई । वह इसी तरह आराम से सोता रहा । मैंने गुस्से में चाहा कि उसके मुँह पर थूक दूँ, पर मैंने थूका नहीं । छुरी हाथ में दबी थी, उसकी गर्दन पर फेर दी । पूरा गला काट दिया" ।

यह कहकर जैसे उस पर बेहोशी छा गई । उसने आँखें बंद करके सिर दीवार से टिका लिया । वह बेसुध पड़ी धीरे-धीरे साँसें ले रही थी । कोठरी में गहरी खामोशी छा गई । हवा में खून की बू बसी हुई थी ।

लाली जल्द ही इस खामोशी से ऊब गया, "अब हमें क्या करना है?" ।

"कुछ भी नहीं," शादां आँखें खोलकर धीरे से बोली । उसकी आवाज़ इतनी धीमी थी जैसे घड़े के अंदर मुँह डालकर बोल रही हो

कोठरी में गहरा सन्नाटा छा गया। फिजा (वातावरण) में खून की बू बसी हुई थी।
लाली जल्द ही इस खामोशी से उकता गया। "अब मैं नूँ कीह करना है?" (अब मुझे क्या करना है?)
"कुछ भी नहीं।" शादाँ आँखें खोलकर इत्मीनान (धीरज) से बोली। उसकी आवाज़ इस कदर मद्धम थी, जैसे घड़े के अंदर मुँह डालकर बोल रही हो।
"कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा।"
"बता क्या करूँ?"
लाली ने उसे भरपूर नजरों से देखा। शादाँ की बड़ी-बड़ी आँखों पर लंबी-लंबी पलकों के साये छाए हुए थे। चेहरा पिछली रात का चाँद बन गया था। इस वक्त वह उस शादाँ से कतई (बिल्कुल) मुख्तलिफ (अलग) थी, जो कुछ देर पहले लाली के सर पर खून से लथपथ छुरी ताने खड़ी थी। जिसकी आँखों में शोले दहकते थे, चेहरे पर वहशत (दहशत) बरसती थी। लाली को अब वह ऐसी औरत नजर आई जो जवान थी, सरकश थी और अपनी सफाकी (क्रूरता) के बावजूद काबिले-रहम (दया के पात्र) भी थी। उसे शादाँ से लगाव की हद तक हमदर्दी पैदा हो गई।
"एक बात कहूँ, मान लेगी?"
"बोल," शादाँ ने आहिस्ता से कहा।

"मेरे साथ भाग चल।"
"तेरे साथ भाग चलूँ?" शादाँ ने गुस्से से उसे घूरा। "सूरत देखी है अपनी? अख-थू!" उसने नफरत से जमीन पर थूक दिया।
लाली खिसियाना होकर बोला, "इतना बुरा क्यों मानती है? मैं तो तेरे ही भले की कह रहा था।"
वह उसे कहर-आलूद (क्रोध भरी) नजरों से घूरती रही, फिर त्यौरी पर बल डालकर बोली, "वे! तूने मुझे समझा क्या है? मैं कोई कंजरी हूँ?" उसने छुरी लाली के सामने कर दी, "यह छुरी देखी है?"
मगर लाली उसकी धमकी से मरऊब (प्रभावित) नहीं हुआ। "ज्यादा अकड़ न दिखा। यूँ बैठी रहेगी तो सीधी जेल जाएगी।"
वह उसी तरह तीखे लहजे में बोली, "जेल चली जाऊँगी पर तेरे साथ नहीं जाऊँगी।"
"न जा, हरगिज न जा। भूल जा यह बात। अपने यार बाले को भी भूल जा। आगे की सोच।"
"मुझे मेरे हाल पर छोड़ दे। तू जा यहाँ से।"
लाली ढिठाई से बोला, "मैं तो नहीं जाऊँगा।"
"नहीं जाएगा?" वह छुरी तानकर गुस्से से लाली पर झपटी। "आँखें निकाल लूँगी तेरी।"
लाली ने झट उसकी कलाई जोर से दबोच ली। वह बिलबिलाकर बोली, "कंजर! मेरा हाथ छोड़।"
लाली ने छुरी छीन ली और उसका हाथ छोड़ दिया। "बोल अब क्या कहती है?" शादाँ ने कोई जवाब नहीं दिया।

वह अपनी हजीमत (अपमान) पर गुस्से से हाँफने लगी।
"दिल से मैल निकाल दे। मैं इतना बुरा बंदा नहीं हूँ जितना तू समझ रही है।" लाली ने तवक्कुफ (विराम) किया, "जो होना था, हो गया। आगे की सोच, आगे की।"
"मैंने ठीक नहीं किया।" वह दिल-गिरफ्ता (दुखी) होकर बोली, "मझ (भैंस) बेच देती तो क्या हो जाता?"
"तू खुद को भी बेच देती, तब भी वह तेरा न बनता।"
"सच कह रहा है। पर मैं अब क्या करूँ? मुझे अब कुछ भी चंगा नहीं लगता। सब कुछ मुक (खत्म) गया। सारा खेल खत्म हो गया।"
लाली ने उसकी दुखती रग छेड़ी, "तुझे अपने बच्चे याद नहीं आते?"
"आते हैं, बहुत याद आते हैं।" ममता का जज्बा जाग उठा। वह बुझे हुए लहजे में बोली, "अब तो वे हमेशा-हमेशा के लिए छूट गए। जो नसीब में लिखा है पूरा होगा।"
"नसीब को छोड़। होश से काम ले।"

वह बेबसी से बोली, "कुछ समझ नहीं आती क्या करूँ?"
"मेरा कहा मान," लाली ने बाले की लाश की तरफ इशारा करते हुए कहा, "जमीन खोदकर उसे यहीं दबा दे।" लाली ने अपनी बात खत्म ही की थी कि दूर से अजान बुलंद हुई। लाली घबराकर बड़बड़ाया, "सुबह हो गई।" वह उठकर खड़ा हो गया।
शादाँ ने टोका, "कहाँ जाएगा? यहीं ठहर जा। मैं अकेले जमीन कैसे खोदूँगी?"
लाली ने कोई जवाब नहीं दिया। वह रहीम दाद के बारे में सोच रहा था। चंद लम्हे खामोश खड़ा रहा, फिर वह दरवाजे की जानिब लपका।
शादाँ ने पूछा, "नहीं रुकेगा? अब तो उजाला हो गया।" उसने कोठरी के रोशनदान से फूटती हुई हल्की-हल्की रोशनी की तरफ नजरें उठाकर देखा। "रात को अंधेरे में चले जाना।" उसके अंदाज में दबी-दबी आजिजी (विनती) थी।
"तू कहती है तो नहीं जाऊँगा। बाहर मेरा साथी बैठा है। उसे लेकर आता हूँ।"
लाली बाहर चला गया। कमरे से गुजरकर आँगन में पहुँचा। उसने देखा रहीम दाद दरवाजे के बराबर दीवार से पीठ टिकाए गहरी नींद सो रहा है। लाली ने करीब पहुँचकर उसे झकझोरा।
रहीम दाद ने हड़बड़ाकर आँखें खोल दीं। खिसियाना होकर बोला, "यारा! ऊँघ आ गई थी। तूने देर भी तो कितनी लगा दी।"
उसने सुबह की हल्की-हल्की रोशनी देखी तो एकदम घबरा गया। "सुबह हो गई। अब क्या होगा?"

"ठीक ही होगा। हमने अब कहीं नहीं जाना। यहीं ठहरेंगे।"
रहीम दाद ने हैरत से आँखें फाड़कर लाली को देखा। "यह कैसे हो सकता है?"
लाली ने हाथ पकड़कर उसे खड़ा कर दिया। "मेरे साथ आ।"
दोनों आहिस्ता-आहिस्ता चलते हुए कोठरी के दरवाजे पर पहुँचे। शादाँ अभी तक अपनी जगह बैठी थी। लाश के चेहरे से उसने चादर उठा दी थी और खोई-खोई नजरों से उसे देख रही थी।
रहीम दाद ने लाश देखी और उसकी फटी-फटी आँखें देखीं तो सरासीमा (भयभीत) होकर दरवाजे पर ठहर गया। हैरान-परेशान होकर बोला, "यारा! यह क्या चक्कर है?"
लाली ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। बढ़कर चादर और सरका दी। रहीम दाद ने धुंधली रोशनी में लाश का कटा हुआ गला देखा तो खौफ से आँखें और फट गईं। लाली ने लाश का चेहरा चादर

से ढंकते हुए रहीम दाद से कहा, "देख लिया तूने? यह चक्कर है।" रहीम दाद की समझ में कुछ नहीं आया।
वह दम-ब-खुद खड़ा रहा। लाली ने शादाँ की तरफ नजरें उठाईं, "खड़ी हो। बहुत हो चुका सियापा।" मगर शादाँ वहीं बैठी रही। "मुझे यहीं बैठा रहने दे। तू बाहर जा।" उसने लाश के चेहरे से फिर चादर हटा दी। रहीम दाद उसकी डरावनी आँखें न देख सका। परेशान होकर कोठरी से बाहर चला गया।
लेकिन लाली अपनी जगह खड़ा रहा। शादाँ बड़बड़ाने लगी, "वही आँखें, वही चकता (चमक), वही छल्लेदार बाल।" वह हाथ बढ़ाकर उसके बालों में उंगलियों से कंघा करने लगी और लाली की जानिब देखे बगैर बोली, "लगता है अभी-अभी सोया है।" वह झुकी हुई उसका चेहरा तकती रही। उसकी आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे और बाले के बेजान चेहरे पर बिखरने लगे।
वह बेकरार होकर उसका माथा, उसके होंठ चूमने लगी। उसने सीने पर दोहत्थड़ मारा और दिल-दोज आह भरकर जोर से चीखी, "हाय! रब्बा! मैं मर गई।" वह लाश के सीने पर सर रखकर फूट-फूटकर रोने लगी। कोठरी की धुंधली रोशनी में घुटी-घुटी सिसकियाँ उभरने लगीं।
यकायक चिराग जोर से भड़का। कोठरी की दीवारों पर परछाइयाँ लरजीं और चिराग बुझ गया। अंधेरा होते ही लाली इस तरह चौंका गोया (जैसे) सोते-सोते आँख खुल गई हो। उसने बोझिल आवाज से शादाँ को मुखातिब (संबोधित) किया, "शादाँ! अब उठ जा। बहुत कर चुकी चीख-चिल्लाहट। वखत (समय) कम है, अभी बहुत काम करना है।"

शादाँ फिर भी न उठी। सिसकियाँ भरती रही।
लाली ने डपटकर कहा, "उठती है कि नहीं।" शादाँ चुपचाप उठकर खड़ी हो गई।
लाली ने झुककर बाले के मुर्दा चेहरे पर चादर डाल दी। दोनों कोठरी से बाहर आ गए। रहीम दाद कमरे में गुमसुम खड़ा था। उसने दोनों को देखा मगर कोई बात नहीं की। लाली ने कोठरी का दरवाजा बंद किया और कुंडी लगाई।
शादाँ कमरे के एक गोशे (कोने) में दीवार से पीठ टिकाकर फर्श पर बैठ गई। उसके हाथों और कपड़ों पर जगह-जगह खून के धब्बे थे। बाल बिखरे हुए थे। चेहरा राख बन गया था। आँखें वीरान थीं और अभी तक सुर्ख थीं। लाली ने उससे कुछ नहीं कहा। कमरे से निकलकर बाहर आँगन में गया और बाहरी दरवाजे की कुंडी चढ़ा दी। अब हर तरफ सुबह की रोशनी फैल चुकी थी। घरों से मिली-जुली आवाजों का शोर आहिस्ता-आहिस्ता उभर रहा था। रात भर का सोया हुआ गाँव बेदार (जाग) हो रहा था।

लाली कमरे में वापस आया। रहीम दाद खामोश खड़ा था और शादाँ इसी तरह खोई-खोई बैठी थी। उसने लाली की जानिब नजर न उठाई। मगर लाली खामोश न रहा। उसने शादाँ को मुखातिब किया, "ये कपड़े तो बदल जा, फटाफट नहा ले।"

लेकिन शादाँ उठने पर आमादा (तैयार) नहीं होती थी। बेजारी (चिड़चिड़ाहट) से बोली, "मैं नूँ कहीं नहीं जाना। यहीं बैठा रहने दे। बहुत थक गई हूँ।"

"क्या चाहती है? अगर तुझे जेल ही जाना है तो मुझे क्यों रोका?" शादाँ ने कोई जवाब नहीं दिया।

लाली ने डपटकर कहा, "बोलती क्यों नहीं?"

शादाँ ने गर्दन उठाकर उसकी जानिब देखा, "क्या बोलूँ?"

"जो कह रहा हूँ वह कर। कपड़े बदल ले। मझ (भैंस) को पट्ठा (चारा) डाल दे। हमें भी रोटी खिला। सख्त भूख लगी है। पहले पानी पिला।"

शादाँ ने उसकी सारी बातें खामोशी से सुनीं। उठी, बाहर गई और कटोरे में पानी भरकर लाई। लाली ने कटोरा लिया और गटागट पानी पीने लगा। शादाँ ने संदूक से कपड़े निकाले और बगल में दबाकर कमरे से चली गई।

रहीम दाद खिसककर लाली के करीब पहुँचा और आहिस्ता से पूछा, "यार! ये सब क्या हो रहा है?" वह सख्त परेशान था।

"वही जो देख रहा है।"

रहीम दाद बेजारी से बोला, "मखौल (मजाक) न कर। साफ-साफ बता मामला क्या है? कुछ समझ नहीं आती।"

वह अपनी बात कहते-कहते लम्हे भर को रुका और कोठरी के दरवाजे की जानिब इशारा करके बोला, "इसे तूने कत्ल किया है?"

"घास तो नहीं खा गया? मैं क्यों कत्ल करने लगा। खून किसके हाथ और कपड़ों पर लगा है? तुझे इतना भी दिखाई नहीं देता?"

"तेरा मतलब है, इस जणानी (स्त्री) ने किया है?" उसने गर्दन मोड़कर बाहर आँगन की जानिब देखा। शादाँ वहाँ नहीं थी। रहीम दाद ने आहिस्ता से कहा, "यह तो बहुत जालिम है।"

"वह इससे भी ज्यादा जालिम था।"

"होगा, मुझे तो यह बहुत खतरनाक लगती है। आँखें देखी हैं, कैसी लाल-लाल अंगारा हैं।"

"डर मत। अभी इसके सर पर खून सवार है। नहाएगी तो उतर जाएगा।"

"घर वाला था इसका?"
"नहीं, इसका यार था।" लाली ने तफसील (विस्तार) से एक-एक बात रहीम दाद को बता दी।
वह सब कुछ सुन चुका तो परेशान होकर गोया (बोल) हुआ, "यह बता अब करना क्या है?"
"जमीन खोदकर लाश दबानी है।"
रहीम दाद सहमा हुआ था। "यार! कोई गड़बड़ न हो जाए। मुझे तो डर लग रहा है। शादाँ मुझे ठीक नहीं लगती।"
"तू इसे नहीं जानता। वह ऐसी-वैसी जणानी नहीं है और अगर बुरी है भी तो अपना क्या लेगी। अब तो इसकी टांग भी हमारे ही साथ बंधी है। चंद रोज यहाँ छुपे रहेंगे। फिर आगे जाने का प्रोग्राम बनाएंगे। उस गार (गुफा) से तो चंगी ही जगह है। रोटी भी खाने को मिल जाएगी और कपड़े-लत्ते भी आराम से मिल जाएंगे।" दोनों चारपाई पर बैठकर इत्मीनान से बातें करने लगे।
शादाँ कमरे में वापस आ गई। वह अभी-अभी नहाकर आई थी। उसके गीले बाल शानों (कंधों) पर बिखरे हुए थे। चेहरे पर ताजगी थी। उजले लिबास में वह रात वाली शादाँ से मुख्तलिफ लग रही थी। न आँखों में खूंखार चमक थी न चेहरे पर वहशत। उसके एक हाथ में खून-आलूद (रक्त रंजित) कपड़े दबे थे। लाली ने कपड़े उससे लिए और कोठरी की कुंडी खोलकर सारे कपड़े अंदर डाल दिए। जब वह कोठरी का दरवाजा बंद करके दोबारा कुंडी लगा रहा था तो शादाँ ने पूछा, "मेरे कपड़े-लत्ते वहाँ क्यों डाल दिए?"

"लाश के साथ ही इन्हें भी दबा दूँगा। छुरी भी रख दूँगा।"
शादाँ ने हैरत से पूछा, "क्यों?" फिर जरा तवक्कुफ से बोली, "छुरी तो दे दे। मुझे इसकी जरूरत होगी।"
लाली बेपरवाही से बोला, "दूसरी ले आना। मैं जो कुछ कर रहा हूँ करने दे। बीच में अपनी टांग न अड़ा।"
शादाँ ने खामोशी से उसकी बात मान ली। "जैसी तेरी मर्जी।" वह दरवाजे की जानिब मुड़ी। "मैं तुम दोनों के लिए रोटी-टुक (भोजन) ले आऊं।"
लाली ने पूछा, "तें नूँ कहीं दूध तो नहीं पहुँचाना?"
"दूधी (दूध वाले) को पहुँचाना तो है। बाद में पहुँचा दूँगी। फिक्र न कर।"
"नहीं, पहले दूध पहुँचा दे। हर काम वैसे ही कर जैसे रोज करती है। हमारी परवाह न कर। हम बाद में भी रोटी खा लेंगे।" वह अपनी बात कहते-कहते लम्हे भर के लिए रुका। "घर में कोई कुदाल होगी?"
"कुदाल तो है।"
"बेलचा भी होगा?"
"नहीं, बेलचा नहीं है। पड़ोस से ले आऊँगी। अभी लाई।" शादाँ दरवाजे की जानिब बढ़ी।
लाली ने फौरन टोका, "ठहर जा शादाँ! रहने दे, बेलचे के बगैर ही काम बन जाएगा।"

"पर इसमें हर्ज क्या है!"
"बहुत हर्ज है। तू ये बातें नहीं समझती। जैसा कहता हूँ, वैसा कर। मेरा काम मुझ पर छोड़ दे। तू अपना काम कर। मुँह क्या तक रही है मेरा? जा कुदाल और एक टोकरी ले आ।"
शादाँ बाहर चली गई। थोड़ी ही देर बाद कुदाल और टोकरी लेकर वापस आ गई। लाली ने कुदाल और टोकरी संभालकर रहीम दाद से कहा, "आ यारा! थोड़ी सी खुदाई कर लें। फिर इत्मीनान से रोटी खाएंगे।"
"पहले कुछ खा-पी तो ले।" शादाँ ने इसरार (आग्रह) किया।
"खा लेंगे, तू पहले अपना रोज का काम निपटा ले। और हाँ, बाहर जाना तो दरवाजे में ताला जरूर डाल देना।" लाली ने छत से लटकी हुई लालटेन उतारी जो अभी तक रोशन थी। उसने लालटेन हाथ में संभाली और रहीम दाद के हमराह कोठरी में चला गया।

"लाश के साथ ही इन्हें भी दबा दूँगा। छुरी भी रख दूँगा।"
शादाँ ने हैरत से पूछा, "क्यों?" फिर जरा तवक्कुफ (विराम) से बोली, "छुरी तो दे दे। मुझे इसकी ज़रूरत होगी।"
लाली बेपरवाही से बोला, "दूसरी ले आना। मैं जो कुछ कर रहा हूँ करने दे। बीच में अपनी टांग न अड़ा।"
शादाँ ने खामोशी से उसकी बात मान ली। "जैसी तेरी मर्जी।" वह दरवाज़े की जानिब मुड़ी। "मैं तुम दोनों के लिए रोटी-टुक (खाना) ले आऊं।"
लाली ने पूछा, "तें नूँ कहीं दूध तो नहीं पहुँचाना?"
"दूधी (दूध वाले) को पहुँचाना तो है। बाद में पहुँचा दूँगी। फिक्र न कर।"
"नहीं, पहले दूध पहुँचा दे। हर काम वैसे ही कर जैसे रोज़ करती है। हमारी परवाह न कर। हम बाद में भी रोटी खा लेंगे।" वह अपनी बात कहते-कहते लम्हे भर के लिए रुका। "घर में कोई कुदाल होगी?"
"कुदाल तो है।"
"बेलचा भी होगा?"
"नहीं, बेलचा नहीं है। पड़ोस से ले आऊँगी। अभी लाई।" शादाँ दरवाज़े की जानिब बढ़ी।
लाली ने फौरन टोका, "ठहर जा शादाँ! रहने दे, बेलचे के बगैर ही काम बन जाएगा। जैसा कहता हूँ, वैसा कर। मेरा काम मुझ पर छोड़ दे। तू अपना काम कर। मुँह क्या तक रही है मेरा? जा कुदाल और एक टोकरी ले आ।"

शादाँ बाहर चली गई। थोड़ी ही देर बाद कुदाल और टोकरी लेकर वापस आ गई। लाली ने कुदाल और टोकरी संभालकर रहीम दाद से कहा, "आ यारा! थोड़ी सी खुदाई कर लें। फिर इत्मीनान से रोटी खाएंगे।"
"पहले कुछ खा-पी तो ले।" शादाँ ने इसरार (आग्रह) किया।
"खा लेंगे, तू पहले अपना रोज़ का काम निपटा ले। और हाँ, बाहर जाना तो दरवाज़े में ताला ज़रूर डाल देना।" लाली ने छत से लटकी हुई लालटेन उतारी जो अभी तक रोशन थी। उसने लालटेन हाथ में संभाली और रहीम दाद के हमराह कोठरी में चला गया।

उसने अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया। लालटेन की बत्ती ऊँची कर दी। रोशनी बढ़ी और फैली तो फर्श पर चादर से ढकी हुई लाश नज़र आई। रहीम दाद खौफज़दा (डरा हुआ) नज़र आ रहा था। मगर लाली ने लाश की तरफ मुतल्लिक (बिल्कुल) तवज्जो (ध्यान) न दी। इत्मीनान से कुदाल उठाकर आहिस्ता-आहिस्ता ज़मीन खोदने लगा। रहीम दाद टोकरी में मिट्टी भर कर एक तरफ डालने लगा।
ज़मीन तवक्को (उम्मीद) के खिलाफ अंदर से सख्त निकली। एक बार लाली ने कुदाल चलाई तो ज़ोर से 'टन' की आवाज़ आई। लाली ने हाथ रोक लिया। झुककर देखा तो एक भारी पत्थर अड़ा था। उसे निकालने में लाली और रहीम दाद पसीने-पसीने हो गए। ज़रा दम लेने को रुके थे कि दरवाज़े पर आहट हुई। साथ ही शादाँ की आवाज़ उभरी।
"दरवाज़ा खोल। मैं हूँ शादाँ।"
लाली ने दरवाज़ा खोल दिया। रहीम दाद के हमराह (साथ) बाहर आ गया। दोनों बहुत थके हुए नज़र आ रहे थे।
शादाँ ने आहिस्ता से पूछा, "हो गया काम?"
लाली मुँह बिगाड़ कर बोला, "इतनी जल्दी कैसे हो जाएगा काम, क्या तूने हमें गोरकन (कब्र खोदने वाला) समझ रखा है?"
"मुँह हाथ धो लो, मैं अभी तुम्हारे लिए रोटी लाती हूँ।"
दोनों बाहर आँगन में गए और कुएं से पानी निकाल कर मुँह हाथ धोने लगे। अब हर तरफ ज़र्द-ज़र्द (पीली) धूप फैली हुई थी। गली में बच्चे शोर मचा रहे थे। कहीं करीब दो औरतें चीख-चीख कर लड़ रही थीं।
रहीम दाद ने ये आवाज़ें सुनकर बाहरी दरवाज़े की जानिब देखा। दरवाज़ा बंद था और ज़ंजीर चढ़ी हुई थी। दोनों आँगन में ज़्यादा देर नहीं ठहरे। कमरे के अंदर आकर चटाई पर बैठ गए। उन्हें ज़्यादा देर

इंतज़ार नहीं करना पड़ा। शादाँ नाश्ता लेकर आ गई। नाश्ते में रोटी थी, साग था। मिट्टी की ठूठी (बर्तन) में ताज़ा-ताज़ा मक्खन था और दो गिलासों में लस्सी थी। दोनों को सख्त भूख लगी थी। वे खाने पर पिल पड़े। शादाँ उनके करीब ही बैठ गई और इसरार (आग्रह) करके खाना खिलाने लगी। बार-बार मक्खन निकाल कर रोटी पर डाल देती। अपनी भैंस की और उसके दूध की तारीफ करती। उसने अपने बिखरे हुए बाल संवार लिए थे। उसके चेहरे पर हल्का-हल्का दुख का साया था। आँखों में जलते-बुझते चिराग रोशन थे।

उसके जिस्म से पसीने की हल्की-हल्की महक उठ रही थी। वह लाली के बिल्कुल करीब बैठी थी। इतने करीब कि लाली उसके जिस्म की महक महसूस कर सकता था। लाली को उसका इस तरह सामने बैठकर चाव से खाना खिलाना बहुत अच्छा लगा। वह कुछ ज़्यादा ही खा गया।

उसने लस्सी का पूरा गिलास चढ़ाया और ज़ोर से डकार ली। "मज़ा आ गया।" उसने मुड़कर शादाँ को देखा। वह बड़ी तरहदार औरत थी। उसके चेहरे पर ढलती धूप की जगमगाहट थी। शादाँ ने गर्दन को मोड़कर दरवाज़े की जानिब देखा। लाली को शादाँ का यह अंदाज़ भा गया। मुस्कुराकर उससे मुखातिब हुआ, "शादाँ! तू बहुत ज़ोर-आवर है। सोहनी (सुंदर) भी है। क्या बात है तेरी।" वह अपनी बात कहते-कहते रुका। "सच जान, बाला तुझे पहचान नहीं सका। पुंच और घटिया था।"

शादाँ ने झट लाली के मुँह पर हाथ रख दिया। "ऐसी बात मत कर।" उसका हाथ खुरदरा और सख्त था, लहज़ा भी खुरदरा था। "तू मेरे सामने ऐसी गल (बात) नहीं कह सकता।"

"वह तुझे कभी न समझता था। दूध देने वाली मझ (भैंस)। बूढ़ी हो जाए तो कसाई के खूंटे से बांध दो। गलत कह रहा हूँ मैं?"

शादाँ को उसकी बात पसंद नहीं आई। तिलमिला कर चीखी, "यह मेरा और उसका मामला है। तू कौन होता है बोलने वाला? थानेदार है?"

लाली खिसियाना होकर रह गया। उंगली से सर खुजाते हुए नरमी से गोया (बोला) हुआ, "ये बता..."

शादाँ बात काटकर बेज़ारी से बोली, "मुझसे कुछ न पूछ।" वह अभी तक नाराज़ थी। लाली ने कोई बात नहीं की। चुप बैठा रहा। कमरे में गहरी खामोशी छा गई।

रहीम दाद खामोशी से उकता कर बोला, "मुझे तो ऊँघ आ रही है। लाली! तेरा क्या इरादा है?"

लाली के कुछ कहने से पहले ही शादाँ बोल पड़ी, "सो जाओ कुछ देर। रात भर के जागे हुए हो।"

शादाँ के लहज़े में पहले जैसी तल्खी (कड़वाहट) नहीं थी। लाली ने उसका बदला हुआ अंदाज़ देखा तो उसे मुखातिब किया, "तुझे भी तो नींद आ रही होगी। तू सोई कब?"

"मेरी फिक्र न कर। मेरी आँखों में बिल्कुल नींद नहीं। दूधी (दूध वाले) को दूध पहुँचाना है। मलिक की हवेली पर काम करने जाना है। और भी बहुत काम धंधा करना है।" वह खड़ी हो गई। "दरवाज़ा अंदर से बंद कर लेता। वैसे जब मैं बाहर जाऊँगी तो ताला डाल जाऊँगी।" शादाँ कमरे से बाहर चली गई।

रहीम दाद ने उठकर दरवाज़ा बंद किया। दोनों वहीं चटाई पर टांगें फैलाकर लेट गए। रहीम दाद कुछ देर जागता रहा और बेचैनी से करवटें बदलता रहा। लाली लेटते ही सो गया। कुछ देर बाद रहीम दाद को भी नींद आ गई।

दोनों थके हुए और रात भर के जागे हुए थे, बेखबर होकर सो गए। उन्हें कुछ भी खबर न हुई कि शादाँ कब घर से बाहर गई।

कमरे में हल्का-हल्का अंधेरा छाया था। बाहर आँगन में गहरी खामोशी थी। शादाँ अभी तक वापस नहीं आई थी। दोनों उठकर कोठरी में चले गए। दिन की धुंधली-धुंधली रोशनी में खुदाई करते रहे। जब अंधेरा बढ़ गया तो लाली ने लालटेन रोशन कर ली। खुदाई मुश्किल थी। बार-बार कुदाल पत्थरों से टकरा कर पलट जाती। मगर उन्होंने हाथ नहीं रोका। लाली थक जाता तो रहीम दाद कुदाल संभाल लेता। दोनों बारी-बारी ड्यूटी बदलते रहे। बहुत देर बाद दरवाज़े पर दस्तक हुई। लाली ने दरवाज़ा खोला। सामने शादाँ खड़ी थी। लाली और रहीम दाद कोठरी से निकल कर कमरे में आ गए। उन्होंने देखा बाहर आँगन में अंधेरा फैला है। पहर रात गुज़र चुकी थी। गाँव पर भी सन्नाटा छा गया था। शादाँ ने आहिस्ता से पूछा, "कितना काम रह गया है?"

"अभी बहुत काम है। मैं ज़मीन ज़्यादा गहरी खोदना चाहता हूँ।"

"रोटी खा लो।"

लाली आमादा (तैयार) न हुआ, "अभी नहीं, काम खत्म करने के बाद।" रहीम दाद ने भी लाली से इत्तेफाक (सहमति) किया।

दोनों जल्द से जल्द काम निपटा देना चाहते थे। शादाँ ने झुककर सरगोशी (कानाफूसी) की, "कुदाल आहिस्ता चला। आवाज़ सुनाई पड़ती है।"

लाली ने मुस्कुराकर उसे छेड़ा, "ढोल बजाना शुरू कर दे।"

"मस्करी न कर। मैं ठीक कह रही हूँ। मुझे डर लग रहा है।"

"तुझे डर भी लगता है?"

शादाँ झेंप कर रह गई। लाली ने मज़ीद (आगे) कोई बात नहीं की। वह रहीम दाद के हमराह कोठरी में चला गया। खुदाई शुरू हो गई। इस दफा दोनों संभाल-संभाल कर कुदाल चला रहे थे ताकि आवाज़ पैदा

न हो। मगर इस तरह खुदाई की रफ्तार सुस्त पड़ गई। आधी रात से कुछ पहले उन्होंने खूब गहरी कब्र खोद ली।

दोनों ने लाश उठाई और नीचे उतारने लगे।
उस वक्त शादाँ दरवाज़ा खोलकर अंदर आ गई। उसने आते ही लाश के चेहरे से चादर उठा दी और गहरी नज़रों से उसे देखती रही। बाले का बेजान चेहरा मटियाला पड़ चुका था। आँखें खुली हुई थीं और पहले से ज़्यादा ही बेनूर (चमकहीन) हो गई थीं। लाश से हल्की-हल्की बदबू उठ रही थी। लाली ने शादाँ को ज़्यादा देर वहाँ ठहरने नहीं दिया। इस बार शादाँ ने अपने सीने पर न दोहत्थड़ मारा, न चीखी, न रोई। चुपचाप बाहर चली गई। लाली और रहीम दाद ने उसके जाते ही लाश बिस्तर में लपेट कर नीचे लुढ़का दी। शादाँ के खून-आलूद कपड़े और छुरी भी डाल दी और जल्दी-जल्दी पत्थर और मिट्टी डाल कर गड्ढा भरने लगे। गड्ढा भरने के बाद जो मिट्टी बच गई, वह उन्होंने कोठरी में फैला कर बराबर कर दी। रहीम दाद बाल्टी में पानी ले आया।
लाली ने कोठरी के फर्श पर पानी छिड़क दिया। जब हर काम लाली की मर्जी के मुताबिक हो गया तो वह कोठरी का दरवाज़ा बंद करके रहीम दाद के साथ बाहर आ गया। शादाँ दालान में चुप बैठी थी। लाली ने आते ही कहा, "फटाफट रोटी ला। बहुत भूख लगी है।"
शादाँ खामोशी से उठकर खड़ी हो गई। जब वह जाने लगी तो लाली ने टोका, "कल कोठरी में लकड़ियाँ या भूसा भर देना और उसमें ताला लगा देना। तुझसे ये काम न हो तो हम दोनों कर देंगे। फिक्र न कर। सब काम ठीक-ठाक हो गया।"
शादाँ खोई-खोई खड़ी रही फिर खामोशी से चली गई।
मौसम अचानक बदल गया। रात किसी कदर गर्म थी। हवा भी बंद थी। फिज़ा (वातावरण) गुबार-आलूद (धूल भरी) थी। शादाँ ने इसरार भी किया मगर रहीम दाद और लाली चारपाई पर न लेटे। चारपाई दालान में पड़ी थी। शादाँ ने ला कर डाल दी थी।
दोनों उस पर न लेटे तो शादाँ खुद लेट गई। लाली और रहीम दाद जल्दी सो गए। सुबह बहुत तड़के शादाँ ने दोनों को बेदार किया। मगर दोनों पर नींद का गलबा (असर) था। वे दालान से उठकर कमरे में जाकर सो गए और देर तक बेखबर होते रहे।
दिन चढ़े, शादाँ ने आकर फिर उन्हें जगाया। लाली को इशारे से दालान में बुलाया। वह घबराई हुई नज़र आ रही थी।

"ये जो तेरा साथी रहीम है, जेल से भागा हुआ कैदी तो नहीं है?"

लाली इनकार न कर सका, "है तो।"
"तूने इसकी जेल की वर्दी नहीं देखी?"
"और तू भी जेल से भागा है?"
लाली को तशवीश (चिंता) हुई। "तुझे कैसे पता चला?"
"मैं मलिक की हवेली में गई थी।"
लाली ने उसे अपनी बात मुकम्मल (पूरा) न करने दी। बीच में बोल पड़ा, "ये मलिक कौन है?"
"पंड (गाँव) का लम्बरदार है। इसका नाम मलिक अल्लाह नवाज़ है। मलिक की हवेली में थानेदार बैठा था।"
लाली ने बेचैन होकर पूछा, "थानेदार इसकी हवेली में किसलिए आया था?"
"जब से इधर थानेदार लगा है, रोज़ ही मलिक के पास आता है। वह मलिक का भाई जो है।" शादाँ ने कदर-ए-तवक्कुफ (थोड़ी देर रुककर) के बाद बताया, "थानेदार कहता था दो कैदी जेल से भाग गए। अभी तक पकड़े नहीं गए। पुलिस उनकी खोज में जगह-जगह छापे मार रही है।"
शादाँ ने लाली के चेहरे की जानिब देखा जिस पर परेशानी छा रही थी। "इसकी गल्लां (बातें) सुनकर मेरा मत्था ठनका। मुझे झट तुम दोनों की याद आई। रहीम पर तो मुझे पहले ही कुछ शुबा (संदेह) हुआ था।"
"तुझसे तो थानेदार ने कुछ नहीं पूछा।"
"मुझसे क्यों पूछता?" "पर ये ज़रूर कहता था, हर थाने में तुम दोनों की तस्वीरें लगा दी गई हैं। पूरे दो हज़ार पकड़वाने वाले को इनाम मिलेगा।"
"पहले रोटी-टुक (खाना) दे, फिर गल-बात (बातचीत) होगी।"
लाली कमरे में आ गया। उसने रहीम दाद को हर बात बता दी। थोड़ी देर बाद शादाँ लस्सी ले आई। लस्सी के साथ रात की बासी रोटी भी थी। शादाँ उस वक्त भी उनके करीब ही बैठ गई। लाली ने लस्सी पीते-पीते पूछा, "बाले के कपड़े-लत्ते तो तेरे पास होंगे?"
"एक-एक लत्ता ले गया था। वह अपनी हर चीज़ ले गया। उस कंजरी (वेश्या/बुरी औरत) के लिए मेरे राखवां (बचा कर रखे हुए) कपड़े-लत्ते तक चुरा ले गया। जादू कर दिया था उस पर।" उसने ठंडी सांस भरी। वह बात करते-करते यादों के सहारे बहुत दूर चली गई।
"छोड़ ये बातें। काम की बात सुन। तुझे रहीम के लिए कमीज़ और धोती लानी है। जूता भी लाना होगा। जूता तो मुझे भी चाहिए। ये सब कुछ आज ही करना होगा।"
"कोई पूछे तो कह देना बाले के लिए चाहिए।”

"कौई (कोई) पूछे तो कह देना बाले के लिए चाहिए।"
लाली ने अपनी दाढ़ी के बढ़े हुए बालों पर हाथ फेरा। "इस पिंड (गाँव) में दाढ़ी मूँडने के लिए ब्लेड-शेड भी मिल जाएगा?"
"यह तो बहुत वडा (बड़ा) पिंड है। मौज़ा लगता है। यहाँ तो सब कुछ मिलता होगा।"
"पिंड में नाई भी है।" "उसे बुला लाऊँ?" शादाँ ने निहायत सादगी से कहा। फिर कुछ सोचकर बोली, "नहीं... नाई का यहाँ आना ठीक नहीं।" "मैंने तुम्हारे बारे में किसी को बताया भी नहीं।"
रहीम दाद ने ताकीद (ज़ोर देकर) की, "बताना भी नहीं।" "कोई पूछे तब भी न बताना।"
शादाँ हाथ हिलाकर बोली, "फ़िक्र न कर किसी को पता नहीं चलेगा।" वह खड़ी हो गई।
लाली ने उसे टोका, "जो काम मैंने बताया है, फटाफट करना है। अब तू जा।"
उसके जाने के बाद दोनों देर तक बैठे बातें करते रहे, आखिर कमरे का दरवाज़ा बंद करके फर्श पर लेटे और सो गए।
दिन ढले शादाँ वापस आई। उसने आते ही लाली और रहीम दाद को अपनी कारगुज़ारी (किए गए काम) सुनाई। कमीज़ का कपड़ा खरीदकर उसने गाँव के दर्जी को सिलने के लिए दे दिया था और उससे दूसरे दिन दोपहर तक कमीज़ तैयार लेने का वादा भी ले लिया। जूतों के बारे में उसने बताया कि बुधवार को बाज़ार में मिलेंगे। बाज़ार लगने में अभी दो दिन बाकी थे। धोती के बारे में उसने बताया कि उसे भी बाज़ार से खरीद लेगी। अलबत्ता (बहरहाल) वह गाँव की दुकान से एक अदद ब्लेड खरीद लाई थी।
लाली उसकी कारगुज़ारी सुनकर बहुत खुश हुआ। जेब से नोट निकालकर बोला, "मैंने पैसे तो तुझे देने ही नहीं थे। भूल गया था। बोल कितने दे दूँ?"
वह मुँह बिगाड़कर बोली, "रहने दे अपने रुपये रख ले, आगे काम आएँगे। मैं, मलिक की घरवाली से कुछ रुपये ले आई थी। काम चल जाएगा, फ़िक्र न कर।"
शादाँ ज़्यादा देर उनके पास न ठहरी। अभी उसे घर का बहुत काम-काज करना था। वह बड़ी जफ़ाकश (मेहनती) और परिश्रमी औरत थी। हर वक्त कुछ न कुछ करती रहती। कहीं थककर न बैठती। कभी यहाँ, कभी वहाँ, कभी इधर, कभी उधर, उसे पल भर चैन न था। जाते ही वह भैंस के लिए चारा काटने बैठ गई।
ब्लेड हाथ आया तो लाली को दाढ़ी के बाल साफ़ करने की सूझी। रहीम दाद को ऐसा शौक नहीं आया। वैसे उसकी दाढ़ी के बाल इतने बढ़ गए थे कि ब्लेड से मूँडना आसान नहीं था। मगर उसने कपड़े धोने का साबुन और पानी मिलाकर लाली की दाढ़ी के बाल किसी न किसी तौर (तरह) साफ़ कर दिए।

दाढ़ी ठीक से नहीं मुँडी थी। चेहरे पर कई जगह ब्लेड के चरके (कट) भी लग गए थे मगर लाली खुश था। आईना हाथ में लेकर बार-बार अपनी सूरत देखता था।

शाम होते ही दोनों लालटेन लेकर कोठरी में घुस गए। मिट्टी सूखकर जम गई थी। उन्होंने मुआयना (निरीक्षण) करने के बाद लकड़ियाँ और दूसरा काठ-कबाड़ कोठरी में भर दिया। दरवाज़ा बंद करके ताला लगा दिया। शादाँ कोठरी खाली रखना चाहती थी। मगर लाली ने उसकी एक न चलने दी। जो मर्ज़ी में आया वही किया।

रात को खाना खाते हुए लाली ने शादाँ के सामने बाले का फिर ज़िक्र छेड़ दिया। इस मर्तबा (बार) भी उसने बाले को अच्छे अल्फाज़ (शब्दों) से याद नहीं किया। शादाँ एक दम भड़क उठी। "तू चाहता क्या है?"

लाली ने अपने सफ़ा-चट (साफ़) रुखसारों (गालों) पर उंगलियाँ फेरते हुए कहा, "मैं चाहता हूँ तू उसे भूल जा। उससे नफ़रत करने लगे।"

शादाँ जलकर बोली, "और तेरे साथ भाग जाऊँ?" उसने हिक़ारत (घृणा) से अपना मुँह बिगाड़ा। "तू समझता क्या है दाढ़ी मुँडवाकर तू गबरू (जवान) बन गया।" "जा बाहर चाँदनी में पेशाब करके अपनी शक्ल देख ले।"

वह उसकी बात की तल्ख़ी (कड़वाहट) नज़रअंदाज़ कर गया। "मेरा कहा मान अपने बाल-बच्चों के पास चली जा। बहुत यारी-आशनाई कर ली।"

"मैं वहाँ नहीं जाऊँगी।" "कहीं नहीं जाऊँगी।" वह बेज़ारी से बोली।

लाली उसकी आँखों में आँखें डालकर गोया हुआ (बोला), "तू कैसी माँ है? एक मेरी माँ थी।" "मेरे पियो (बाप) ने उसे घर से निकाल दिया था। मुझसे मिलने रातों को छुप-छुपकर आती थी।" "घर के रास्तों पर दिन-दिन भर मेरा इंतज़ार करती थी।" "कई बार मेरे पियो ने उसे बालों से पकड़कर मारा पर वह बाज़ न आई।" "एक बार उसके सर पर ऐसा घुमाकर सोटा (डंडा) मारा कि वहीं ढेर हो गई। साँस भी न ली।" "पियो को उम्रकैद हुई। जाने ज़िंदा है कि मर गया।" लाली आहिस्ता-आहिस्ता यादों के चिराग जलाता रहा। उसने गहरी साँस भरकर कहा, "मगर वह माँ थी।"

शादाँ ने कोई जवाब नहीं दिया। लाली भी न बोला। रहीम दाद भी खामोश था। तीनों देर तक खामोश बैठे रहे। आँगन में चाँदनी उतर आई थी। उसकी रंगत कफ़न की तरह सफ़ेद थी। रात निढाल खड़ी थी।

तीनों अपने-अपने दुखों की पगडंडियों पर भटक रहे थे। कुछ देर बाद शादाँ उठी और खामोशी से बिस्तर पर जाकर सो गई। लाली और रहीम दाद भी अपनी-अपनी जगह लेट गए।

न जाने रात कितनी गुज़र चुकी थी। अचानक लाली की आँख खुल गई। उसने घबराकर देखा, शादाँ उसके सरहाने बैठी है। लाली ने कुछ कहना चाहा तो शादाँ ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया। होंठों पर उंगली रखकर खामोश रहने का इशारा किया। हाथ पकड़कर उसे उठाया और आँगन के आखिरी सिरे पर ले गई।

उजली चाँदनी में उसका चेहरा निखर गया था। आँखों में सितारे झिलमिला रहे थे। वह गर्दन को ख़म (झुकाव) देकर ऐसे ज़ाविए (कोण) से खड़ी थी कि भरपूर औरत नज़र आ रही थी। लाली चुपचाप खड़ा उसे देखता रहा। वह आहिस्ता से बोली, "मेरी एक गल (बात) मान लेगा?"

"बोल क्या कहती है?"

शादाँ ने उसका एक हाथ मज़बूती से थाम लिया। शादाँ का हाथ गरम भी था और गदाज़ (नरम) भी। लाली को उस वक्त ऐसा ही महसूस हुआ। उसकी साँस तेज़ हो गई। शादाँ खिसककर लाली के करीब आ गई। ऐसा लगता था कि वह बेसाख़्ता (स्वाभाविक रूप से) लाली से चिपट जाएगी। मगर शादाँ ने ऐसा नहीं किया। झुकी और झुककर पैर से जूती निकाली। जूती लाली के हाथ में दी और तीखे लहजे में गोया हुई (बोली), "मुझे इससे मार।"

लाली घबरा गया। "क्यों?"

"पहले मुझे मार फेर (फिर) बताऊँगी।"

लाली खफ़ा होकर बोला, "साफ़-साफ़ बता।"

"धीरे बोल।"

लाली ने आहिस्ता से इस्तफ़सार (पूछा) किया, "तू चाहती क्या है?"

वह तड़पकर बोली, "हाय मैं मर गई। मैंने मलिक से साफ़-साफ़ बता दिया, तुम दोनों मेरे घर में छुपे हो।" उसने नज़रें झुकाकर ठंडी साँस भरी। "दो हज़ार के लालच ने मुझे अंधा कर दिया। सोचा एक और मझ (भैंस) खरीद लूँगी। मैंने ठीक नहीं किया।" यह कहते-कहते वह बेकरार हो गई। "लाली मुझे मार, मारता क्यों नहीं? मैं तेरे आगे हत्थ (हाथ) जोड़ती हूँ।" उसने दोनों हाथ जोड़ दिए।

लाली को गुस्सा तो बहुत आया। मगर वह उससे सिर्फ इतना कह सका, "तूने जो करना था कर चुकी। अब मुझे बता क्यों रही है?" उसने शादाँ को तीखी नज़रों से देखा। "तूने यह नहीं सोचा, मुझे और रहिये (रहीम) को पकड़वाकर तू भी तो फँस जाएगी। तूने बाले का खून जो किया है। यह भूल गई?"

"ठीक कह रहा है। अब आगे की सोच। मलिक अपनी घोड़ी पर थाने गया है।" शादाँ ने खौफ़ज़दा (डरी हुई) नज़रों से दरवाज़े की जानिब देखा और सहमे हुए लहजे में बोली, "पुलसे (पुलिस) आते ही होंगे। तुम दोनों यहाँ से चले जाओ। जहाँगीरा से दूर निकल जाओ।"

लाली ने खतरा सर पर मंडराता महसूस किया। वह सख्त परेशान हो गया। लपककर रहीम दाद के पास गया। उसे झकझोर कर गहरी नींद से बेदार (जगाया) किया। सूरत-ए-हाल (हालात) से आगाह (सूचित) किया।
रहीम दाद भी परेशान हो गया। दोनों फ़ौरन चलने पर कमर-बस्ता (तैयार) हो गए। शादाँ भी उनके साथ-साथ चली। लाली के मना करने के बावजूद चली। तीनों घर से बाहर निकले। शादाँ आगे-आगे चल रही थी। लाली चौकस नज़रों से इधर-उधर देखता जा रहा था।
गाँव सुनसान था। उन्होंने मुश्किल से दो फर्लांग फासला तय किया होगा कि रात के सन्नाटे में भारी-भारी बूटों की आवाज़ उभरी। लाली फ़ौरन भाँप गया कि यह पुलिस वालों के कदमों की आहट है। उसने रहीम दाद का हाथ पकड़कर अपनी तरफ खींचा। तेज़ी से आगे बढ़ा और झपाक से करीब के खेतों में घुस गया।
लाली और रहीम दाद अंधेरे में ठोकरें खाते, पौधों से उलझते, गेंहूँ और जौ की फसलों के दरम्यान (बीच) रास्ता बनाते आगे और आगे बढ़ते गए।

दूर से रेल के इंजन की चिंघाड़ सन्नाटे में उभरी। साथ ही लोहे की पटरियाँ खट-खट बजने लगीं। रहीम दाद और लाली सरासीमा (भयभीत) होकर ठहर गए। पलटकर उधर देखने लगे जिधर से रेलगाड़ी आ रही थी। अब रेल की पटरी पर खड़े रहना खतरे से खाली न था। दोनों निशब (नीचे) में उतरे और एक पेड़ की आड़ में खड़े हो गए। पटरियों पर रेलगाड़ी दौड़ने की आवाज़ रफ़्ता-रफ़्ता (धीरे-धीरे) करीब आती गई। ज़रा ही देर बाद सुरमई धुंधलके में इंजन की तेज़ रोशनी उभरी। देखते ही देखते रेलगाड़ी उनके सामने आ गई। दोनों चुपचाप खड़े उसे गुज़रते हुए देखते रहे। पहले इंजन दहाड़ता हुआ गुज़रा, फिर एक डिब्बा, दूसरा डिब्बा, तीसरा डिब्बा गुज़रा। फिर फर्स्ट क्लास का डिब्बा सामने आया। एक खिड़की खुली। दो हाथ एक सूटकेस उठाए बाहर निकले। सूटकेस खिड़की से नीचे गिरा और पटरी के निशब में दूर तक लुढ़कता चला गया। रेलगाड़ी खट-खट करती तेज़ी से आगे निकल गई।
सब कुछ आनन-फ़ानन में हुआ। दोनों हैरान-परेशान जहाँ थे, वहीं खड़े रहे। सूटकेस चंद गज़ के फासले पर उनके सामने पड़ा था। वे चंद लम्हों तक उसे हैरत से तकते रहे, फिर आहिस्ता-आहिस्ता चलते हुए करीब जाकर खड़े हो गए। यह काले चमड़े का सूटकेस था। रहीम दाद ने बेसब्री से झुककर उसे उठाना चाहा।
लाली ने रोक दिया। "ठहर जा रहिये (रहीम)!"
रहीम दाद ने हैरत से पूछा, "क्यों?"

लाली ने मुस्तबा (संदेहपूर्ण) नज़रों से सूटकेस देखा। "मुझे तो कुछ गड़बड़ नज़र आती है।" वह चंद लम्हे खामोश रहने के बाद हिचकिचाते हुए बोला, "यारा! इसके अंदर कहीं कटी-फटी लाश न रखी हो।"
रहीम दाद ने खौफ़ज़दा होकर लाली को देखा और सहमे हुए लहजे में गोया हुआ (बोला), "देखने में भी भारी-भारी लगता है।"
लाली मख़मसे (उलझन) में पड़ गया। खामोश खड़ा सूटकेस को तकता रहा। चंद लम्हे दोनों गो-म-गो (असमंजस) के आलम में खड़े रहे। आखिर लाली ने डरते-डरते हाथ बढ़ाया। सूटकेस का हैंडल पकड़ा, उसे उठाया और आहिस्ता-आहिस्ता ऊँचा-नीचा करके यह अंदाज़ा लगाने की कोशिश की कि अंदर क्या है। सूटकेस ज़्यादा भारी नहीं था। इसके वज़न से साफ़ मालूम होता था कि अंदर कपड़े और दूसरा सफ़री सामान भरा है। लाली के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। "ले यारा बन गया काम!"
रहीम दाद ने बेचैनी से पूछा, "क्या है?"
"यह तो खोलने ही पर पता चलेगा।"
"मुझे तो कपड़े-लत्ते मालूम होते हैं और भी काम की बहुत सी चीज़ें हो सकती हैं।"
"फर्स्ट क्लास के डिब्बे से गिरा है। सामान भी इसमें फर्स्ट क्लास ही होगा।"
"यारा! कैसा खटाक से आकर गिरा जैसे अपने ही लिए फेंका गया हो।"
"यार इसे खोलकर तो देख!" रहीम दाद अपनी बेकरारी पर ज़्यादा देर काबू न रख सका।
"यहाँ नहीं आगे चलकर। अब यहाँ ज़्यादा देर ठहरना ठीक नहीं।" वह सूटकेस एक हाथ में लटकाकर चलने लगा। रहीम दाद भी उसके साथ-साथ आगे बढ़ा। दोनों निशब (नीचे) से निकलकर ऊपर आ गए। हर तरफ 'हू' का आलम (सन्नाटा) था। रेलगाड़ी की पटरी धुंध में लिपटी सुनसान पड़ी थी।
दोनों आहिस्ता-आहिस्ता पटरी के साथ-साथ चलने लगे। मगर वे उधर नहीं गए जिधर रेलगाड़ी गई थी बल्कि उस तरफ बढ़ने लगे जिधर से आई थी। मुश्किल से वे पचास-साठ कदम आगे गए होंगे कि नागाह (अचानक) पेड़ों तले सूखे पत्तों पर आहट उभरी। उन्होंने घबराकर उस तरफ देखा। एक शख्स अंधेरे से निकलकर उनकी तरफ बढ़ रहा है। धुंधली रोशनी में दोनों उसका चेहरा न देख सके। उसने दूर से ललकारा, "अरे छोड़! सूटकेस रख दे।"
लाली जहाँ था वहीं ठहर गया। लेकिन उसने सूटकेस नहीं छोड़ा।
अजनबी और करीब आ गया। इस दफा वह ज़्यादा गरजदार आवाज़ से बोला, "देखता क्या है? जैसा कहता हूँ वैसा कर।" वह झपटने के अंदाज़ में तेज़ी से लपका। लेकिन आगे बढ़ते-बढ़ते ठिठककर हैरत से चीखा, "ओए लाली! कितने हरामी हो।"
लाली ने फ़ौरन उसे पहचान लिया। वह अशरफ़ था। कई साल पहले वह उसके गिरोह में शामिल था। जेल में भी साथ रह चुका था। अशरफ़ प्यार से गालियाँ देता हुआ करीब आया और लाली के गले से

लिपट गया। निहायत गर्मजोशी से उसे अपने बाज़ुओं में भींचने लगा। उसने अलग होकर लाली को ऊपर से नीचे तक देखा।

उसकी मलगजी (गंदी) बुश-शर्ट और पतलून देखी, बढ़ी हुई हजामत और गर्द (धूल) से भरे हुए बाल देखे। कबीदा-खातिर (दुखी) होकर बोला: "यार! तूने यह अपना हुलिया क्या बना रखा है?"
लाली ने मुस्कुरा कर बेनियाज़ी (लापरवाही) से कहा: "तुझे नहीं मालूम?"
"मुझे पता है तू मंटगुमरी जेल से भागा हुआ है। नसीरा तो तेरे साथ ही जेल में था। परसों छूट के आया है। वही बताता था।" उसने मुड़कर रहीम दाद को देखा। वह लाली के पीछे खड़ा था। अशरफ ने उसकी जानिब इशारा किया: "यह तेरे साथ का दूसरा मफरूर (फरार) कैदी है न? इसकी जेल की वर्दी तो बदलवा दी होती। यह साफ़ तुझे पकड़वा देगा।"
लाली ने उसकी बात नज़रअंदाज़ करके पूछा: "यह बता इतने सवेरे-सवेरे यहाँ कैसे आ पहुँचा?"
"ड्यूटी पर था।" अशरफ ने सूटकेस की तरफ इशारा किया: "इसके इंतज़ार में था।"
"कुछ ऊँचा चक्कर लगता है।" लाली ने आँख मार कर पूछा: "मामला क्या है?"
"बाद में बताऊँगा। पहले यह बता तेरा प्रोग्राम क्या है?"
"मेरा क्या प्रोग्राम है।" लाली के होंठों पर ज़हर-खंद (कड़वी मुस्कान) थी। "छुपता-लगता फिरता हूँ। न रहने का ठिकाना है न रोटी-टुक (भोजन) का। कभी यहाँ कभी वहाँ।"
"ऐसा कर मेरे साथ चल।" उसने लाली का कंधा हौले-हौले थपथपाया। "रास्ते की परवाह न कर। कोई आँख उठा कर नहीं देखेगा। इधर अपनी ही अमलदारी (अधिकार क्षेत्र) है। लाहौर तक की मैं गारंटी लेता हूँ।"
"ऐसा कर। सूटकेस खोल। अपने मतलब के कपड़े निकल आए तो बन गया काम।"
अशरफ सूटकेस खोलने पर आमादा (तैयार) न हुआ। "यह सिंडिकेट का माल है। इसे सिर्फ बॉस खोल सकता है।"

"बॉस?" लाली ने हैरत से उसे देखा। "यह बॉस क्या चीज़ है?"
"बहुत ऊँची चीज़ है। फर्स्ट क्लास से नीचे नहीं चलता। कराची गया है।"
"सूटकेस उसने फेंका था?"
"हाँ।" अशरफ ने जवाब दिया। "मैं भी उसी ट्रेन में था। फर्स्ट क्लास के साथ वाले इंटर के डिब्बे में था। पीछे कादराबाद स्टेशन है। वहीं उतर गया था।" उसने हाथ उठा कर इशारा किया: "कादर... यह रहा सामने आउटर सिग्नल।"

लाली ने सूटकेस उसके हवाले कर दिया। "ले संभाल अपनी अमानत।" उसने मुस्कुरा कर पूछा: "कितना माल-पानी होगा इसके अंदर?"
"मुखबिर ने तो लाख रुपये से ऊपर की इत्तिला (सूचना) दी थी। माल ज़्यादा भी हो सकता है। कैश के अलावा जड़ाऊ ज़ेवरात जा रहे थे इसमें।" उसने सूटकेस का हैंडल पकड़ कर उठाते हुए कहा: "अपना सिंडिकेट छोटा शिकार नहीं मारता।"
लाली मरऊब (प्रभावित) होकर बोला: "यारा! यह तो बहुत ऊँचा चक्कर जान पड़ता है, पर खतरनाक भी उतना ही है।"
"कोई खतरनाक-शतरनाक नहीं।" अशरफ ने हँस कर बताया। "महीने-सवा महीने में सिर्फ एक बार निकलते हैं और तगड़ा शिकार मारते हैं। अकेले नहीं खाते, मिल-बाँट के खाते हैं। ऊपर से नीचे तक सब का हिस्सा बँधा है। अपने पर कोई आसानी से हाथ नहीं डाल सकता।" उसने एक आँख दबाई: "जी चाहे तो लग जा लाइन में। बोल क्या कहता है? चलता है मेरे साथ?"
लाली ने मुड़कर रहीम दाद की जानिब देखा। "चलेंगे तो हम दोनों ही चलेंगे। तू सूटकेस खोलने को तैयार नहीं। फिर अपना रास्ता कैसे चलेगा।"
"अपनी बात कर।" अशरफ ने रहीम दाद को नज़र भर कर देखा। "यारा बुरा न मानना। यह तो देखने ही में यतीम-मिस्कीन (बेचारा) लगता है। इसे खामख्वाह निकाल लाया। एक बार पूरी सज़ा काट लेने दे, फिर फर्राटे (आज़ाद) होकर निकलेगा। अभी तो बहुत कच्चा है।"
"शर्फे (अशरफ)! बहुत ऊँचा न उड़, मारा जाएगा। यह बता मेरी जगह कोई और होता तो क्या करता?" अशरफ ने गर्दन ऊँची की: "पूरा राशन (इंतज़ाम) लेकर चलता हूँ।" उसने पतलून की जेब से पिस्तौल निकाला और लाली के सामने घुमा-फिरा कर बोला: "पूरा लोड है। क्या समझा?" उसने कलाई पर बँधी हुई घड़ी देखी: "छीती (जल्दी) फैसला कर, बोल क्या कहता है? मेरे पास टाइम बहुत कम है।" उसने मुड़ कर...

...पीछे देखा। "यूसुफ वाला स्टेशन से ट्रेन आने ही वाली है। मुझे उसी से वापस लाहौर जाना है।"
रहीम दाद बीच में बोल पड़ा: "चला जा लाली! मेरी परवाह न कर।" उसका लहज़ा बुझा-बुझा था। "जो नसीब में लिखा है हो के रहेगा।"
लाली ने उसे गुस्से से डाँटा: "चुप कर रहिये (रहीम) बकवास न कर। यह मेरा और शर्फे का मामला है। खामख्वाह अपनी टाँग बीच में न अड़ा।" उसने रहीम दाद का बाज़ू पकड़ा, उसे अपनी तरफ खींचा और कमर में हाथ डाल कर बेतकल्लुफी से बोला: "शर्फे! यह अपना जिगर है। इसे मैं नहीं छोड़ सकता। तू जा, मेरा तेरा रास्ता अलग है।"

"जैसी तेरी मर्ज़ी। जी तो चाहता था तू साथ चलता।" यह कहते हुए उसने जेब से बटुआ निकाल कर कुछ नोट निकाले और लाली की तरफ बढ़ा कर मुखातिब हुआ: "यह रख ले, काम आएँगे। प्यारे! हम तो यारों के यार हैं।"

लाली ने रुपये लेने से इनकार कर दिया। "इन्हें अपने ही पास रख। यारी-दोस्ती की बात करता है तो उतार दे अपनी कमीज़, पतलून। तुझसे ज़्यादा मुझे इसकी ज़रूरत है।" अशरफ हक्का-बक्का खड़ा रहा।

लाली मुँह बिगाड़ कर बोला: "जा! देख लिया तुझे भी। खाली पीली बढ़कें मारना जानता है। ओंह!" उसने झुँझला कर ज़मीन पर थूक दिया।

अशरफ भड़क उठा: "गाली न दे लाली!" वह जल्दी-जल्दी अपनी कमीज़ उतारने लगा। "तू भी उतार अपने कपड़े, छीती नाल (जल्दी के साथ)। टाइम बहुत कम है।"

दोनों ने झटपट कपड़े उतारे और एक-दूसरे से बदल लिए। लाली ने अशरफ का जूता भी हथिया लिया। वह उसके पैरों में बिल्कुल फिट था। कपड़े अलबत्ता (बेशक) ज़रा ढीले थे। मगर लाली के जिस्म पर बुरे नहीं लगते थे।

अशरफ ने ज़िद कर के लाली की जेब में पचास रुपये भी डाल दिए। लाली ने कहा: "यार! ज़रा ठहर। इधर का कुछ अता-पता तो बता। अपने को तो कुछ नहीं मालूम। चाहता हूँ जल्द से जल्द इस ज़िले से बाहर निकल जाऊँ। तू बता क्या करूँ?"

अशरफ ने बताया: "ऐसा कर, रेलवे लाइन के उस पार निकल जा। आगे मुल्तान रोड है। उससे कुछ ही दूर आगे नहर लोअर बारी दोआब है। उसे पार कर ले तो झंगर (झाड़ियाँ) और टीले हैं। तेरे लिए बहुत महफूज़ (सुरक्षित) ठिकाना है। दिन भर वहाँ रह, रात को चक 76 की तरफ निकल जा। खब्बे हत्थ (बाएँ हाथ) को है। उधर से सीधी सड़क नूर शाह जाती है। नूर शाह न जाना। नूर शाह से पहले फिर नहर आएगी। उसके किनारे-किनारे चलता हुआ आलम शाह पहुँच जा। रावी नदी नज़दीक ही है। किसी पत्तन (घाट) पर पहुँच कर बेड़ी (नाव) में बैठ कर दरिया के दूसरी तरफ पहुँच जा। वहाँ से ज़िला लायलपुर शुरू हो जाएगा। मैं इस रास्ते से दो बार लायलपुर जा चुका हूँ। लायलपुर पहुँच कर जी चाहे तो मेरे पास लाहौर आ जाना। देख! ज़रूर आना।"

लाली ने अशरफ को गर्मजोशी से गले लगाया और पेशानी (माथा) चूम कर मोहब्बत से रुखसत (विदा) किया। अशरफ सूटकेस उठा कर आगे बढ़ गया। वह लाली की मैली-कुचैली बुश-शर्ट, तंग और ऊँची पतलून और बड़े-बड़े जूतों में भद्दा और बेढौल लग रहा था। लाली उसे जाते हुए दूर तक देखता रहा, मगर अशरफ ने पलट कर नहीं देखा। वह तेज़ी से कदम उठाता कादराबाद स्टेशन की जानिब बढ़ रहा था। जब वह नज़रों से ओझल हो गया तो दोनों पटरी उबूर (पार) करके उस पार चले गए। कुछ ही दूर गए

थे कि सड़क आ गई। यह मुल्तान रोड थी और इस वक्त बिल्कुल वीरान थी। वे सड़क के दूसरी जानिब उतर गए। नहर भी ज़्यादा फासले पर न थी।

दोनों नहर पर पहुँचे। कुछ दूर उसके किनारे-किनारे चले। पुल आ गया। पुल से गुज़र कर वे नहर के उस पार पहुँच गए।

अशरफ ने ठीक ही कहा था। नहर के किनारे खजूर के चंद दरख़्त (पेड़) थे। उनके अक़ब (पीछे) में जंगली दरख़्तों और झाड़ियों से भरा हुआ झंगर था। हर तरफ 'हू' का आलम (सन्नाटा) था। वे झाड़ियों के दरमियान (बीच) से गुज़रते हुए आगे बढ़ते गए। झंगर खत्म हुआ तो ऊँचे-नीचे टीलों और टिब्बों का सिलसिला शुरू हो गया। वे एक टीले पर चढ़ने लगे। ऊपर पहुँचे तो फराश (एक प्रकार का पेड़) के ऊँचे-ऊँचे दरख़्त दूर तक बिखरे हुए थे। उनके साथ-साथ दूसरे जंगली दरख़्त थे। झाड़ियाँ भी थीं। टीले की बुलंदी (ऊँचाई) से उन्होंने पीछे मुड़कर नज़र डाली। सुबह की हल्की-हल्की दूधिया रोशनी में झंगर के उस पार नहर लोअर बारी दोआब चाँदी के तार की तरह झलमला रही थी। वे ढलानों से उतरते, चढ़ाइयों पर चढ़ते और आगे चले गए। अब वे बहुत थक चुके थे। उन्हें किसी महफूज़ ठिकाने की तलाश थी। दोनों ने इधर-उधर नज़रें दौड़ाईं। कुछ फासले पर उन्हें झाड़ियों का झुंड नज़र आया। करीब ही कुबड़ों की मानिंद (तरह) झुके हुए दो पथरीले टीलों के दरमियान ऐसा रास्ता था जिसके ऊपर टीलों की चोटियाँ मिलने से मेहराब (arch) बन गई थी। यहाँ वे रूपोश (छिपना) हो सकते थे। धूप से बच कर दिन में सो भी सकते थे। हर तरफ वीरानी ही वीरानी थी और उन्हें इस वक्त वीरानी ही की ज़रूरत थी। दोनों संभल-संभल कर कदम रखते हुए ढलान से नीचे उतरे और मेहराब के सामने जा क खड़े हो गए। मेहराब उनके कद से ऊँची थी। अंदर की ज़मीन खासी हमवार (समतल) थी। उसमें सख्त मिट्टी के डले और पत्थर थे। मगर साफ़-सुथरी थी। मेहराब से ज़रा हट कर फराश का एक दरख़्त सर उठाए खड़ा था। मेहराब के दूसरी तरफ का मुँह भी थोड़ा सा खुला हुआ था। उसके ऐन (ठीक) नीचे गहरा खड्डा था। खड्डे में रेतीली मिट्टी के ऊँचे-ऊँचे टीले थे।

रहीम दाद ज़्यादा खड़ा न रह सका। मेहराब के नीचे चला गया और निढाल होकर ज़मीन पर लेट गया। लाली भी उसके बराबर लेट गया। दोनों देर तक खामोश पड़े रहे। बाहर दरख़्तों और टीलों पर ज़र्द-ज़र्द (पीली) धूप फैलती जा रही थी। रहीम दाद ज़मीन पर चित लेटा था। उसने करवट बदली। लम्हे भर लाली के चेहरे को तकता रहा, फिर गिला (शिकायत) करने के अंदाज़ में बोला: "मैंने पहले ही कहा था, शादाँ खतरनाक जणानी (स्त्री) है।"

"है तो।" लाली ने उसकी जानिब देखे बगैर कहा। "पर उसमें एक बात है जो हर जणानी में नहीं होती।"

रहीम दाद हैरत से बोला: "वह क्या?"

"शादाँ खरा रुपया है, बजाओ तो 'टन' से बोले।"

रहीम दाद ने एहतिजाज (विरोध) किया: "क्या बात कर रहा है लाली? बाल-बाल बच गए। वरना उसने तो मरवा दिया था दोनों को।"

"दो हज़ार बहुत भारी रक़म (रकम) होती है रहिये

" वह अपनी बात कहते-कहते लम्हे भर को रुका। "मेरी तो सगी मौसी ने सिर्फ दो सौ रुपये के लिए मुझे आग में झोंक दिया था।"

"चोरी की होगी?"

"नहीं।" लाली उसी तरह चित लेटा ऊपर देखता रहा और आहिस्ता-आहिस्ता बोलता रहा: "मैंने उसके दो सौ के नोट दीवे (दीये) से जला कर रोशनी की थी। उन दिनों में बहुत छोटा होता था। शब-ए-बरात पर माँ के साथ मौसी के घर गया था।"

रहीम दाद ने तीखे लहज़े में कहा: "बहुत जालिम थी।"

"यह बात भी नहीं।" लाली एक टाँग पर दूसरी टाँग रख कर हौले-हौले हिलाने लगा। "मेरा मौसा दर्जी था। सिलाई की मशीन बेच कर अपनी बेटी के व्याह (विवाह) के लिए दो सौ रुपये लाया था। मौसी उसकी दूसरी घर वाली थी। पहली मर गई थी और उसकी बेटी का व्याह था।”

उसकी बेटी का व्याह था। मैंने मौसा के दो सौ रुपये जला डाले तो वह गुस्से से पागल हो गया। जलता दीवा उठाकर मौसी के मुँह पर मारा। उसकी एक आँख जल गई। उसने अपना गुस्सा मुझ पर उतारा। मुझे धक्का देकर जलते अलाव में फेंक दिया। माँ न होती तो जलकर मर जाता। ठीक ही होता।" लाली की आवाज़ में दर्द की टीस थी।

रहीम दाद खामोश रहा। लाली भी न बोला।

दोनों यादों की धूप-छाँव में डोलते रहे। आखिर उनकी आँख लग गई। वे गहरी नींद सो गए। धूप टीलों की बुलंदी से ज़ीना-ज़ीना (सीढ़ी-दर-सीढ़ी) नीचे उतर रही थी। अंधेरी घाटियाँ रोशन हो गई थीं। दिन का एक पहर गुज़र गया। दोपहर हो गई। दिन ढलने लगा। सूरज का अलाव सर्द पड़ गया। दोनों बेखबर सोते रहे।

☆

हल्का-हल्का अंधेरा फैल रहा था। लाली उठकर बैठ गया। रहीम दाद अभी तक बेखबर सो रहा था। लाली ने उसे बेदार (जगाने) करने की कोशिश नहीं की। सख्त भूख लगी थी। वह उठकर खड़ा हो गया। रहीम दाद को सोता छोड़कर बाहर निकला और कुछ देर खामोश खड़ा सोचता रहा। फिर एक तरफ चल दिया। आगे बढ़कर वह आहिस्ता-आहिस्ता निशब (ढलान) में उतरने लगा। हवा में हल्की-हल्की खुनकी (ठंडक) थी। डूबते सूरज की नारंजी किरणें दरख़्तों की ऊँची-ऊँची शाख़ों पर झलमला रही थीं। नीचे घाटी में नील-गूँ (नीली) धुंध का साया फैल रहा था। लाली आगे बढ़ा तो सरस के दरख़्तों का झुंड

नज़र आया। उनमें पीले-पीले फूलों के गुच्छे झूल रहे थे। उनकी महक हवा में बसी हुई थी। फिज़ा (वातावरण) में पहली रात की दुल्हन की सी छवि थी और लाली को तीव्र भूख लगी थी।
वह टीलों और टिब्बों के दामन में ऊँचे-नीचे ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलता हुआ दूर तक चला गया। यकायक तेज़ बदबू का झोंका आया। लाली ठहर गया। उसने एक टीले की बुलंदी (ऊँचाई) से देखा कि कुछ फासले पर एक मुर्दा खच्चर पड़ा है। दो गिद्ध उसका गोश्त नोच-नोच कर खा रहे हैं। ऊपर, पाँच-छह गिद्ध कतार में बैठे थे और उड़ने के लिए पर तौल रहे थे। मुर्दा खच्चर के जिस्म से उठती हुई तेज़ बू के बावजूद लाली वहीं खड़ा रहा और गर्दन ऊँची करके मुतजस्स (जिज्ञासु) नज़रों से इधर-उधर देखने लगा।
दूर फ़राश के दरख़्तों के पीछे से धुआँ उठ रहा था जो शाम के धुंधलके में आहिस्ता-आहिस्ता विलीन होता जा रहा था। यह इस बात की अलामत (संकेत) थी कि करीब ही कोई आबादी है। वह उसी तरफ चल दिया। नज़दीक जाकर देखा, टीलों के दामन में चिड़िया की बीट की तरह का ऊँचा और उभरा हुआ मैदान है।

मैदान में जगह-जगह ऊँट के स्याह (काले) बालों के बने हुए नमदे के खेमे (तंबू) लगे हैं। इन खेमों को खानाबदोश पावन्दे 'डेरे' कहते हैं। खेमे फटे-पुराने थे और बेतरतीबी से इधर-उधर बिखरे हुए थे। खेमों के आस-पास ऊँट और खच्चर बंधे थे, भेड़ों के रेवड़ भी थे। खेमों के बाहर आग रोशन थी। लाली ने दूर ही से भाँप लिया कि वहाँ पावन्दों ने पड़ाव डाला है।
वह मैदान में पहुँचने के लिए मुड़ा। झटपटे (धुंधलके) में उसने देखा कि दो खानाबदोश लड़कियाँ आपस में गुत्थमगुत्था हैं। एक-दूसरे के बाल नोच रही हैं। ज़ोर-ज़ोर से चीख रही हैं। उनके करीब ही ज़मीन पर सूखी शाख़ों के गट्ठर रखे थे। सामने मिट्टी के तौदे (ढेर) पर एक नौजवान पावन्दा बैठा निहायत सुकून से लड़कियों को एक-दूसरे के झोंटे खसोटते देख रहा था। लाली की आहट सुनकर नौजवान ने पलटकर सहमी हुई नज़रों से देखा। ज़रा देर हक्का-बक्का बैठा रहा। फिर एकदम उठकर खेमों की सिम्त (ओर) भागा।
लड़कियाँ भी ढींगा-मुश्ती छोड़कर लाली को हैरत से तकने लगीं। उनके लिबास बोसीदा (पुराने) और गंदे थे। बालों की छोटी-छोटी मेंढियाँ (चोटियाँ) थीं जो झोंटे खसोटने से बिखरकर मुँह पर आ गई थीं। उनकी आँखों में गहरा काजल था। रुखसार (गाल) ताज़ा सेब की तरह गुलाबी थे। वे बंजर टीलों पर उगने वाले जंगली फूलों की मानिंद (तरह) थीं जिनमें रंग ही रंग होता है, खुशबू और महक नहीं होती। तोड़ो तो हाथ में काँटे चुभ जाएँ।

एक खानाबदोश लड़की बढ़कर लाली के करीब आई। उसके पहलू से लग के इस तरह खड़ी हो गई कि उसके बदन की तेज़ बू लाली की साँस में घुल-मिल गई। लड़की ने सर झुकाकर अपने बिखरे हुए बाल दिखाए और दूसरी लड़की की तरफ इशारा करके बोली। "इसने मुझे मारा है।" यह कहते हुए वह सटकर लाली के इस कदर करीब आ गई कि उसकी भरी-भरी छातियाँ लाली के बाज़ू में पैवस्त (धंस) हो गईं। लाली ने झुरझुरी ली और बेरुखी से उसे ज़ोर से धक्का दिया।
"परे हटकर बात कर।" लड़की के भूरे-भूरे बाल और बिखर गए। वह लड़खड़ाकर गिरते-गिरते बची। उसने लाली को कहर-आलूद (क्रोध भरी) नज़रों से देखा।
दूसरी ने ज़ोर का कहकहा लगाया और लाली की आँखों में आँखें डालकर बोली। "डेरे जाता है?"
"हाँ जी।" लाली ने संक्षिप्त जवाब दिया।
मज़ीद (आगे) कोई बात-चीत न हुई। खानाबदोश लड़कियों ने करीब पड़े हुए लकड़ियों के गट्ठर उठाकर...

...सरों पर रखे और हिरणियों की तरह चौकड़ियाँ भरती आन की आन में नज़रों से ओझल हो गईं। लाली आहिस्ता-आहिस्ता डेरे की जानिब चला। वह ज़्यादा दूर नहीं गया था कि एक बूढ़ा पावन्दा दो नौजवानों के हमराह (साथ) खेमों के पीछे से निकला और लाली की तरफ बढ़ने लगा। करीब आकर तीनों पावन्दों ने मुस्तबा (संदेहपूर्ण) नज़रों से लाली को देखा। बूढ़ा पावन्दा खुरदरे लहजे में बताने लगा कि पड़ाव रात ही को खत्म हो जाएगा और सुबह तड़के काफिला कूच (प्रस्थान) करेगा। वे मुज़फ़्फ़रगढ़ के रास्ते डेरा ग़ाज़ी खान जा रहे हैं। बूढ़ा पूछे बगैर लाली के सामने सफाई पेश कर रहा था। उसे यकीन दिला रहा था कि काफिले का ताल्लुक किसी जरायम-पेशा (अपराधी) गिरोह से नहीं है।

☆

लाली कई बरस पहले चंद रोज़ के लिए पावन्दों के डेरे में कयाम (निवास) कर चुका था। चुनाँचे (अतः) वह उनकी आदतों, तौर-तरीकों और उनके तर्ज़-ए-ज़िंदगी से किसी हद तक वाकिफ (परिचित) था। उसे यह भी मालूम था कि ये पावन्दे उन खानाबदोश काफ़िलों में से हैं जो मौसम-ए-सरमा (सर्दियों) शुरू होते ही अफगानिस्तान के कोहस्तानी दर्रों (पहाड़ी दर्रों) से निकलकर पंजाब और सिंध के मैदानी इलाकों में फैल जाते हैं। ईंटों के भट्टों पर थपेरों का काम करते हैं। देहात के कच्चे मकानात के लिए मिट्टी की दीवारें खड़ी करते हैं। शहरों और कस्बों में मेहनत-मज़दूरी करते हैं। कंबल और नमदे, भेड़ और लोमड़ी की खालें, कराकुली टोपियाँ, जड़ी-बूटियाँ, खुश्क मेवे, हींग और मुश्क, घोड़े, ईरानी बिल्लियाँ और ग्रे-हाउंड शिकारी कुत्ते फरोख्त (विक्रय) करते हैं। उनकी औरतें सख्त जफ़ाकश (मेहनती), परिश्रमी और मुँह-ज़ोर (बेबाक) होती हैं। इस कदर आज़ाद और बेबाक होती हैं कि गैर मर्दों के सामने भी ज़रा हिजाब

(संकोच) महसूस नहीं करतीं। पावन्दे औरतों और बच्चों के साथ ऊँटों और खच्चरों पर सवार होकर खेमे और सामान लादकर एक जगह से दूसरी जगह सफर करते हैं।
सफर के दौरान मर्द और औरतें मिलकर कोहस्तानी नग़मे (पहाड़ी गीत) अलापते हैं। नग़मों के साथ-साथ ऊँटों के गले में बंधी हुई पीतल की घंटियाँ बजती हैं जो नग़मे की लय के साथ हम-आहंग (तालमेल) होकर साज़ (वाद्ययंत्र) का काम देती हैं। काफिले की हिफाज़त के लिए पावन्दे अपने हमराह रूसी नस्ल के कुत्ते रखते हैं। ये कुत्ते बर्फ की तरह सफ़ेद और कोताह-कामत (छोटे कद वाले) होते हैं। दरख़्तों में पतझड़ लगते ही पावन्दों की वापसी शुरू हो जाती है। वे दरिया-ए-सिंध उबूर (पार) करके पहले डेरा इस्माइल खान पहुँचते हैं जहाँ दूर-दराज़ के इलाकों में बिखरे हुए काफिले मुख्तलिफ सिम्तों (विभिन्न दिशाओं) से आकर इकट्ठा होते हैं। यह उनका आखिरी पड़ाव होता है। गर्मी बढ़ने से पहले-पहले वे दर्रा-ए-गोमल के...

...रास्ते जहाँ से आते हैं वहीं लौट जाते हैं। पावन्दों में जरायम-पेशा (अपराधी) भी होते हैं जो डाका-ज़नी और मवेशियों की चोरी करते हैं या चरस और अफीम का नाजायज़ धंधा करते हैं। यही वजह है कि पुलिस उनकी नक्ल-ओ-हरकत (आवाजाही) की कड़ी निगरानी करती है। वे जहाँ पहुँचते हैं, वहाँ के थाने में अपनी आमद (आगमन) की बाकायदा इत्तिला (सूचना) देते हैं। बूढ़े की जानिब से ख़्वाह-म-ख़्वाह सफाई पेश करने पर लाली ने जल्द ही भाँप लिया कि पावन्दे उसकी पतलून और उजली कमीज़ से सख्त मरऊब (प्रभावित) हो गए हैं। उसे पुलिस या सी.आई.डी. का अफसर समझ रहे हैं। लाली उनकी गलतफहमी से फायदा उठाकर उन्हें हरासाँ (परेशान) करना नहीं चाहता था।
मगर इस वीराने में अपनी आमद का भी उसे कोई न कोई उज़्र (बहाना) पेश करना था। लिहाज़ा उसने यह ज़ाहिर किया कि महकमा-ए-जंगलात (वन विभाग) के सरकारी काम के सिलसिले में इधर आया है। लेकिन उसके अमले (स्टाफ) के दूसरे लोग अभी पहुँच नहीं सके। इसके बाद उसने सीधी-सीधी मामले की बात की। उन्हें बताया कि वह सख्त भूखा है और भूख ही से बेकरार होकर इस तरफ आया है। वह उनके हमराह एक खेमे के अंदर गया, उनका मेहमान बना। कटोरा भर भेड़ का दूध पिया। शहद और पनीर खाया। कहवे का गरम-गरम प्याला पिया। मकई की मोटी रोटियाँ लीं। शहद और पनीर लिया। मश्कीज़े (चमड़े का थैला) में पानी लिया। हाथ का बना हुआ कंबल और एक नमदा लिया। भेड़ की चर्बी से जलने वाला चिराग लिया और एक तेज़ धार छुरी भी ली। तीस रुपये में यह सौदा किसी तौर बुरा न था। पावन्दों ने उसे चरस भरी सिगरेट भी पिलाई। चरस पर दम लगा के लाली के जिस्म में सरख़ुशी (मस्ती) और जौलानी (तेजी) आ गई। खानाबदोश उसके हाथ चरस भी फरोख्त (बेचना) करना चाहते थे मगर लाली इस चक्कर में नहीं पड़ा।

वह ज़्यादा देर वहाँ ठहरा भी नहीं। शाम गहरी हो गई थी। अंधेरा बढ़ गया था। रास्ता ऊबड़-खाबड़ और पेचीदा था और चढ़ाई भी चढ़नी थी। वह जल्द से जल्द रहीम दाद के पास पहुँच जाना चाहता था। उसे शिद्दत (तीव्रता) से महसूस हो रहा था कि रहीम दाद उसकी अचानक गैर-हाज़िरी से सख्त परेशान होगा। दो पावन्दे दूर तक उसके हमराह आए। वे और भी आगे तक उसके साथ जाने पर आमादा (तैयार) थे मगर लाली ने एक मोड़ पर उन्हें रुखसत (विदा) कर दिया। वह उन्हें न तो अपना ठिकाना दिखाना चाहता था न अपने बारे में किसी किस्म की इत्तिला पहुँचाना चाहता था। इसलिए कि पुलिस वाले बराबर उनसे पूछ-ता .करते रहते हैं।

लाली एक टीले की आड़ में खड़ा उन्हें दूर तक वापस जाते देखता रहा। जब वे नज़रों से ओझल हो गए तो वह आगे बढ़ा। उसने ऊबड़-खाबड़ चढ़ाई उबूर (पार) की और सामान से लदा-फंदा मेहराब के करीब पहुँच गया।

☆

रहीम दाद आहट सुनकर घबराया हुआ बाहर आया। वह सख्त परेशान था। मगर लाली ने कोई बात नहीं की। दीवार से टेक लगाकर बैठ गया और गहरी-गहरी साँसें भरने लगा। रहीम दाद अंधेरे में एक-एक चीज़ टटोलकर देखने लगा। जब उसने कंबल की तह खोली और अंदर से ताज़ा-ताज़ा रोटियों की सौंधी-सौंधी महक निकली तो वह बच्चों की तरह चहककर बोला। "अहो हो यारा कमाल कर दिया! रोटियों का चब्बा (टुकड़ा) तो बिल्कुल गरम-गरम है। शहद और पनीर भी है।" लाली ने उसे सूचित किया। जेब से माचिस निकाली, झुककर चिराग उठाया और उसे रोशन कर दिया। हवा तेज़ थी, चिराग की लौ बार-बार भड़कती। लाली ने इधर-उधर से पत्थर इकट्ठा करके चिराग उनकी ओट में रख दिया। इस तरह वह हवा से महफूज़ (सुरक्षित) हो गया। रोशनी भी बाहर जाने के बजाय सीमित होकर रह गई।

रहीम दाद ने ज़मीन पर नमदा बिछा दिया। दोनों उस पर बैठ गए। लाली पावन्दों के डेरे का हाल बताने लगा। रहीम दाद ने रोटियाँ निकालकर बाहर रखीं। आठ रोटियाँ थीं। मोटी-मोटी और खूब बड़ी-बड़ी।

"यह 8 दिन का राशन है।" लाली ने पावन्दों से खरीदी हुई छुरी निकाली और हर रोटी के चार-चार टुकड़े कर दिए।

"रोटियाँ तो चल जाएँगी। पर पानी कम है।"

"मश्कीज़ा तो अपने पास है और नहर भी ज़्यादा दूर नहीं। पानी नहर से आ जाएगा।" लाली ने मुस्कुराकर मश्कीज़े की जानिब इशारा किया। "पर 8 दिन तक यहाँ कौन पड़ा रहेगा? तब तक हम बहुत आगे निकल जाएँगे।"

रहीम दाद ने शिकवा (शिकायत) करने के अंदाज़ में कहा। "बुरा न मानना। तेरा मामला तो एक दम फर्स्ट क्लास बन गया।" उसने अपना मैला-कुचैला लिबास देखा। "यह जेल की वर्दी न जाने अपने बदन से कब उतरेगी और जब तक यह नहीं उतरेगी मेरे लिए तो खतरा ही खतरा है।"
"परवाह न कर। जल्द ही तेरे लिए भी कुछ न कुछ हो जाएगा। मुझे हर दम इसकी फिक्र रहती है।

"खतरा सिर्फ तेरे लिए नहीं, मेरे लिए भी तो है। यह तो सोच तू और मैं क्या अलग-अलग हैं?" उसने रहीम दाद को ठोका (उकसाया)। "देख क्या रहा है? शुरू हो जा।"
रहीम दाद फौरन शुरू हो गया। उसने रोटी का एक टुकड़ा उठाया। उस पर थोड़ा सा शहद डाला, पनीर का टुकड़ा रखा। फिर रोटी गोल-गोल लपेट कर दांतों से चबाते हुए बोला: "तू नहीं खाएगा?"
"नहीं।" लाली ने इनकार कर दिया। "मुझे दो घूँट पानी पिला दे। मैं नूँ जाना है।" वह लम्हे भर को रुका। "चिलम पर दम लगा कर भूख मर जाती है।"
रहीम दाद ने मश्कीज़ा लाली की तरफ बढ़ा दिया। "यारा तूने तो पावन्दों के डेरे पर ज़बरदस्त काम किया।" लाली ने कोई जवाब नहीं दिया। मश्कीज़ा मुँह से लगा कर पानी के कई घूँट पिए। मश्कीज़ा एक तरफ रखा, हाथ से मुँह पोंछा और खड़ा हो गया।
रहीम दाद ने जल्दी से पूछा: "अकेला ही जाएगा?"
लाली ने इत्मीनान से कहा: "हाँ।"
"शादाँ के पास तो नहीं जा रहा?"
"जा तो वहीं रहा हूँ।" लाली ने इकरार (स्वीकार) किया।
रहीम दाद आँख मार कर बोला: "ऐसा जान पड़ता है, शादाँ पर तेरा दिल आ गया।"
"छोड़ यार क्या रखा है इन बातों में।" लाली ने बेनियाज़ी (लापरवाही) से कहा। "अपने पास दिल है कहाँ? दिल तो दिल वालों के पास होता है।"
"तू चाहे कुछ कहे। तेरी चाल-ढाल देख कर तो मुझे ऐसा ही लगता है।"
लाली उसकी बात काट कर बेज़ारी से बोला: "ठर्रकबाज़ी छोड़, काम की बात सुन।" उसने छुरी पतलून में अड़स ली और अपना चाकू निकाल कर रहीम दाद को दिया। "इसे रख ले। मैं कल रात को लौटूँगा। वापसी पर देर हो जाए तो फिक्र न करना।"
"अभी अंधेरा है। चाँद निकल आए तब जाना।"

लाली ने कोई जवाब नहीं दिया। आगे बढ़ा और करीब के टीले पर चढ़ने लगा। बुलंदी पर जा कर उसने देखा, हर तरफ खौफनाक तारीकी (अंधेरा) छाई है। दूर-दूर तक कुछ नज़र नहीं आता। उसने झुक कर मेहराब के नीचे नज़र डाली।

रहीम दाद चिराग की धुंधली रोशनी में बैठा रोटियों के टुकड़े गिन रहा था। लाली ज़्यादा देर टीले पर न ठहरा। आहिस्ता-आहिस्ता दूसरी तरफ उतर गया। वह चढ़ाइयों पर चढ़ता, ढलानों से उतरता, ऊबड़-खाबड़ रास्तों से गुज़रता हुआ टीलों के नीचे घने झंगर (झाड़ियों) में पहुँच गया। झंगर उबूर (पार) कर के वह नहर की जानिब बढ़ने लगा।
वह शादाँ के पास जाना चाहता था और उससे रहीम दाद के लिए कपड़े लाना चाहता था। कपड़े मिल जाते तो वह रहीम दाद को जेल की वर्दी से छुटकारा दिला सकता था और उसके हमराह (साथ) शर्फे के बताए हुए रास्ते से लायलपुर की तरफ निकल जाता। वह आगे बढ़ता गया। चलते-चलते अचानक उसे ख्याल आया कि आज शादाँ के गाँव जाना खतरे से खाली नहीं। कल ही रात पुलिस से उसकी मुठभेड़ हुई है। अब पुलिस न सिर्फ शादाँ से पूछ-ताछ करती होगी बल्कि उसके घर की निगरानी भी करती होगी। गाँव के अंदर और बाहर जगह-जगह नाकों पर पुलिस तैनात होगी। यह सोचते-सोचते उसकी रफ्तार सुस्त पड़ गई। नहर अब ज़्यादा दूर न थी। मगर लाली ने आगे जाने का इरादा तर्क (छोड़) कर दिया। वापस मुड़ा और अपने ठिकाने की जानिब रवाना हुआ। जब वह झंगर से गुज़र कर टीलों पर चढ़ रहा था तो रात खासी गुज़र चुकी थी। हर तरफ गहरी वीरानी छाई थी।
वह कुछ ही दूर चला था कि रोशनी फैलने लगी। दूर फराश के ऊँचे-ऊँचे दरख्तों के पीछे से चाँद उभर रहा था। गोल-गोल सोने के बड़े से थाल की तरह चमकता-दमकता चाँद वीराने में इस कदर खूबसूरत नज़र आ रहा था कि लाली टकटकी बांधे उसे तकता रहा। चाँद उभर कर ऊपर आया तो अंधेरे रास्ते रोशन हो गए। उजली-उजली चाँदनी में चलता हुआ लाली कुछ ही देर बाद मेहराब के करीब पहुँच गया। रहीम दाद अभी तक जाग रहा था। पथरीले रास्तों पर आहट सुन कर वह घबराया हुआ झट निकल कर बाहर आ गया। लाली को उसने निखरी-निखरी चाँदनी में दूर ही से पहचान लिया। वह तेज़ी से उसकी जानिब बढ़ा।
"यार तू वापस क्यों आ गया?"
"अंदर चल कर आराम से गल-बात (बातचीत) करेंगे।"
दोनों मेहराब के नीचे पहुँच गए। लाली दूर से चल कर आया था। नमदे पर बैठ कर आहिस्ता-आहिस्ता हाँफने लगा। मगर रहीम दाद सख्त बेचैन था। खामोश न रह सका। "यह तो बता दे रास्ते में कोई गड़-बड़ तो नहीं हो गई।"

"ज़रा दम ले, सब कुछ बता दूँगा। वैसे परेशानी की कोई गल नहीं।" लाली कुछ देर खामोश बैठा रहा।
"गल ए है रहिये, मैंने खुद ही शादाँ के पंड (गाँव) जाने का इरादा छोड़ दिया।" रहीम दाद ने दरियाफ्त (पूछा): "क्यों?"
"मैंने चलते-चलते सोचा वहाँ तो अभी पुलिस तफ्तीश (जांच) करती होगी।"
"यह तो तें नूँ (तुझे) पहले ही सोच लेना चाहिए था। मैं तो कहता हूँ शादाँ ने हमारे बारे में पुलिस को सब कुछ बता दिया होगा।"
"बताना तो नहीं चाहिए। उसने बाले का खून जो किया है। यह बात हम दोनों जानते हैं। वैसे हमारे बारे में वह इतना ही जानती है जितना पुलिस को पता है।"
"ऐसा है तो उसने मलिक को क्यों हमारे बारे में बताया?" रहीम दाद अपनी बात पर अड़ा रहा। "बता उसने ऐसा क्यों किया?"
"वह तो उसने दो हज़ार इनाम के लालच में किया। पर उसे जल्द ही अपनी गलती का पता चल गया था। यारा वह इतनी बुरी नहीं जितनी तू समझता है।"

"सोच ले। वैसे मैं तो यही कहूँगा तेरा उसके पास जाना ठीक नहीं।"
"मैं तो तेरे लिए कपड़े लेने उसके पास जाना चाहता हूँ।" लाली उसे समझाने लगा। "यह तो तें नूँ (तुझे) भी पता है जब तक तेरे बदन पर जेल की वर्दी है, हम कहीं जा भी तो नहीं सकते। मैं तो यह चाहता हूँ कि हम दोनों फटाफट यहाँ से लायलपुर की तरफ निकल जाएँ।" रहीम दाद ने उसकी तजवीज़ (प्रस्ताव) से इत्तेफाक (सहमति) किया।
बाहर चाँदनी छिटकी थी। रात निखरती जा रही थी। खुनकी (ठंडक) भी बढ़ गई थी। कुछ देर बाद रहीम दाद जमाहियाँ लेता हुआ बोला: "मुझे तो झोंक (नींद) आ रही है। मैं तो अब सोता हूँ।" वह यह कहता हुआ नमदे पर लेट गया। मगर लाली न लेटा। उसने फूँक मार कर चिराग बुझाया। बाहर निकल कर कुछ देर चाँदनी में इधर-उधर टहलता रहा। वापस आ कर वह भी लेट गया। रहीम दाद पहले ही सो चुका था। लाली ज़रा देर तक करवटें बदलता रहा। फिर उसकी भी आँख लग गई।
सुबह उठ कर दोनों ने शहद के साथ रोटी का एक-एक टुकड़ा खाया, पानी पिया। मेहराब के नीचे बैठे रहे या उसके करीब ही मंडराते रहे। मगर दूर नहीं गए। शाम को उन्होंने फिर रोटी का एक-एक टुकड़ा खाया। थोड़ा-थोड़ा पनीर भी खाया। खाने से फारिग (निवृत्त) हो कर उन्होंने फौरन चिराग बुझा दिया। अंधेरे में बैठे इधर-उधर की बातें करते रहे। चाँद तुलू (उदित) हुआ तो दोनों बाहर निकले और कुछ दूर जा कर एक टीले पर चढ़ गए। बुलंदी से उन्होंने घूम-फिर कर हर तरफ नज़र दौड़ाई। उजली-उजली

चाँदनी हर तरफ छिटकी हुई थी। मगर सन्नाटा बहुत गहरा था। वे बहुत देर बाद वापस आए और सोने के लिए लेट गए।

दूसरा दिन भी इसी तरह गुज़रा। तीसरा दिन भी गुज़र गया। मगर चौथे रोज़ पानी खत्म हो गया। अलबत्ता रोटियाँ अभी मौजूद थीं। शहद और पनीर भी था। दिन भर वे प्यासे रहे। शाम हुई और अंधेरा फैला तो लाली ने मश्कीज़ा उठाया। रहीम दाद को अपने साथ लिया। दोनों टीलों से उतर कर झंगर में पहुँचे। उसे उबूर किया और नहर पर पहुँच गए। अब रात का अंधेरा गहरा हो चुका था। लाली ने नहर से मश्कीज़े में पानी भरा और मश्कीज़ा रहीम दाद के हवाले कर के बोला: "मैं अब शादाँ के पंड जहांगीरा जाऊँगा। कोशिश करूँगा सूरज निकलने से पहले वापस आ जाऊँ। आज न आ सका तो कल आ जाऊँगा। मान ले मुझे आने में देर हो जाए तो परेशान न होना। मैं आऊँगा ज़रूर। मेरा इंतज़ार करना। तेरे पास अभी चार रोटियाँ रहती हैं। शहद और पनीर भी है। यह कई दिन का राशन है। रोटियाँ सूख जाएँ तो पानी में भिगो कर खा लेना। सुबह-शाम रोटियों का एक-एक चप्पा (टुकड़ा) खाना। पानी रुक जाए तो रात के अंधेरे में नहर से ले आना। पर दिन में हरगिज़ अपने ठिकाने से बाहर न निकलना।"

रहीम दाद उसकी बातें खामोशी से सुनता रहा। उसने बेचैन होकर कहा: "यारा छीती (जल्दी) नाल आ जाना और मेरे लिए कपड़े ज़रूर लाना। वैसे मुझे साथ ले चलता तो ठीक रहता। मुझे उधर के रास्तों का कुछ तो अता-पता है। तें नूँ (तुझे) तो कुछ भी पता नहीं, तू तो बचपन से लाहौर में रहा।"

"परवाह न कर। मुझे रास्ते का सब पता है। मैं छीती आऊँगा और तेरे लिए कपड़े ज़रूर लाऊँगा।" लाली मोहब्बत से उसकी पीठ थपथपा कर बोला: "अब तू टर (निकल) जा।" रहीम दाद ने मज़ीद (और) बात-चीत नहीं की। वह एक हाथ में पानी से भरा हुआ मश्कीज़ा लटकाए झंगर की तरफ चल दिया। लाली खामोश खड़ा देखता रहा। जब वह नज़रों से ओझल हो गया तो लाली नहर के किनारे-किनारे चलता हुआ पुल पर पहुँचा। उसे उबूर किया और नहर की दूसरी जानिब चला गया। वह आगे बढ़ा तो सड़क आ गई। उसने दूर ही से देखा एक लारी तेज़ी से सड़क पर दौड़ती हुई गुज़र रही है। उसके जाने के बाद गहरा सन्नाटा छा गया।

लाली सड़क से गुज़र कर रेल की पटरी की जानिब बढ़ा। रेल की पटरी के आस-पास सन्नाटा और ज़्यादा गहरा था। हर तरफ वीरानी थी। वह रेल की पटरी के किनारे-किनारे कुछ दूर तक चलता रहा, फिर निशब (नीचे) में उतर कर जंगली झाड़ियों के दरमियान रास्ता बनाता हुआ आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ने लगा।

☆

रात आधी से ज़्यादा गुज़र चुकी थी। लाली सुनसान रास्तों से गुज़रता, हर आहट पर चौंकता, एक बार फिर शादाँ के घर की दीवार के नीचे खड़ा था। वह ज़रा देर खामोश खड़ा रहा। फिर दीवार पर चढ़ा और आहिस्ता से आँगन में उतर गया। उसने चौकन्ना नज़रों से इधर-उधर नज़र दौड़ाई और दालान की जानिब दबे कदमों बढ़ा। उसने देखा कि शादाँ दालान के एक कोने में फर्श पर लेटी है। वह जाग रही थी। उसने उजली चाँदनी में लाली का साया देखा तो घबरा कर उठ बैठी। लाली उसके करीब पहुँच चुका था। शादाँ की आँखें हैरत से फटी की फटी रह गईं। लाली ने कुछ कहना चाहा तो शादाँ ने हाथ बढ़ा कर उसके मुँह पर रख दिया। कमरे के बंद दरवाज़े की जानिब इशारा किया और लाली का हाथ पकड़ कर आँगन में आ गई। वह उसे पड़छत्ती (छज्जे) के नीचे ले गई। आहिस्ता से पूछा: "तू आया कैसे?"
"दीवार फांद कर।" लाली ने बेनियाज़ी से बोला।
"मस्करी न कर। ठीक-ठीक बता।"
"पहले यह बता कमरे में कौन है?"
"है कोई, क्या करेगा जान कर।" शादाँ ने गोल-मोल जवाब दिया।
लाली ने आँख मार कर बेतकल्लुफी से कहा: "कोई नया यार फांस लिया?"
शादाँ एकदम शोले की तरह भड़क उठी। उसने कहर-आलूद नज़रों से लाली को देखा। "मैं कोई छिनाल (चरित्रहीन) हूँ? मुझे समझता क्या है कंजर।" यह कह कर उसने गुस्से से ज़मीन पर थूक दिया। लाली ने उसकी बरहमी (नाराज़गी) पर ज़रा भी बुरा न माना। ढिठाई से मुस्कुराता रहा। "ऐसा नहीं है तो फिर छुपा क्यों रही है? साफ-साफ बता कमरे में कौन है?" उसने लम्हे भर रुक कर पूछा: "तेरा खसम (पति) तो नहीं आ गया?"
"नहीं।" शादाँ के लहजे में ठहराव आ गया था। "वह यहाँ कैसे आ सकता है।"
"क्यों नहीं आ सकता? तू उसकी घरवाली जो है। छूट तो नहीं गई। उसने तुझे तलाक तो नहीं दी।"
"दे भी नहीं सकता।" शादाँ ने निहायत एतमाद (विश्वास) से कहा। "जब बाले के साथ मेरे जाने का उसे पता चला तो उसने न परचा चाक कराया (केस किया) न थाने गया। सब ने बहुत कहा तब भी न गया। वह और ही तरह का बंदा है।" अपनी बात कहते-कहते वह ज़रा सा शर्माई और दुपट्टे का पल्लू सर पर डाल लिया। "अब भी जान देता है मुझ पर।"
लाली ने नज़र भर कर शादाँ को देखा। वह पड़छत्ती के किनारे पर इस तरह खड़ी थी कि हल्की-हल्की चाँदनी की फुहार में उसका चेहरा उजले पीतल की तरह दमक रहा था। बड़ी-बड़ी रोशन आँखों में कमल खिल रहे थे। लाली ने मुस्कुरा कर उसे छेड़ा: "तुझ पर जान देने वाले और तेरे लिए तड़पने वाले तो

और भी बहुत हैं। तुझ में बात ही ऐसी है।" उसने शादाँ की दमकती हुई पेशानी (माथा) और आँखें भरपूर नज़रों से देखीं। "तू तो अभी तक मतैल ख्यार (मस्त सुंदरी) लगती है।"

"वे मस्करी न कर।" वह शर्मा गई। फिर बुझे हुए लहजे में बोली: "अब क्या रह गया मुझ में, जल कर राख हो गई।" उसने गहरी साँस भरी। "बाले मुझे बर्बाद कर गया।"

"उसकी गल छोड़। ठीक-ठीक बता कमरे में कौन है?"

"नाराज़ तो नहीं होगा?" शादाँ ने हिचकिचाते हुए कहा। "मेरे सर पर हत्थ (हाथ) रख कर बता।"

"नहीं।" लाली ने उसके सर पर हाथ रखे बगैर कहा। "नहीं मनाऊँगा। बिल्कुल नहीं मनाऊँगा।"

"ऐसे नहीं।" शादाँ ने इसरार (आग्रह) किया। "सर पर हाथ रख कर बता। बुरा तो नहीं मनाएगा?" लाली ने उसके सर पर हाथ रख दिया। "ले अब बता।"

शादाँ ने ज़रा सा आगे झुक कर सरगोशी (कानाफूसी) की: "ताजी है अंदर मंजी (चारपाई) पर सो रही है।"

"कौन ताजी?" लाली की समझ में कुछ नहीं आया। वह हक्का-बक्का सा शादाँ का चेहरा तकने लगा। शादाँ नाक सिकोड़ कर तीखे लहजे में बोली: "वही कंजरी (वेश्या), जिसने बाले को मुझ से छीन लिया था।"

लाली ने खतरे के एहसास से खौफज़दा होकर कहा: "वह यहाँ कैसे आई?"

"आई नहीं। मैं खुद जा कर लाई हूँ।" शादाँ मुतल्लिक (बिल्कुल) खौफज़दा नहीं थी। लाली उसकी बात सुन कर सख्त परेशान हुआ। झुंझला कर बोला: "तेरा मगज़ (दिमाग) तो नहीं चल गया? यह तुझे सूझी क्या?"

"नाराज़ न हो। तूने मेरे सर पर हाथ रखा है।" वह सफाई पेश करने लगी। "तप (बुखार) चढ़ी थी उसे, कोई दवा-दारू भी नहीं। मैं शाम को उसके लिए दवाई लाई हूँ।" उसने कद्र-ए-तामुल (थोड़ा संकोच) किया। तड़प कर बोली: "हाय सरसों के फूल की तरह पीली पड़ गई है।"

लाली उसकी बातों से ज़रा भी मुतासिर (प्रभावित) न हुआ। निहायत बेरुखी से बोला: "तुझे किसने कहा था उसे अपने घर में ला, उसका इलाज करा। और कोई नहीं उसका? कोई तो होगा?"

"है तो।" शादाँ ने जवाब दिया। "वीर (भाई) है, पर वह कराची में होता है। भरजई (भाभी) थी, वह भी पिछले दिनों उसके पास चली गई।" उसने कद्र-ए-तवक्कुफ (थोड़ी देर रुक कर) बताया: "ठीक ही हुआ। ऐसी चांडाल थी। हाय क्या बताऊँ, रोज़ ताजी का हाथ पकड़ कर निकालती थी। मारती थी, झोंटे खसोटती थी। तभी तो बाले के गले पड़ गई।"

लाली उसकी बातों से उकता गया। बात काट कर बोला: "खामख्वाह की कड़-कड़ बंद कर। यह बता वह बाले को तो नहीं पूछती थी?"
"क्यों नहीं पूछती थी। मैं उसके पास गई तो उसने पहली बात यही पूछी। मैंने झट कहा: बाले तो मेरे पास तीन महीने से नहीं आया। लाहौर गया होगा, एक्टर बनने। वह तो अपने को सोहना मुंडा (सुंदर लड़का) समझता है।" शादाँ ने गौर से लाली का चेहरा देखा। "गलत बात तो नहीं की मैंने?"
"अभी तक तो ठीक ही जा रही है।"
"पर तुझ से डर लगता है, तेरा क्या भरोसा। चोर-उचक्का जो ठहरा।"
लाली उसकी चोट इस तरह सह गया जैसे गूँगा चुपचाप कड़वी दवा निगल जाता है। वह चंद लम्हे खामोश रहा। शादाँ की आँखों में आँखें डाल कर बोला: "आज़मा ले। ले चल मलिक के पास, पकड़वा दे मुझे, भागूँगा नहीं। भाग जाऊँ तो पेशाब से मूँछें मुंडवा देना।" उसने अपनी मूँछों पर हाथ फेरा। "एक रात तेरे पंड (गाँव) आऊँगा और तुझे साफ उड़ा ले जाऊँगा।"
शादाँ एकदम भड़क गई। "तू अपने कंजरपन से बाज़ नहीं आएगा।" वह गुस्से से लाली को घूरने लगी। "मर जाऊँगी। पर तेरे साथ नहीं जाऊँगी। हरगिज़ नहीं जाऊँगी।"
लाली ढिठाई से मुस्कुराता रहा। "तूँ ज़रूर चलेगी। मेरे सिवा तुझे कोई भगा कर नहीं ले जा सकता। शर्त बद ले मुझ से।" उसने अपना एक हाथ आगे बढ़ा दिया। "आ हाथ मार।"
शादाँ ने त्यौरी पर बल डाल कर कुछ कहना चाहा। ऐन उसी वक्त कमरे के अंदर आहिस्ता-आहिस्ता खांसने की आवाज़ उभरी। शादाँ ने सहमी हुई नज़रों से उस तरफ देखा। गर्दन झुका कर सरगोशी की: "लगता है, ताजी जाग गई। तू अब टर (चला) जा।"
लाली ने घड़ी देखी। पाँच बजने वाले थे। चाँद डूब गया था। अंधेरे में सुबह का हल्का-हल्का उजाला उभर रहा था। उसने घबरा कर कहा: "हाँ, अब मुझे चलना चाहिए। सुबह होने वाली है। तूँ कमीज़ और धोती ज़रूर ले आना। मैं बाद में आऊँगा।" वह तेज़ी से दरवाज़े की जानिब बढ़ा।
"ठहर, मैं भी तेरे संग चलूँगी।"
लाली आँख मार कर बोला: "रहने दे, अभी वह रात नहीं आई।"
"बकवास न कर।" शादाँ ने उसे डांटा। "तेरा ऐसे जाना ठीक नहीं। चल मैं तुझे रड़ (मैदान) के नुक्कड़ तक छोड़ आऊँ। बोरी (भैंस) को भी साथ ले चलूँगी। कोई पूछेगा तो कह दूँगी बीमार है, उसे तो मोक (दस्त) लग गया है। सलोतरी (पशु चिकित्सक) को दिखाने साथ वाले चक ले जा रही हूँ।"
लाली जाते-जाते रुक गया और चौकन्ना नज़रों से कमरे के बंद दरवाज़े की जानिब देखने लगा। मगर खाँसी अब बंद हो चुकी थी। शादाँ ने भैंस खोली। उसकी गर्दन में मोटी रस्सी का डाभा (फंदा) डाला और

उसे हांकती हुई लाली के पास पहुँची। दोनों घर से निकल कर गली में आ गए। शादाँ ने दरवाज़ा बंद किया और बाहर से कुंडी लगा दी। हर तरफ दूधिया धुंध फैलती जा रही थी।

पेड़ के पास पड़े छप्पर की ओर इशारा किया, "यह भैंस देख रहा है? इधर आ।" वह लाली का हाथ पकड़कर छप्पर के पास ले गई और भैंस की थूथन सहलाते हुए बोली, "यह मेरी भैंस 'बोरी' (सफेद धब्बों वाली) है। बहुत अच्छी नस्ल की है। बिना कटड़े के सिर्फ चारे पर सुबह-शाम अट्ठारह सेर दूध देती है।"

"पर तेरा इससे क्या बनता होगा?" "ले, यह कम है?" शादाँ ने चहककर कहा, "मलिक की हवेली पर ग्वाला आता है और रोज़ दाम चुकाकर दूध ले जाता है। शाम को दूध मथकर मक्खन निकाल लेती हूँ, वह भी बिक जाता है।" शादाँ ने ज़रा रुककर कहा, "और कपास की फसल पर रुई चुनने का काम भी करती हूँ, अच्छी मज़दूरी मिल जाती है। मलिक की हवेली में भी काम-काज करती हूँ। मेहनत करने के मामले में ज़बरदस्त खिलाड़ी हूँ। परवाह न कर लाली, फ़िक्र की कोई बात नहीं।"

"जब इतने बहुत से काम कर लेती है तो एक काम और कर," लाली मुस्कुराने लगा, "मुझे पकड़वा दे, एक और भैंस आ जाएगी।"

"गालियाँ न दे," वह बिगड़कर बोली, "मैंने अपनी जूती तेरे हाथ में दे दी थी कि मुझे जूती से मार पर ऐसी बात मत कह।"

"मुझे पकड़वा देगी तो तुझसे कोई गिला (शिकायत) न होगा। सच कह रहा हूँ, तुझे इनाम मिलेगा तो मुझे खुशी होगी।" लाली ज़रा जज्बाती हो गया। "शादाँ! तू बहुत ज़बरदस्त औरत है। मिट्टी में मिल जाए तो चंदन बनकर महकती है। पाला तुझे पहचान ही न सका।"

शादाँ ने उसे बात पूरी नहीं करने दी और झट उसके मुँह पर हाथ रख दिया। लाली ने हाथ बढ़ाकर उसकी कलाई पकड़ ली, मगर वह चौंक पड़ा। शादाँ की कलाई खाली थी। लाली ने हैरानी से पूछा, "शादाँ! तेरे हाथ की चूड़ियाँ कहाँ गईं?"

पेज 75

"तोड़ डालीं। पाला जो मर गया।" "तुझ पर अभी तक उसकी मुहब्बत का भूत सवार है," लाली ने तीखे लहजे में कहा, "इस तरह विलाप करेगी तो ज़रूर जेल जाएगी।"

"नाराज़ क्यों होता है? तू चाहता है मैं खुशी मनाऊँ, नए कपड़े पहनूँ, सजूँ-सवरूँ, आँखों में काजल डालूँ। यह कैसे हो सकता है?"

"अभी बताता हूँ," लाली के होंठों पर कड़वी मुस्कान थी, "ऐसा कर फाँसी के फंदे पर जाकर लटक जा।" शादाँ ने कोई जवाब नहीं दिया। लाली ज़रा देर चुप रहकर बोला, "दिमाग से काम ले। तेरी तो मति मारी गई है। आज नहीं तो कल चर्चा होगा कि पाला कहाँ गया? ऐसी बात ज़्यादा दिनों तक छुपी नहीं रहती। खून सिर पर चढ़कर बोलता है। तू साफ़ पकड़ी जाएगी। कुछ तो सोच, सब तुझे क्या कहेंगे। मरना ही है तो ज़लील और बदनाम होकर क्यों मरना चाहती है?" शादाँ गुमसुम खड़ी उसकी बातें सुनती रही।

लाली ने जेब से दस रुपये का नोट निकाला और शादाँ की ओर बढ़ाकर बोला, "ले, कल जाकर चूड़ियाँ पहन लेना। जैसा कहता हूँ वैसा कर।" लाली ने नोट उसकी हथेली पर रखकर हाथ बंद कर दिया, "समझ गई न मेरी बात का मतलब?" "समझ गई," शादाँ ने सिर हिलाया और नोट अपने कपड़ों में छुपाते हुए पूछा, "यह बता आज आया कैसे?"

फिर कुछ सोचकर बोली, "कपड़ों के लिए आया होगा? हाय! मैं तो भूल ही गई। जिस रात तू गया है उसके बाद दो दिनों तक थानेदार ने पूछ-ताछ कर मेरा दिमाग खराब कर दिया।" "क्या बताया तूने?" "मैंने कह दिया कि दोनों पाले से मिलने आए थे, उसके दोस्त बताते थे। मैंने खूब आँसू बहाए, रो-रोकर कहा कि वे मुझे छुरा दिखाकर डराते थे और मार देने की धमकी देते थे।"

"तू तो एकदम खिलाड़ी निकली! देखने में ऐसी नहीं लगती," लाली ने मुस्कुराकर कहा, "पाले के बारे में भी पूछते थे?" "पूछते थे," शादाँ ने जवाब दिया, "मैंने वही बात कही जो ताजी से कही थी। कोई गलत बात तो नहीं कही मैंने?"

"अभी तक तो ठीक ही जा रही है," लाली ने कहा। "पर तुझसे डर लगता है, तेरा क्या भरोसा, तू तो चोर-उचक्का ठहरा।"

"तोड़ डालीं। पाला (बाला) जो मर गया।" "तुझ पर अभी तक उसकी मुहब्बत का भूत सवार है," लाली ने तीखे लहजे में कहा, "इस तरह विलाप करेगी तो ज़रूर जेल जाएगी।"
"नाराज़ क्यों होता है? तू चाहता है मैं खुशी मनाऊँ, रेशमी कपड़े (सलारी) बाँधूँ, दाँतों पर मिसि (दंदासा) लगाऊँ, आँखों में काजल डालूँ। यह कैसे हो सकता है?"
"अभी बताता हूँ," लाली के होंठों पर कड़वी मुस्कान थी, "ऐसा कर फाँसी के फंदे पर जाकर लटक जा।" शादाँ ने कोई जवाब नहीं दिया। लाली ज़रा देर चुप रहकर बोला, "दिमाग से काम ले। तेरी तो मति मारी गई है। आज नहीं तो कल चर्चा होगा कि पाला कहाँ गया? ऐसी बात ज़्यादा दिनों तक छुपी नहीं रहती।

खून सिर पर चढ़कर बोलता है। तू साफ़ पकड़ी जाएगी। कुछ तो सोच। सब तुझे क्या कहेंगे। मरना ही है तो ज़लील और बदनाम होकर क्यों मरना चाहती है?" शादाँ गुमसुम खड़ी उसकी बातें सुनती रही।
लाली ने जेब से दस रुपये का नोट निकाला और शादाँ की ओर बढ़ाकर बोला, "ले, कल जाकर चूड़ियाँ पहन लेना। जैसा कहता हूँ वैसा कर।" लाली ने नोट उसकी हथेली पर रखकर हाथ बंद कर दिया, "समझ गई न मेरी बात का मतलब?" "समझ गई," शादाँ ने सिर हिलाया और नोट अपने कपड़ों (लाचे) में छुपाते हुए पूछा, "यह बता आज आया कैसे?" फिर कुछ सोचकर बोली, "कपड़ों के लिए आया होगा? हाय! मैं तो भूल ही गई। जिस रात तू गया है उसके बाद दो दिनों तक थानेदार ने पूछ-ताछ कर मेरा दिमाग खराब कर दिया।" "क्या बताया तूने?"
"मैंने कह दिया कि दोनों पाले से मिलने आए थे, उसके दोस्त बताते थे। मैंने खूब आँसू बहाए। रो-रोकर कहा कि वे मुझे छुरी दिखाकर डराते थे। मार देने की धमकी देते थे।"
"तू तो एकदम खिलाड़ी निकली! देखने में ऐसी नहीं लगती," लाली ने मुस्कुराकर कहा, "पाले के बारे में भी पूछते थे?"
शादाँ ने जवाब दिया, "मैंने वही बात कही जो ताजी से कही थी। कोई गलत बात तो नहीं कही मैंने?"
"अभी तक तो ठीक ही जा रही है," लाली ने कहा। "पर तुझसे डर लगता है, तेरा क्या भरोसा, तू तो चोर-उचक्का ठहरा।"
लाली उसकी चोंट (ताना) इस तरह सह गया जैसे कोई गूँगा कड़वी दवा चुपचाप निगल जाता है। वह चंद लम्हे खामोश रहा। शादाँ की आँखों में आँखें डालकर बोला, "आज़मा ले। ले चल मलिक के पास और पकड़वा दे मुझे, मैं भागूँगा नहीं। अगर भाग जाऊँ तो पेशाब से मेरी मूँछ मुँडवा देना।" उसने अपनी मूँछों पर हाथ फेरा। "एक रात तेरे गाँव आऊँगा और तुझे साफ़ उड़ा ले जाऊँगा।"
शादाँ एकदम भड़क गई। "तू अपने नीचपन (कंजरी) से बाज़ नहीं आएगा।" वह गुस्से से लाली को घूरने लगी। "मर जाऊँगी पर तेरे साथ नहीं जाऊँगी। हरगिज़ नहीं जाऊँगी।"
लाली ढिठाई से मुस्कुराता रहा। "तू ज़रूर चलेगी। मेरे सिवा तुझे कोई भगाकर नहीं ले जा सकता। शर्त लगा ले मुझसे।" उसने अपना एक हाथ आगे बढ़ा दिया, "आ, हाथ मार (शर्त लगा)।"
शादाँ ने त्योरी पर बल डालकर कुछ कहना चाहा। ऐन उसी वक्त कमरे के अंदर धीरे-धीरे खाँसने की आवाज़ उभरी। शादाँ ने सहमी हुई नज़रों से उस तरफ देखा। गर्दन झुकाकर सरगोशी (फुसफुसाहट) की। "लगता है ताजी जाग गई। अब तू निकल।" लाली ने घड़ी देखी, पाँच बजने वाले थे। चाँद डूब गया था। अंधेरे में सुबह का हल्का-हल्का उजाला उभर रहा था।

उसने घबराकर कहा, "हाँ, अब मुझे चलना चाहिए। सुबह होने वाली है। तू कमीज़ और धोती ज़रूर ले आना। मैं बाद में आऊँगा।" वह तेज़ी से दरवाज़े की ओर बढ़ा। "ठहर, मैं भी तेरे साथ चलूँगी।" लाली आँख मारकर बोला, "रहने दे, अभी वह रात नहीं आई।"
"बकवास मत कर," शादाँ ने उसे डाँटा। "तेरा ऐसे जाना ठीक नहीं। चल, मैं तुझे मैदान (रड़) के मोड़ तक छोड़ आती हूँ। भैंस (बोरी) को भी साथ ले चलूँगी। कोई पूछेगा तो कह दूँगी कि वह बीमार है, उसे दस्त (मोक) लग गए हैं। पशु चिकित्सक (सलोतरी) को दिखाने साथ वाले गाँव (चक) ले जा रही हूँ।" लाली जाते-जाते रुक गया और चौकस नज़रों से कमरे के बंद दरवाज़े की ओर देखने लगा। मगर खाँसी अब बंद हो चुकी थी। शादाँ ने भैंस खोली। उसकी गर्दन में मोटी रस्सी का फंदा (डाहा) डाला और उसे हांकती हुई लाली के पास पहुँची। दोनों घर से निकलकर गली में आ गए। शादाँ ने दरवाज़ा बंद किया और बाहर से कुंडी लगा दी। हर तरफ़ सफेद धुंध फैलती जा रही थी। घरों से रुक-रुककर...

...पशुओं के रंभाने, बूढ़ों की खाँसी और बच्चों के रोने की आवाज़ें उभर रही थीं। शादाँ ने इन आवाज़ों से परेशान होकर कहा, "जल्दी कर, शोर (बोल-बराला) शुरू हो गया।" लाली ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया और तेज़ कदमों से चलने लगा। दोनों वीरान रास्तों से गुज़रते और पेड़ों की आड़ लेते आगे बढ़ने लगे। भैंस उनके साथ-साथ चल रही थी। शादाँ कभी उसकी गर्दन पर हाथ फेरती, कभी लाड़ से थूथन (मुँह) सहलाती और उसे हांकने के लिए रुक-रुककर मुँह से "हुत-हुत" की आवाज़ निकालती। लाली सुबह का फैलता उजाला देखकर और तेज़ कदमों से चलने की कोशिश करने लगा। उसके जूतों की तेज़ रगड़ से सन्नाटे में आहट उभर रही थी। शादाँ ने उसे टोका, "ओ लाली! धीरे चल, शोर (डग-डग) मत कर।" लाली ने पलटकर शादाँ को देखा, अपनी रफ़्तार धीमी कर दी और खामोशी से शादाँ के साथ चलने लगा। वह चौकस नज़रों से इधर-उधर देखता जाता। दोनों गाँव से निकलकर बाहर आ गए। अब मैदान (रड़) शुरू हो गया था। मैदान के एक तरफ रबी की फसलें तैयार खड़ी थीं। सुबह की नरम हवा के झोंकों से गेहूँ की बालियाँ झूमतीं और सूखे पत्तों से सरसराहट उभरती। मैदान उस वक्त सुनसान था। उसकी ज़मीन सख्त और समतल थी। कहीं-कहीं बारिश से ज़मीन में दरारें पड़ गई थीं। गाँव के सामने का यह मैदान खेल-कूद के लिए इस्तेमाल किया जाता था। मगर सुबह के सन्नाटे में उजाड़ नज़र आता था।
दोनों खेतों के साथ-साथ मैदान से गुज़रते रहे। शादाँ के बाल ठंडी हवा के झोंकों से उड़-उड़कर उसके साँवले चेहरे पर बिखर जाते। वह हर बार उन्हें समेटकर पीछे करती। उसकी आँखों में नींद का खुमार था। वह गर्दन ऊँची किए चल रही थी। लाली चुपचाप उसके पीछे चलता रहा और उसके शरीर की बनावट को देखता रहा। अब वह न डरा हुआ था न बेचैन। शादाँ की पनाह में वह खुद को सुरक्षित समझ

रहा था। शादाँ अपने भारी कूल्हों को हिलाती आगे-आगे चल रही थी। वह अपनी गर्दन को हल्का सा मोड़कर इधर-उधर देखती जाती, जैसे कोई कुतिया अपने पिल्ले की रखवाली करते वक्त चौकस होती है। सवेरा ऊँचाइयों से नीचे उतर रहा था। हर चीज़ सपने की तरह धुंधली और खामोश नज़र आ रही थी। अचानक इस खामोशी में दूर से घोड़े के दौड़ने की आवाज़ उभरी।

शादाँ घबराकर बोली, "हाय! मैं मर गई। यह तो मलिक (ज़मींदार) जान पड़ता है।" लाली भी परेशान हो गया।
दोनों रुक गए। देखते ही देखते खड़ी फसलों की आड़ से नंबरदार मलिक अल्लाह नवाज़ खान निकला और ऐन उनके सामने आ गया। वह अपनी सफेद घोड़ी पर मुर्गे की तरह अकड़कर बैठा था। आगे बंदूक रखी थी। दोनों को देखते ही उसने घोड़ी की लगाम (रास) ज़ोर से खींची और शादाँ को संबोधित किया। "इतने सवेरे कहाँ चली?" उसने शादाँ के पीछे खड़े लाली को संदिग्ध नज़रों से देखा और ऊँची आवाज़ में पूछा, "यह कौन है?"
शादाँ ने कुछ कहना चाहा मगर मलिक पहले ही बोल पड़ा। "यह वही जेल से भागा हुआ कैदी (कीदी) तो नहीं है? वही जान पड़ता है।"
मलिक ने गुस्से में डाँटकर पूछा। "ठीक-ठीक बता, कौन है यह?"
शादाँ कुछ नहीं बता सकी। उसकी आँखें खौफ़ और घबराहट से फटी हुई थीं और होंठ कँपकँपा रहे थे। वह बिल्कुल सुन्न नज़र आ रही थी। शादाँ को खामोश पाकर मलिक ज़ोर से चिल्लाया, "आज यह बचकर नहीं जाएगा।" उसने झट सामने रखी बंदूक उठाई और लाली को ललकारा। "ओए! आगे बढ़ा तो गोली से उड़ा दूँगा।" "मलिक जी!" शादाँ बस इतना ही कह सकी, उसके लहजे में विनती थी। मगर मलिक उसकी विनती से ज़रा भी प्रभावित नहीं हुआ। वह ज़ोर से दहाड़ा, "हट जा मेरे सामने से।"
लाली खामोश खड़ा था। मलिक बंदूक ताने उसे खूँख्वार नज़रों से घूर रहा था। उसकी घनी मूँछें गुस्से से फड़फड़ा रही थीं। उसकी पगड़ी का ऊँचा सिरा (तोर्रा) हवा में लहरा रहा था।
शादाँ अभी तक लाली और मलिक के बीच दीवार बनी खड़ी थी। अचानक लाली ने पीछे से शादाँ की कमर पर इस ज़ोर से लात मारी कि वह मुँह के बल ज़मीन पर गिरी। मलिक की नज़रें भटक गईं। लाली झट पास खड़ी भैंस की ओट में झुककर बैठ गया। मलिक निशाना साधते हुए चिल्लाया, "बाहर निकल, नहीं तो मैं फ़ायर खोल दूँगा।"
लाली ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने फुर्ती से छुरी निकाली और भैंस की टाँगों के बीच से मलिक की तरफ़ तेज़ी से फेंकी। छुरी घोड़ी की एक टाँग चीरती हुई मांस में घुस गई। घोड़ी...

...घोड़ी ने हिनहिनाकर अपनी दोनों टाँगें ऊपर उठा दीं। मलिक बेकाबू हो गया। उसने घबराहट में ट्रिगर दबा दिया। गोली चली और चीखती हुई भैंस के पेट में उतर गई। सब कुछ पलक झपकते ही हो गया। मलिक की घोड़ी हिनहिनाती हुई तेज़ी से भागी। मलिक अल्लाह नवाज़ पीठ पर बैठा उसे काबू करने की कोशिश करता रहा। मगर घोड़ी नहीं रुकी और दौड़ती हुई दूर निकल गई। बंदूक भी मलिक के हाथ से छूटकर गिर गई।

लाली ने तेज़ी से दौड़कर बंदूक उठा ली। उसमें अभी भी कारतूस मौजूद था। वह बंदूक लेकर...

शादाँ की भैंस ज़ोर-ज़ोर से रंभाई। कुछ कदम भागी और फिर लड़खड़ाकर गिर पड़ी। उसके पेट से खून निकलकर दूर तक ज़मीन पर फैल गया। भैंस बेबसी से गर्दन हिलाकर ज़मीन पर मुँह रगड़ने लगी। शादाँ दौड़कर ज़ख्मी भैंस से पागलों की तरह लिपट गई। उसके कपड़े खून से लथपथ हो गए। दोनों आँखों से आँसू झरने लगे। लाली भी धीरे-धीरे चलकर भैंस के पास पहुँच गया। शादाँ ने पलटकर उसे देखा और सहमे हुए लहजे में बोली, "तू गया नहीं?" लाली ने कोई जवाब नहीं दिया और सुन्न होकर भैंस को तड़पते देखता रहा। उसने बड़े दुख से कहा, "शादाँ! तेरी बोरी (भैंस) मर रही है।" "देख रही हूँ, पर तू यहाँ से निकल।"

लाली चुप खड़ा रहा। उसकी नज़रें भैंस के पेट से निकलते लाल खून पर जमी थीं। अचानक शादाँ उठकर खड़ी हो गई। गुस्से से बोली, "खड़ा क्या है? जा यहाँ से। मलिक अपने आदमियों (करिंदों) को लेकर आता ही होगा।" यह कहकर वह लाली पर झपटी और उसे ज़ोर से धक्का दिया। "जा, जल्दी से भाग।"

लाली लड़खड़ाते कदमों से आगे बढ़ा और मुड़-मुड़कर शादाँ और उसकी तड़पती भैंस को देखता रहा। मगर जब वह उस रास्ते की ओर बढ़ा जिधर से गाँव में आया था, तो उसने देखा कि कई किसान लाठियाँ (माल-पंजालियां) लिए सामने खड़े हैं और उसकी तरफ़ देख रहे हैं। लाली की उन पर नज़र पड़ी तो वह ठिठक गया। उसने हाथ में पकड़ी बंदूक उठाई और उसकी नली उनकी तरफ़ कर दी। वे खौफ़ज़दा होकर पलटे और अपना सामान छोड़-छाड़कर सरपट भागे।

लाली ने उनकी घबराहट का फायदा उठाया और झट खेतों में घुसकर एक पगडंडी पर तेज़ी से...

दौड़ने लगा। अब उसे दूर से कई लोगों का मिला-जुला शोर सुनाई दे रहा था। आवाज़ें उसी दिशा से आ रही थीं जहाँ शादाँ की ज़ख्मी भैंस दम तोड़ रही थी।

पड़ती (परती ज़मीन) में दूर-दूर तक जंगली झाड़ियाँ और ऊँची-ऊँची घास थी। ज़मीन सूखी और रेतीली थी। सुबह का उजाला हर तरफ फैल गया था। चिड़ियों के झुंड झाड़ियों से निकलकर चहचहाते हुए फ़िज़ा (आसमान) में बिखर जाते। लाली ने बंदूक घनी झाड़ियों के नीचे एक गड्ढे में डाल दी। उसे सूखे पत्तों और पत्थरों से छुपा दिया। अब लाली को इसकी ज़रूरत नहीं थी। वह खुद-रौ (जंगली) पौधों को रौंदता हुआ, झाड़ियों और ऊँची घास के बीच रास्ता बनाता हुआ जिधर मुँह आया, उसी तरफ बढ़ता चला गया। झाड़ियों और ऊँची घास से भरी हुई पड़ती खत्म हुई तो उसे यह देखकर खुशी हुई कि सामने सड़क है। सड़क सुबह के उजाले में साँप की तरह बल खाती दूर तक चली गई थी। सड़क नीम-पुख्ता (अधपक्की) थी और ज़्यादा चौड़ी नहीं थी। वह धीरे-धीरे सड़क के किनारे-किनारे चलने लगा। सड़क के दोनों तरफ बंजर और गैर-मज़रूआ (अकृष्य) इलाका था। कहीं-कहीं मिट्टी और रेत के टीले सिर उठाए खड़े थे। उसने दो-ढाई मील रास्ता तय किया तो दूर से हरियाली नज़र आई। आगे बढ़ा तो खेतों और पेड़ों के बीच से गुज़रती हुई नहर मिली। सूरज निकल आया था। नहर का पानी हल्की-हल्की धूप में झलमला रहा था। सड़क नहर के ऊपर से गुज़रती थी। लाली ने नहर देखी तो बेकरार होकर नीचे उतरा। नहर के करीब गया। उसे शिद्दत (तेज़ी) से प्यास महसूस हो रही थी। उसने चुल्लू भर-भरकर पानी पिया। मुँह-हाथ धोया और नहर के किनारे लेट गया। नरम और सूखी रेत पर लेटकर बड़ी फ़रहत (राहत) महसूस हुई। रात भर का जागा हुआ था, ठंडे झोंके आए तो नींद से आँखें बंद होने लगीं।

मगर वह सोया नहीं। ज़रा देर सुस्ता कर उठ खड़ा हुआ और धीरे-धीरे चलता हुआ फिर सड़क पर आ गया। वह पुल पार कर आगे बढ़ने लगा। अब दिन निकल आया था। उसे किसी ऐसे सुरक्षित ठिकाने की तलाश थी जहाँ छुपकर दिन गुज़ारा जा सके। सड़क के दोनों तरफ खेतों का सिलसिला दूर तक फैला था। उनके पीछे गाँवों के मकान नज़र आ रहे थे। कुछ ही दूर आगे बढ़ा था कि एक लारी (बस) शोर मचाती, धूल उड़ाती सामने से आती नज़र आई। वह सड़क से उतरकर नीचे के हिस्से (नशेब) में आ गया। लारी तेज़ी से दौड़ती हुई गुज़र गई। लाली फिर सड़क पर आ गया। फर्लांग-सवा-फर्लांग रास्ता तय किया तो उसे सड़क से एक कच्चा रास्ता गाँव की तरफ जाता नज़र आया। यह कच्चा रास्ता सड़क के दूसरी तरफ भी जाता था। मगर उस तरफ लाघा (खुला मैदान) था। जगह-जगह रेत के टीले थे और उनके बीच गेहूँ और जौ के पौधे लहलहा रहे थे। चने और सरसों के खेत भी थे। हवा ज़ोर से चलती तो सरसों के पीले-पीले फूल किसी अल्हड़ मटियार (युवती) के बसंती आँचल की तरह लहराते। एक सांडनी (ऊँटनी) सवार टीलों और खेतों के बीच कच्चे रास्ते पर गर्द (धूल) के बगूले उड़ाता दूर जाता नज़र आ रहा था। लाली मखमसे (दुविधा) में पड़ गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि किधर जाए और कौन सा रास्ता अख्तियार करे? वह खामोश खड़ा सांडनी सवार को जाते हुए देखता रहा। इसी बीच उसे अपनी पीठ पर

आहट सुनाई दी। पलटकर देखा कि एक शख्स धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ रहा है। वह अधेड़ उम्र का आदमी था। उसका लिबास उजला था। आँखों पर ऐनक थी। सिर पर सफेद पगड़ी थी। दाढ़ी के बाल खिचड़ी (सफेद-काले) थे। करीब आकर उसने लाली से पूछा, "क्या तुम लारी से उतरे हो?" लाली बात का जवाब फौरन न दे सका। उसे खामोश पाकर वह शख्स मुस्कुराया, "मुझे भी इसी लारी से जाना था। पहुँचने में देर हो गई, लारी निकल गई।"
"अभी-अभी गई है जी।"
"यह लारी तो कोट लंगर से आ रही थी। तुम भी वहीं से आ रहे हो?" लाली के जवाब का इंतज़ार किए बिना वह खुद ही बोला, "लगता है तुम गलत जगह आ गए।"
लाली उसकी बात का जवाब नहीं दे सका। वह रात भर का जागा हुआ था और उसे यह भी मालूम नहीं था कि वह किस स्थान पर खड़ा है। न उसे आगे का पता था न पीछे का। वह पहले कभी इस तरफ आया ही नहीं था।

वह शख्स बोला, "तुम आगे चले आए, तुम्हें पीछे उतरना था। सफ़र में कभी-कभी ऐसा भी होता है। एक बार ऐसा हुआ कि इसी लारी से मैं पहिली पहाड़ जा रहा था। सुबह का वक्त था, ऊँघ आ गई। आँख खुली तो दीपालपुर में था। पहिली पहाड़ बहुत पीछे रह गया था। अपनी बात कहते-कहते वह पल भर को रुका। मगर वापसी के लिए तुम्हें शाम से पहले कोई लारी नहीं मिलेगी। इस सड़क पर पिछली बारिशों के बाद बहुत कम लारियाँ चलती हैं। सड़क टूट-फूट कर बहुत खराब हो गई है। पहली लारी सुबह-सुबह निकल जाती है।" लाली को वह भला आदमी लगा। उसके लहजे में नरमी और शफ़क़त (स्नेह) थी। मगर लाली खामोश रहा। वह अभी तक भौंचक्का था और खुद को दिमागी तौर पर तैयार नहीं कर सका था कि इस शख्स के साथ कैसा रवैया अपनाए। उसे पूरी तरह नज़रअंदाज़ कर दे या उसकी हमदर्दी का फायदा उठाकर रास्ता पूछने की कोशिश करे? जब लाली ने उसकी बातों के जवाब में कुछ न कहा और गुमसुम खड़ा रहा तो वह शख्स बोला, "तुम किस सोच में पड़ गए?" आखिर लाली को बोलना पड़ा। उसने बात बनाई, "बात यह है जी! मैं यहाँ दूसरी बार आया हूँ। कई साल पहले आया था। रात का वक्त था। याद पड़ता है इसी जगह उतरा था।"
"लारी से आए थे या तांगे से?"
"आया तो लारी ही से था।" लाली ने गाँव की तरफ नज़र डाली जिसके मकान पेड़ों के पीछे से नज़र आ रहे थे। उसने पलटकर सड़क के उस पार लाघे (मैदान) की तरफ देखा और धीरे से बोला, "समझ नहीं आती यह जगह थी या कोई और।"

"कोई बात नहीं।" उस शख्स ने पेड़ों की तरफ हाथ उठाकर इशारा किया, "यह रहा अपना चक (गाँव)। तुम चाहो तो शाम तक मेरे साथ ठहर सकते हो। यहाँ धूप में खड़े-खड़े परेशान हो जाओगे। आओ मेरे साथ, जहाँ तुम्हें जाना है पहुँचा दूँगा।" यह कहकर वह आगे बढ़ा। लाली इनकार नहीं कर सका। चुपचाप उसके पीछे चल दिया।

वे कुछ दूर कच्चे रास्ते पर चलते रहे। वह शख्स एक पगडंडी की तरफ मुड़ गया। लाली भी उसके पीछे-पीछे चला। वे खेतों के बीच से गुज़रते रहे और जब पगडंडी तय करके बाहर आए तो गाँव शुरू हो चुका था। वे ज़्यादा दूर नहीं गए। एक दो-मंजिला पक्का मकान के सामने ठहरकर उस शख्स ने कहा, "मौजिया! यह रही अपनी माड़ी (मकान)। यह घर का अगला हिस्सा है, साथ ही डेरा है। बैठक भी इसी तरफ है। उधर ही चलते हैं, वहीं बैठकर गपशप होगी।" वह मकान के साथ-साथ चला और सीधे हाथ की ओर मुड़ गया। मकान के आगे आम और नीम के पेड़ थे। उनके नीचे चारपाई बिछी थी। उस शख्स ने चारपाई की तरफ इशारा करते हुए कहा, "तुम यहाँ बैठो, मैं ज़रा देर में आता हूँ।" वह जिस तरफ से आया था उसी तरफ वापस चला गया। लाली चारपाई पर खामोश बैठा रहा।
उसके सामने मकान का जो हिस्सा था, उसके आगे खुला हुआ नीची छत का बरामदा था। बरामदे में एक दरवाज़ा खुलता था और उसके साथ ही खिड़की भी थी। बरामदा इस वक्त खाली था। मकान आबादी से ज़रा हटकर था। उसके आस-पास सिर्फ चंद कच्चे मकान थे। लाली ने गाँव पर सिर्फ एक नज़र डाली। इसमें कई और भी दो-मंजिला मकान थे। गाँव अपनी आबादी और रौनक के हिसाब से जहाँगीरा से भी बड़ा था। मकान देखकर लाली को अंदाज़ा हो गया कि उसका मेज़बान गाँव का खाता-पीता आदमी है। मगर वह अभी तक वापस नहीं आया था। पेड़ों के नीचे ठंडी हवा चल रही थी। लाली बहुत थका हुआ था, वहाँ बैठकर उसे सुकून मिला। उसने दिल में कहा कि दिन गुज़ारने के लिए अच्छा ठिकाना मिल गया। शाम को चला जाऊँगा। मौका मिला तो शादाँ से मिल लूँगा। पिछली रात के बारे में मालूम करूँगा कि बाद में उस पर क्या बीती? अगर वह कपड़े ले आई तो आज ही रात रहीम दाद को जेल की वर्दी से छुटकारा दिला दूँगा। फिर आगे जाने का प्रोग्राम बनेगा। मगर शादाँ के घर जाते हुए उसे खतरे का भी अहसास हुआ। इतने संगीन वाकये के बाद गाँव भर में खलबली मच गई होगी। मलिक अल्लाह नवाज़ बहुत गुस्से में होगा। हो सकता है उसने पुलिस को भी बुलाया हो, थानेदार उसका भाई है। लेकिन शादाँ के गाँव की तरफ जाना उसके लिए ज़रूरी था। रहीम दाद के पास पहुँचने का रास्ता उसी तरफ से जाता था। कोई और रास्ता लाली जानता भी नहीं था।

वह इसी उधेड़बुन में गर्दन झुकाए खामोश बैठा था। उसने नज़रें उठाईं तो दो कांस्टेबलों को सामने से आते देखा। लाली लरज़ (काँप) कर रह गया। उसने सहम कर इधर-उधर देखा और भाग कर किसी गली में घुस जाने का इरादा किया। ऐन उसी वक्त बरामदे की तरफ से आवाज़ आई, "इधर बैठक में आ जाओ। कुछ खा-पी लो, तुमने सुबह से कुछ खाया भी नहीं होगा।"
लाली ने देखा, बरामदे में उसका मेज़बान दरवाज़ा खोले खड़ा है। लाली तो इस वक्त चाहता भी यही था। वह फौरन उठा, बरामदे में पहुँचा और बैठक के अंदर चला गया। बैठक साफ़-सुथरी थी। एक तरफ ऊँचे पायों का पलंग था। उस पर उजला बिस्तर था। फर्श पर दरी बिछी थी। मूढ़े (कुर्सियाँ) थे। दो-तीन कुर्सियाँ थीं और एक मेज़ भी थी। मेज़ पर लैम्प रखा था। उसके करीब ही चंद पुराने अखबार पड़े थे। दीवारों पर रंगीन तुग़रे (सुलेख) लगे थे। एक आईना भी मेज़ के पास ही दीवार पर लटका था। उस शख्स ने लाली को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और खुद एक मूढ़ा खींचकर बोला, "मैं तो जी इस पर बैठूँगा, मुझे तो इसी पर बैठने में आराम मिलता है।" लाली कुर्सी पर बैठने के लिए झुका। मेज़बान ने ज़िद करके उसे कुर्सी पर बैठा दिया। ज़रा देर बाद एक औरत दुपट्टे से सिर ढँकती हुई उस दरवाज़े से कमरे में दाखिल हुई जो घर के अंदर खुलता था। उसके हाथ में हुक्का था। उसने हुक्का मूढ़े के सामने लाकर रख दिया। उस शख्स ने हुक्के की नली (नै) सँभालते हुए औरत से कहा, "भाग-भरी! खाने को कुछ रोटी-शोटी ला, जल्दी कर।"
"अभी लाई जी।" यह कहती हुई वह अंदर चली गई।

वह मकान के साथ-साथ चला और सीधे हाथ की ओर मुड़ गया। मकान के आगे आम और नीम के पेड़ थे। उनके नीचे चारपाई बिछी थी। उस व्यक्ति ने चारपाई की तरफ इशारा करते हुए कहा। "तुम यहाँ बैठो, मैं ज़रा देर में आता हूँ।"

वह जिस तरफ से आया था उसी तरफ वापस चला गया। लाली चारपाई पर खामोश बैठा रहा। उसके सामने मकान का जो हिस्सा था, उसके आगे खुला हुआ कच्ची छत का बरामदा था। बरामदे में एक दरवाज़ा खुलता था और उसके साथ ही खिड़की भी थी। बरामदा इस वक्त खाली था।

मकान आबादी से ज़रा हटकर था। उसके आस-पड़ोस में सिर्फ चंद कच्चे मकान थे। लाली ने गाँव सिर्फ एक नज़र देखा। उसमें कई और भी दो मंजिला मकान थे। मकान देखकर लाली को अंदाज़ा हो गया कि उसका मेज़बान गाँव का खाता-पीता आदमी है। मगर वह अभी तक वापस नहीं आया था।

पेड़ों के नीचे ठंडी हवा चल रही थी। लाली बहुत थका हुआ था। वहाँ बैठकर उसे सुकून मिला। उसने दिल में कहा कि दिन गुज़ारने के लिए अच्छा ठिकाना मिल गया। शाम को चला जाऊँगा। मौका मिला तो शादां से मिल लूँगा। पिछली रात के बारे में मालूम करूँगा कि बाद में उस पर क्या बीती? अगर वह कपड़े ले आई तो आज ही रात रहीम दाद को जेल की वर्दी से छुटकारा दिला दूँगा। फिर आगे जाने का प्रोग्राम बनेगा। मगर शादां के घर जाते हुए उसे खतरे का भी एहसास हुआ।

इतने संगीन वाकये के बाद गाँव भर में खलबली मच गई होगी। मलिक अल्लाह नवाज़ बहुत गुस्से में होगा। हो सकता है, उसने पुलिस को भी बुलाया हो। थानेदार उसका भाई है। लेकिन शादां के गाँव की तरफ जाना उसके लिए ज़रूरी था। रहीम दाद के पास पहुँचने का रास्ता उसी तरफ से जाता था। कोई और रास्ता लाली जानता भी नहीं था। वह इसी उधेड़बुन में गर्दन झुकाए खामोश बैठा था।

उसने नज़रें उठाईं तो दो कांस्टेबल सामने से आते नज़र आए। लाली लरज़ कर रह गया। उसने डरे हुए अंदाज़ में इधर-उधर देखा और भागकर किसी गली में घुस जाने का इरादा किया। ऐन उसी वक्त बरामदे की तरफ से आवाज़ आई। "इधर बैठक में आ जाओ। कुछ खा-पी लो। तुमने सुबह से कुछ खाया भी नहीं होगा।"

लाली ने देखा, बरामदे में उसका मेज़बान दरवाज़ा खोले खड़ा है। लाली तो इस वक्त चाहता भी यही था। फौरन उठा, बरामदे में पहुँचा और बैठक के अंदर चला गया। बैठक साफ़-सुथरी थी। एक ओर ऊँचे पायों का पलंग था। उस पर उजला बिस्तर था। फ़र्श पर दरी बिछी थी। मूँढे थे। दो-तीन कुर्सियाँ थीं और एक मेज़ भी थी। मेज़ पर लैम्प रखा था। उसके करीब ही चंद पुराने अखबार पड़े थे। दीवारों पर रंगीन तग़रे (धार्मिक पट्टियाँ) लगे थे। एक आईना भी मेज़ के पास ही दीवार पर लटका था।

उसने हाथ ऊँचा किया और घर के अंदर जाने वाले दरवाज़े की ओर बढ़ गया। जाते-जाते रुक कर बोला : "मैं घोड़ी पर बैठकर मंडी चला जाऊँगा। वैसे साइकिल भी है, मगर मुझे घोड़ी की सवारी पसंद है । शाम होने से पहले-पहले वापस आ जाऊँगा। किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो कुंडी खटखटाकर भाग भरी को बुला लेना । इधर डेरे पर भी कई और नौकर-चाकर मौजूद हैं।"

वह घर के अंदर चला गया। लाली उसके जाने के बाद भी खौफज़दा रहा । तरह-तरह के अंदेशे परेशान करने लगे। बाहर जाना खतरनाक था और कमरे में बैठा रहना भी खतरे से खाली न था । वह खामोश बैठा आने वाले खतरे का इंतज़ार करता रहा, मगर खतरा नहीं आया, नाई आ गया । उसने लाली की बढ़ी हुई दाढ़ी साफ की, मूँछें काट-छाँट कर दुरुस्त कीं और सिर के बाल भी तराश दिए । उसने हजामत

बनाते हुए लाली से बातचीत करने की कोशिश की, मगर लाली ने उसकी हौसला-अफ़ज़ाई नहीं की; खामोश बैठा रहा। नाई फिर भी खामोश न रहा और गाँव के बारे में इधर-उधर की बातें बताता रहा ।

हजामत बनाने के बाद नाई चला गया, लेकिन लाली सो न सका । वह नहाने के लिए कुएँ पर भी नहीं गया और बिस्तर पर लेट गया । मगर बिस्तर पर लेटे ज़्यादा देर न गुज़री थी कि भाग भरी खाना लेकर आ गई । खाना काफी पुर-तकल्लुफ़ और खुश-ज़ायका था। लाली ने भूख न होने के बावजूद खाना खाया और बिस्तर पर जाकर लेट गया। रात भर का जागा हुआ था और थका हुआ भी था , लेटते ही ऐसी गहरी नींद सोया कि चिराग जलते समय आँख खुली ।

उसने देखा कि लैम्प रोशन है और फैज़ अहमद उर्फ मास्टर जी सामने मूँढे पर बैठे हैं । उसे बेदार (जागा हुआ) देखकर फैज़ अहमद ने कहा: "बरखुरदार! तुम्हारी लारी तो निकल गई। मैं दिन ढले ही वापस आ गया था, लेकिन तुम इस कदर गहरी नींद सो रहे थे कि जगाने को जी न चाहा।" उसने थोड़ा रुक कर पूछा : "कोई ज़रूरी काम तो नहीं था?"

"नहीं," लाली ने बहुत संक्षिप्त जवाब दिया और उठकर बैठ गया । "तब तो ठीक है। वैसे मैंने मालूम किया था, रहमत तीन रोज़ बाद आ रहा है। क्यों न उसका इंतज़ार कर लो?" लाली परेशान हो गया और फौरन कोई जवाब न दे सका । बात यह थी कि वह सिरे से किसी रहमत को जानता ही न था । यह महज़ इत्तिफाक था कि उस वक्त उसकी ज़बान पर यही नाम आया, वरना वह कोई दूसरा नाम बता देता । मगर अब रहमत उसके लिए ज़हमत बन गया था । इस मसले का एकमात्र हल उसकी समझ में यह आया कि रहमत के पहुँचने से पहले ही गाँव से निकल जाए । साथ ही उसे रहीम दाद का भी रह-रहकर ख्याल आ रहा था । रहीम दाद अकेला था और लाली ने रात तक उसके पास पहुँचने का वादा भी किया था ।

लाली को खामोश पाकर मास्टर जी ने कहा : "बरखुरदार! तुम किस सोच में पड़ गए? अब आए हो तो रहमत से मिलकर ही जाना । तीन ही दिन की तो बात है। तकल्लुफ़ छोड़ो, तुम्हारा अपना घर है; जब तक चाहो, ठहरो।"

"सुबह नहीं तो कल शाम ज़रूर चला जाऊँगा। मैं ज़्यादा देर नहीं ठहर सकता जी!"

"जैसी तुम्हारी मर्जी। वैसे मैं तो यही कहूँगा, तुम्हें रहमत से मिलकर जाना चाहिए।" फैज़ अहमद ने हिचकिचाते हुए कहा : "भाई! बुरा न मानना, सुना है रहमत का चाल-चलन कुछ ठीक नहीं। बाज़ारी औरतों के चक्कर में पड़ गया है।"

"मुझे कुछ पता नहीं। मैं तो जी उसे बहुत दिनों से नहीं मिला।"

"ठीक कह रहे हो तुम। वह पहले ऐसा नहीं था, नौकरी के बाद उसने पर-पुर्ज़े निकाले हैं । बरखुरदार! सच पूछो तो लड़के को जवान होते ही शादी की ज़ंजीर में बाँध देना चाहिए । ज़माना बहुत बुरा है, मोहम्मद हनीफ ने यही गलती की । मैंने समझाया भी मगर मेरी बात सुनकर टाल गया। कहने लगा, लड़के की मर्जी नहीं है । ले भाई, अब देख लड़के की मर्जी।" फैज़ अहमद खुलकर मुस्कुराया और उसने लाली को गौर से देखा : "तुमने तो अपना घर बसा लिया होगा?"

"नहीं," लाली मासूम सूरत बनाकर बोला: "बात यह है जी! माँ और बाप तो अपने हैं नहीं। भाई-बहन भी नहीं, बिल्कुल अकेला हूँ। नौकरी-चाकरी भी नहीं। रहमत के पास इसी लिए आया था।"

लाली की बात सुनकर फैज़ अहमद ने किसी प्रतिक्रिया का इज़हार नहीं किया और खामोश बैठा रहा । कुछ देर सिर झुकाए सोचता रहा। लाली ने उसका यह रवैया देखा तो दिल ही दिल में पछताया कि उसने मास्टर जी की हमदर्दी हासिल करने के लिए नाहक ऐसी बात की । ऐसा महसूस हुआ कि उसने अपनी परेशानहाली बताकर खुद को मास्टर जी की नज़रों में गिरा लिया । ज़रा देर बाद फैज़ अहमद उठकर खड़ा हो गया : "खाना आ जाएगा, तुम अकेले ही खा लेना। मैं रात का खाना नहीं खाता, ईशा की नमाज़ के बाद वज़ीफ़ा पढ़ता हूँ। यह मेरा रोज़मर्रा का नियम है। अब तुमसे सुबह मुलाकात होगी। फज्र की अज़ान से पहले मेरे लिए हुजरे से बाहर निकलने का हुक्म नहीं।"

फैज़ अहमद दरवाज़े की ओर बढ़ा । "खिड़की खोल देना, बहुत अच्छी हवा आती है। कमरे में गर्मी हो तो बाहर चारपाई पड़ी है । डेरे से रहमान को बुला लेना, बिस्तर लगा देगा।" "नहीं जी! यहीं ठीक है, मैं खिड़की खोल लूँगा, फिक्र न करें।"

"तुम दिन भर सोते रहे हो, नींद जल्दी नहीं आएगी। कुर्सी निकालकर बाहर बरामदे में बैठ जाओ, ज़रा दिल बहल जाएगा।" फैज़ अहमद ने शफ़कत (स्नेह) का इज़हार किया : "रोटी खाकर सो जाना। अभी तो समझो रात शुरू होती है।"

वह चला गया। लाली चाहता भी यही था कि वह ज़्यादा देर उसके पास न ठहरे । वह बैठा रहता तो बातें भी करनी पड़तीं और नित नया झूठ बोलना पड़ता । लाली उससे बात करते हुए कतराता था; कम से कम बोलता और बहुत संभल-संभल कर बोलता था । उसे हर लम्हा धड़का लगा रहता कि उसका आमियाना (साधारण) लब-ओ-लहजा कहीं सारा भ्रम न खोल दे ।

फैज़ अहमद के जाने के बाद लाली कमरे से बाहर आ गया । कुछ देर खामोश खड़ा रहा, फिर आहिस्ता-आहिस्ता चलता हुआ पेड़ों के नीचे जाकर टहलने लगा । गाँव की गहमागहमी अब उजड़ने लगी थी और सन्नाटा रफ़्ता-रफ़्ता बढ़ता जा रहा था । लाली दूर नहीं गया और पेड़ों के नीचे अंधेरे में टहलता रहा । रात धीरे-धीरे तारीख (काली) होती गई। इसी बीच बरामदे की खिड़की से मुँह निकालकर किसी औरत ने उसे संबोधित किया: "रोटी खा लो बाऊ जी!"

लाली खामोशी से कमरे में चला गया, मगर वहाँ भाग भरी नहीं, कोई दूसरी औरत खड़ी थी । उम्र तीस साल से ज़्यादा न थी, मगर सख्त मेहनत और खुराक की कमी ने उसकी जवानी का चिराग वक्त से पहले ही मद्धम कर दिया था । लाली दस्तरखान के सामने बैठकर खाना खाने लगा और औरत दरवाज़े के करीब खड़ी रही । लाली ने खाना खाते-खाते मुड़कर उसे देखा: "क्या नाम है तेरा?"

"रबिया," उसने जवाब दिया: "मैं जी रहमान की घरवाली हूँ।" "ज़रा पानी तो पिला।" रबिया ने गिलास में पानी भरकर दिया । लाली ने पानी पिया और उठकर खड़ा हो गया। रबिया ने बर्तन समेटे, दस्तरखान उठाया और चलते-चलते लाली से पूछा : "कोई और काम हो तो जी बता दें। मुझे घर जाकर अभी और काम-काज करना होगा।"

"नहीं, अब तू जा।" रबिया खामोशी से घर के अंदर चली गई और उसने दरवाज़ा बंद कर दिया । लाली ज़रा देर तक कुर्सी पर बैठा रहा । फिर उसने उठकर बरामदे में खुलने वाला दरवाज़ा बंद किया और खिड़की खोल दी । फूँक मारकर लैम्प बुझाया और बिस्तर पर दराज़ (लेट) हो गया ।वह देर तक जागता रहा, उसे नींद नहीं आ रही थी । कुछ देर बाद वह पलंग से नीचे उतरा और खिड़की पर जाकर खड़ा हो गया । पहर रात गुज़र चुकी थी। रात के अंधेरे में सुनसान गाँव ऊँघता हुआ नज़र आ रहा था । खिड़की के करीब खड़े-खड़े उसने सोचा कि अब यहाँ से चला जाना चाहिए । रहीम दाद उसका इंतज़ार कर रहा

होगा । मगर खाली हाथ रहीम दाद के पास जाकर वह क्या करता? जब तक रहीम दाद के जिस्म पर जेल के कैदियों की वर्दी थी, उस वक्त तक लाली का हर मकसद अधूरा था ।

वह आहिस्ता-आहिस्ता चलता हुआ उस दरवाज़े पर पहुँचा जो घर के अंदर खुलता था । उसने दरवाज़ा हौले-हौले हिलाया, दरवाज़ा अंदर से बंद था । लाली को सख्त कोफ्त (चिढ़) हुई। वह खामोशी से बिस्तर पर जाकर लेट गया और करवटें बदलते-बदलते सो गया । सवेरे बहुत तड़के फैज़ अहमद ने उसे बेदार किया और इसरार (आग्रह) करके बाहर ले गया । बरामदे से निकलकर वह लाली के हमराह घर के पिछवाड़े गया जहाँ बाड़े में उसके मवेशी और चौपाए थे । वह एक भैंस के पास गया जो खुरली में मुँह डाले सानी खा रही थी । उसका रंग स्याह था और माथे व खुरों पर सफेद निशान थे। फैज़ अहमद ने भैंस की पीठ पर हाथ फेरकर बड़े फख्र से बताया: "बरखुरदार! यह बुल्हा है। इसके खुरों और माथे पर सफेद-सफेद फुलियाँ देख रहे हो? ऐसी भैंस को पंज कल्याण भी कहते हैं। यह धुरेली है, पक्का बीस सेर दूध देती है।"

लाली खामोश रहा। फैज़ अहमद आगे बढ़ा और एक भूरी भैंस की गर्दन झुककर आहिस्ता-आहिस्ता सहलाते हुए बोला : "यह भी धुरेली है। इसका कट्टा पिछले दिनों मर गया, अब सिर्फ चारे पर दूध देती है । यह भी आला नस्ल की भैंस है।" उसने फख्र से गर्दन ऊँची की : "यह नीली बार की मशहूर भैंस है। पंज कल्याण के साथ मैं इसे भी मेले से खरीदकर लाया था। मुँह माँगी कीमत दी थी।"

लाली ने भूरी भैंस को गौर से देखा और उसकी चिकनी पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए बोला: "मास्टर जी! यह नीली बार की भैंस है न? यह नीली बार क्या हुआ जी?"

"बरखुरदार! पहले यह समझ लो कि बार किसे कहते हैं।" फैज़ अहमद आढ़ती से फौरन स्कूल मास्टर बन गया । "बार ऐसे गैर-मज़रुया (अनुपजाऊ) और बंजर इलाके को कहते हैं जिस पर खेती-बाड़ी न होती हो । मोंटगोमरी किसी ज़माने में ऐसा ही इलाका था; इसे बारी दोआब कहा जाता है । यानी रावी और सतलज के दरमियान का इलाका। दरअसल यह प्लेटो है जिसका एक ढलान रावी की जानिब है और दूसरा सतलज की जानिब । पुराने ज़माने के जाटों ने बारी दोआब को चार बारों में तक़सीम किया था । ये हैं रावी बार, गंजी बार, ब्यास बार और नीली बार।"

"पर यह नीली बार कौन सा हुआ मास्टर जी?"

"बरखुरदार! यह तो तुम्हारी समझ में आ गया कि बार किसे कहते हैं। अब आगे की सुनो । नहरें निकलने से पहले, खास तौर पर नहर लोअर बारी दोआब से कब्ल, बारी दोआब का इलाका इस कदर ज़रखेज़

(उपजाऊ) और सरसब्ज़-ओ-शादाब (हरा-भरा) न था जैसा आज है । फैज़ अहमद ने मुस्कुराते हुए बताया: 'नीली' दरअसल दरिया-ए-सतलज ही का नाम है। इसका पुराना नाम घारा है । मगर इसे अब सतलज ही कहा जाता है। तहसील दीपालपुर में भी सतलज ही कहा जाता है । लेकिन साथ की तहसील पाकपट्टन में इसे नीली के नाम से याद किया जाता है। इसका सबब यह है कि सतलज का पानी गहरा नीला है, इसी लिए इसे नीली कहते हैं । नीली बार भी इसी नीली से पड़ा।" उसने हल्का कहकहा लगाया । "अब तो तुम्हारी समझ में नीली बार का मतलब आ गया।"

लाली ने मुस्कुराकर मुस्तैदी से जवाब दिया: "बिल्कुल आ गया जी।" वह एक बार फिर भूरी भैंस की पीठ सहलाने लगा । लाली की यह शिफ्तगी (लगाव) और प्यार देखकर फैज़ अहमद खुश हुआ और कहने लगा : "अभी यह खांगड़ (दूध देने में कम) तो नहीं हुई, फिर भी इसका दूध गाढ़ा होता है। इससे अजब तरह की महक आती है—ऐसी सोंधी-सोंधी खुशबू कि दूध का गिलास मुँह से लगाओ तो हटाने को जी न चाहे।"

फैज़ अहमद अपनी दूसरी भैंसों और दूसरे मवेशियों के बारे में देर तक खुश हो-होकर बताता रहा । आखिर में वह घोड़ी के पास गया और उसकी खूबियाँ गिनाने लगा । धूप पेड़ों से नीचे उतरने लगी तो वह बाड़े से लाली के हमराह वापस कमरे में आया । नाश्ता तैयार था, ज़रा ही देर में लगा दिया गया और दोनों ने बैठकर नाश्ता किया । नाश्ते पर भी फैज़ अहमद अपनी भैंसों और दूसरे मवेशियों के बारे में बातें करता रहा । लाली ने उसकी गुफ़्तगू में दिलचस्पी का इज़हार किया और जानबूझकर नाश्ता देर तक करता रहा । वह सुबह की लारी से सफर करना न चाहता था । फैज़ अहमद ने भी इस सिलसिले में कोई बात नहीं की, बल्कि बार-बार यही इसरार करता रहा कि उसे रहमत से मिलकर ही जाना चाहिए ।

नाश्ते से फारिग होकर वह ज़्यादा देर लाली के पास न ठहरा । हुआ यह कि उसके कुछ मिलने वाले आ गए । उसने उन्हें कमरे के अंदर नहीं बुलाया; दरवाज़ा खोलकर बरामदे में गया और उनके साथ पेड़ों के नीचे पड़ी हुई चारपाई पर बैठकर कुछ देर तक आहिस्ता-आहिस्ता बातें करता रहा और उनके साथ ही उठकर कहीं चला गया ।

"बरखुरदार! आज अजीब वाकया पेश आया । मैं वज़ीफ़े का विर्द कर रहा था । खिलाफ-ए-मामूल नींद का ऐसा ज़बरदस्त झोंका आया कि आँख लग गई । क्या देखता हूँ एक बुज़ुर्ग सामने खड़े हैं । सफेद बुर्राक लिबास, चेहरे के गिर्द नूर का हाला, आँखों में ऐसा जलाल कि नज़रें खुद-ब-खुद झुक गईं । क्या बताऊँ क्या शान थी उनकी ।" उसने कुछ देर रुक कर कहा , "चंद लम्हे वह खामोश खड़े मेरी जानिब देखते रहे । फिर हुक्म दिया, फैज़ मोहम्मद! अपनी बेटी ताहिरा को उस नौजवान के हबाल-ए-अक़्द

(विवाह) में दे दे जो दो रोज़ से तेरा मेहमान है । ना-फरमानी करेगा तो रांदा-ए-दरगाह (तिरस्कृत) होगा । इसके बाद मेरी आँख खुल गई । अब तक वह आवाज़ कानों में गूँज रही है ।"

लाली भौंचक्का रह गया । उसकी समझ में बिल्कुल ना आया कि क्या जवाब दे । मास्टर फैज़ मोहम्मद ने उसे खामोश पाया तो निहायत शफ़क़त से कहा:

"भाई! इसमें अल्लाह तआला की कोई मसलहत (इच्छा) ज़रूर है । मैंने बहुत गौर किया तो यह नुक्ता हाथ आया । तुम्हारे सर पर किसी का साया नहीं । परेशान-हाल भी हो मगर नेक और सआदत-मंद हो । मेरा मामला यह है कि मुझे भी बेटी के फ़र्ज़ से सुबुक-दोश (मुक्त) होना है । किसी ना किसी के साथ तो उसका पल्लू बाँधना ही होगा । वैसे खानदान में कई लड़के हैं । पढ़े-लिखे और बर-सर-ए-रोज़गार भी हैं । लेकिन मुझे तो तुम्हारे लिए हुक्म मिला है । तुम्हें अपनी फ़र्ज़ंदी (दामाद के रूप में) में लेने पर मुझे खुशी होगी । तुम मेरे पास रहोगे, कारोबार में हाथ बटाओगे, मेरा सहारा बनोगे । मेरे लिए इससे अच्छा रिश्ता और क्या हो सकता है? "

उसने एक बार फिर खँखारकर गला साफ किया । "अज़ीज़म! मेरी तरफ से तो हाँ है । वो रही तुम्हारी मर्ज़ी, तो जो चाहो अपने बारे में फैसला करो । अलबत्ता मैं यह ज़रूर कहूँगा कि यह हम दोनों ही के लिए ताईद-ए-ग़ैबी (दैवीय सहायता) है ।" लाली फिर भी कोई जवाब ना दे सका । सर झुकाए बैठा रहा । कमरे में कुछ देर गहरी खामोशी छाई रही । आखिर फैज़ मोहम्मद की आवाज़ उभरी:

"बरखुरदार! क्या इस खामोशी को मैं तुम्हारी मर्ज़ी समझूँ? "

अब लाली के लिए खामोश रहना मुमकिन ना रहा , वह घबराए हुए लहज़े में बोला , "मैं क्या बताऊँ जी! मैं तो कुछ भी नहीं सोच सका ।"

"कोई बात नहीं । कोई बात नहीं ।" फैज़ मोहम्मद ने उसकी दिल-जोई करते हुए कहा , "सोच लो । अच्छी तरह सोच लो । तुम्हें हक हासिल है, जो चाहो और जैसा चाहो अपने बारे में फैसला करो ।" उसने बात का रुख बदलते हुए लाली से पूछा , "तुम्हारी घड़ी में क्या बजा है? "

लाली ने कलाई पर बँधी हुई घड़ी देखकर बताया , "साढ़े चार ।"

फैज़ मोहम्मद उठकर खड़ा हो गया । "अब तुम सो जाओ । मैं तो अब सो ना सकूँगा । कुछ ही देर में सुबह हो जाएगी । मस्जिद में फज्र की नमाज़ अदा करूँगा और सुबह की बस से मंडी चला जाऊँगा ।

तुमसे शाम को वापसी पर मुलाकात होगी । तुम्हारे पास खासा वक्त है । अच्छी तरह गौर कर लो । जो भी फैसला करो मुझे बे-झिझक बता देना ।""पर यह नीली बार कौन सा हुआ मास्टर जी?"

"बरखुरदार! यह तो तुम्हारी समझ में आ गया कि बार किसे कहते हैं। अब आगे की सुनो। नहरें निकलने से पहले, खास तौर पर नहर लोअर बारी दोआब से कब्ल, बारी दोआब का इलाका इस कदर ज़रखेज़ और सरसब्ज़-ओ-शादाब न था जैसा आज है।" फैज़ मोहम्मद ने मुस्कुराते हुए बताया, " 'नीली' दरअसल दरिया-ए-सतलज ही का नाम है। इसका पुराना नाम घारा है। मगर इसे अब सतलज ही कहा जाता है। तहसील दीपालपुर में भी सतलज ही कहा जाता है। लेकिन साथ की तहसील पाकपट्टन में इसे नीली के नाम से याद किया जाता है। इसका सबब यह है कि सतलज का पानी गहरा नीला है, इसी लिए इसे नीली कहते हैं। नीली बार भी इसी नीली से पड़ा।" उसने हल्का कहकहा लगाया। "अब तो तुम्हारी समझ में नीली बार का मतलब आ गया।"

लाली ने मुस्कुराकर मुस्तैदी से जवाब दिया, "बिल्कुल आ गया जी।" वह एक बार फिर भूरी भैंस की पीठ सहलाने लगा। लाली की यह शिफ़्तगी और प्यार देखकर फैज़ मोहम्मद खुश हुआ और कहने लगा, "अभी यह खांगड़ तो नहीं हुई, फिर भी इसका दूध गाढ़ा होता है। इससे अजब तरह की महक आती है। ऐसी सोंधी-सोंधी खुशबू कि दूध का गिलास मुँह से लगाओ तो हटाने को जी न चाहे।"

फैज़ मोहम्मद अपनी दूसरी भैंसों और दूसरे मवेशियों के बारे में देर तक खुश हो-होकर बताता रहा। आखिर में वह घोड़ी के पास गया और उसकी खूबियाँ गिनाने लगा। धूप पेड़ों से नीचे उतरने लगी तो वह बाड़े से लाली के हमराह वापस कमरे में आया। नाश्ता तैयार था, ज़रा ही देर में लगा दिया गया और दोनों ने बैठकर नाश्ता किया। नाश्ते पर भी फैज़ मोहम्मद अपनी भैंसों और दूसरे मवेशियों के बारे में बातें करता रहा। लाली ने उसकी गुफ़्तगू में दिलचस्पी का इज़हार किया और जानबूझकर नाश्ता देर तक करता रहा। वह सुबह की लारी से सफर करना न चाहता था। फैज़ मोहम्मद ने भी इस सिलसिले में कोई बात नहीं की, बल्कि बार-बार यही इसरार करता रहा कि उसे रहमत से मिलकर ही जाना चाहिए।

नाश्ते से फारिग होकर वह ज़्यादा देर लाली के पास न ठहरा। हुआ यह कि उसके कुछ मिलने वाले आ गए। उसने उन्हें कमरे के अंदर नहीं बुलाया। दरवाज़ा खोलकर बरामदे में गया और उनके साथ पेड़ों के नीचे पड़ी हुई चारपाई पर बैठकर कुछ देर तक आहिस्ता-आहिस्ता बातें करता रहा और उनके साथ ही उठकर कहीं चला गया।

दोपहर को वह लाली के पास आया और उसके लिए सिगरेट के पैकेट और एक कंघा भी लाया। दोनों ने दोपहर का खाना साथ खाया। मगर खिलाफ-ए-मामूल वह चुप-चुप था। उसका चेहरा उतरा हुआ था। उसने खाना भी रगत से नहीं खाया। चंद लुक़्मे खाकर हाथ खींच लिया। फिर उसने खुद ही अपनी परेशानी का सबब बताया, "मेरे मुंशी का आज सुबह इंतकाल हो गया। कल शाम तक बिल्कुल भला-चंगा था। रात को ठीक-ठाक सोया। फज्र के वक्त सीने में ऐसा ज़बरदस्त दर्द उठा कि चट-पट खत्म हो गया।" उसने ठंडी साँस भरी और आँखों में आँसू भरकर बोला, "अल्लाह उसकी मग़फ़िरत करे। बड़ा नेक और मेहनती बंदा था। उम्र भी कुछ ज़्यादा न थी। कोई तीस साल का होगा। चार छोटे-छोटे बच्चे हैं।" वह चंद लम्हे खामोश रहा। "उन्हें यहीं अपने पास ले आऊँगा। मगर उन पर यतीमी का जो दाग लग चुका है, उसे कौन मिटा सकता है।"

लाली चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा। फैज़ मोहम्मद आहिस्ता-आहिस्ता बोलता रहा, "करीब ही के पिंड में रहता था। मैं वहीं जा रहा हूँ। शायद शाम तक वापस न आ सकूँ। देर हो जाए तो मेरा इंतज़ार न करना। शाम को जाना हो तो रहमान या किसी नौकर को बता देना। वैसे मैं चाहता हूँ, तुम आज की बजाय कल सुबह की लारी से जाओ। बोलो क्या इरादा है?"

"आप कहते हैं जी तो मैं कल सुबह ही चला जाऊँगा।" फैज़ मोहम्मद ने इसके बाद कोई बातचीत नहीं की और चुपचाप उठकर चला गया। लाली देर तक खामोश बैठा सिगरेट के कश लगाता रहा। फिर वह बिस्तर पर लेट गया और शाम तक सोता रहा। ईशा की नमाज़ से कुछ पहले फैज़ मोहम्मद थका-हारा वापस आया। लाली से उसकी ज़्यादा बातचीत नहीं हुई। चंद मिनट ठहरकर वह वज़ीफ़ा पढ़ने अपने हुजरे में चला गया। रात का खाना खाकर लाली कमरे से बाहर नहीं गया। उसने लैम्प फूँक मारकर बुझाया और बिस्तर पर लेट गया।

बैठक का दरवाज़ा खोलकर लाली खामोशी से बाहर निकला और दबे कदमों चलता हुआ घर के पिछवाड़े गया। मवेशियों के बाड़े पर पहुँचा। बाड़ा मवेशियों के आम ढारे की तरह का न था जिस पर बारिश और सर्दी से बचाव के लिए छप्पर डाल दिया जाता है। यह बाड़ा अहाते की मानिंद था जिसके चारों ओर कद-ए-आदम (इंसान के कद के बराबर) चारदीवारी थी। इसका फाटक बंद था और फाटक के ऐन सामने मवेशियों का रखवाला चारपाई डाले सो रहा था।

चाँदनी छिटकी हुई थी। लाली एक पेड़ के नीचे अंधेरे में खड़ा था। हर तरफ गहरा सन्नाटा छाया था। रात सुनसान थी। लाली ऊहापोह (गो-म-गो) के आलम में था। यकायक पीछे आहट सुनाई दी। उसने पलटकर देखा तो होश उड़ गए। फैज़ मोहम्मद आहिस्ता-आहिस्ता इसी तरफ आ रहा था। लाली जहाँ था

वहीं दम साधे खड़ा रहा। वह करीब आकर ठहर गया। मगर न उसने किसी शक का इज़हार किया न हैरत का। हसब-ए-मामूल (हमेशा की तरह) नर्म लहज़े में बोला, "बरखुरदार! तुम यहाँ हो। बैठक में तुम्हें न पाया तो तबीयत परेशान हुई। खैरियत तो है। तुम इतनी रात गए इधर कैसे आ गए?" वह दम भर के लिए रुका और जल्द ही बेतकल्लुफी से मुस्कुराने लगा, "समझ गया। सिगरेट की तलब ने सताया होगा। माचिस नहीं होगी। दीनू के पास माचिस लेने आए होगे। यही बात है न?"

लाली को उसकी नेक-नियती और सादा-दिली पर प्यार आ गया। सआदत-मंदी (विनम्रता) से सिर झुकाकर बोला, "बात तो जी कुछ ऐसी ही थी।"

"मेरा अंदाज़ा गलत नहीं होता।" वह बदस्तूर मुस्कुराता रहा। "मुझे इस वक्त यहाँ देखकर तुम्हें भी सख्त हैरत होगी। मुझे तो इस वक्त हुजरे के अंदर वज़ीफ़ा पढ़ने में मशगूल होना चाहिए था। बाहर कैसे आ गया? मैं बताने तुम्हारे पास आया था।"

मवेशियों का रखवाला दीनू दोनों की बातें सुनकर जाग गया था और हैरान-ओ-परेशान आँखें फाड़े उन्हें देख रहा था। मगर फैज़ मोहम्मद ने उसकी जानिब कोई तवज्जो (ध्यान) न दी। लाली को संबोधित किया, "आओ बैठक में इत्मीनान से बातें होंगी।" वह मुड़ा और लाली के हमराह चुपचाप चलता हुआ बैठक में पहुँच गया। लाली को कमरे में छोड़कर वह घर के अंदर गया और माचिस हाथ में लिए वापस आ गया। उसने लैम्प रोशन किया और मेज़ के करीब कुर्सी पर संभलकर बैठ गया। लाली बिस्तर पर पैर लटकाए बैठा था। ज़रा देर रुकने के बाद फैज़ मोहम्मद ने खँखारकर गला साफ किया और यूँ बोला।

"बरखुरदार! आज अजीब वाकया पेश आया । मैं वज़ीफ़े का विर्द कर रहा था । खिलाफ-ए-मामूल नींद का ऐसा ज़बरदस्त झोंका आया कि आँख लग गई । क्या देखता हूँ एक बुज़ुर्ग सामने खड़े हैं । सफेद बुर्राक लिबास, चेहरे के गिर्द नूर का हाला, आँखों में ऐसा जलाल कि नज़रें खुद-ब-खुद झुक गईं । क्या बताऊँ क्या शान थी उनकी ।" उसने कुछ देर रुक कर कहा , "चंद लम्हे वह खामोश खड़े मेरी जानिब देखते रहे । फिर हुक्म दिया, फैज़ मोहम्मद! अपनी बेटी ताहिरा को उस नौजवान के हबाल-ए-अक़्द (विवाह) में दे दे जो दो रोज़ से तेरा मेहमान है । ना-फरमानी करेगा तो रांदा-ए-दरगाह (तिरस्कृत) होगा । इसके बाद मेरी आँख खुल गई । अब तक वह आवाज़ कानों में गूँज रही है ।"

लाली भौंचक्का रह गया । उसकी समझ में बिल्कुल ना आया कि क्या जवाब दे । मास्टर फैज़ मोहम्मद ने उसे खामोश पाया तो निहायत शफ़क़त से कहा:

"भाई! इसमें अल्लाह तआला की कोई मसलहत (इच्छा) ज़रूर है । मैंने बहुत गौर किया तो यह नुक्ता हाथ आया । तुम्हारे सर पर किसी का साया नहीं । परेशान-हाल भी हो मगर नेक और सआदत-मंद हो । मेरा मामला यह है कि मुझे भी बेटी के फ़र्ज़ से सुबुक-दोश (मुक्त) होना है । किसी ना किसी के साथ तो उसका पल्लू बाँधना ही होगा । वैसे खानदान में कई लड़के हैं । पढ़े-लिखे और बर-सर-ए-रोज़गार भी हैं । लेकिन मुझे तो तुम्हारे लिए हुक्म मिला है । तुम्हें अपनी फ़र्ज़ंदी (दामाद के रूप में) में लेने पर मुझे खुशी होगी । तुम मेरे पास रहोगे, कारोबार में हाथ बटाओगे, मेरा सहारा बनोगे । मेरे लिए इससे अच्छा रिश्ता और क्या हो सकता है? "

उसने एक बार फिर खँखारकर गला साफ किया । "अज़ीज़म! मेरी तरफ से तो हाँ है । वो रही तुम्हारी मर्ज़ी, तो जो चाहो अपने बारे में फैसला करो । अलबत्ता मैं यह ज़रूर कहूँगा कि यह हम दोनों ही के लिए ताईद-ए-ग़ैबी (दैवीय सहायता) है ।" लाली फिर भी कोई जवाब ना दे सका । सर झुकाए बैठा रहा । कमरे में कुछ देर गहरी खामोशी छाई रही । आखिर फैज़ मोहम्मद की आवाज़ उभरी:

"बरखुरदार! क्या इस खामोशी को मैं तुम्हारी मर्ज़ी समझूँ? "

अब लाली के लिए खामोश रहना मुमकिन ना रहा , वह घबराए हुए लहज़े में बोला , "मैं क्या बताऊँ जी! मैं तो कुछ भी नहीं सोच सका ।"

"कोई बात नहीं । कोई बात नहीं ।" फैज़ मोहम्मद ने उसकी दिल-जोई करते हुए कहा , "सोच लो । अच्छी तरह सोच लो । तुम्हें हक हासिल है, जो चाहो और जैसा चाहो अपने बारे में फैसला करो ।" उसने बात का रुख बदलते हुए लाली से पूछा , "तुम्हारी घड़ी में क्या बजा है? "

लाली ने कलाई पर बँधी हुई घड़ी देखकर बताया , "साढ़े चार ।"

फैज़ मोहम्मद उठकर खड़ा हो गया । "अब तुम सो जाओ । मैं तो अब सो ना सकूँगा । कुछ ही देर में सुबह हो जाएगी । मस्जिद में फज्र की नमाज़ अदा करूँगा और सुबह की बस से मंडी चला जाऊँगा । तुमसे शाम को वापसी पर मुलाकात होगी । तुम्हारे पास खासा वक्त है । अच्छी तरह गौर कर लो । जो भी फैसला करो मुझे बे-झिझक बता देना ।"

उसने लाली को कुछ कहने का मौका ही नहीं दिया । वह घर के अंदर जाने के बजाय बैठक का दरवाज़ा खोलकर बाहर चला गया । लाली ने सोचा था कि उसके जाने के बाद चुपके से निकल जाएगा । मगर अब इसकी गुंजाइश ना थी । सुबह होने वाली थी और फैज़ मोहम्मद अभी बाहर ही था । उसने सोने की कोशिश की मगर बेचैन रहा । ठीक से नींद नहीं आई ।

दिन में भी वह बेचैन रहा । शाम को फैज़ मोहम्मद की वापसी हुई । वह रोज़ की तरह मुस्कुराता हुआ लाली के पास आया और निहायत शफ़क़त से मुखातिब हुआ:

"कुछ थके-थके नज़र आ रहे हो ।" उसने थोड़ा रुक कर और लाली के जवाब का इंतज़ार किए बिना खुद ही वज़ाहत (स्पष्टीकरण) की , "बात यह है कि तुम कहीं आते-जाते भी तो नहीं, तमाम वक्त तो कमरे में रहते हो । ज़रा बाहर निकला करो । मगर सवाल यह है कि किसके पास जाओ, कहाँ जाओ? तुम्हारा कोई मिलने-जुलने वाला भी यहाँ नहीं है । यहाँ रहोगे तो सभी से मेल-मिलाप पैदा हो जाएगा ।"

लाली चुपचाप बैठा उसकी बातें सुनता रहा । फैज़ मोहम्मद कुछ देर खामोश रहा फिर यूँ बोला:

"बरखुरदार! तुम बहुत कम-गो (कम बोलने वाले) हो । मुझे तुम्हारी यह अदा पसंद भी है । मगर नौजवानों को इतना खामोश नहीं रहना चाहिए । हँसा-बोला करो । कोई बात नहीं । मेरे साथ रहोगे तो बोलने की भी आदत पड़ जाएगी । भाई! मैं ज़्यादा देर खामोश नहीं बैठ सकता । सख्त उलझन होती है । और तुम से बातें कर के तो दिल बहुत खुश होता है । ऐसा महसूस होता है, तीन रोज़ नहीं, तुम्हारे साथ तीन बरस बीत गए ।"

वह बोलते-बोलते खामोश हो गया । लाली भी चुप बैठा रहा । मगर फैज़ मोहम्मद से ज़्यादा देर खामोश ना रहा गया । वह हर्फ़-ए-मतलब (मुख्य बात) पर आ गया:

"बरखुरदार! क्या फैसला किया तुमने? " फिर खुद ही बोला , "फैसला क्या करना है । भाई मैंने तो यह समझ लिया है कि मेरा कोई बेटा नहीं, अल्लाह तआला ने तुम्हारे रूप में मुझे बेटा दे दिया । मेरी दो बेटियाँ हैं । बड़ी तो ब्याह कर पेशावर चली गई । साल दो साल में आती है । समझो वह तो गैर हो गई ।" उसने कुछ देर रुक कर कहा , "हाँ तो बरखुरदार! तुमने क्या सोचा? "

लाली से कोई जवाब ना बन पड़ा । पिछली रात से जिस सवाल ने उसे उलझन में डाल रखा था वह अभी भी जवाब का मोहताज था । लाली में ना साफ इनकार करने की जुर्रत थी, ना वह अपने बारे में असल हकीकत से आगाह कर सकता था । दोनों ही सूरतों में उसके (फैज़ मोहम्मद के) दिल को ज़बरदस्त ठेस

लगती । लाली उसे किसी तौर दुख पहुँचाना नहीं चाहता था । उसे अपने जुर्म-पेशा होने का कभी इतनी शिद्दत से एहसास नहीं हुआ था । वह दलदल में गिर गया था । इस दलदल से निकलने और साफ-सुथरी ज़िंदगी बसर करने का बहुत अच्छा मौका मिला था । मगर वह इस दलदल में इतना धँस चुका था, इस कदर लथपथ हो गया था कि इस मौके से भी कोई फायदा नहीं उठा सकता था । उसे सबसे बड़ा दुख इस बात का था कि जिस ज़िंदगी के उसने कभी सुहाने ख्वाब देखे थे, वह खुद चल कर उसके घर आई थी । मगर वह दरवाज़े के पट खोलकर उसका खैर-मक़दम (स्वागत) नहीं कर सकता था ।

लाली को खामोश और कम (दुखी) देखकर फैज़ मोहम्मद ने कहा : "बरखुरदार! जो कहना है साफ़-साफ़ कह दो । तुम इनकार कर दोगे तो मैं यही समझूँगा कि मुझ ही में कोई खामी होगी । तुम्हें मैं अच्छा समझता हूँ, हमेशा समझता रहूँगा ।" उसने गहरी साँस भरी । "मुझे जो हुक्म मिला उसकी तामील में सिर झुका दिया । अपनी पगड़ी तुम्हारे सामने डाल दी । बेटी बाप की इज़्ज़त ही होती है ।" उसकी आवाज़ भर आई । ऐसा महसूस होता था कि उसकी आँखों के पैमाने छलक उठेंगे । लाली तड़प उठा । उसका जी चाहा कि झुक कर उसके पैर पकड़ ले और उसे अपने बारे में सब कुछ साफ़-साफ़ बता दे । वह बेकरार होकर खड़ा हो गया ।

फैज़ मोहम्मद दिल-गीर होकर बोला : "मालूम होता है मेरी बातें तुम्हें नागवार गुज़रीं? "

लाली की ज़बान से बेसाख्ता निकल गया : "हरगिज़ नहीं । जो आपका फ़ैसला वही मेरा फ़ैसला है जी ।"

वह तड़प कर उठा और लाली को गले से लगा लिया । चंद लम्हों तक वह लाली को गले से लगाए खामोश खड़ा रहा । लाली को ऐसा महसूस हुआ जैसे वह रो रहा है । उसके जिस्म की हरारत में बाप के प्यार का अलाव था । उसने शफ़क़त से लाली के सिर पर हाथ फेरा, उसकी पेशानी चूमी । "तुमने मेरी लाज रख ली । मुझे हुक्म-अदूली (अवज्ञा) के अज़ाब से बचा लिया ।"

लाली सिर झुकाए निहायत सआदत-मंदी से खड़ा रहा । फैज़ मोहम्मद ने लम्हा भर खामोश रहकर कहा : "नेक काम में ताखीर (देरी) नहीं होनी चाहिए । किसी धूमधाम की ज़रूरत नहीं, इसके लिए बहुत वक़्त पड़ा है । वज़ीफ़े से फ़ारिग होते ही मस्जिद के मुल्ला जी के पास जाऊँगा । नमाज़ियों में गवाह और वकील भी मिल जाएँगे । फ़ज्र की नमाज़ के बाद निकाह हो जाएगा । मुझे यही बशारत (संकेत) हुई थी ।"

वह लाली के पास ज़्यादा देर नहीं ठहरा । वज़ीफ़े का वक़्त हो चुका था । वह घर के अंदर चला गया । लाली बेचैनी से कमरे में टहलने लगा । उसने फैज़ मोहम्मद का दिल रखने के लिए हाँ तो भर ली थी मगर उसे निभा नहीं सकता था । अब वह जल्द से जल्द इस घर से दूर चला जाना चाहता था । रात को लाली से

खाना भी न खाया गया । दो-चार लुक़्मों के बाद हाथ खींच लिया । वह पलंग पर खामोश बैठा रहा और बार-बार घड़ी देखता रहा । उसे रात तारीख (अँधेरी) और गली-कूचे सुनसान हो जाने का इंतज़ार था ।

कोई दस बजे का अमल होगा । लाली ने बाहर जाने का इरादा किया । ऐन उसी वक़्त घर के अंदर जाने वाले दरवाज़े का एक पट आहिस्ता से चरचराता हुआ खुला । लाली ने चौंक कर उस तरफ़ देखा । धुंधली रोशनी में एक साया लहराया । कोई दरवाज़े की ओट में दुबका खड़ा था । लाली हैरान-ओ-परेशान बैठा उस जानिब देखता रहा । ज़रा देर बाद एक नौजवान लड़की आहिस्ता-आहिस्ता चलती हुई कमरे में दाखिल हुई और सिर झुकाकर लाली के सामने खड़ी हो गई । वह अपना बदन सफेद चादर से छुपाए हुए थी, सिर्फ चेहरा नज़र आ रहा था । खिलता हुआ चंपई रंग, सुबुक (कोमल) नक़्श-ओ-निगार, उभरी हुई स्याह आँखें । वह अच्छी खुश-शक्ल लड़की थी ।

लाली ने अटकल से उसे पहचानने की कोशिश की । "तुम ताहिरा तो नहीं हो? "

"हाँ, मैं ताहिरा हूँ, मास्टर जी की बेटी ।"

"तुम इतनी रात गए यहाँ किस लिए आई हो? "

इस दफ़ा ताहिरा ने गर्दन उठाकर लाली को देखा । त्यौरी पर बल डाला और एक दम फट पड़ी : "यह कहने आई हूँ कि तुम फ़ौरन यहाँ से निकल जाओ ।"

लाली सटपटा के रह गया । हैरान होकर बोला : "क्यों?

"इसलिए कि मैं तुम्हारे साथ शादी-वादी का ढोंग रचाना नहीं चाहती ।" वह वैसे ही तीखे लहज़े में बोली : "तुम मुझे बिल्कुल पसंद नहीं । तुम सूरत से उजड्ड और लोफ़र लगते हो ।" उसने गुस्से से लाली को घूरा : "जाओ यहाँ से निकल जाओ ।"

लाली ने परेशान होकर कहा : "धीरे बोलो, मास्टर जी आ जाएँगे ।"

"आ जाने दो । मुझे किसी की परवाह नहीं है, न तुम्हारी न अब्बा जी की । मैं किसी से डरती नहीं, सुना तुमने ।" लाली जलकर बोला : "मुझे सुनाने क्यों आई हो, जाओ जाकर अपने अब्बा जी को सुनाओ ।"

"मैं उनके पास नहीं जाऊँगी ।" ताहिरा ने तीखी नज़रों से लाली को देखा : "मैं तुमसे बात करने आई हूँ । यह बताने आई हूँ कि मैं तुमसे शादी करना नहीं चाहती, नहीं चाहती ।"

"न करो । मैंने तुम्हारे आगे हाथ नहीं जोड़े, पैरों पर पगड़ी नहीं डाली । न कभी तुम्हें रास्ते में छेड़ा, न आँख मारी, न सीने पर हाथ रखकर कहा 'ओए सोहनियो! हम तो क़त्ल हो गए' ।"

"अरे-अरे!" ताहिरा उसकी बात काट कर हैरत से बोली : "तुम तो बिल्कुल लफ़ंगे हो ।" वह एक बार फिर दहाड़ने लगी : "तुम यहाँ से चले क्यों नहीं जाते? जाओ अभी चले जाओ ।"

पहली नज़र में वह ताहिरा को भोली-भाली, शर्मीली दोशीज़ा (युवती) समझा था । उसके वहम-ओ-गुमान में भी न था कि वह इस क़दर तेज़ और तर्रार होगी । मगर जब वह अपनी तमाम तेज़ी और तर्रारी के साथ खुलकर सामने आ गई तो लाली ने दिल ही दिल में कहा : 'छोकरी तो ज़ोरदार है' । अब उसे ताहिरा को छेड़ने में मज़ा आने लगा । "मैं तो नहीं जाऊँगा । यहीं रहूँगा ।" यह कहकर वह टांगें पसार कर बिस्तर पर लेट गया । ताहिरा को मुखातिब करके बोला : "खड़ी क्यों हो? बैठ जाओ । आराम से गल-बात (बातचीत) करो ।"

वह उसी तरह खफ़गी (गुस्से) से बोली : "मैं यहाँ बैठने नहीं आई हूँ । तुमसे साफ़-साफ़ यह कहने आई हूँ कि तुम मेरे साथ शादी करने का ख्याल दिल से निकाल दो ।" ज़रा लम्हा रुक कर उसने कहा : "ज़रा अपनी शक्ल तो देखो । कैसी खतरनाक गुंडों की सी मूँछें हैं, ऊँह! " ताहिरा ने हिकारत से मुँह बिगाड़ा ।

लाली बिल्कुल नाराज़ न हुआ, मुस्कुरा कर बोला : "कोई बात नहीं, कल सुबह मुँडवा दूँगा । तुम चाहो तो उस्तरा लाकर अभी मुँड दो । ले आओ इसी बात पर उस्तरा! "

ताहिरा ने गुस्से से गर्दन हिलाई : "गोया मूँछें मुँडवा कर तुम गुल-फ़ाम (सुंदर) बन जाओगे और मैं तुम्हें अपना सरताज बना लूँगी । चुग़द! अहमद (मूर्ख) कहीं का ।"

"निकालो-निकालो, जितनी चाहे गालियाँ निकालो । कल सुबह के बाद तुमसे पूछूँगा ।"

"क्या करोगे तुम? " लाली उठकर पलंग पर बैठ गया ।

गर्दन ज़रा सी अकड़ा कर नखवत (अभिमान) से बोला : "कल सुबह मैं तुम्हारा खसम (पति) बन जाऊँगा ।"

"खसम! " वह तिलमिला के बोली : "तुम गुंडे हो । बिल्कुल थर्ड क्लास गुंडे ।"

लाली ने मुतलक़ (बिल्कुल) नागवारी ज़ाहिर नहीं की । क़मीज़ की आस्तीन चढ़ाई और ताहिरा को अपने बाज़ू की मछलियाँ दिखाते हुए बोला : "यह देख रही हो? नज़दीक आ जाओ, छू कर देखो ।"

"देख रही हूँ, देख रही हूँ । तुम दूर ही से अच्छे-खासे मुस्टंडे नज़र आते हो ।"

"मैं तुम्हें अपने बाज़ू इसलिए दिखा रहा हूँ ।" लाली ने संजीदा चेहरा बना कर कहा : "कल सुबह के बाद तुम ने कड़-कड़ की तो समझ लेना । एक चपेड़ा (थप्पड़) इधर से लगाऊँगा, दूसरा इधर से ।" लाली ने हाथ घुमा-घुमा कर खबरदार किया । "ऊपर से एक ठड्डा (लात) भी लगाऊँगा । वह जाओगी दूर तक गेंद की तरह लुढ़कती हुई । सारी कड़-कड़ निकल जाएगी ।"

"क्या कहा? तुम मुझे मारोगे?? " उसने क़हर-आलूद (क्रोधित) नज़रों से लाली को देखा : "वहशी दरिंदे! बेगैरत! तुम्हें ऐसा करते हुए शर्म नहीं आएगी? तुम तो बिल्कुल जंगली हो ।"

लाली ने मुसालहत (समझौता) करने के अंदाज़ में कहा : "चलो नहीं मारूँगा । अब तो गुस्सा थूक दो । जो तुम कहोगी वह करूँगा । मूँछें भी मुँडवा दूँगा, एक दम साफ़-चट । बाल भी नए स्टाइल के बनाऊँगा । क़मीज़ और पतलून तो पहले ही पहने बैठा हूँ । बोलो अब तो मेरी घरवाली बनना मंज़ूर कर लोगी? "

ताहिरा ने कोई जवाब नहीं दिया । थकी हुई सी कुर्सी पर बैठ गई । इस दफ़ा उसने निहायत संजीदगी से पूछा : "क्या वाकई तुम समझते हो कि तुम्हारे साथ मेरी शादी हो जाएगी? "

"समझता क्या, सोलह आने की गल है ।"

ताहिरा कुछ देर खामोश बैठी रही । फिर दफ़अतन (अचानक) उठकर खड़ी हो गई : "अच्छा तो फिर यह भी सुन लो बल्कि अपनी आँखों से देख भी लो ।" उसने अपने बदन से चादर उतार कर मेज़ पर रख दी और निहायत बेबाकी से अपना फूला हुआ पेट दिखा कर बोली : "यह किसी की अमानत है और जिसकी यह अमानत है मैं उसी की अमानत हूँ ।"

लाली भौंचक्का रह गया । चंद लम्हे खामोश रहा । फिर उसने संभल कर आहिस्ता से पूछा : "किसका है? " "किसी का भी है । तुम्हारा इस मामले से कोई ताल्लुक़ नहीं है ।"

"क्यों नहीं है, बिल्कुल है ।" लाली ने डपट कर पूछा : "ज़्यादा कड़-कड़ न करो, साफ़-साफ़ बताओ ।"

"चलो यह भी सुन लो ।" वह आहिस्ता-आहिस्ता बताने लगी : "मैं लाहौर में अपनी खाला के पास रहती थी । वहाँ कॉलेज में पढ़ती थी । कॉलेज के एक प्रोफ़ेसर मुझे घर पर भी पढ़ाते थे । मुझे उनसे मोहब्बत हो गई । वह भी मुझसे दीवानों की तरह मोहब्बत करने लगे ।" यह कहते-कहते वह यादों के सहारे बहुत दूर निकल गई : "एक लम्हे की जुदाई भी बर्दाश्त न होती । घर और कॉलेज के बाहर भी हम छुप-छुप कर मिलते ।"

लाली बात काटकर बोला, "शालीमार बाग़ और लॉरेंस गार्डन में उसके साथ ठुमक-ठुमक कर गाने भी गाती होगी?" वह पल भर के लिए रुका। "यह तो फ़िल्मी बातें हुईं। आगे बताओ?"
"आगे जो कुछ हुआ वह तुम्हारे सामने है।" उसने आँखों से भी देख लिया।
"और आगे बताओ।"
"प्रोफ़ेसर की एक पत्नी पहले से मौजूद है। एक बच्चा भी है। मगर मुझे उसकी दूसरी पत्नी बनना मंज़ूर है। मैं उसकी मोहब्बत में सब कुछ करने को तैयार हूँ, लेकिन अब्बा जी तैयार नहीं हैं। वह मेरी पढ़ाई अधूरी छुड़वाकर मुझे घर ले आए। अब वह मुझे तुम्हारे गले मढ़ना चाहते हैं, ताकि उनकी बदनामी न हो।"
लाली कुछ देर खामोश बैठकर सोचता रहा, फिर बोला, "मैं तो तुमसे यही कहूँगा, तुम्हें भी चाहिए कि मास्टर जी की बदनामी न हो। वह बहुत अच्छे इंसान हैं। फ़रिश्ते हैं फ़रिश्ते, इतने नेक और शरीफ़ कि जी चाहता है उनके पैर धोकर पिएँ।" लाली ने दिल की बात साफ़-साफ़ कह दी।
ताहिरा के चेहरे पर कुछ पलों के लिए दुख का साया फैल गया। उसमें हया भी थी और दबा हुआ दर्द भी। वह थोड़ी देर तक इसी हाल में बैठी रही, मगर जल्द ही दुख का साया धीरे-धीरे उसके चेहरे से हट गया। गुस्से और नफ़रत की कड़ी धूप छा गई। "तुम निपट मूर्ख हो। तुम्हें कुछ भी पता नहीं। मैं उनकी बेटी हूँ। मैं अब्बा जी को अच्छी तरह जानती हूँ। न वह फ़रिश्ते हैं और न ही उतने शरीफ़ जितना तुम उन्हें समझ रहे हो।" ताहिरा ने थोड़ा संकोच किया। "वह नंबर एक के फ़्रॉड (धोखेबाज़) हैं। पहले तो उन्होंने हेरा-फेरी करके जाली क्लेम मंज़ूर कराया, प्राथमिक स्कूल के मामूली मास्टर से बड़े ज़मींदार बन गए। फिर अनाज की आढ़त का कारोबार शुरू कर दिया।" उसने लाली को नज़र भरकर देखा। "सुन रहे हो?"
"हाँ जी, बिल्कुल सुन रहा हूँ। कहती जाओ।"
"अच्छा तो अब यह भी सुन लो। आढ़त का तो सिर्फ़ बहाना है। वह स्मगलिंग करते हैं। इधर से गेहूँ और चीनी सीमा पार भेजते हैं, उधर से हिंदुओं की बीमार और बूढ़ी गाय-भैंसें लाते हैं। कसाइयों के हाथ बेचकर उनका ज़हरीला गोश्त लोगों को खिलाते हैं। दिन भर स्मगलिंग का धंधा करते हैं। रात को वज़ीफ़ा (प्रार्थना) पढ़-पढ़कर अपने गुनाह माफ़ करवाते हैं।" ताहिरा का लहज़ा और कड़वा हो गया।
"सुन लिया तुमने, वह कितने नेक और फ़रिश्ते हैं?"

लाली को ऐसा महसूस हुआ जैसे वह उलट-पुलट गया हो। उसे दुख भी हुआ, हैरानी भी। मगर ताहिरा उसके मानसिक तनाव से बेपरवाह बोलती रही।

"अब तुम्हें यह भी बता दूँ कि वह तुम्हें अपने स्मगलिंग के धंधे में एजेंट के तौर पर इस्तेमाल करेंगे, ताकि रेंजर्स और बॉर्डर पुलिस के साथ गोली चले तो तुम ही मारे जाओ, तुम ही जेल जाओ। मगर यह सिलसिला भी कुछ ही महीने चलेगा। मेरे बच्चे के जन्म के बाद वह तुम्हें किसी मुक़दमे में फँसवाकर तुमसे तलाक़नामा लिखवा लेंगे और मेरा विवाह अपने भतीजे से कर देंगे। वह बदसूरत है और एक टाँग से लंगड़ा भी, मगर बहुत बड़ी ज़मींदारी और जायदाद का इकलौता वारिस है। अपनी यह स्कीम वह आज ही शाम माँ जी को बता चुके हैं।" उसने नज़रें नीची करके धीरे से कहा। "तुमने सब कुछ सुन लिया। अब बताओ, क्या तुम ऐसी लड़की से शादी कर लोगे जिसके पेट में किसी और का बच्चा है?"
"कितने दिन का है?" लाली ने उसके फूले हुए पेट की ओर देखकर कहा।
"मुझे नहीं मालूम।"
"छह-सात महीने से तो कम का नहीं लगता।"
"शायद!" ताहिरा ने संक्षिप्त जवाब दिया।
लाली मुस्कुराकर बेपरवाही से बोला, "सिर्फ़ तीन महीने की तो बात है। फिर सब कुछ ठीक-ठाक हो जाएगा।" ताहिरा ने लाली को खूँखार नज़रों से देखा और नफ़रत से मुँह बिगाड़कर बोली, "तुम अजीब बेशर्म इंसान हो। तुम ऐसा बच्चा स्वीकार कर लोगे?"
"कर लूँगा, ज़रूर कर लूँगा। हर्ज़ ही क्या है जी!" वह बड़ी ढिठाई से मुस्कुराता रहा। "वैसे सच पूछो तो यह मेरा मामला है भी नहीं। औलाद के बारे में सिर्फ़ माँ बता सकती है कि उसका पिता कौन है। मैं किसका बेटा हूँ, यह बात मेरी माँ बता सकती थी। तुम किसकी बेटी हो, यह बात मास्टर जी नहीं, तुम्हारी माँ बता सकती है। गलत तो नहीं कह रहा हूँ मैं?"
ताहिरा ने तंग आकर कहा, "जो कुछ तुम कह रहे हो, ठीक ही कह रहे होगे।" वह बेहाल होकर फिर कुर्सी पर बैठ गई।
लाली भी खामोश रहा। वक्त गुज़रता जा रहा था। अब लाली को वहाँ से चले जाना चाहिए था। उसने ताहिरा को फिर छेड़ा। "तुम यहाँ क्यों बैठी हो? अंदर जाओ। नहाओ, खुशबू लगाओ, रेशमी कपड़े पहनो, सजो और संवरो।"

"सुबह-सुबह सामने ऐसे मत आना। वहशी बनकर आना। मैं तुम्हारा घूँघट उठाऊँगा। घूँघट उठाने की रस्म अदा करूँगा।"

ताहिरा ने कोई जवाब नहीं दिया। सिर झुकाए खोई-खोई बैठी रही। फिर उसने बड़ी आज़जी (विनम्रता) से कहा, "मैं हाथ जोड़ती हूँ।" उसने लाली के आगे दोनों हाथ जोड़ दिए। "कहो तो तुम्हारे पैरों पर सिर रख दूँ। खुदा के लिए मेरे साथ शादी का ख्याल दिल से निकाल दो।"
"अपने अब्बा जी से क्यों नहीं कहतीं? विवाह तो उन्होंने ही तय किया है।"
"कह चुकी हूँ उनसे, बार-बार कह चुकी हूँ। उनके सीने में दिल नहीं, पत्थर है। माँ जी को भी यह रिश्ता पसंद नहीं। जब से सुना है, बेचारी ज़ार-ज़ार रो रही हैं।" ताहिरा तेज़ी से बोलते-बोलते अचानक धीमी पड़ गई। उसने लाली का चेहरा ग़ौर से देखा और दुखी होकर बोली, "तुम इतने पत्थरदिल क्यों हो? तुम मुझसे शादी करने पर क्यों तुले हुए हो? तुम्हें मुझसे मोहब्बत भी नहीं है।"
"हरगिज़ नहीं।" लाली ने इनकार में गर्दन हिला दी। "सीधी-सीधी मामले की बात यह है कि अब तो मैं मास्टर जी से अपना टैक्स वसूल करना चाहता हूँ। उन्होंने मुझसे जो धोखाधड़ी की है।"
ताहिरा चौंक पड़ी। उसने कोई बात नहीं की। झट अपने कानों से सोने के झुमके उतारे, हाथों के कंगन उतारे और उन्हें लाली की ओर बढ़ाकर बोली, "लो यह ले लो। यह तुम्हारा टैक्स है। अब यहाँ से चले जाओ।"
लाली ने हाथ नहीं बढ़ाया। ताहिरा तड़पकर बोली, "क़सम खाकर कहती हूँ, ज़हर खा लूँगी, खुदकुशी कर लूँगी मगर तुम्हारे साथ शादी नहीं करूँगी, नहीं करूँगी।"
"यह ज़ेवर पहन लो। ज़हर खाने और खुदकुशी करने की ज़रूरत नहीं।" लाली ने इस बार अत्यंत गंभीरता से कहा, "मैं यहाँ से अभी चला जाऊँगा पर एक शर्त पर।"
"क्या शर्त है तुम्हारी?" ताहिरा के चेहरे पर खुशी के फूल खिल उठे।
"मुझे तुम्हारी नहीं, तुम्हारी 'भूरी' भैंस की ज़रूरत है। वह पक्का अठारह सेर दूध देती है और तुम्हारे पेट में..."
ताहिरा बात काटकर बोली, "एक नहीं तुम दो ले जाओ। मुझे कोई एतराज़ नहीं। जाओ, जाकर निकाल लाओ दोनों को और यहाँ से चले जाओ।"
"मैं सिर्फ़ भूरी भैंस लूँगा। मगर उसे लेने मैं नहीं जाऊँगा। वहाँ रखवाला मौजूद है। तुम खुद जाओ और उसे लेकर आ जाओ।"

"मगर वह मुझे भी नहीं ले जाने देगा। मैं उससे कहूँगी क्या?"
लाली अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। "यह मैं नहीं जानता। भैंस निकाल कर तुम ही लाओगी और मेरे साथ गाँव के आखिरी छोर तक जाओगी। बोलो क्या कहती हो? अगर यह काम कर सकती हो तो जल्दी करो। नहीं तो अंदर जाओ मुझे सोने दो। सुबह निकाह के बाद तुमसे मिलूँगा।"

ताहिरा का चमकता हुआ चेहरा एक बार फिर पीला पड़ गया। "तुम यह तो सोचो। मैं उसे कैसे निकाल कर ला सकती हूँ।" वह गिड़गिड़ाने लगी। "खुदा के लिए मुझे बताओ मैं क्या करूँ?"
लाली ने उसका परेशान चेहरा देखा और खुलकर मुस्कुराया। "तुम मुझे बेवकूफ, मूर्ख, जंगली और न जाने क्या-क्या कह चुकी हो। पर तुमने यह भी सोचा कि तुम्हारे पास खुद कितनी समझ है। अगर तुम्हारे पास समझ-बूझ होती तो यूँ गभिन भैंस की तरह पेट फुलाए न बैठी होतीं।" उसने कुछ संकोच किया। फिर हिकारत से मुँह बिगाड़कर बोला, "मास्टर जी वज़ीफ़ा पढ़ते हैं, बेटी इश्क़ लड़ाती है और मैं बेवकूफ हूँ, मूर्ख और जंगली हूँ।"
ताहिरा खामोश बैठी उसकी जली-कटी सुनती रही।
लाली ने उसे संबोधित करते हुए कहा, "इस तरह यहाँ बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। यह बताओ, आस-पास के किसी गाँव में तुम्हारा कोई शरीका (साझेदार), कोई रिश्तेदार है? मामा, चाचा, मौसा, ताऊ... कोई न कोई तो होगा?"
ताहिरा ने झट जवाब दिया, "मामा हैं। छह मील दूर एक चेक पोस्ट में रहते हैं। मगर वह हमारे घर कम आते हैं। सगे मामा नहीं हैं।"
"सगे-सौतेले की बात छोड़ो। दिमाग़ से काम लो। माँ जी तो तुम्हारी ही पक्षधर हैं ना?"
"बिल्कुल हैं। उन्होंने ही तो मुझे तुम्हारे पास भेजा है।"
"तो बस तुम सीधे उनके पास जाओ। उनसे कहो कि वह रखवाले को मामा को बुलाने के लिए भेज दें। वह उधर जाएगा और इधर तुम भैंस निकाल कर ले आओ। दोनों का काम बन गया।"
ताहिरा ने खुश होकर गर्दन हिलाई। "यह तरकीब ठीक रहेगी।" उसने उत्साह में आकर चुटकी बजाई। "बिल्कुल ठीक है।"
"खाली पीली ठीक कहने से काम नहीं चलेगा। जाओ और भूरी भैंस लेकर फटाफट आ जाओ।" ताहिरा जाने के लिए खड़ी हो गई। वह दरवाज़े की ओर बढ़ी।
लाली ने उसे टोका। "और देखो, मास्टर जी की एक कमीज़, पगड़ी और एक धोती भी लेती आना। एक लाठी भी लाना।”

"वह किसलिए?"
"जैसा कहता हूँ वैसा करो। बीच में टाँग मत अड़ाओ। मैं ऐसे ही (भैंस) नहीं ले जाऊँगा। उसके साथ चरवाहा या गूजर बनकर जाऊँगा। आया समझ में? और हाँ देखो, जाते ही मास्टर जी के कमरे की ज़ंजीर बाहर से चढ़ाकर उसमें चुपके से ताला डाल देना। हर काम चौकस होना चाहिए।"
ताहिरा चली गई। लाली बेचैनी से उसका इंतज़ार करने लगा।

पंद्रह मिनट बाद ताहिरा वापस आई और मुस्कुराते हुए बोली, "रखवाला चला गया। कम्बख्त बड़ी मुश्किल से गया। जब मैंने और माँ जी ने नौकरी से निकाल देने की धमकी दी, तब गया।" उसने बगल में दबाए हुए कपड़े लाली को दे दिए। एक लाठी भी लाई थी, वह भी दे दी।
लाली ने सारी चीज़ें लेकर कहा, "अब अंदर जाकर थोड़ी देर इंतज़ार कर लो। इतनी देर में रखवाला गाँव से दूर चला जाएगा। जल्दी न करना वरना सारा काम गड़बड़ हो जाएगा। समझ गईं? अब तुम जाओ।"
ताहिरा के जाते ही लाली ने झटपट कपड़े बदले। अपनी पतलून और कमीज़ तह करके बगल में दबाई। फिर कुछ सोचकर उसने वह जूता भी कपड़ों के अंदर रख लिया जो मास्टर जी ने आम इस्तेमाल के लिए दिया था। लाली ने घड़ी देखी, साढ़े दस बज रहे थे।
ताहिरा दोबारा कमरे में आई। उसने लाली को देखा और हैरानी से बोली, "अरे! तुम तो बिल्कुल ग्रामीण लग रहे हो।" उसने लाली को दो सौ रुपये के नोट दिए, "लो, ये रख लो। तुम्हें ज़रूरत पड़ेगी।"
लाली ने रुपये लेकर धोती के डब (कमर के मोड़) में रख लिए। ताहिरा ने थोड़ी देर खामोश रहकर चादर के अंदर से चमड़े की चार गोल-गोल थैलियाँ निकालकर लाली को दीं। "ये खुरपे (खुरों के कवर) हैं। माँ जी ने कहा है कि इन्हें भैंस के चारों खुरों में पहना देना ताकि खोजी (निशान ढूँढने वाले) सुराग लगाने निकलें तो खुरों के निशान न पहचान सकें। समझ गए?"
"बिल्कुल समझ गया।" लाली ने कुछ हैरानी से पूछा, "क्या अपने मास्टर जी मवेशी चोरी का धंधा भी करते हैं?"
ताहिरा ने उसके सवाल को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा, "अब तुम जाओ। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी। भूरी भैंस सामने पेड़ों के नीचे खड़ी है, उसे ले जाओ।"
लाली अड़ गया, "नहीं, तुम्हें भी मेरे साथ चलना होगा।" वह आगे बढ़ा। उसने बरामदे में खुलने वाला दरवाज़ा खोला और ताहिरा को संबोधित किया, "चलो आगे बढ़ो। जो तय हुआ है वही होगा।"

उसका लहज़ा कड़वा हो गया। "तुम्हें भगाकर नहीं ले जाऊँगा। ऐसा इरादा होता तो यहाँ से जाता ही क्यों।" ताहिरा ने घबराकर दरवाज़े की ओर देखा। दरवाज़े की आड़ में उसकी माँ खड़ी थी।
लाली ने ताहिरा को खामोश पाकर कहा, "खामा-खा का नखरा मत करो। आगे बढ़ो। मेरा मुँह क्या ताक रही हो।"
ताहिरा झिझकती हुई आगे बढ़ी और लाली के साथ बैठक से बाहर निकली। भैंस पेड़ों के नीचे खड़ी थी। लाली ने उसे दूर से ही पहचान लिया। वह भूरी भैंस थी। उसने धीरे-धीरे भैंस के चारों खुरों में चमड़े के कवर चढ़ा दिए। रस्सी खोली और भैंस को आगे बढ़ाने के लिए धीरे-धीरे 'तत-तत' की आवाज़ निकाली।

भैंस आगे बढ़ी। लाली उसकी रस्सी पकड़कर चलने लगा। ताहिरा भी उसके साथ थी। उसने अपना शरीर चादर से छिपा रखा था।

आकाश पर गहरा गुबार छाया था। चाँदनी धुंधली और मैली-मैली थी। ताहिरा बहुत डरी हुई लग रही थी। वह सहमी हुई नज़रों से इधर-उधर देखती हुई चल रही थी। हर आहट पर काँप उठती। किसी पास की गली में कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। उसकी आवाज़ सुनकर ताहिरा ऐसी बदहवास हुई कि गिरते-गिरते बची।

लाली ने झट उसका हाथ पकड़कर उसे संभाल लिया और जहाँ था वहीं रुक गया। दोनों घर से लगभग सौ कदम की दूरी पर थे और एक पेड़ के नीचे अंधेरे में खड़े थे। ताहिरा धीरे-धीरे हाँफ रही थी। लाली को उस पर तरस आ गया।

"तुम वापस चली जाओ। ज़बान की तुम जितनी तेज़ हो उतनी ही बुज़दिल और डरपोक हो, बिल्कुल छछूंदर की तरह, ज़रा सी आहट हुई और चर-चर करती भागी।" ताहिरा ने उसकी बातों का बिल्कुल बुरा नहीं माना। मुस्कुराकर बोली, "तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया! तुम बहुत नेक इंसान हो।"

लाली ने उसकी ओर थोड़ा झुककर धीरे से फुसफुसाहट की, "मैं बिल्कुल नेक इंसान नहीं हूँ। हाँ तुम बहुत नेक और अच्छी हो। न शादी हुई न विवाह और वसीयत में मेरे लिए यह भैंस ले आईं और दो सौ रुपये भी।"

ताहिरा ने कोई जवाब नहीं दिया। सिर्फ़ मुस्कुराकर रह गई। वह वापस जाने के लिए मुड़ी तो लाली ने उसे टोका और उसके पेट की ओर इशारा करके बोला:

"अपने बच्चे का नाम लाली रखना।"

"लाली!" वह हैरानी से बोली। "यह क्या नाम हुआ?"

"मेरा नाम भी लाली है। मैं भी अपनी माँ के पेट में बिल्कुल इसी तरह आया था। मालूम नहीं, मेरा पिता कौन है? मेरी माँ के विवाह के बाद जो मेरा सौतेला पिता बना, वह मुझे हमेशा हरामज़ादा कहता। माँ को गालियाँ देता और घर से मारकर बाहर निकाल देता। मुझे उससे मिलने नहीं देता था।" वह एक पल को रुका। "मेरे साथ तुम्हारा विवाह हो जाता तो मैं तुम्हारे बच्चे को कभी हरामज़ादा न कहता। तुम्हें मारकर कभी घर से न निकालता। पर मेरे हाथ में तो विवाह की लकीर ही नहीं है।"

ताहिरा ने नज़र भरकर लाली को देखा और वापस जाने का इरादा बदल दिया। "मैं तुम्हारे साथ चलूँगी। तुम्हें गाँव के कोने पर जाकर रुख़सत (विदा) करूँगी।"

लाली ने मुस्कुराकर कहा, "इतनी जल्दी-जल्दी फ़ैसले न बदला करो। एक गड्ढे से निकलोगी तो दूसरे में गिर जाओगी।"

अचानक रात के सन्नाटे में आहट उभरी। लाली ने धीरे से ताहिरा को धक्का दिया, "जाओ, कोई आ रहा है।"
ताहिरा तेज़-तेज़ कदम उठाती अपने घर की ओर चली गई। लाली आगे बढ़ गया।

लाली जहांगीरा में दाखिल होकर शादां के घर पहुँचा तो रात ढल रही थी। उसने भैंस घर के दरवाज़े के पास एक पेड़ से बाँधी और दीवार फाँदकर आँगन में धीरे से उतर गया। शादां आँगन में सो रही थी। कमरे का दरवाज़ा बंद था। लाली ने पास जाकर धीरे से शादां का कंधा झिंझोड़ा। वह हड़बड़ाकर उठ बैठी।
फटी-फटी आँखों से उसे देखते हुए बोली, "ओए लाली! तू तो बिल्कुल जाट लग रहा है। मैं तो डर गई थी कि कौन आ गया?
"डर मत, मैं तुझे अगवा करने नहीं आया। यह बता तेरी भैंस का क्या हुआ?
"मर गई, मलिक ने उसे मार डाला।" वह दुखी होकर बोली। थोड़ी देर खामोश रही। फिर शोले की तरह भड़क उठी, "मैं मलिक का खून पी जाऊँगी। उसकी बोटियाँ चबा डालूँगी।"
"भैंस को मलिक ने नहीं, मैंने मारा। ले मेरी बोटियाँ नोचकर चबा।"
"लाली! तू यहाँ से चला जा। मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता।" शादां ने ठंडी आह भरी। "तुझे पता है, मैंने भैंस के कारण बाले का गला काट डाला।"
लाली ने झट उसके मुँह पर हाथ रख दिया। "ताजी (शादां का पति) कमरे में नहीं है?"
"नहीं, वह आज सुबह मुझसे लड़-झगड़कर अपने घर ----।"
लाली ने शादां का हाथ पकड़कर घसीटा, "मेरे साथ आ।"
शादां हाथ छुड़ाते हुए बेज़ारी से बोली, "लाली! मुझे तंग मत कर। मैं कहीं नहीं जाऊँगी। मन करता है अपना मांस नोच डालूँ।"

इनकार के बावजूद लाली उसे खींचता हुआ आँगन के दूसरे सिरे पर ले गया। मगर जब वह दरवाज़े की ओर बढ़ा तो शादां ने झटका देकर अपना हाथ छुड़ा लिया। आँखें निकालकर बोली, "क्या चाहता है? मैं तेरे संग नहीं जाऊँगी।"
"पागल मत बन। तेरी मर्ज़ी के बिना तुझे कोई अपने संग नहीं ले जा सकता। यह बात तो तू भी जानती है। फिर क्यों डरती है?" लाली ने आगे बढ़कर दरवाज़े की कुंडी खोल दी। "दरवाज़े तक आ जा। यह तो तेरे ही घर की दहलीज है।"

शादां धीरे-धीरे दरवाज़े तक चली गई। लाली ने दरवाज़ा खोला, बाहर गया और भैंस के साथ घर में दाखिल हुआ। शादां हैरानी से आँखें फाड़कर बोली:
"हाय! यह तू कहाँ से ले आया?"
लाली ने दरवाज़ा बंद किया। "ठीक तरह देख ले। भूरी भी है और दूध देने वाली भी है। पक्का अठारह सेर दूध देती है। नीली बार नस्ल की कटड़ी (युवा भैंस) है। अब मत रो। तेरी भैंस वापस आ गई।"
शादां ने भैंस की गर्दन और पीठ पर हाथ फेरा। "लगती तो वैसी ही है।" फिर उसकी थूथन सहलाते हुए बोली, "अठारह ही सेर दूध देती है ना?"
"बैठ जा थनों के नीचे। दुहकर देख ले।"
"इस वक्त? तेरा दिमाग़ तो नहीं चल गया? यह बता कहाँ से लाया?" उसकी नज़र भैंस के खुरों पर पड़ी। "चोरी करके तो नहीं लाया? इसके खुरों में ये कवर क्यों पड़े हैं?"
"इसलिए कि खोजी इसका खुर (पैर का निशान) न निकाल सकें।" वह बड़ी ढिठाई से बोला। "वैसे यह मुझे दान में मिली है। घरवाली तो नहीं मिली, उसकी मुझे ज़रूरत भी नहीं थी।"
"ठीक-ठीक बता?"
"मैंने कभी तुझसे झूठ बोला है?" लाली ने मुस्कुराकर बताया। "इसे न लाता तो घरवाली गले पड़ जाती। वह थी तो ऐसी सुंदर, तुझे क्या बताऊँ। लाहौर के कॉलेज में पढ़ती है, पर वह गभिन भैंस की तरह है, उसके पेट में बच्चा है।"
"तेरी बातें बिल्कुल समझ नहीं आईं।" वह बेज़ारी से बोली। "साफ़-साफ़ बात कर।"
"आराम से बैठकर तुझे सब कुछ बता दूँगा। पहले यह बता उस दिन मेरे जाने के बाद क्या हुआ?"
"तेरे जाते ही मलिक अपने कारिंदों को लेकर आ गया। मुझे ज़बरदस्ती पकड़कर अपनी हवेली में ले गया। बहुत डाँटा, धमकाया। बहुत नाराज़ हुआ। मारने को बार-बार उठा। मुझे धमकी दी कि किसी से न कहूँ...”

भैंस उसकी (मलिक की) गोली लगने से मर गई। पर गाँव में यह बात सबको मालूम है. वह अपनी बात कहते-कहते पल भर के लिए रुकी। "बेचारी भैंस को उसके कामगार और कारिंदे उसी वक्त रेहड़े (गाड़ी) में डालकर ले गए। कसाई को दे दिया होगा या दूर किसी गड्ढे-वड्ढे में डाल दिया होगा." उसने गहरी सांस भरी। "मलिक ने सौ रुपये दिए थे, मैंने नहीं लिए। खाली हाथ चली आई."
"ठीक ही किया। उसने पुलिस तो नहीं बुलाई?"
"नहीं! भैंस के मरने के बाद वह डर गया। पर अपनी बंदूक के बारे में बार-बार पूछता था. तूने उसका क्या किया?"

"उधर पलाई की एक झाड़ी में फेंक दी."
लाली ने बेपरवाही से कहा। "अब तू यह सोच, सब पूछेंगे कि यह भैंस कहाँ से आई तो क्या कहेगी?"
"हाय! यह तो मैंने सोचा ही नहीं। बता क्या कहूँ?"
"तेरा पति कह देगा कि यह भैंस उसने तुझे दी है?"
"कह देगा। ज़रूर कह देगा. जो कहूँगी वही कह देगा."
"वह तुझे इतना प्यार करता है तब भी तू उसके पास नहीं जाती। उससे इतनी चिढ़ क्यों है?"
"तुझे पता नहीं, मुझे वह कभी पसंद नहीं आया." वह ख्यालों में खो गई। थोड़ी देर खामोश रहकर बोली, "मेरी माँ मर गई थी। सौतेली माँ थी। वह मुझे बहुत तंग करती थी। मारती थी। खाने को कम देती थी। गंदी-गंदी गालियाँ निकालती थी। मैं छोटी सी थी तो उसने खैरदीन से मेरा विवाह कर दिया. मेरे पति का नाम खैरदीन है। तूने उसे नहीं देखा। बिल्कुल अधेड़ है। आधे से ज़्यादा उसकी दाढ़ी और सिर के बाल सफेद हैं। हाय, ऐसी बुरी शक्ल है उसकी, तुझे क्या बताऊँ। यह लम्बा मुँह और बाहर निकले हुए ये बड़े-बड़े दाँत। बिल्कुल दंतैल (दंदलू) है. गुस्सा तो उसे आता ही नहीं। कभी लड़ाई-झगड़ा नहीं करता। कोई आँख दिखाए तो हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है। सब कहते हैं, 'हाय खैरदीन कितना अच्छा बंदा है, कितना भला है। फरिश्ता है फरिश्ता।' शादां ही बुरी है."
वह गुस्से से एकदम भर गई. "इतना ही भला है तो इस फरिश्ते से अपनी बेटी, अपनी बहन क्यों नहीं ब्याह दी? शादां क्यों उसके गले में ढोल बनाकर डाल दी? माँ ने चुपके से तीन सौ रुपये जो लिए थे. हाय, कितने सस्ते दामों में बेच दिया मुझे."
वह न जाने और क्या-क्या कहती मगर लाली ने उसे रोक दिया। "अपनी ही कहे जाएगी या दूसरे की भी सुनेगी?"

"कह, क्या कहता है?"
"मेरा कहा मान। कल सवेरे ही सवेरे अपने खैरदीन के पास चली जा. हो सके तो उसे और बच्चों को कुछ दिनों के लिए यहाँ ले आ."
"मैं वहाँ नहीं जाऊँगी." शादां ने साफ़ इनकार कर दिया। "एक बार उसके घर से चली आई, अब उसकी दहलीज पर कदम नहीं रखूँगी. उसने पहले भी बहुत मिन्नतें कीं पर मैं नहीं गई. अब कैसे जा सकती हूँ?"
"मत जा." लाली चिढ़कर बोला। "पकड़ी जाएगी."
"तो क्या सचमुच चोरी की है?"
"पिता की तरफ से चोरी की है, माँ और बेटी की तरफ से दान में मिली है। ये दो सौ रुपये भी मिले हैं."
लाली ने धोती के डब से रुपये निकाले और शादां को देकर बोला, "ले ये रख ले. मान ले, पुलिस कोई

चक्कर-वक्कर चलाए तो कुछ दे-दिलाकर मामला दबा देना और देख, कल ज़रूर खैरदीन के पास जाना। दंतैल तुझे अपने लंबे-लंबे दाँतों से काट तो नहीं खाएगा। वैसे भी तुझे बरसों का तजुर्बा रहा है। कुछ दिन और काट लेगा तो तेरा क्या बिगड़ जाएगा." लाली ने उसे नरम लहजे में समझाया। "ज़िद मत कर, मेरा कहा मान। वरना घर आई भैंस भी हाथ से जाएगी और खुद भी किसी चक्कर में पड़ जाएगी. बोल क्या कहती है?"
"तू कहता है तो चली जाऊँगी." शादां स्थिति की गंभीरता को महसूस करते हुए राज़ी हो गई. "सवेरे ही सवेरे चली जाऊँगी."
"यह बता कपड़े ले आई?"
"नहीं, दर्जी गाँव छोड़कर शहर चला गया। बुरा मत मान। कल शाम तक ठहर जा। मैं ज़रूर तेरे लिए कमीज़ सिलवाकर ले आऊँगी। धोती का क्या है, वह मेरी ले ले। वैसे चादर से भी काम चल जाएगा."
"अब ज़रूरत भी नहीं, मुझे अब जाना है। अभी रात बाकी है। अंधेरे में निकल जाऊँगा. देख, सवेरे अपने पति के पास चली जाना."
"तुझे कह तो दिया, चली जाऊँगी, ज़रूर चली जाऊँगी." शादां ने भैंस की रस्सी पकड़ी और लाली को रोककर बोली, "भैंस को बाँध लूँ. तू अकेला नहीं जाएगा। मैं भी साथ चलूँगी."
"आज नहीं. अब तो तू मेरे साथ उस दिन चलेगी जिस दिन मैं तुझे भगाकर ले जाऊँगा। तैयार रहना."

"बकवास मत कर." शादां ने मुँह बिगाड़कर कहा। "तू तो अड़ियल टट्टू है."
लाली खुलकर मुस्कुराया. "देख इतना तो हुआ, कंजर (नीच) से मुझे अड़ियल टट्टू बना दिया। सीढ़ी-सीढ़ी नीचे उतर रही है।" वह आगे बढ़ा और दरवाज़ा खोलकर बाहर चला गया.
☆
लाली उस रास्ते की ओर बढ़ा जो रेल की पटरी की तरफ जाता था. इसी रास्ते से वह पहले भी जहांगीरा आ चुका था और अब इससे बखूबी वाकिफ़ हो चुका था। वह जल्द से जल्द रहीम दाद के पास पहुँच जाना चाहता था.
वह अपने ठिकाने पर पहुँचने के लिए बेताब था। अभी उसे काफी लंबा फासला तय करना था. रात खत्म होने में कुछ घंटे रह गए थे। उसने अपनी रफ्तार तेज़ कर दी. मगर वह दो-ढाई मील आगे गया था कि एक मोड़ पर पास से आवाज़ आई.
"चौधरी! तेरे पास माचिस तो होगी?"
लाली सुनी-अनसुनी करके आगे निकल जाना चाहता था. लेकिन उसने कदम बढ़ाया ही था कि एक व्यक्ति अंधेरे से निकलकर उसकी ओर बढ़ा. "तूने मेरी बात का जवाब नहीं दिया." वह साइकिल पर

सवार था. लाली ने धुंधली-धुंधली चाँदनी में फौरन भाँप लिया कि वह सादे कपड़ों में पुलिस का कॉन्स्टेबल है। वह लंबे कद का दुबला-पतला आदमी था। ढलती उम्र के कारण उसकी कमर थोड़ी झुक गई थी।
लाली ने टालने के लिए कहा:
"मेरे पास माचिस नहीं है। मैं सिगरेट नहीं पीता."
वह आगे बढ़ गया। लेकिन कॉन्स्टेबल ने उसे जाने नहीं दिया, पीछे से उसके कंधे पर हाथ रखकर बोला:
"चौधरी बात सुन."
लाली ठहर गया। मगर खामोश रहा। कॉन्स्टेबल ने साइकिल एक तरफ खड़ी की और झुककर उसका चेहरा गौर से देखा. "लगता है, तुझे कहीं देखा है. कहाँ देखा है?" वह लाली को संदिग्ध नज़रों से घूरने लगा.
लाली ने झट कहा, "तुझे ऐसे ही संदेह हुआ. मैं तो इस गाँव में पहली बार आया हूँ." उसने चाहा कि बढ़कर आगे निकल जाए. लेकिन कॉन्स्टेबल ने उसका हाथ थामकर रोक लिया। "बात तो सुन." वह पल भर के लिए रुका। फिर उसने पूछा, "तू लाली तो नहीं है?"

"नहीं." लाली ने साफ़ इनकार कर दिया। "मैंने कहा नहीं, तुझे शक हुआ."
"मेरी नज़रें धोखा नहीं खा सकतीं." कॉन्स्टेबल ने बड़े आत्मविश्वास से कहा। "तू लाली है। पिछले दिनों जेल से भागकर आया है."
"तुझे कैसे मालूम हुआ कि मैं लाली हूँ?" लाली ने माथे पर बल डालकर गुस्से से उसे देखा। "बिना मतलब के थानेदारी जमाने खड़ा हो गया."
"मैंने थाने में तेरी तस्वीर देखी है। तू लाली ही है." कॉन्स्टेबल ने लाली की आँखों में आँखें डालकर कहा। "तू मेरी नज़रों को धोखा नहीं दे सकता. 30 साल हो गए पुलिस की नौकरी करते। एक से एक बड़ा मुजरिम देखा है और एक ही नज़र में पहचान लिया."
लाली ने उसकी बातों का कोई जवाब नहीं दिया. चुपचाप दस रुपये का नोट धोती के डब से निकाला और कॉन्स्टेबल की ओर बढ़ाते हुए बोला:
"ले इसे रख ले."
कॉन्स्टेबल ने दस रुपये का नोट तो ले लिया मगर साथ ही यह भी कहा, "तेरे लिए तो दो हज़ार रुपये का इनाम है. तेरा दूसरा साथी कहाँ है?"
लाली ने एक नोट और निकाला और कॉन्स्टेबल को देकर बोला, "मेरे पास अब सिर्फ रेल का किराया रह गया है, वह तुझे नहीं दूँगा." उसका लहज़ा तीखा हो गया। "साथ ही यह भी सुन ले। मेरा रास्ता रोका तो यहीं लिटा दूँगा." लाली ने झपटकर उसकी गर्दन दबोच ली. हल्का सा झटका देकर हाथ का शिकंजा

कसा तो अधेड़ उम्र का कॉन्स्टेबल 'नहीं-नहीं' करने लगा. "खाना-खराब (दुर्भाग्यशाली) मेरी गर्दन तो छोड़। मैंने कब तेरा रास्ता रोका." लाली ने उसे छोड़ दिया। वह अपनी गर्दन सहलाते हुए बोला, "तेरे हाथ तो लोहे के लगते हैं. तूने तो मेरी गर्दन ही तोड़ दी थी." वह थोड़ा रुका। "जाएगा कहाँ?"
"बेकार की टर्र-टर्र मत कर." लाली ने उसे डांटा.
"नाराज़ मत हो। मैं तो तेरे ही भले की कह रहा हूँ. पुलिस की एक पार्टी थोड़ी देर पहले इधर से गुज़री है। सब के सब सशस्त्र हैं. सूबेदार भी उनके साथ है."
"राउंड पर निकले हैं?" लाली ने पूछा। उसके लहज़े से चिंता झलक रही थी.
"नहीं." कॉन्स्टेबल अभी तक रुक-रुक कर अपनी गर्दन सहला रहा था. "परसों रात यूसुफवाला रेलवे क्रॉसिंग पर ज़बरदस्त डकैती पड़ी. डाकुओं ने बस लूट ली। गोली भी चलाई. एक घायल अस्पताल ले जाते रास्ते में ही चल बसा. जब से यह वारदात हुई है पुलिस हर तरफ भाग-दौड़ कर रही है. वैसे मैं तो अपने भाई के गाँव जा रहा था. वह बहुत बीमार है." उसने विराम लिया। "मुखबिरों ने बताया है कि डाकू इधर ही कहीं छिपे बैठे हैं."

"सूबेदार किधर गया है?"
कॉन्स्टेबल ने उत्तर दिशा की ओर हाथ उठाकर बताया, "पूरी पार्टी उधर गई है." लाली को भी उसी तरफ जाना था. वह उलझन में पड़ गया। उसे कोई दूसरा रास्ता मालूम नहीं था. कॉन्स्टेबल ने उसे खामोश देखकर पूछा:
"तुझे कहाँ जाना है?"
"जिधर पुलिस पार्टी गई है."
"पर तू तो स्टेशन जाएगा."
"हाँ." लाली ने इनकार नहीं किया। हालांकि उसे स्टेशन हरगिज़ नहीं जाना था। मगर वह यह ज़रूर जानता था कि कादरबाद स्टेशन के पास पहुँचकर उसे अपने ठिकाने पर पहुँचने का रास्ता मिल जाएगा।
"मेरी मान तो इस तरफ से निकल जा." कॉन्स्टेबल ने उस रास्ते से ज़रा हटकर एक तरफ इशारा किया. "यह रास्ता छोटा है और तेरे लिए ठीक भी रहेगा. ऐसा कर सीधा-सीधा चला जा. आगे जाकर 'चो' (बरसाती नाला) मिलेगा। यह बरसाती नाला चक 201-बी के पास से गुज़रता है." वह गर्दन उठाकर सोचने लगा। "चो यहाँ से चार मील तो होगा. उस पर पहुँचकर ऐसा करना कि उस पार मत जाना। चो के किनारे-किनारे चलते जाना. इस रास्ते पर झाड़-झंखाड़ और झाड़ियाँ बहुत हैं। तुझे कोई देख भी नहीं पाएगा. जहाँ चो मुड़ता है वहाँ से पूर्व की तरफ जाने वाला रास्ता पकड़ना. आगे जाकर नहर मिलेगी जो कादरबाद स्टेशन के पास से गुज़रकर लोअर बारी दोआब से मिल जाती है. समझ गया?"

"समझ गया, बिल्कुल समझ गया." लाली माथे पर बल डालकर बोला। "पर तुझे एक बात बता दूँ. अगर दो हज़ार इनाम के चक्कर में तूने मुझे फँसवा दिया और मैं पकड़ा गया तो इतना समझ ले कि मैं जेल से सीधा यहाँ आऊँगा। तुझे छोड़ूँगा नहीं." यह कहकर लाली ने मुँह पर हाथ फेरा। "मेरा नाम लाली है। इतना याद रखना."

"तू किस चक्कर में पड़ गया. मेरा नाम वाहिद है. इधर मुझे सब जानते हैं। पहले भी कई मुजरिम पकड़वा चुका हूँ. दो बार इसी चक्कर में घायल होकर अस्पताल भी गया. उन पर तुझसे ज़्यादा इनाम था पर हर बार इनाम ऊपर वालों को मिला. किसी की वर्दी में एक से दो फूल लग गए। मुझे क्या मिला? कप्तान साहब ने हाथ मिलाया और कंधा थपथपा दिया। चलो छुट्टी हुई। मेरी तनख्वाह 20 रुपये से आगे नहीं बढ़ी। 5 बच्चे हैं.”

लाली आगे बढ़ा। साहू और फकीरा अपनी जगह खड़े रहे। उन्हें अपने साथ न पाकर लाली ठिठका। पलट कर देखा। साहू ने डाँटकर कहा, "देखता क्या है? आगे बढ़।" उसने लाली को कार्बाइन की ज़द (निशाने) पर रख लिया।

लाली धीरे-धीरे बढ़ने लगा। आगे पुलिस थी, पीछे साहू और फकीरा थे। इधर भी बंदूकें थीं और उधर भी। लाली दोनों के बीच में था और बिल्कुल निहत्था था। भागने की भी गुंजाइश नहीं थी। उसकी पीठ पर साहू और फकीरा बंदूकें ताने खड़े थे। वह डगमगाते कदमों से आगे बढ़ता गया। सूखे पत्ते उसके पैरों के नीचे आहट पैदा करते रहे। जैसे ही वह पेड़ों से निकलकर खुली जगह आया, सामने से पुलिस ने बंदूकों से बाड़ मारी (फ़ायरिंग की)। गोलियाँ चीखती हुई चलीं। लाली धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा।

फ़ायरिंग लगातार होती रही। गोलियाँ लाली के सिर पर से, सीने पर से, टाँगों पर से सनसनाती हुई गुज़रती रहीं। वह दम साधे पड़ा रहा। मौत उसके चारों तरफ मंडराती रही। वह रुक-रुक कर साँस लेता रहा।

साहू और फकीरा ने जवाबी फ़ायरिंग नहीं की। कुछ देर बाद पुलिस ने गोली चलाना बंद कर दी। लेकिन बरसाती नाले के आस-पास फ़ायरिंग पहले से ज़्यादा तेज़ हो गई। लाली को कुछ पता नहीं था कि कोई गोली उसके शरीर के किसी हिस्से में लगी भी है या नहीं। उसे सिर्फ इस कदर होश था कि वह ज़िंदा है। लाली की समझ में यह बात भी न आई कि साहू ने उसे आगे क्यों बढ़ाया और उसे पुलिस की गोलियों की बौछार में बिल्कुल सामने क्यों कर दिया? अपने मन्सूबों के मुताबिक न उसने जवाबी फ़ायरिंग की न ही पुलिस का घेरा तोड़ने की कोशिश की। लाली ज़रा देर दम साधे पड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे खिसकता हुआ

पेड़ों की जानिब (ओर) बढ़ने लगा। आखिर वह पेड़ों के नीचे अंधेरे में आ गया। पुलिस ने फिर फ़ायरिंग शुरू कर दी। मगर अब लाली फ़ायरिंग की ज़द से बाहर था। साहू और फकीरा ने इस बार भी पुलिस के जवाब में गोली नहीं चलाई।

लाली उठकर खड़ा हो गया और तेज़ी से एक तरफ भागा। वह फ़ायरिंग की ज़द से ज़्यादा से ज़्यादा दूर चले जाना चाहता था। कुछ फासले पर पहुँचने के बाद वह रुक गया और एक पेड़ के तने से टेक लगाकर खड़ा हो गया। उसे यह देखकर सख्त हैरानी हुई कि गठरी अभी तक उसके हाथ में दबी हुई है। पुलिस रुक-रुक कर फ़ायरिंग करती रही। लाली ने अपने बहुत पास चाप (पैरों की आहट) सुनी। साथ ही धीमी आवाज़ में बातों की आवाज़ें भी उभरीं।
"लाली मारा गया।" यह फकीरा की आवाज़ थी। फकीरा के साथ साहू था। वह कह रहा था, "उसे तो मारा ही जाना था। आगे भेजा इसलिए था। देख पुलिस कैसे चक्कर में आ गई।"
"पुलिस अभी तक उसी तरफ गोली चला रही है।"
"चलाने दे, चलाने दे। अपने लिए इधर का रास्ता साफ़ हो गया। चला आ मेरे पीछे-पीछे।"
दोनों दबे-दबे कदमों से आगे बढ़ गए। लाली साँस रोके खड़ा रहा। उनकी आहट रफ़्ता-रफ़्ता (धीरे-धीरे) दूर होती गई। फिर खत्म हो गई। थोड़ी देर बाद उस तरफ भी गोलियाँ गूँजीं जिधर साहू और फकीरा गए थे।
☆
लाली की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, किधर जाए? हर तरफ गोलियाँ तड़ातड़ चीख रही थीं। ठहरना भी खतरनाक था। उसे जल्द से जल्द वहाँ से निकल जाना चाहिए था। वह चौकन्नी नज़रों से इधर-उधर देखता हुआ एक तरफ बढ़ा और कुछ दूर तक बढ़ता गया। वह अंधेरे में किसी चीज़ से टकराया और गिरते-गिरते बचा। उसी समय दूर से टॉर्च की रोशनी उभरी। लाली ने देखा कि फेरू खून में लथपथ पड़ा है। वह मर चुका था। टॉर्च बुझ गई, मगर उसके साथ ही गोलियों की बौछार शुरू हो गई। लाली झट ज़मीन पर गिर पड़ा। गोलियाँ सनसनाती हुई उसके बराबर से गुज़रती रहीं। पास ही फेरू की लाश पड़ी थी।
चाँद निकल आया था। मगर आसमान पर गुबार इस कदर गहरा था कि चाँदनी बहुत फीकी और धुंधली पड़ गई थी। पेड़ों के नीचे गहरा अंधेरा था। लाली ज़्यादा देर उस जगह नहीं ठहरा। जैसे ही फ़ायरिंग ज़रा थमी, वह पेड़ों की आड़ लेता हुआ तेज़ी से भागा और दूर तक भागता चला गया।

पेड़ों के नीचे से निकलकर बाहर आ गया। मगर यह देखकर हवासबाख्ता (हैरान) हो गया कि धुंधली चाँदनी में कॉन्स्टेबल ऐन उसके सामने खड़ा है। कॉन्स्टेबल भी उसे देखकर भौंचक्का रह गया। लाली सहमकर ठिठका। ज़रा होश ठिकाने आए तो तेज़ी से मुड़ता हुआ सामने की झाड़ियों में घुस गया। झाड़ियों की ओट में कुछ दूर आगे गया था कि कॉन्स्टेबल कह रहा था:
"साहब जी! वह लाली ही था। कॉन्स्टेबल वाहिद ने जो कपड़े बताए थे, वही पहने हुए था। मेरे बिल्कुल इस तरह खड़ा था जैसे आप खड़े हैं।"
"तुमने झपटकर दबोच क्यों नहीं लिया?"
"मौका ही नहीं दिया उसने। छलावे की तरह निकल गया। पर जाएगा कहाँ?"
उनकी बातें सुनता, झाड़ियों में देखता, घबराया हुआ अंधेरे में तेज़ी से चलता रहा। पचास गज़ का फासला उसने जल्दी-जल्दी तय कर लिया। उनके आस-पास गहरी खामोशी थी। लेकिन बरसाती नाले की तरफ अभी तक रुक-रुक कर गोलियाँ चल रही थीं। चलते-चलते वह एक तरफ मुड़ा तो पास से भारी-भारी बूटों की आहट आई। साथ ही आवाज़ भी आई:
"मोहम्मद खाँ! इधर अंधेरे में झाड़ियों तले कोई सफेद चीज़ हिलती नज़र आती है।"
लाली ने झट रास्ता बदल दिया और तेज़ी से भागा। मगर एक झाड़ी से उसकी धोती ऐसी उलझी कि वह नंगा हो गया और वहीं दुबक कर बैठ गया। उसने धीरे-धीरे धोती झाड़ी से अलग की। जेब से नोट निकल कर गिर गए थे। उन्हें बटोर कर इकट्ठा किया और धोती के पल्लू में बाँध लिया। मगर धोती नहीं बाँधी बल्कि जल्दी-जल्दी कमीज़ भी उतार दी। धोती सफेद थी। उसका उजलापन अंधेरे में दूर से झलकता था। लाली ने जूते भी उतार दिए। जूतों से आहट पैदा होती थी। उसने धोती के साथ कमीज़ और जूते भी गठरी में बाँध लिए। अब वह पूरी तरह नग्न (मदरज़ाद बरहना) था।
कुछ देर वह झाड़ी के नीचे दुबका बैठा रहा। जब कदमों की आहट दूर हो गई तो उसने गठरी बगल में दबाई और झाड़ियों के बीच छिपता-छिपाता आगे बढ़ा। उसे पुलिस वालों की चाप बराबर सुनाई दे रही थी। कभी चाप करीब आ जाती, कभी दूर हो जाती। पन्द्रह मिनट तक वह इसी तरह झाड़ियों की ओट में चलता रहा। बार-बार रास्ते बदलता रहा। कहीं कदमों...

की रफ़्तार तेज़ कर देता, कहीं झाड़ी की आड़ लेकर दुबक जाता। झाड़ियों में काँटों की भरमार थी। लाली के नग्न शरीर पर काँटों से जगह-जगह खरोंचें पड़ गईं। खून रिसने लगा। मगर इस नग्नता का फायदा ज़रूर हुआ कि वह अंधेरे में घुल-मिल गया। पुलिस के लिए उसका सुराग लगाना मुश्किल हो गया। चलते-चलते वह ऐसी जगह आ गया जहाँ झाड़ियाँ खत्म हो गई थीं। साथ ही झाड़ियों का सिलसिला

भी खत्म हुआ। सामने सपाट मैदान था और उससे आगे कुछ ऊँचाई पर पेड़ों का झुंड था। पेड़ों की आड़ में पीली-पीली रोशनी का एक धब्बा नज़र आ रहा था।
लाली ने चौकन्नी नज़रों से इधर-उधर देखा और सरपट भागा। वह मैदान से गुज़रता हुआ ऊँचाई की जानिब (ओर) लपका। दूर से कोई चीखा:
"ठहर जा लाली!"
मगर लाली ठहरा नहीं। दोबारा और ज़्यादा ज़ोर से चीखने की आवाज़ उभरी:
"ठहर जा नहीं तो गोली चला दूँगा।"
लाली फिर भी न ठहरा। गोली गहरे सन्नाटे में ज़ोर से गूँजी और लाली के सिर पर से सनसनाती हुई गुज़र गई। लाली बदहवास होकर अपनी रफ़्तार और तेज़ कर दी।

लाली एक घने पेड़ पर बंदर की तरह फुर्ती से चढ़ गया। कुछ देर शाखाओं की ओट में दुबका रहा और चौकन्नी नज़रों से मुड़-मुड़ कर देखता रहा। जब पेड़ के आस-पास कोई नज़र न आया तो वह एक मज़बूत डाल से चिपक कर धीरे-धीरे आगे खिसकने लगा। उसने डाल को दोनों हाथों से थामा। टाँगें नीचे लटकाईं। बंगले की चारदीवारी पर पैर टिकाए और निहायत होशियारी से नीचे उतर गया। बंगला सामने ही था। बंगले की एक खिड़की से हल्की-हल्की रोशनी छन रही थी। हर तरफ गहरी खामोशी थी। वह पौधों और झाड़ियों की आड़ लेता, दबे कदमों से सीधा उस खिड़की पर पहुँचा जिससे रोशनी झलक रही थी। उसने शीशे के करीब होकर अंदर झाँका। वहाँ कोई न था।
खिड़की का एक शीशा चटका हुआ था। लाली ने उँगली फँसा कर शीशा आधे से ज़्यादा तोड़ दिया। मगर टूटे हुए शीशे की तेज़ धार से उँगली कट गई। खून बहने लगा। उसने उँगली होंठों में दबा कर खून चूसा और गर्दन झुका कर ज़मीन पर थूक दिया। टूटे हुए शीशे के अंदर जल्दी से हाथ डाला और चिटखनी खोलकर धीरे से खिड़की का एक पट हटा कर रास्ता बनाया। ऊपर चढ़ा और अंदर कूद गया। सामने मेज़ पर लैम्प रखा था। उसकी हल्की-हल्की रोशनी में हर चीज़ नज़र आ रही थी। लाली घबराहट के आलम में इधर-उधर देखने लगा। चारदीवारी के उस पार आहट उभर रही थी। साथ ही ज़ोर-ज़ोर से भौंकने की आवाज़ें भी आने लगीं। लाली और ज़्यादा घबरा गया।
उसने बंगले के बाहरी फाटक के खुलने की आवाज़ सुनी। वह बदहवास होकर आगे बढ़ा और एक कुर्सी...

से टकरा कर गिरते-गिरते बचा। कुर्सी उलट गई। कुर्सी उलटने से आवाज़ पैदा हुई। साथ ही सामने का दरवाज़ा खुला। एक व्यक्ति धारीदार गाउन पहने दरवाज़े से नमूदार (प्रकट) हुआ। वह गोरा-चिट्ठा,

इकहरे बदन का आदमी था। चेहरे पर भूरी-भूरी रौबदार मूँछें थीं। उम्र चवालीस-पैंतालीस के करीब थी। उसके एक हाथ में पिस्तौल दबी थी। दूसरा हाथ गाउन की जेब में था। उसने हैरानी से आँखें फाड़कर लाली को देखा। लाली उसके सामने बिल्कुल नंगा खड़ा था। सिर के बाल धूल से अटे हुए और बिखरे हुए थे। शरीर पर भी धूल ही धूल थी। जगह-जगह आड़ी-तिरछी खरोंचें भी थीं। होंठों के कोने पर ताज़ा खून का धब्बा था जो ठुड्डी से नीचे तक चला गया था। वह व्यक्ति लाली की यह हालत (हैया) देखकर घबराए हुए लहजे में बोला:

"कौन है तू? अंदर कैसे आ गया?"

अभी उसने अपना जुमला (वाक्य) पूरा ही किया था कि बंगले के बाहर ज़ोर-ज़ोर से बोलने की मिली-जुली आवाज़ें उभरीं। लाली दहशतज़दा (डरा हुआ) होकर बोला, "वह... वह पुलिस..." घबराहट में वह पूरी बात न कह सका। भाग-दौड़ से उसकी साँस फूली हुई थी। वह हाँफ रहा था।

"क्या पुलिस तेरा पीछा कर रही है?"

लाली ने इक़रार (हाँ) में गर्दन हिला दी। उस व्यक्ति ने पूछा, "पुलिस तेरा पीछा क्यों कर रही है?"

लाली गिड़गिड़ाने लगा, "मुझे बचा लीजिए। मैं सब कुछ बता दूँगा।" नंगा, धूल से अटा हुआ, धुंधली रोशनी में बड़ा दयनीय (मस्कीन) नज़र आ रहा था। उस व्यक्ति ने उसे मुस्कुरा कर देखा और तसल्ली देने के अंदाज़ में कहा, "ठीक है, ठीक है।" उसने ज़रा संकोच किया, "यहीं खड़ा रह। मैं अभी आता हूँ।" वह जिस कमरे से निकला था, फिर उसी में चला गया।

लाली एक कोने में दुबक कर खड़ा हो गया। उसने देखा कमरे में हर तरफ ऊँची-ऊँची अलमारियाँ हैं। अलमारियों के शीशों के पीछे तरतीब (क्रम) से रखी हुई तरह-तरह की किताबें नज़र आ रही थीं। एक तरफ बड़ी सी चमकती हुई मेज़ थी। मेज़ पर लैम्प रोशन था। उस पर दूधिया कवर था जिससे रोशनी धीमी कर दी गई थी। मेज़ पर कागज़ात और कुछ मोटी-मोटी किताबें रखी थीं। बंगले के फाटक पर आवाज़ें बंद हो गई थीं। लाली अभी तक खामोश खड़ा था। कई मिनट गुज़र गए। उसने उस खिड़की की ओर देखा जिसे फाँदकर वह कमरे के अंदर आया था। खिड़की का एक पट अभी तक खुला था। वह धीरे-धीरे खिड़की की ओर बढ़ा। इस दौरान बंगले के मुख्य (सदर) दरवाज़े के खुलने और...

बंद होने की आवाज़ सन्नाटे में उभरी। लाली ठहर गया। वह सुन्न और सहमा हुआ था। कई मिनट इस हाल में गुज़र गए।

कुछ देर बाद दरवाज़ा खुला और वह व्यक्ति कमरे में दोबारा दाखिल हुआ। उसने तीखी नज़रों से लाली को देखा और गुस्से से डाँटा, "कपड़े तो पहन ले।" लाली ने मुँह से एक लफ्ज़ (शब्द) न निकाला। चुपचाप

गठरी खोली और धोती निकाल कर कमर के चारों ओर बाँधने लगा। उस व्यक्ति ने पूछा, "क्या तू जेल से भागा हुआ कैदी है?"
"हाँ जी।" लाली ने धीरे से गर्दन हिलाई।
"मैंने तुझे पुलिस से बचा लिया है। इसलिए कि मैंने तुझसे वादा किया था।" उसने लाली को नज़र भरकर देखा, "मैं मियाँ हयात मोहम्मद खान वट्टू हूँ। तू मेरी पनाह (शरण) में है।" लाली ने नज़रें नीची करके धीरे से कहा, "आपने जी मुझ पर बहुत अहसान किया।" उसके लहजे में विनम्रता थी। "बात यह है जी..." हयात मोहम्मद ने उसकी बात नहीं सुनी। रौब और दबदबे से बोला, "तुझसे सुबह बात होगी।" वह कुछ पल खामोश खड़ा कुछ सोचता रहा, फिर उसने उँगली के इशारे से लाली को अपने पास बुलाया, "मेरे साथ आ।" वह आगे बढ़ा। लाली उसके पीछे-पीछे चला।
कमरे का दरवाज़ा खोल कर दोनों राहदारी (गैलरी) में दाखिल हुए और कुछ दूर जाकर एक दरवाज़े के सामने ठहर गए। दरवाज़ा खुला था। हयात मोहम्मद खान वट्टू ने लाली से कहा, "अंदर जाकर सो जा। दरवाज़ा बंद कर लेना। अब तू बिल्कुल महफूज़ (सुरक्षित) है।"
लाली अंदर चला गया और दरवाज़ा बंद कर लिया। यह छोटी सी कोठरी थी। एक दीवार की ऊँचाई पर रोशनदान था। उस पर लोहे की मोटी-मोटी सलाखें जुड़ी हुई थीं। रोशनदान से हल्की-हल्की रोशनी अंदर आ रही थी। लाली दरवाज़े के पास खामोश खड़ा रहा। रफ़्ता-रफ़्ता उसकी नज़रें कोठरी के अंधेरे से अभ्यस्त (मानूस) हो गईं। उसने देखा दीवार के साथ ऊँचा चबूतरा है। लाली ने उस पर हाथ फेरा। चबूतरा साफ़-सुथरा था। वह खामोशी से चबूतरे पर बैठ गया। उसने गठरी सिर के नीचे रखी और टाँगें फैलाकर लेट गया। मगर उसे नींद नहीं आई।
वह चुप लेटा रहा। घंटे-सवा घंटे बाद वह चबूतरे से नीचे उतरा, गठरी बगल में दबाई, धीरे-धीरे चलता हुआ दरवाज़े पर पहुँचा और कान लगा कर सुध ली। हर तरफ गहरा सन्नाटा था। वह कुछ पल दरवाज़े के पास मूर्ति (बुत) बना खड़ा रहा। उसने धीरे से हाथ बढ़ा के दरवाज़ा खोलना चाहा। मगर दरवाज़ा बाहर से...

बंद था। लाली ने परेशान होकर दरवाज़ा धीरे से हिलाया। बाहर से किसी के खाँसने की आवाज़ (खंखार) उभरी। लाली ऐसा दहशतज़दा हुआ कि लड़खड़ा कर गिरते-गिरते बचा। उसने दीवार का सहारा लिया। गहरी साँस भरी और दिलगीर (दुखी) होकर दरवाज़े पर सिर टिका दिया।
सुबह कोठरी का दरवाज़ा खुला। लाली ने धड़कते दिल और सहमी हुई नज़रों से देखा, दरवाज़े के बीचों-बीच ऊँचे कद का एक भारी-भरकम आदमी कमर से रिवॉल्वर लगाए खड़ा है। तमतमाया हुआ गहरा सांवला चेहरा, सिर पर घने बाल, दाढ़ी-मूँछ साफ़, आँखें मोटी-मोटी और लालिमा लिए हुए (सुर्खी

माइल)। अपने डील-डौल और वेश-भूषा (वज़ह-कता) से वह खासा डरावना (हैबतनाक) लगता था। उसने लाली से कोई बात नहीं की। गर्दन को ज़रा सा झुकाव देकर बाहर आने का इशारा किया। लाली बाहर आ गया। वह व्यक्ति आगे बढ़ा, लाली उसके पीछे-पीछे चला। दोनों एक संकरी गलियारे (गुलाम गर्दिश) से गुज़र कर बंगले के बाहर आ गए।

लाली ने चलते-चलते उसे टोका, "मुझे कहाँ लिए जा रहा है?" उसने कोई जवाब नहीं दिया। खामोशी से आगे बढ़ता रहा। दोनों एक खुशनुमा बाग के किनारे-किनारे पगडंडी पर चल रहे थे। पगडंडी खासी चौड़ी थी। उस पर लाल बजरी बिछी थी जो जूतों की रगड़ से हल्की-हल्की आवाज़ पैदा कर रही थी। सूरज चढ़ कर पेड़ों के ऊपर आ गया था। हर तरफ बसंती (पीली) धूप फैली थी। मार्च का तीसरा हफ्ता शुरू हो चुका था। धूप में हल्की-हल्की गरमाहट (तमाज़त) थी। पतझड़ खत्म हो रहा था। बहार की आमद थी (आने वाली थी)। बाग बहुत विशाल था। जगह-जगह रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियाँ हवा से झूम रही थीं। बाग में फलों और मेवों के पेड़ थे। नरम-नरम घास का दूर तक फैला हुआ हरा-भरा मैदान (सबज़ह ज़ार) था। बीच से पत्थर की बनी हुई पक्की नहर गुज़रती थी। नहर पर दो बड़े-बड़े फव्वारे थे। फव्वारों से फूटती हुई पानी की झालर धूप में झिलमिला रही थी। बाग के उस पार पेड़ों की आड़ से बंगले की ऊँची चारदीवारी नज़र आती थी। पगडंडी से ज़रा हट कर एक बूढ़ा व्यक्ति गर्दन झुकाए, रम्बे (कुदाल) से सूखे पत्ते इकट्ठा करने में व्यस्त था। दोनों उसके पास पहुँचे तो उसने मुड़ कर देखा और रम्बे का लंबा दस्ता संभाल कर सीधा खड़ा हो गया। उसने माथे से पसीना पोंछा और मुस्कुरा कर धीरे से कहा, "कहाँ चले दयोर?"

दयोर (गूंगे व्यक्ति) ने कोई जवाब नहीं दिया, न उसकी ओर देखा। वह लाली के आगे-आगे मुर्गे की तरह...

गर्दन ऊँची किए चलता रहा। मगर वह जितना कद-काठ वाला जवान था, चाल से उतना ही ढीला-ढाला लगता था। चलता तो कमर को इस तरह हल्का सा झुकाव देता कि उसके भारी-भारी कूल्हे धीरे-धीरे लचकते। कुछ दूर जाकर दयोर रुक गया और बाग के उस कोने की ओर देखने लगा जहाँ चमेली की बेलों से ढके हुए मंडप (कुंज) के नीचे कुछ कुर्सियाँ और एक मेज़ रखी थी। मगर वहाँ कोई नहीं था। कुर्सियाँ खाली थीं। मेज़ पर पानी से भरा हुआ शीशे का सुराहीदार बर्तन (कराबह) और दो गिलास रखे थे। पास ही ऐश-ट्रे भी मौजूद थी। मेज़ देखकर अंदाज़ा होता था कि कुछ ही देर पहले वहाँ से कोई उठ कर गया है। दयोर ज़रा देर रुक कर वापस मुड़ा। अब वह लाली के साथ बंगले के मुख्य दरवाज़े की ओर जा रहा था। दरवाज़े के सामने ऊँचे-ऊँचे खंभों का पोर्च था। पोर्च के नीचे एक लंबी-चौड़ी काली 'ब्यूक' (कार) खड़ी थी। ड्राइवर कपड़े (झाड़न) से कार को झाड़-पोंछ रहा था।

बंगला प्राचीन शैली का था। मगर बहुत बड़ा और निहायत शानदार था। जगह-जगह बेलें (इश्क़-पेचाँ) चढ़ी थीं और खपरैल की झुकी हुई छत पर दूर तक फैली हुई थीं। लाली ने बंगले की वह खिड़की भी देखी जिसका एक शीशा टूटा हुआ था। यह शीशा उसने पिछली रात तोड़ा था। उसकी उस उँगली में जो शीशा तोड़ने से ज़ख्मी हो गई थी, अभी तक टीस (कसक) थी। दयोर बंगले की जानिब (ओर) बढ़ते-बढ़ते पल भर को ठिठका। फिर कुछ सोच कर उसने रास्ता बदल दिया। दोनों आगे बढ़े। सामने चारदीवारी का ऊँचा लकड़ी का फाटक था। अब वे उस रास्ते पर चल रहे थे, जो फाटक से बंगले के पोर्च तक जाता था। रास्ता लाल ईंटों से बना था। दोनों ओर छायादार पेड़ थे। फाटक से कुछ फासले पर पक्का सायबान (शेड) था। सायबान के नीचे बिजली पैदा करने का जनरेटर लगा था। उसका इंजन शोर करता हुआ चल रहा था। पास ही रसोई (बावर्ची खाना) थी। रसोई का चौड़ा चबूतरा फर्श से लगभग चार फुट ऊँचा था। चबूतरे के बीचों-बीच तंदूर था। दो तंदूर वाले (तंदूरिये) उसके पास बैठे झपाझप रोटियाँ लगा रहे थे। तंदूर से ज़रा हट कर मिट्टी का बड़ा सा चूल्हा था, जिस पर पतीला चढ़ा था। पतीले के नीचे लकड़ियाँ जल रही थीं। रसोई से सटे नौकरों और कामगारों (कमियों) के कच्चे मकान थे। मकानों का सिलसिला काफी दूर तक चला गया था। लेकिन हर तरफ गहरा सन्नाटा (सुकूत) छाया था। नौकर-चाकर इधर-उधर चल-फिर रहे थे। मगर वे चुपचाप चलते थे। कोई ऊँची आवाज़ में नहीं बोलता था। जब लाली और दयोर फाटक से कुछ फासले पर रह गए तो लाली ने बेचैन होकर एक बार फिर पूछा, "यार यह तो बता मुझे कहाँ लिए जा रहा है?"

इस बार भी दयोर ने कोई जवाब नहीं दिया। पलट कर क्रोधित (क़हर आलूद) नज़रों से लाली को देखा और खामोशी से फाटक की ओर बढ़ने लगा। फाटक खुला था और उसके पास दो सशस्त्र पहरेदार फर्श पर बैठे हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। उन्होंने निगाहें उठा कर दयोर और लाली को देखा, लेकिन कोई बात नहीं की। दोनों धीरे-धीरे चलते हुए फाटक से गुज़र कर बाहर आ गए। फाटक के आगे कंकड़ की बनी हुई अधपकी (नीम पुख्ता) सड़क थी जो शीशम और बकायन के पेड़ों के साये में दूर तक चली गई थी। सड़क के उस पार जहाँ तक नज़र जाए (ता हद-ए-निगाह) खेतों का सिलसिला फैला था। खेतों के एक तरफ आम के बाग थे। पेड़ों से बौर झड़ चुका था। कहीं-कहीं शाखाओं में अमियाँ (केरियाँ) भी झूल रही थीं। दोनों ने सड़क पार की। दूसरी जानिब पहुँचे और खेतों के साथ-साथ चलने लगे। खेतों में गेहूँ के पौधे लहलहा रहे थे। पौधों की लंबी पत्तियाँ और उनके ऊपर झूमती हुई गेहूँ की बालियाँ पीली (ज़र्द) पड़ गई थीं। दयोर और लाली आगे बढ़ते गए। दयोर आगे था और लाली पीछे-पीछे चल रहा था। वह गेहूँ के पौधों को देखता रहा और पत्तियों और बालियों का बदलता हुआ रंग देख कर सोचता रहा कि रबी की फसल

अभी पक कर तैयार नहीं हुई। उसकी कटाई में लगभग महीना भर बाकी है। मगर फसल बहुत अच्छी थी। बालियाँ गेहूँ के दानों से लदी हुई थीं।
गेहूँ के खेतों का सिलसिला खत्म हुआ तो पेड़ों के नीचे एक ट्रैक्टर नज़र आया जिसका बोनट खुला था। एक अधेड़ व्यक्ति, जो वज़ह-कता से मैकेनिक नज़र आता था, ट्रैक्टर के इंजन पर झुका हुआ किसी पुर्जे को खोलने की कोशिश कर रहा था। ट्रैक्टर के पीछे कोई पचास फुट के फासले पर ट्यूबवेल था। ट्यूबवेल से निकलती हुई पानी की मोटी धार, झरने (आबशार) की तरह ऊपर से नीचे हौज़ (बम्बे) में गिर रही थी। हौज़ में भरा हुआ पानी नालियों के ज़रिए सरसों और चने के खेतों में पहुँच रहा था। सरसों के पीले (बसंती) फूल हवा के झोंकों से झूम रहे थे।
दयोर कुछ और आगे बढ़ा। सामने दूर तक फैला हुआ हरा-भरा मैदान था। मैदान के चारों ओर टाहली (शीशम), सिरस के घने पेड़ों के झुंड थे। दयोर चलते-चलते रुक गया और गर्दन उठा कर उत्सुक (तजस्सुस अंगेज़) नज़रों से इधर-उधर देखने लगा। लाली भी उसके पास ही खड़ा था और बिल्कुल खामोश था। उसने दयोर से बात करने की कोशिश न की। थोड़ी ही देर बाद घोड़े के दौड़ने और कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें दूर से सुनाई दीं। दोनों...

उसी दिशा में देखने लगे, जिधर से आवाजें उभर रही थीं। देखते ही देखते पेड़ों के एक झुरमुट से मियाँ हयात मोहम्मद खान वट्टू प्रकट हुए। वह उस समय घुड़सवारी की पोशाक पहने हुए थे और एक हाथ में चमड़े का हंटर (चबुक) थामे हुए थे। वह पैरों से एड़ लगाकर घोड़े को दौड़ा रहे थे। उनके पीछे शिकारी कुत्तों का एक झुंड था जो ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहे थे और घोड़े के पीछे-पीछे भाग रहे थे। हयात मोहम्मद ने न तो दयोर को देखा, न लाली को और न ही उनकी तरफ आए। उन्होंने लगाम मोड़ी और उस रास्ते पर घोड़ा दौड़ाने लगे जो घने पेड़ों के बीच से गुज़रता था। जब मियाँ हयात मोहम्मद वट्टू नज़रों से ओझल हो गए, तो दयोर वापस मुड़ा। लाली उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।
दोनों बंगले के फाटक पर पहुँचे। दयोर ने हाथ के इशारों और मुँह से तरह-तरह की आवाज़ें निकाल कर पहरेदारों से बात की। लाली को पहली बार इस सच्चाई का पता चला कि दयोर बिल्कुल गूंगा है। फाटक पर तैनात एक पहरेदार ने उसके इशारों को समझते हुए बंगले के मुख्य दरवाज़े की ओर हाथ उठाकर बताया,
"मियाँ साहब अंदर चले गए।"
दयोर खामोशी से बंगले की ओर चल दिया। वह लाली के साथ पोर्च में पहुँचा। कार अभी तक वहीं खड़ी थी। ड्राइवर दरवाज़े के सामने सीढ़ियों पर खामोश बैठा था। दयोर को देखकर वह एक तरफ सरक गया। मगर उसने दयोर या लाली से कोई बात नहीं की। दयोर उसके करीब से गुज़रते हुए आगे बढ़ा।

उसने दरवाज़ा खोला और लाली के साथ अंदर दाखिल हो गया। यह एक काफी लंबा लाउंज था। जगह-जगह गमलों में कैक्टस और पाम के पौधे लगे थे। गमलों के बीच दो 'ग्रे हाउंड' कुत्ते चमड़े के मोटे-मोटे गद्दों पर बैठे लंबी-लंबी जीभें निकाले हाँप रहे थे। उन्होंने कदमों की आहट सुनकर तेज़ नज़रों से दयोर और लाली को देखा, लेकिन खामोश बैठे रहे। लाउंज से गुज़रकर दोनों विक्टोरियन शैली के एक विशाल हॉल में दाखिल हुए, जहाँ ज़मीन पर गाढ़ा कालीन बिछा था। हॉल की छत लाउंज से काफी ऊँची थी और छत के बीचों-बीच एक बहुत बड़ा क्रिस्टल का झूमर लटक रहा था। दीवारों पर चीते और तेंदुए के सिरों और खालों के अलावा किस्म-किस्म की तलवारें, खंजर, ढालें, पुरानी शैली की लंबी-लंबी बंदूकें और कार्बाइन टंगी थीं। दीवारों पर कुछ बड़ी-बड़ी ऑयली पेंटिंग (तैल चित्र) भी लगी थीं।
एक तस्वीर में, जो सबसे बड़ी थी और बहुत ही प्रमुख स्थान पर लगी थी, हयात मोहम्मद घनी मूँछों वाले एक लंबे कद के अंग्रेज़ से हाथ मिला रहे थे।

हाथ मिलाते समय वह इस कदर अदब और कायदे से झुके हुए थे कि उनका चेहरा साफ़ नज़र नहीं आता था। हॉल में मखमल और ज़री के काम वाले सोफे और दीवान करीने से रखे थे। दरवाजों और खिड़कियों पर रेशम के बारीक और मुलायम पर्दे लहरा रहे थे। दो युवा दासियाँ झाड़न से खिड़कियों के शीशे और तस्वीरों को साफ़ करके चमका रही थीं। एक चंचल और नखरेबाज़ दासी ने अपने छीट की घाघरी को एक तरफ से पकड़कर घुटने तक ऊपर उठाया और अपनी नग्न पिंडली खुजाते हुए तिरछी नज़र से मुस्कुराकर दयोर को देखा। दयोर ने गुस्से से उस पर नज़र डाली और नफरत से मुँह बनाकर आगे बढ़ गया। हॉल को पार करके वह लाली के साथ एक लंबी गैलरी (गुलाम गर्दिश) में दाखिल हुआ। गैलरी में भी लाल कालीन बिछा था। दीवारों पर दिलकश नज़ारों वाली तस्वीरें टंगी थीं। दीवारों पर लगे लैंपों से छनती हल्की नीली रोशनी में हर चीज़ मानो सपनों के साये में तैरती हुई नज़र आ रही थी। गैलरी में कई दरवाज़े खुलते थे, जिन पर रेशमी पर्दे पड़े थे। दयोर एक बंद दरवाज़े के सामने जाकर रुक गया। उसने धीरे से दरवाज़ा खोला। उसने अंदर झाँका, फिर लाली की ओर मुड़ा और कमरे में दाखिल होने का इशारा किया। लाली इतना सुन्न (खोया हुआ) था जैसे पिघलकर बंगले के जादुई वातावरण में समा गया हो। अंदर जाते समय उसके कदम नहीं उठ रहे थे। दयोर ने अपनी लाल-लाल आँखों से उसे घूरा और धीरे से धक्का दिया। लाली झटके से कमरे के अंदर दाखिल हो गया।
कमरे में रोशनी बहुत धीमी थी। दरवाजों और खिड़कियों पर भारी पर्दे लटक रहे थे। कमरे में तंबाकू की तेज़ गंध फैली हुई थी। लाली हक्का-बक्का दरवाज़े के पास खड़ा था। उसने दरवाज़ा बंद होने की आहट सुनी। पलटकर देखा तो दयोर वहाँ मौजूद नहीं था। उसी समय कमरे की रहस्यमयी खामोशी में एक भारी आवाज़ गूँजी, "इधर आ।"

लाली ने चौंककर देखा, कमरे के एक कोने में मियाँ हयात मोहम्मद खान वट्टू एक चौड़े सोफे पर बैठे थे। लाली धीरे-धीरे चलता हुआ उनके सामने जाकर खड़ा हो गया। हयात ने हाथ बढ़ाकर स्विच दबाया, जिससे पास रखा हुआ पेडस्टल लैंप जल उठा। हयात मोहम्मद खान खामोश बैठे अपने पाइप के हल्के-हल्के कश लगा रहे थे

और लाली को गौर से देख रहे थे। उनके बगल वाले सोफे पर एक जर्मन शेफर्ड कुत्ता लेटा था। कुत्ते का चेहरा बेहद डरावना था और उसका रंग गहरा काला था। केवल उसकी टाँगों और मुँह का कुछ हिस्सा भूरा था।
वह लाली को नज़दीक पाकर गुर्राने लगा। लाली ने जब उस पर नज़र डाली, तो वह डरकर सहम गया। कुत्ता इस तरह गुर्राकर देख रहा था जैसे अभी उस पर झपट पड़ेगा। उसने गर्दन उठाकर ज़ोर से भौंका। उसकी आवाज़ इतनी डरावनी थी कि पूरा कमरा गूँज उठा। लाली थरथरा कर रह गया।
हयात मोहम्मद ने गर्दन घुमाकर कुत्ते की ओर देखा और मुस्कुराकर बोले, "ठीक है, ठीक है।"
वह एक हाथ से उसकी पीठ को धीरे-धीरे सहलाने लगे। कुत्ते ने गर्दन नीचे कर ली और गुर्राना बंद कर दिया। हयात मोहम्मद कुछ पल खामोश बैठे रहे। उन्होंने पाइप की राख मेज़ पर रखी ऐश-ट्रे में झाड़ी और लाली को संबोधित किया:
"मैंने तुम्हें स्टोर में बंद कर दिया था। क्या तुम्हें पता है कि मैंने ऐसा क्यों किया था?"
लाली ने इनकार में सिर हिलाया, "मुझे नहीं पता जी।"
हयात मोहम्मद ने गर्दन को थोड़ा सा झुकाकर बहुत ही प्रभावशाली लहज़े में देखा और उनकी भृकुटी तन गई, "मुझे शक था कि तुम भागने की कोशिश करोगे। मैं नहीं चाहता कि तुम पकड़े जाओ और मेरी बदनामी का कारण बनो।"
लाली की समझ में नहीं आया कि वह उनकी बात का क्या जवाब दे। वह एक अपराधी की तरह सिर झुकाए खामोश खड़ा रहा।
हयात ने कहा, "फिलहाल यहाँ से जाने का विचार छोड़ दो। मैं तुम्हारे ही भले के लिए कह रहा हूँ। पूरे इलाके में पुलिस फैली हुई है। कल रात डाकुओं के साथ पुलिस की मुठभेड़ हुई थी। दोनों तरफ से ज़बरदस्त फ़ायरिंग हुई। एक डाकू मारा गया और दो पुलिस वाले घायल हुए। पुलिस ने पूरे इलाके की नाकेबंदी कर रखी है।" अपनी बात कहते-कहते वह पल भर के लिए रुके।
"क्या तुम भी डाकुओं के गिरोह में शामिल हो? अगर ऐसा है, तो मुझे साफ़-साफ़ बता दो।" लाली ने जवाब दिया, "मैं तो जी उन्हें बिल्कुल नहीं जानता। मुझे तो उन्होंने ज़बरदस्ती पकड़ रखा था। रात को जब पुलिस के साथ उनकी गोली चली, तो मैं उनके चंगुल से किसी न किसी तरह निकल भागा।"

मियाँ हयात मोहम्मद वट्टू ने पूछा, "क्या तुम सच कह रहे हो?"
लाली ने बड़ी विनम्रता से कहा, "मैं आपसे झूठ नहीं बोलूँगा जी। आपने ही मुझे गिरफ्तारी से बचाया है।"
"बंदूक वगैरह चलानी तो तुम्हें आती ही होगी?"
"आती है जी, बिल्कुल आती है।" लाली ने बहुत मुस्तैदी से जवाब दिया। "मुझे तो कार्बाइन और राइफल भी चलानी आती है। मेरा निशाना भी अचूक है।"
हयात मोहम्मद ने उसे गौर से देखा और बोले, "अब तुम जाओ। रात को बात होगी। दयोर तुम्हारे ठहरने और खाने-पीने का इंतज़ाम कर देगा। दयोर गूंगा है, बोल नहीं सकता, लेकिन सुन सकता है। जिस चीज़ की ज़रूरत हो, उसे बता देना। यहाँ तुम्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं होगी।" उन्होंने थोड़ा रुककर कहा, "अब तुम जा सकते हो।" लाली खामोशी से बाहर चला गया।

☆

बरामदा बहुत चौड़ा नहीं था। उसके सामने से एक गैलरी गुज़रती थी। बरामदे में कई दरवाज़े खुलते थे। दयोर ने एक बंद दरवाज़ा खोला। यह एक कोठरी जैसा छोटा कमरा था, जिसमें एक चारपाई बिछी थी। चारपाई पर मामूली बिस्तर था। कमरे में एक खिड़की भी थी जिसमें लोहे की मज़बूत सलाखें लगी थीं। खिड़की के बिल्कुल सामने कूड़े का ढेर था, जिसके चारों ओर झाड़ियाँ और घने पेड़ थे। कमरे से लगा हुआ इतना ही बड़ा एक और कमरा था, जहाँ दयोर रहता था। दोनों कमरे बंगले के पिछले हिस्से में स्थित थे और एक बड़े कमरे को दो भागों में बाँटकर बनाए गए थे। दरवाज़ा खोलकर दयोर ने लाली की ओर देखा और कमरे के अंदर जाने का इशारा किया। लाली ने कमरे में जाकर इधर-उधर नज़र दौड़ाई। दयोर दरवाज़े पर खामोश खड़ा था। लाली ने अपनी बढ़ी हुई दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए दयोर से कहा, "यार! कोई नाई वगैरह होगा? मुझे दाढ़ी बनवानी है, बहुत बढ़ गई है।" दयोर ने उसकी बात सुनकर धीरे-धीरे सिर हिलाया और एक तरफ चला गया। लाली बिस्तर पर बैठ गया।
थोड़ी देर बाद दयोर वापस आया। उसके साथ एक नाई भी था जो दुबला-पतला और अधेड़ उम्र का था। उसने लाली से कोई बात नहीं की। वह बरामदे में दरवाज़े के सामने उकड़ू बैठ गया। लाली कमरे से बाहर आया और नाई के सामने फर्श पर बैठते हुए बोला, "दाढ़ी बनवानी है।"
नाई ने कोई जवाब नहीं दिया और उस्तरे से उसकी दाढ़ी मूँड़ने लगा।
दयोर बरामदे में रखे एक चौड़े स्टूल पर बैठा उन दोनों को देखता रहा। दाढ़ी

बनाने के बाद नाई ने अपने औज़ारों के थैले से एक आईना निकाला और लाली की तरफ बढ़ा दिया। लाली ने आईना हाथ में लेकर अपने चेहरे को अलग-अलग कोणों से देखा और अपनी मूँछों पर हाथ फेरा। मूँछों पर हाथ फेरते हुए अचानक उसे अपना हुलिया बदलने का विचार आया।

उसने नाई से कहा, "यार! मूँछें भी साफ़ कर दो।" उसने गर्दन मोड़कर दयोर की ओर देखा और मन ही मन मुस्कुराया, "मुझे भी दयोर की तरह बिल्कुल साफ़-चट बना दो।"
उसकी बात सुनकर दयोर ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी।
नाई भी कुछ नहीं बोला। उसने उस्तरे से लाली की मूँछें साफ़ कर दीं। हजामत बनाने के बाद नाई ने अपना सामान थैले में रखा और लाली से कुछ कहे बिना चुपचाप उठकर चला गया। लाली ने अपने गालों पर हाथ फेरा और दयोर को संबोधित करते हुए बेतकल्लुफी से बोला, "लो यार! तुम्हारी मोहब्बत में मैंने अपनी मूँछें भी साफ़ करा दीं। क्या याद करोगे कि कोई लाली मिला था। अब यह बताओ, नहाने-धोने का क्या इंतज़ाम है? मैं नहाना चाहता हूँ। भूख भी ज़ोरों की लगी है। तुमने सुबह से रोटी भी नहीं खिलाई।"
दयोर उठकर खड़ा हो गया। उसने लाली को अपने पीछे आने का इशारा किया। बरामदे के बगल में ही एक दरवाज़ा था। दयोर ने आगे बढ़कर दरवाज़ा खोल दिया। यह गुसलखाना (स्नानघर) था। सामने दीवार पर एक आईना लगा था और उसके बगल में लकड़ी के तख्ते पर कंगा, साबुन और सिर में डालने के लिए शीशी में तेल भी रखा था। गुसलखाने में एक तरफ नल था और उसके नीचे एक फुट ऊँचा चबूतरा बना था। लाली ने गुसलखाने का दरवाज़ा बंद किया, कपड़े उतारे और नल के नीचे चबूतरे पर बैठकर नहाने लगा। वह साबुन लगाकर देर तक नहाता रहा।
नहाने से फारिग होकर उसने खूंटी पर टंगे तौलिये से बदन पोंछा, कपड़े पहने और सिर में तेल डाला। आईने के सामने खड़े होकर कंघे से बाल सँवारे और तरोताज़ा होकर गुसलखाने से बाहर आ गया।
दयोर बरामदे के सामने स्टूल पर बैठा था। लाली ने उसे देखा तो मुस्कुराकर बोला, "यार! मेरी वह पोटली (गठरी) तो ला दो।" उसने अपने कपड़ों की ओर इशारा करते हुए कहा, "ये कपड़े तो बहुत गंदे हो गए हैं। पोटली में मेरे कपड़े हैं, उन्हें निकालकर पहन लूँगा।" दयोर ने धीरे-धीरे सिर हिलाया और तुरंत उठ खड़ा हुआ।
लाली अपने कमरे में चला गया। नहाने के बाद उसकी आँखें नींद से बोझिल हो रही थीं, मगर वह सोया नहीं और कमरे में टहलने लगा। कुछ ही मिनटों बाद दयोर वापस आ गया, उसके हाथ में पोटली दबी हुई थी।

गठरी (पोटली) लाली को देकर दयोर स्टूल पर जाकर बैठ गया। लाली ने कपड़े नहीं बदले, बल्कि गठरी लेकर एक तरफ रख दी।
कुछ और समय बीत गया। एक बूढ़ी औरत खाना लेकर आई। उसने दयोर की ओर देखा और कमरे में दाखिल होकर खाना लाली के सामने रख दिया।

लाली ने उससे कहा, "बेबे! पानी भी पिला दो"।
औरत ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। कमरे में एक तरफ एल्युमीनियम का गिलास रखा था। औरत ने गिलास उठाया, खामोशी से गुसलखाने (स्नानघर) में गई और पानी से भरा हुआ गिलास सिर झुकाकर चुपचाप उसके सामने रख दिया।
लाली ने हैरानी भरी नज़रों से उसे देखा और धीरे से पूछा, "बेबे! क्या तुम भी गूंगी हो?"
बूढ़ी औरत ने उसे तीखी नज़रों से देखा और एक पल के लिए भी नहीं ठहरी, उलटे कदमों वापस चली गई।
लाली खाना खाने लगा। खाने में तंदूरी रोटी और चने की दाल थी, साथ ही जंड (एक पेड़) की फलियों का अचार भी था।
लाली ने खाना खाया और चारपाई पर लेट गया। वह देर तक बंगले के रहस्यमयी माहौल के बारे में सोचता रहा, जहाँ हयात मोहम्मद के सिवाय हर व्यक्ति या तो गूंगा था या खामोश और सहमा हुआ नज़र आता था। सोचते-सोचते उसकी आँख लग गई। दिन ढले वह नींद से जागा और उठकर बिस्तर पर बैठ गया। दरवाज़े के सामने स्टूल खाली था और दयोर वहाँ नहीं था। लाली चारपाई से नीचे उतरा और कमरे से निकलकर बरामदे में आ गया। उसी समय दयोर भी अपने कमरे से बाहर निकल आया। लाली ने उसे देखकर कहा, "यार दयोर! चाय वगैरह भी मिलेगी?"
दयोर ने हमेशा की तरह धीरे से सिर हिलाया और गैलरी (राहदारी) में उस तरफ चल दिया जिधर से बूढ़ी औरत खाना लेकर आई थी। लाली का जी चाहा कि वह भी दयोर के पीछे-पीछे जाए, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह बरामदे में खामोश खड़ा चौकन्ना होकर इधर-उधर देखता रहा। मगर हर तरफ दीवारें थीं और झुकी हुई नीची छत थी। थोड़ी देर बाद दयोर मिट्टी के कुल्हड़ (ठूठी) में चाय लेकर आ गया। चाय गरम और बहुत मीठी थी। उसमें शक्कर के बजाय गुड़ डाला गया था, मगर दूध की मात्रा ज़्यादा थी।
लाली ने चाय पीकर दयोर से दोस्ती गाँठने की कोशिश की और मुस्कुराकर पूछा, "दयोर! तुम्हारी पत्नी (घरवाली) और बच्चे कहाँ हैं?"

दयोर ने कोई जवाब नहीं दिया और बुत बना स्टूल पर खामोश बैठा रहा। मगर लाली चुप न रहा और उसे कुरेदने लगा, "दोस्तों ने शादी नहीं की?"
दयोर ने इनकार में गर्दन हिला दी, मगर उसके चेहरे से बेज़ारी (चिड़चिड़ापन) टपक रही थी।
लाली ने उसकी सहानुभूति हासिल करने के लिए ढिठाई से झूठ बोला, "मेरे तो जी तीन बच्चे हैं, बहुत याद आते हैं। महीनों हो गए उन्हें देखे हुए"। उसने ठंडी आह भरी, "वैसे तो याद पत्नी की भी आती है और रात

को तो बहुत आती है। सोने से पहले वह बहुत चाव से मुझे कोसा (गुनगुना) दूध पिलाती थी। इतना गरम और गाढ़ा-गाढ़ा दूध कि पीकर मज़ा आ जाता था"।
दयोर ने उसकी बातें सुनकर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसका चेहरा भावनाओं से रहित और बिल्कुल सपाट था। लाली कहता रहा, "सर्दी की रातों में पत्नी साथ हो तो यार, गुनगुना दूध क्या बहार दिखाता है। ऐसी मस्ती (अलैल) होती है कि तुम्हें क्या बताऊं"। यह कहकर उसने हल्का ठहाका लगाया। दयोर के चेहरे पर धीरे-धीरे झुंझलाहट छाने लगी और उसने अपनी लाल-लाल आँखों से लाली को घूरा। लेकिन लाली उसके घूरने से ज़रा भी नहीं डरा और बेतकल्लुफी से आँख मारकर बोला, "यार! तुम्हारा ऐसा मज़बूत शरीर पत्नी के बिना कैसे गुज़ारा करता होगा?"
दयोर ने उसे आगे कुछ नहीं कहने दिया। वह तेज़ी से झपटा और दोनों हाथों से लाली का सिर और ठुड्डी इतनी ज़ोर से झटका देकर दबाई कि लाली की ज़बान दाँतों के बीच आकर ज़ख्मी हो गई। वह तलमला कर रह गया और देर तक उसकी ज़बान में कसक (टीस) उठती रही। दर्द के कारण वह बोल भी न सका और हक्का-बक्का खड़ा सोचता रहा कि दयोर अचानक इतना नाराज़ क्यों हो गया? उसने थूका तो थूक के साथ खून भी आया। लाली कुछ पल गुस्से से हाँपता रहा, फिर उस दरवाज़े की ओर बढ़ा जो गैलरी में खुलता था। वह मियाँ हयात मोहम्मद के पास जाकर दयोर के इस हिंसक व्यवहार की शिकायत करना चाहता था। मगर दयोर ने उसे आगे नहीं जाने दिया और लपककर उसके सामने आ गया। लाली ने आगे बढ़ना चाहा तो दयोर ने उसके सीने पर दोनों हाथ रखकर इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि लाली खुद को संभाल नहीं पाया और लुढ़कता हुआ कमरे की दीवार से टकराकर ज़मीन पर गिर पड़ा।
वह गहरी साँसें भरता रहा और गुस्से भरी नज़रों से दयोर को घूरता रहा। कुछ देर वह उसी हाल में पड़ा हाँपता रहा, फिर मुट्ठियाँ भींचकर साँप की तरह फुफकारता हुआ उठा और धीरे-धीरे दयोर की तरफ बढ़ा। दयोर खामोश खड़ा रहा। लाली ने चाहा कि झपटकर दोनों हाथों से उसकी गर्दन दबोच ले। लेकिन दयोर ने बड़ी फुर्ती से उसके दोनों हाथों की कलाईयाँ पकड़ लीं।

लाली ने झटका देकर अपने हाथ छुड़ाने की कोशिश की, तो उसे एहसास हुआ कि दयोर के हाथ लोहे के शिकंजे की तरह सख्त और मज़बूत हैं। थोड़ी देर तक दोनों में ज़ोर-आज़माइश होती रही। लाली ने बहुत ज़ोर लगाया, मगर वह दयोर की पकड़ से अपने हाथ नहीं छुड़ा सका। दयोर चट्टान की तरह अपनी जगह जमा रहा और टस से मस नहीं हुआ। लाली ने कबड्डी के खिलाड़ियों की तरह गले से "हूँ" की आवाज़ निकाली और इतनी ज़ोर से झटका दिया कि उसके दोनों हाथ दयोर की पकड़ से आज़ाद हो गए।

दयोर के कदम लड़खड़ा गए, मगर लाली ने उसे संभलने का मौका नहीं दिया। वह उछला और सिर झुकाकर पूरी ताक़त से दयोर के सीने पर टक्कर मारी। दयोर धड़ाम से पीठ के बल गिर पड़ा। लाली ने चाहा कि झपटकर उसके सीने पर चढ़ जाए, मगर दयोर ने गिरते ही म्यान (होलस्टर) से रिवॉल्वर निकाल ली और तेंदुए की तरह तेज़ नज़रों से लाली को घूरने लगा।
लाली जहाँ था, वहीं रुक गया। दयोर उठकर खड़ा हुआ, आगे बढ़ा और करीब जाकर एक हाथ लाली की गर्दन पर रखकर पूरी ताक़त से धक्का दिया। लाली दहलीज से टकराकर लुढ़कता हुआ अपनी चारपाई के पास जा गिरा। उसके सिर में करारी चोट आई, मगर सिर फटा नहीं। उसने दोनों हाथों से अपना सिर थाम लिया। सिर में तेज़ दर्द और कसक थी। दयोर सामने दरवाज़े पर खामोश खड़ा था और उसके हाथ में रिवॉल्वर थी।
लाली ने उसकी तरफ नहीं देखा। सिर की चोट से ज़्यादा लाली को अपनी बेइज़्ज़ती (अहसास-ए-हज़ीमत) ने तड़पा दिया। अपनी बेबसी पर उसका दिल भर आया और आँखों से टप-टप आँसू गिरने लगे। दयोर थोड़ी देर तक खड़ा उसे घूरता रहा और आखिरकार दरवाज़े के सामने से हट गया।

☆

शाम का धुंधलका हुआ तो अंधेरे के साथ ही बंगले में हर तरफ मौत जैसी खामोशी छा गई। लाली चारपाई के पास फर्श पर गुमसुम बैठा रहा। जब अंधेरा और बढ़ गया तो दयोर ने लालटेन जलाई और लाली के कमरे में आया। उसने लालटेन एक तरफ रख दी। लाली ने उसकी ओर नज़र उठाकर नहीं देखा। दयोर कमरे से बाहर चला गया और सन्नाटा और गहरा हो गया। थोड़ी देर बाद सन्नाटे में कदमों की आहट (चाप) सुनाई दी। लाली ने गर्दन उठाकर देखा, सामने बूढ़ी औरत खड़ी थी जो खाना लेकर आई थी। औरत पल भर के लिए ठिठकी और उसने लाली की आँखों में आँखें डालकर देखा। फिर झुककर खाना लाली के सामने रखा, दिन के बर्तन उठाए और साये की तरह खामोशी से चली गई। लाली ने खाना खाया, मगर वह एक रोटी से ज़्यादा नहीं खा सका और चुपचाप जाकर बिस्तर पर लेट गया। वह खुद को बहुत कमज़ोर और थका हुआ महसूस कर रहा था।

वह देर तक खामोश पड़ा रहा, फिर सो गया। लगभग ग्यारह बजे दयोर ने लाली को जगाया और बाहर चलने का इशारा किया। लाली ने उठकर अपनी गठरी खोली, पतलून और बुश-शर्ट निकाली और पहन ली। वह खामोशी से बाहर निकला और दयोर के साथ चल पड़ा। थोड़ी ही देर बाद वह मियाँ हयात

मोहम्मद के सामने खड़ा था। काला अलसेशियन कुत्ता उस समय भी सोफे पर बैठा था। हयात व्हिस्की का आनंद ले रहे थे।

उन्होंने नज़र उठाकर लाली को देखा। उन्होंने उसकी मूँछ विहीन साफ़ चेहरे, सिलवटों वाली पतलून और बुश-शर्ट को देखा, मगर उनके बारे में कुछ नहीं कहा। उन्होंने सिर्फ इतना पूछा, "क्यों, सब ठीक-ठाक है? कोई तकलीफ तो नहीं?"

लाली ने दयोर की ज़्यादती और उकसावे के खिलाफ विरोध जताया, "वैसे तो जी हर तरह का आराम है, पर दयोर ने मेरे साथ बेवजह झगड़ा किया। उसने मुझे धक्का देकर गिरा दिया और पिस्तौल तानकर खड़ा हो गया"। हयात मोहम्मद ने व्हिस्की की चुस्की लेते हुए कहा, "मैं उसे समझा दूँगा, आगे से वह ठीक से पेश आएगा। मगर वह बेकार की बातें करने की हरगिज़ इजाज़त नहीं देगा और जैसा वह कहेगा, तुम्हें वैसा ही करना होगा। तुम उसकी ज़िम्मेदारी (चार्ज) में हो, तुम्हें यह बात नहीं भूलनी चाहिए"।

लाली अपनी बात पर अड़ा रहा, "साहब! मेरा उसके साथ गुज़ारा नहीं हो सकता। अगर वह गर्मी दिखाएगा तो अपना खून भी खौल जाएगा। बेवजह किसी दिन झगड़ा-फसाद हो जाएगा। आज तो जी मैं चुप रह गया, पर आगे उसने तेवर दिखाए तो..."

हयात अचानक भड़क उठे। लाली की बात काटकर वह ज़ोर से चीखे, "क्या कहना चाहते हो?" उनके गुस्से के साथ ही कुत्ते ने गर्दन उठाई और ज़ोर-ज़ोर से गुर्राने लगा।

लाली नरम पड़ गया। सिर झुकाकर विनम्रता से बोला, "मियाँ साहब! मुझे जाने की इजाज़त दे दीजिए। आपकी बहुत मेहरबानी होगी"।

हयात मोहम्मद ने भृकुटी तानकर गुस्से से कहा, "क्या जेल जाना चाहते हो?" लाली ने कोई जवाब नहीं दिया और सिर झुकाए खामोश खड़ा रहा। हयात मोहम्मद कुछ पल चुप बैठे रहे और पास बैठे कुत्ते की पीठ सहलाते रहे। "शाम को डी.एस.पी. मेरे पास आया था। उसकी इतनी हिम्मत तो नहीं हुई कि खुलकर तुम्हारे बारे में पूछे, मगर उसकी बातों से साफ़ ज़ाहिर था कि उसे शक है कि तुम मेरे बंगले में हो"।

लाली ने कहा, "तब तो जी मुझे फौरन यहाँ से चले जाना चाहिए"।

"बेवकूफ!" हयात ने उसे गुस्से से डाँटा। "यहाँ से निकलते ही तुम गिरफ्तार कर लिए जाओगे। पुलिस हर तरफ तुम्हारी घात में बैठी है"। उन्होंने व्हिस्की का एक बड़ा घूँट लिया और लहज़े को स्थिर करते हुए पूछा, "तुम यहाँ से जाने के लिए इतने बेचैन क्यों हो?"

"मैं आपसे झूठ नहीं बोलूँगा, साफ़ बात यह है जी कि मुझे रहीम दाद की बहुत फिक्र है। मैं जल्दी से उसके पास पहुँच जाना चाहता हूँ"।
"यह रहीम दाद वही कैदी है न, जो तुम्हारे साथ जेल से भागा था?" लाली ने पूछा, "जी साहब! क्या आप उसे जानते हैं?"
"नहीं," मियाँ हयात ने रूखेपन से जवाब दिया। "उसके बारे में डी.एस.पी. ने सिर्फ इतना बताया है कि उसे हत्या के प्रयास के जुर्म में सज़ा हुई थी"। वह कुछ पल खामोश रहे, "शायद दोनों पार्टियों के बीच सशस्त्र मुठभेड़ हुई थी। कुछ लोग ज़ख्मी हुए थे, जिनमें से एक घायल पिछले दिनों चल बसा"।
लाली ने रहीम दाद की तरफ से सफाई देने की कोशिश की, "पर साहब! छह-सात महीने मुक़दमा चला और रहीम दाद ने तीन साल से ज़्यादा जेल में गुज़ारे। अब तो यह बात बहुत पुरानी हो गई है"।
हयात मोहम्मद ने ऊबकर कहा, "मैं यह सब नहीं जानता। मुझे तो यह पता चला है कि जो व्यक्ति उसके हाथों ज़ख्मी हुआ था, वह मर गया है। अब पुलिस उसके खिलाफ हत्या (दफा 302) का मुक़दमा दर्ज करना चाहती है। पहले उसे दफा 307 में सज़ा हुई थी, मगर अब अपराध की प्रकृति बदलकर और भी गंभीर हो गई है। इसके साथ ही मुक़दमे में बदलाव की कार्रवाई भी शुरू हो गई है"। लाली ने कुछ नहीं कहा और हयात व्हिस्की के घूँट भरते रहे। थोड़ी देर बाद उन्होंने लाली से कहा, "सुनो, पुलिस तुम्हें गिरफ्तार करने की जी-तोड़ कोशिश इसलिए कर रही है..." अपनी बात कहते-कहते हयात थोड़े उलझे, "क्या नाम है दूसरे भागे हुए कैदी का?"
लाली ने धीरे से जवाब दिया, "रहीम दाद"।
"रहीम दाद," हयात मोहम्मद ने व्हिस्की का घूँट भरा, "पुलिस तुम्हारे ज़रिये रहीम दाद का सुराग लगाना चाहती है। पुलिस को ऐसी खबरें मिली हैं कि कुछ दिन पहले वह तुम्हारे साथ देखा गया था, बाद में वह गायब हो गया और अब तक लापता है"।

लाली ने ज़बान से एक शब्द भी नहीं निकाला। मियाँ हयात मोहम्मद वट्टू ने थोड़ी देर चुप रहने के बाद कहा, "मैं तुम्हें यह भी बता देना चाहता हूँ कि जो व्यक्ति रहीम दाद के हाथों मारा गया, वह प्रांतीय कृषि मंत्री का भी रिश्तेदार होता था। भांजा या भतीजा था, शायद कोई और रिश्ता हो, मुझे सही तौर पर नहीं मालूम। मंत्री का घर पहले इधर ही होता था, बाद में लाहौर चला गया और वहीं कोठी बनवाकर रहने लगा। अब तो वह बूढ़ा हो गया है, किसी ज़माने में बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ होता था। मृतक के घरवाले उस

पर और उसके बेटे पर बहुत दबाव डाल रहे हैं। इसलिए वह तुम्हारी और तुम्हारे साथी रहीम दाद की गिरफ्तारी में व्यक्तिगत रुचि ले रहा है।"
हयात ने अपनी बात कहते-कहते थोड़ा संकोच किया, "जब कोई मंत्री किसी मामले में व्यक्तिगत रुचि लेता है, तो पुलिस की रातों की नींद उड़ जाती है। नौकरी खतरे में पड़ जाती है। सुन लिया तुमने?"
लाली ने बहुत सादगी से कहा, "यह बात है, तब तो जी मुझे सारी बात रहीम दाद को फौरन बता देनी चाहिए।"
उसकी बात सुनकर हयात मोहम्मद शोले की तरह भड़क उठे। गुस्से से आँखें निकालकर बोले, "तुम बिल्कुल उल्लू के पट्ठे हो।"
लाली उनके नाराज़ होने पर डर गया। गिड़गिड़ाकर बोला, "साहब जी! नाराज़ न हों। पर यह भी तो हो सकता है, पुलिस को जब यह संदेह है कि मैं यहाँ हूँ, तो वह किसी दिन छापा मारकर मुझे पकड़ भी सकती है।"
"पुलिस की इतनी हिम्मत नहीं हो सकती कि वह मेरे बंगले पर छापा मारे और तलाशी ले।" हयात ने बहुत अहंकार से कहा, "शायद तुम्हें पता नहीं, कल रात जो पुलिस इंस्पेक्टर मेरी अनुमति के बिना बंगले की चारदीवारी के अंदर दाखिल हुआ था, उसे मेरे सिर्फ एक टेलीफोन करने पर तीन कांस्टेबलों के साथ आज सस्पेंड करके लाइन हाज़िर कर दिया गया। डीएसपी कल रात ही की घटना के बारे में माफ़ी माँगने मेरे पास आया था।" उन्होंने व्हिस्की का बड़ा घूँट लिया। गिलास मेज़ पर रखा, "मैंने दोपहर को कृषि मंत्री से भी बात की थी। वह मेरा पुराना यार है, कॉलेज में साथ पढ़ता था। मेरी ही कोशिशों से मंत्री बना है।"
लाली बुत बना खामोश खड़ा रहा। मियाँ हयात मोहम्मद बोले, "तुम यहाँ हर तरह से सुरक्षित हो। रही बात रहीम दाद की, तो उसे अब भूल जाओ।"
लाली खामोश न रह सका। बेचैन होकर बोला, "मियाँ साहब! यह कैसे हो सकता है?"

"वैसे ही जैसे मैं कह रहा हूँ। रहीम दाद जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा या मार दिया जाएगा। मृतक के भाई और परिवारवाले भी उसकी तलाश में हैं, देखते ही उसे मार डालेंगे। पुलिस के हाथों अगर वह पकड़ा गया, तब मुक़दमे की सुनवाई के दौरान ही उसे मार डालेंगे। तुम्हें तो पता ही होगा कि खून का बदला यहाँ ऐसे ही लिया जाता है। अदालत के फैसले का इंतज़ार नहीं किया जाता, बल्कि अदालत के परिसर के अंदर भी हत्या हो जाती है।"
हयात मोहम्मद ने बोतल उठाई, खाली गिलास में व्हिस्की उँडेली, थर्मस से बर्फ निकालकर डाली, शीशे के सुराहीदार बर्तन से पानी डाला और पेग बनाकर व्हिस्की का घूँट भरा। फिर समझाने के लहज़े में नरमी से बोले, "देखो, रहीम दाद के साथ सहानुभूति तुम्हें बहुत महँगी पड़ेगी। मुझे डर है, उसका साथ

देने की कोशिश में तुम भी मारे जाओगे। गिरफ्तार तो बहरहाल कर ही लिए जाओगे। मैं चाहता हूँ तुम मेरे पास ठहरे रहो।" व
ह कुछ पल खामोश रहे, "रहीम दाद ज़्यादा दिनों तक छिपकर नहीं रह सकता। पुलिस उसका सुराग लगा लेगी। उसकी गिरफ्तारी के बाद पुलिस तुम्हारी तरफ से बेफिक्र हो जाएगी। मैं अपने प्रभाव से तुम्हें जेल जाने से बचा लूँगा। कोई तुम्हारी तरफ आँख उठाकर भी नहीं देख सकता।"
लाली ने सिर झुकाकर बहुत विनम्रता से कहा, "साहब! आप रहीम दाद के लिए कुछ नहीं कर सकते? बात यह है मियाँ जी, जेल से मैं ही उसे निकालकर लाया था। मैंने उससे वादा किया था।"
हयात ने लाली को आगे बोलने का मौका नहीं दिया। बात काटकर बोले, "रहीम दाद का ख्याल अपने दिल से निकाल दो। समझ लो वह मर गया।" उन्होंने तीखी नज़रों से लाली को देखा, "मैं उसके लिए कुछ नहीं कर सकता, सिर्फ तुम्हें बचा सकता हूँ।"
लाली ने हिचकिचाते हुए एक बार फिर विनती की, "आपकी बहुत मेहरबानी है जी, पर..."
हयात मोहम्मद वट्टू ने भृकुटी तानकर कहा, "अगर-मगर छोड़ो। मुझे दो टूक जवाब चाहिए। जेल जाना चाहते हो या यहाँ रहना चाहते हो?" उन्होंने व्हिस्की की चुस्की ली, "मुझे सिर्फ टेलीफोन करना होगा। घंटे भर के अंदर तुम पुलिस की हिरासत में होगे। बोलो क्या चाहते हो?"
लाली उनकी धमकी से डर गया। गिड़गिड़ाकर बोला, "मियाँ जी! मेरी क्या मर्ज़ी, जो आप हुक्म करेंगे वही करूँगा।"
"शाबाश।" हयात मोहम्मद वट्टू ने ऊँची आवाज़ में कहा। उनका चेहरा खिल उठा। वह खामोश बैठे अपने अलसेशियन कुत्ते की नरम पीठ पर प्यार से हाथ फेरते रहे। कुत्ता धीरे-धीरे गुर्राता रहा। मियाँ हयात मोहम्मद ने गिलास उठाया और सारी व्हिस्की गपागप पीकर एक बार फिर उसे खाली कर दिया। उन्होंने गिलास मेज़ पर रखा।

वह उठकर खड़े हुए और आगे बढ़ते हुए बोले, "मेरे साथ आओ।"
अलसेशियन कुत्ता भी सोफे से उतरकर नीचे आ गया और मियाँ हयात मोहम्मद के साथ-साथ चलने लगा। लाली को उससे डर लग रहा था। मगर वह सहमा हुआ हयात मोहम्मद के पीछे-पीछे चलता रहा। हयात मोहम्मद गैलरी (गुलाम गर्दिश) में खुलने वाले दरवाज़े पर पहुँचे। उसे खोला। बाहर दयोर खड़ा था। हयात मोहम्मद ने उसे कमरे के अंदर बुलाया।
दयोर कमरे में दाखिल हुआ। उसने दरवाज़ा बंद कर दिया। मियाँ हयात मोहम्मद ने दक्षिणी दीवार का बंद दरवाज़ा खोलने का इशारा किया। यह दरवाज़ा कमरे के अन्य दरवाज़ों से थोड़ा छोटा था। इसमें ताला भी लगा था।

दयोर ने शलवार की गुप्त जेब से चाबी निकाली और बहुत मुस्तैदी से दरवाज़े के दोनों पट खोल दिए। वह एक तरफ हटकर खड़ा हो गया।
मियाँ हयात मोहम्मद अपने अलसेशियन के साथ थोड़ा सा झुककर अंदर दाखिल हुए। उन्होंने लाली को अपने पीछे आने का इशारा किया।
लाली भी अंदर चला गया। दयोर बाहर ही रहा। उसने धीरे से दरवाज़ा बंद कर दिया। अंदर गहरा अंधेरा था। हयात ने हाथ बढ़ाकर दीवार में लगा बिजली का स्विच दबाया। एक बल्ब जल उठा। उसकी रोशनी बहुत धीमी थी।
सामने सीढ़ियाँ थीं जो नीचे जाती थीं। दोनों एक के पीछे एक नीचे उतरे। यह एक विशाल तहखाना था, जिसका फर्श कच्चा था। तहखाने में नमी थी, घुटन थी और एक अजीब तरह की दुर्गंध फैली हुई थी। तहखाने में भी धुंधला बल्ब जल रहा था। हवा की आवाजाही के लिए एक चिमनी थी जो खपरैल की छत के ऊपर निकली हुई थी। चिमनी के नीचे एक अँगीठी (आतिशदान) थी। इसमें तहखाने को गर्म रखने के लिए सर्दियों में लकड़ी के टुकड़े और कोयले जलाए जाते थे।
☆
धुंधली रोशनी में एक बूढ़ा व्यक्ति ज़मीन पर लेटा था। उसकी दाढ़ी और सिर के बाल बढ़े हुए थे। वह जेल के कैदियों जैसी पोशाक पहने हुए था। उसके एक पैर में लोहे की मोटी ज़ंजीर थी, जिसमें एक भारी गोला बंधा था। पास ही इनेमल (तामचीनी) का एक पुराना बर्तन रखा था। एक तरफ मिट्टी का घड़ा और एल्युमीनियम का गिलास था। आहट सुनकर बूढ़ा उठकर बैठ गया और मियाँ हयात और लाली को घूरने लगा।

उसकी आँखें गुस्से और नफरत से जलता हुआ शोला बन गईं। चेहरे पर दहशत छा गई। वह मुँह बनाकर चिल्लाने लगा, "तुम आ गए! कितने नीच हो! दूर हो जाओ मेरी आँखों के सामने से। मैं तुम्हारी सूरत नहीं देखना चाहता। दफा हो जाओ यहाँ से।"
वह चिल्ला-चिल्लाकर हयात मोहम्मद को गालियाँ देता रहा और गहरी-गहरी साँसें भरकर हाँपता रहा। हयात ठिठक गए। थोड़ी देर खामोश खड़े रहे, फिर धीरे-धीरे चलते हुए बूढ़े की ओर बढ़े। हयात जितना करीब जाते, बूढ़े का पागलपन उतना ही बढ़ता जाता। वह और ज़्यादा गुस्से से चिल्लाने लगा। उसके मुँह से झाग निकलने लगा। आँखें दहशत से बाहर निकल आईं। वह उठकर खड़ा हो गया और हयात मोहम्मद पर तेज़ी से झपटा, मगर लोहे के भारी गोले ने उसे आगे नहीं बढ़ने दिया। वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा। उसके पैर में बंधी ज़ंजीर झनझना उठी। हयात के होंठों पर ज़हरीली मुस्कान थी। वह बूढ़े के बिल्कुल सामने खड़े थे। बूढ़ा उठकर बैठ गया।

वह तलमलाकर उठ खड़ा हुआ और नफरत से हयात के मुँह पर थूक दिया। हयात ने क्रोधित नज़रों से उसे देखा। जेब से रुमाल निकालकर अपना चेहरा पोंछा। मुड़कर अपने साथ खड़े अलसेशियन को देखा और उसे धीरे से उकसाया। कुत्ता गुर्राया, ज़ोर से भौंका और उछलकर बूढ़े पर हमला कर दिया। बूढ़ा ज़मीन पर गिर पड़ा और कुत्ता उसे ज़ोर-ज़ोर से झंझोड़ने की कोशिश करने लगा। बूढ़ा हाँफते हुए चिल्लाया, "मार दो! मार दो! मुझे जान से मार दो!"
मियाँ हयात चुपचाप खड़े रहे। बूढ़ा बेबसी से हाथ-पाँव मारता रहा। कुत्ता उसके तड़पते हुए शरीर को जगह-जगह से झंझोड़ने लगा। सीने पर सवार होकर उसने बूढ़े की गर्दन अपने दाँतों से दबोचने की कोशिश की। बूढ़े ने फटी-फटी डरी हुई आँखों से हयात मोहम्मद वट्टू की ओर देखा।
हयात ने डाँटकर कुत्ते को अपने पास बुला लिया। कुत्ते ने बूढ़े को छोड़ दिया और खामोशी से हयात के पास आकर उनके पैरों के पास ज़मीन पर लेट गया। कुत्ते के झंझोड़ने से बूढ़े के कपड़े कई जगह से फट गए थे, मगर शरीर पर कहीं खरोंच तक नहीं आई थी। वह करवट लेकर ज़मीन पर लेटा हुआ हाँप रहा था। हयात मोहम्मद खामोश खड़े बूढ़े को घूरते रहे। फिर वह वापस मुड़े। उन्होंने सीढ़ियों के पास दीवार में लगी अलमारी खोली। लाली सहमा हुआ जहाँ था वहीं खड़ा रहा।
मियाँ हयात ने मुड़कर उसकी ओर देखा और भारी आवाज़ में कहा, "इधर आओ।"

लाली उनके पास चला गया। हयात ने अलमारी के अंदर से एक डिब्बा निकाला। ढक्कन खोलकर डिब्बा लाली के हाथ में थमा दिया। खुले हुए डिब्बे के अंदर से सिरिंज और शीशी बाहर निकाली। लाली को अपने साथ आने का इशारा किया। मियाँ हयात मोहम्मद एक बार फिर बूढ़े के पास गए। लाली उनके पीछे खामोश खड़ा रहा।
सिरिंज देखते ही बूढ़ा उठकर बैठ गया। उसके चेहरे पर डर छा गया और वह थर-थर कांपने लगा। उसने दोनों हाथ हिलाकर मना किया और गिड़गिड़ाकर बोला, "नहीं! नहीं!"
हयात ने उसे खूँखार नज़रों से घूरा। बूढ़ा सहमकर एक तरफ झुक गया। हयात मोहम्मद उसके करीब बैठ गए। उन्होंने बूढ़े का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचा। बूढ़े ने कोई विरोध नहीं किया और बेचारगी से गर्दन झुका दी। हयात ने उसके हाथ पर रुई से स्पिरिट लगाई और सिरिंज की सुई खाल में चुभाकर दवा रगों में उतार दी। इंजेक्शन लगाकर वह खड़े हो गए। तहखाने में गहरी खामोशी छाई थी। बूढ़ा गुमसुम बैठा रहा।
कई मिनट गुज़र गए। हयात मोहम्मद वट्टू और लाली चुपचाप खड़े रहे। बूढ़ा गर्दन को थोड़ा झुकाकर इस तरह सुकड़कर बैठ गया मानो कुछ सुनने की कोशिश कर रहा हो। उसके चेहरे पर अचानक

घबराहट छा गई। वह हयात से बोला, "सुन रहे हो हयात! बहुत तेज़ हवा चल रही है, तूफान आने वाला है। आँधी के साथ बारिश भी होगी।"
वह ज़ोर से चिल्लाया, "गज़ब हो जाएगा! गेहूँ (कनक) की तैयार फसलें तबाह हो जाएँगी। अब क्या होगा हयात? अभी फसलें पककर तैयार नहीं हुई हैं, कटाई में अभी वक्त है।"
"सच?" वह खुशी से चिल्लाकर बोला, "सच-सच बताओ, फसल की कटाई में अभी कितनी देर है?"
हयात मोहम्मद वट्टू ने उसे तसल्ली दी, "इस बार मई से पहले कटाई नहीं होगी, अभी तो मार्च का महीना है। अब तुम सो जाओ।"
बूढ़े ने बच्चों जैसी मासूमियत से पूछा, "अब मैं सो जाऊँ?"
"हाँ-हाँ, अब तुम सो जाओ।" बूढ़े ने आँखें बंद कर लीं। वह थोड़ी देर चुपचाप बैठा झूमता रहा और झूमते-झूमते एक तरफ लुढ़क गया।
लाली डर और हैरानी से सब कुछ देखता रहा। उसकी समझ में बिल्कुल नहीं आया कि यह माजरा क्या है? जब वह सो गया तो हयात वापस मुड़े। उन्होंने सिरिंज साफ़ की, डिब्बे में रखी और अलमारी का दरवाज़ा खोलकर डिब्बा उसमें रख दिया।

उसने मुड़कर लाली के साथ ज़ीने की सीढ़ियाँ चढ़ीं और ऊपर पहुँच गया। बल्ब बुझा दिया। दोनों बाहर आ गए। कुत्ता भी बाहर आ गया। दयोर दरवाज़े के करीब मुस्तैदी से खड़ा था। उनके बाहर आते ही उसने आगे बढ़कर तहखाने का दरवाज़ा बंद किया और ताला डाल दिया। चाबी अपने पास रख ली। हयात ने दयोर को बाहर जाने का इशारा किया। वह कमरे से चला गया। लाली ने भी दयोर के साथ बाहर जाना चाहा। हयात ने उसे टोका। "लाली, तुम ठहर जाओ।"
मियाँ हयात मोहम्मद आगे बढ़ा और थका हुआ सा सोफे पर बैठ गया। पास के सोफे पर उसका अलसेशियन कुत्ता भी बैठ गया। हयात ने व्हिस्की का एक बड़ा पेग बनाया और धीरे-धीरे चुस्की लेने लगा। लाली उसके सामने खामोश खड़ा था। कमरे में गहरा सन्नाटा छाया था। बंगले के बाहर हवा के झोंकों से पत्ते शाखाओं से टूट-टूट कर गिर रहे थे। सन्नाटे में सूखे पत्तों के खड़खड़ाने की हल्की-हल्की आहटें सुनाई दे रही थीं। गहरी खामोशी में हयात की आवाज़ उभरी।
वह लाली से कह रहा था, "देख लिया तुमने।" उसने एक गहरी साँस भरी। "यह मेरा बड़ा भाई मियाँ रियाज़ मोहम्मद खान वट्टू है। पागल हो गया है।"
"मियाँ साहब, आप उन्हें पागलखाने क्यों नहीं भेज देते?"

"फालतू बात मत करो," हयात मोहम्मद ने नाराज़ होकर कहा। "मेरा भाई पागलखाने नहीं जा सकता। वह यहीं रहेगा।"
लाली के मन में कई सवाल उठे। मगर वह हयात की नाराज़गी के डर से कुछ न कह सका। सिर झुकाए खामोश खड़ा रहा। हयात मोहम्मद कुछ पल खामोश रहने के बाद बोला, "मैं इसलिए तुम्हें अपने साथ तहखाने में ले गया था कि जो काम आज मैंने किया है, कल से तुम्हें करना होगा।" वह मुस्कुराया। "तुम्हारी सिर्फ इतनी ही ड्यूटी होगी। बाकी समय ऐश करो, खाओ-पिओ और मौज करो।"
लाली ने दबी ज़बान से बचने की कोशिश की। "मैंने जी यह काम कभी नहीं किया।"
"कोई बात नहीं," हयात ने बेपरवाही से कहा। "बहुत मामूली काम है। दवा की शीशी तो देख ही ली है। सिरिंज में दवा भरना, मरीज़ का हाथ पकड़ना और खाल में सुई चुभाकर दवा अंदर उतार देना। बस काम खत्म।"
लाली ने डरते-डरते कहा, "मियाँ जी, यह काम तो दयोर भी कर सकता है।"
"नहीं," मियाँ हयात मोहम्मद ने भृकुटी तानकर लाली को देखा। "दयोर यह काम नहीं कर सकता। वह अकेले तहखाने के अंदर भी नहीं जा सकता।"

उसने गिलास उठाकर होंठों से लगाया और व्हिस्की का घूँट भरा। "दयोर अगर उसके पास गया, तो हो सकता है वह उसका खून कर दे। मेरे भाई ने नाराज़ होकर दयोर की ज़बान कटवा दी थी। तब से वह गूंगा है। मगर दयोर उससे जितनी नफरत करता है, मेरा उतना ही वफादार है। दयोर बहुत ही वफादार है।" उसने पास बैठे अलसेशियन की तरफ इशारा किया। "मेरे दो ही वफादार हैं। एक यह और दूसरा दयोर।"
लाली ने धीरे से कहा, "मियाँ साहब! अपने भाई का किसी अच्छे डॉक्टर से इलाज कराएँ। ऐसे कब तक काम चलेगा?"
"मुझे तुम्हारी सलाह की ज़रूरत नहीं है," हयात ने लाली को डांट दिया। "मैं खुद डॉक्टर हूँ।"
"अच्छा जी! आप डॉक्टर भी हैं?" लाली ने हैरानी जताई। "यह मुझे पता नहीं था।"
"मैंने डॉक्टरी लाहौर में नहीं पढ़ी है," हयात ने बड़े गर्व से कहा। "इंग्लैंड में पढ़ी है।"
"क्या? मियाँ साहब, आप विलायत में भी रह चुके हैं?" लाली ने और भी ज़्यादा हैरानी से पूछा। "सालों रहा हूँ।"
कमरे में फिर खामोशी छा गई। थोड़ी देर बाद लाली ने खामोशी तोड़ी और विनम्रता से बोला, "बुरा न मानें तो एक बात कहूँ?"
"कहो, क्या कहना चाहते हो?"

"मेरी कोई और ड्यूटी लगा दीजिए।" हयात मोहम्मद कुछ पल लाली को गहरी नज़र से देखता रहा, फिर कुछ सोचकर मुस्कुराया। "मुझे पता है तुम बंदूक चलाना भी जानते हो। निशाना भी तुम्हारा बिल्कुल ठीक-ठाक है।" उसने व्हिस्की का घूँट भरा और गिलास मेज़ पर रखा। "मैं तुम्हारी निशानेबाज़ी और ताक़त बाद में देखूँगा। तुम काम के आदमी लगते हो।"
हयात ने एक बार फिर उसे गौर से देखा और रुक-रुक कर बोलने लगा। "मगर फिलहाल तुम्हें यही काम करना होगा। बात यह है कि मैं तहखाने में जाकर इंजेक्शन खुद लगाना नहीं चाहता। वह पागल आदमी है। उसके पागलपन पर मुझे गुस्सा भी आता है और दुख भी होता है। वह मेरा भाई है न।"
"साहब! आपको उन पर गुस्सा नहीं करना चाहिए।"
"फिर फालतू बातें शुरू कर दीं," हयात ने चिढ़कर कहा। "मैं चाहता हूँ तुम उसके बारे में बिल्कुल न सोचो।

"यह तुम्हारा काम नहीं है। तुम्हारा काम सिर्फ उतना ही है, जिसके लिए मैंने तुम्हारी ड्यूटी लगाई है। तुम्हें रोज़ाना दो बार उसे इंजेक्शन लगाना होगा और उस समय लगाना होगा जब दयोर तुम्हें कहेगा। तहखाने की चाबी उसके पास रहती है। तहखाने के अंदर सिर्फ तुम जाओगे, वह नहीं जाएगा। समझ गए?"
"जी, बिल्कुल समझ गया।"
"और यह भी जान लो कि तहखाने में तुम्हारे अलावा सिर्फ माई जन्ते (बूढ़ी औरत) जाती है। वह तहखाने की सफ़ाई करती है और रोटी-खाना पहुँचाती है। वह गूंगी है और बहरी भी। तुम्हें भी यहाँ गूंगा और बहरा बनकर रहना होगा। सिर्फ आँखें खुली रखना, मुँह और ज़बान बंद रखना।" हयात मोहम्मद ने पास रखी मेज़ की दराज़ खोली। अंदर से सिरिंज और दो शीशियाँ निकालीं। एक शीशी उसने मेज़ पर रख दी, दूसरी शीशी की दवा सिरिंज में भरी और सिरिंज लाली के हाथ में थमाते हुए बोला, "मैं चाहता हूँ तुम मेरे सामने इंजेक्शन लगाकर दिखाओ।"
लाली ने घबराकर कहा, "किसके लगाऊँ जी?"
"मैं तो बहरहाल तुमसे इंजेक्शन नहीं लगवा सकता और न ही तुम अपने शरीर में इंजेक्शन लगा सकते हो।" यह कहते हुए वह मुस्कुराया और अपने भयानक अलसेशियन की ओर इशारा किया। "इसे इंजेक्शन लगाना होगा।"
"इसे?" लाली ने डरपोक नज़रों से देखा, कुत्ता सोफे पर लेटा उसे घूर रहा था। "मियाँ साहब! इससे तो मुझे डर लगता है।"

"डरो नहीं, यह तुम्हें काटेगा नहीं।" यह कहकर हयात ने मेज़ की दराज़ से चमड़े का मुँह-बंद (मज़ल) निकाला, उसे कुत्ते के मुँह पर चढ़ाया और उसकी पीठ धीरे-धीरे सहलाने लगे। कुत्ता सिर नीचे झुकाकर लेट गया। हयात ने उसकी जाँघ पर एक जगह उंगली रखकर हुक्म दिया, "यहाँ इंजेक्शन लगा दो।"
लाली झुका। हयात ने डाँटकर कहा, "मुँह क्या ताक रहे हो? लगाओ इंजेक्शन।"
लाली ने तुरंत कुत्ते की खाल में सिरिंज की सुई चुभाकर दवा अंदर उतार दी। कुत्ता खामोश पड़ा रहा। जब लाली इंजेक्शन लगा चुका, तो हयात मोहम्मद ने मुस्कुराकर कहा, "बिल्कुल इसी तरह तुम्हें तहखाने में उस पागल को इंजेक्शन लगाना होगा।" लाली ने कोई जवाब नहीं दिया।
"तुम इस कुत्ते से डर रहे थे। यह न काटता है न पंजे मारता है और इस इंजेक्शन के बाद तो यह बिल्कुल

"बिल्कुल ही ठंडा पड़ जाता है।"

लाली ने देखा कुत्ता निढाल पड़ा था। हयात मोहम्मद ने मुँह-बंद उसके मुँह से उतार दिया और गंभीर लहज़े में बोले, "लेकिन यह कभी-कभी बेहद खतरनाक भी हो जाता है।" उन्होंने मेज़ पर रखी दूसरी शीशी उठाई। "अगर इसका इंजेक्शन लगा दिया जाए, तो यह कुत्ता इतना खूँखार हो जाता है कि जिस पर हमला करे उसे चीर-फाड़कर खत्म कर सकता है।" लाली ने डरभरी नज़रों से शीशी देखी और सिरिंज हाथ में लिए खामोश खड़ा रहा। हयात ने उससे सिरिंज ली, उसे मेज़ पर रखा और लाली से मुखातिब हुए, "याद रखो, जैसा तुमसे कहा जाए तुम्हें वैसा ही करना होगा। मेरे हुक्म की खिलाफ़त तुम्हें बहुत महँगी पड़ेगी। कुछ समय तक तुम्हारी कड़ी निगरानी की जाएगी। अगर तुमने हर काम ठीक-ठाक किया, तो निगरानी खत्म कर दी जाएगी।" उन्होंने व्हिस्की का घूँट भरा और भारी लहज़े में बोले, "जाओ, जाकर सो जाओ।"
लाली ने सिर झुकाकर खामोशी से हयात मोहम्मद की बातें सुनीं। धीरे-धीरे चलता हुआ दरवाज़े पर पहुँचा। दरवाज़ा खोला। बाहर दयोर मुस्तैदी से खड़ा था। वह उसके साथ अपने कमरे में पहुँचा और बिस्तर पर लेट गया। थोड़ी देर बाद दयोर ने अपनी चारपाई निकाली और ठीक दरवाज़े के सामने बरामदे में डाल दी। बिस्तर लगाया और लेट गया।
दयोर कुछ देर तक करवटें बदलता रहा, फिर सो गया। मगर लाली को नींद नहीं आई। वह बहुत बेचैन था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे और क्या न करे?
रात के पिछले पहर वह धीरे से उठा और खिड़की पर जाकर खड़ा हो गया। बाहर पीली-पीली चाँदनी बिखरी थी। सन्नाटा बहुत गहरा था। लाली ने खिड़की की लोहे की सलाखें दोनों हाथों से थामकर पूरा ज़ोर लगाया, मगर सलाखें बहुत मज़बूत थीं। एक भी सलाख टस से मस नहीं हुई।

अचानक उसे अपनी पीठ के पीछे आहट सुनाई दी। उसने पलटकर देखा, लालटेन की मद्धम रोशनी में दयोर उसके सामने खड़ा है। वह खूँखार नज़रों से घूर रहा था। वह आगे बढ़ा और लाली का बाजू पकड़कर इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि लाली लड़खड़ाता हुआ बिस्तर पर जा गिरा। उसने कोई विरोध नहीं किया, बिस्तर पर खामोश पड़ा रहा। दयोर ने खिड़की के दोनों पट बंद करके कुंडी लगा दी और कमरे से बाहर जाकर अपनी चारपाई पर लेट गया। चारपाई से टकराने के कारण लाली के कंधे में चोट भी आई, मगर वह खामोश रहा और करवट
बदलकर लेट गया। आखिरकार उसे नींद आ गई और वह सो गया।

सुबह माई जन्ते ने लाली को धीरे से झंझोड़कर जगाया। वह उसके लिए चाय लेकर आई थी। चाय के साथ रोटी और साग भी था। यह सुबह का नाश्ता था। माई जन्ते ने लाली की तरफ नज़र भरकर भी नहीं देखा। वह चुपचाप आई और चुपचाप चली गई। लाली मुँह धोने के लिए गुसलखाने गया। वापस आया तो उसने देखा कि दयोर अपने कमरे में चटाई पर बैठा नाश्ता कर रहा है। लाली के कमरे की खिड़की अब खुली हुई थी।
लाली नाश्ते से फारिग हुआ तो दयोर स्टूल पर आकर बैठ चुका था। वह चुप बैठा लाली को देख रहा था। लाली ने जितनी बार नज़र उठाई, उसे अपनी ओर देखते हुए पाया। इस तरह घूरने पर लाली झुंझला गया। आँखों में आँखें डालकर दयोर को देखने लगा। कुछ देर तक दोनों बिना पलक झपकाए एक-दूसरे को घूरते रहे। आखिरकार दयोर की पलक झपक गई। लाली मुस्कुराने लगा। उसे मुस्कुराता देख दयोर की भृकुटी तन गई। वह उठकर खड़ा हो गया और नफरत से मुँह बनाकर ज़मीन पर थूक दिया। उसकी इस हरकत पर लाली का खून खौल गया, मगर वह टाल गया। वह निहत्था था और दयोर हथियारबंद। लाली नज़रें झुकाकर बिस्तर पर लेट गया और खिड़की की सलाखों से बाहर देखने लगा।
बाहर हल्की-हल्की धूप फैली थी। थोड़ी ही देर बाद एक युवा लड़की टोकरी में कूड़ा-करकट भरकर लाई और उसे झाड़ियों के पास डाल दिया। कूड़े में शीशे की टूटी हुई बोतलें भी थीं, जिनके गिरने से छन-छन की आवाज़ हुई। लड़की ने नज़रें उठाकर बिस्तर पर लेटे हुए लाली को देखा। दोनों की नज़रें मिलीं। उसने अपनी ओढ़नी के पल्लू से सिर ढँका और शर्माकर मुस्कुरा दी। लाली भी मुस्कुराने लगा।
दयोर तुरंत कमरे के अंदर दाखिल हुआ, खिड़की के पास पहुँचा और क्रोधित नज़रों से लड़की को देखने लगा। लड़की खाली टोकरी बगल में दबाकर सहमी हुई एक तरफ चली गई। दयोर ने एक बार फिर खिड़की के पट बंद करके कुंडी लगा दी। लाली तलमला कर रह गया। उसने दयोर की तरफ नहीं देखा, करवट बदलकर मुँह दूसरी तरफ कर लिया। दयोर उसके पास नहीं आया, बाहर चला गया।

लाली खामोश लेटा रहा। उसके लिए वक्त काटना अज़ाब (मुसीबत) हो गया। कई घंटे गुज़र गए। ठीक बारह बजे दयोर उसके पास आया और बाहर चलने का इशारा किया। लाली खामोशी से उठा और दयोर के पीछे-पीछे चलने लगा। दोनों गैलरी के रास्ते हयात मोहम्मद के कमरे में दाखिल हुए। हयात कमरे में मौजूद नहीं था। दयोर ने तहखाने का दरवाज़ा खोला और लाली को धक्का देकर अंदर जाने का इशारा किया। लाली ने अंदर जाकर स्विच दबाया, बल्ब जल उठा। उसकी रोशनी में लाली सीढ़ियों से नीचे तहखाने में चला गया।

बूढ़ा रियाज़ मोहम्मद खान वट्टू आतिशदान (अंगीठी) के पास ज़मीन पर बैठा था। उसके सामने खाने के बर्तन पड़े थे। उस समय वह होंठों से गिलास लगाए पानी पी रहा था। पानी पीते-पीते उसने नज़रें उठाकर लाली को देखा। खामोशी से गिलास एक तरफ रखा और पल भर तक लाली को घूरता रहा। लाली सीढ़ियों के पास ठहर गया। दबे-दबे खौफ और हैरानी से रियाज़ को तकने लगा।
थोड़ी देर तहखाने में खामोशी रही, फिर बूढ़े मियाँ रियाज़ मोहम्मद की आवाज़ उभरी। "आ, मेरे नज़दीक आ जा।"
मगर लाली जहाँ था, वहीं खड़ा रहा। इस दफ़ा बूढ़े ने किसी कदर नरमी से कहा, "डर नहीं, नज़दीक चला आ।" लाली ने ज़बान से एक लफ़्ज़ नहीं निकाला। धीरे-धीरे उसकी जानिब (ओर) बढ़ा, मगर नज़दीक जाने के बजाय कुछ फ़ासले पर रुक गया। मियाँ रियाज़ मोहम्मद ने कहा, "मैंने कल रात ही अंदाज़ा लगा लिया था कि अब तेरी ड्यूटी लगाई जाएगी।" वह बेतकल्लुफ़ी से मुस्कुराया। "दूर-दूर क्यों खड़ा है? नज़दीक आ जा। तू तगड़ा गबरू जवान है और मैं बूढ़ा कमज़ोर, पाँव में ज़ंजीर भी पड़ी है। फिर भी तू मुझसे डर रहा है।"
लाली ने उसकी किसी बात का जवाब नहीं दिया। आगे बढ़कर नज़दीक चला गया। रियाज़ मोहम्मद खान थोड़ी देर खामोश रहकर बोला, "जब कोई नया-नया ड्यूटी पर लगाया जाता है, वह मुझसे इसी तरह डरता है। समझता है मैं पागल हूँ। क्या मैं तुझे पागल नज़र आता हूँ?"
लाली बदस्तूर खामोश खड़ा रहा। बूढ़े रियाज़ ने गहरी साँस भरी।
"तू मेरी बात क्यों मानने लगा?" वह गहरी सोच में डूब गया। लाली गुमसुम खड़ा रहा। तहखाने में गहरा सन्नाटा छा गया। मियाँ रियाज़ मोहम्मद ने नज़रें उठाकर लाली को देखा और किसी कदर बेज़ारी से बोला, "खड़ा मुँह क्या तक रहा है? जा, जा कर अलमारी से सिरिंज निकाल और घोंप दे इसकी सुई मेरी खाल में। यही तेरी ड्यूटी है और इसके लिए तू यहाँ आया है। खामखा क्यों वक्त बरबाद कर रहा है।"
लाली ने फिर भी कुछ न कहा। खामोशी से अलमारी के पास गया। उसे खोला। सिरिंज में दवा भरी।

मियाँ रियाज़ के पास पहुँचा। झुककर उसका हाथ पकड़ा और बाज़ू में इंजेक्शन लगाना चाहा। मगर रियाज़ ने मना कर दिया। नर्म लहज़े में कहा, "आराम से बैठ जा।" लाली उसके करीब उकड़ू बैठ गया। एक बार फिर उसका हाथ पकड़ा। बूढ़े रियाज़ ने टोका, "मेरा हाथ छोड़ दे।" उसने कुर्ते का दामन उठाया और अपनी बरहना (नग्न) कमर का रुख लाली की तरफ कर दिया।

"हाथ में नहीं, कमर में इंजेक्शन लगा दे।" लाली ने उसका हाथ छोड़ दिया। सिरिंज की सुई रियाज़ की कमर में चुभाने की कोशिश की तो वह बिलबिलाकर चीखा, "तू तो बिल्कुल अनाड़ी लगता है। पहले कभी इंजेक्शन लगाया है?"
लाली ने ज़बान से तो कुछ नहीं कहा, सिर्फ इनकार में गर्दन हिला दी। रियाज़ ने सिरिंज अपने हाथ में संभाली और उसकी नोक कमर पर लगाकर बोला, "ले, अब लगा दे इंजेक्शन।"
लाली ने उसकी हिदायत के मुताबिक इंजेक्शन लगाया। रियाज़ ने निहायत इत्मीनान से इंजेक्शन लगवा लिया। मुस्कुराकर कहा, "अब तुझे इंजेक्शन लगाना आ गया। कुछ दिनों बाद तू फटाफट इंजेक्शन लगाने लगेगा।"
लाली ने इस दफ़ा भी कुछ न कहा। खामोशी से उठकर अलमारी के पास गया। सिरिंज साफ़ की। डिब्बे में रखी और अलमारी बंद कर दी। लाली एक बार फिर रियाज़ के करीब गया। मगर उसने लाली की जानिब कोई तवज्जो (ध्यान) न दी। आँखें बंद किए धीरे-धीरे साँस भरता रहा। चंद लम्हे बाद उसने आँखें खोल दीं। उसकी आँखों में हल्का सा खुमार था। उसने मुड़कर लाली की जानिब देखा और आहिस्ता से कहा, "अब तू जा सकता है। तेरी ड्यूटी खत्म हो गई। मैं थोड़ी देर बाद सो जाऊँगा।"
मगर लाली नहीं गया। रियाज़ ने भी कुछ न कहा। वह दोबारा आँखें बंद कर गया। कुछ देर आँखें बंद किए झूमता रहा और झूमते-झूमते फर्श पर लुढ़क गया। लाली वापस हुआ और आहिस्ता-आहिस्ता सीढ़ियाँ तय करके ऊपर चढ़ने लगा। वह सख्त हैरतज़दा था। उसने पिछली रात जिस रियाज़ मोहम्मद को देखा था, वह इस रियाज़ मोहम्मद से क़तई मुख़्तलिफ़ (अलग) था जिससे ज़रा देर पहले उसका साबका पड़ा था। न वह उसे देखकर दीवानों की तरह चीखा, न गालियाँ दीं और न मारने के लिए झपटा, बल्कि नर्मी और शफ़क़त (स्नेह) से पेश आया। यहाँ तक कि इंजेक्शन लगाने में भी उसकी रहनुमाई (मार्गदर्शन) की और पूरा-पूरा तावुन (सहयोग) किया। लाली ने ऊपर जाकर बिजली बुझाई। बंद दरवाज़े पर दस्तक दी। फ़ौरन ही दरवाज़ा खुल गया। दयोर उसका इंतज़ार कर रहा था। उसने तहखाने का दरवाज़ा बंद किया और ताला डाल दिया। लाली के हमराह कमरे में वापस आ गया। लाली ने दोपहर का खाना खाया और बिस्तर पर लेट गया। रात के ग्यारह बजे वह फिर दयोर के साथ तहखाने के दरवाज़े पर

पहुँचा। हयात कमरे में उस वक्त भी मौजूद न था। लाली तहखाने के अंदर गया। रियाज़ मोहम्मद खान वट्टू को देखा, वह जाग रहा था। मगर उसने लाली से कोई

बात नहीं की। लाली भी खामोश रहा। रियाज़ ने इंजेक्शन लगवाया और सो गया। लाली वापस हुआ। दयोर के हमराह अपने कमरे में पहुँचा। रात आधी से ज़्यादा गुज़र चुकी थी। खिड़की से हवा के नर्म-नर्म झोंके अंदर आ रहे थे। बाहर चाँदनी छिटकी थी। मगर दयोर के डर से लाली खिड़की पर नहीं गया। लाली दिन के बारह और रात के ग्यारह बजे दयोर के हमराह तहखाने के दरवाज़े पर जाता। तन्हा (अकेले) अंदर दाखिल होता और बूढ़े रियाज़ के जिस्म में इंजेक्शन लगाता। इंजेक्शन लगाते वक्त कभी-कभार रियाज़ ने बात करने की कोशिश भी की, मगर लाली ने मुतलक़ (बिल्कुल) हौसला-अफ़ज़ाई न की। हयात मोहम्मद की हिदायत पर अमल करते हुए बिल्कुल खामोश रहता। लेकिन रियाज़ कभी नाराज़ न हुआ। न चीखा, न चिड़चिड़ेपन का मुज़ाहिरा (प्रदर्शन) किया। बल्कि आम तौर पर खामोश ही रहता। लाली वापस कमरे में जाता तो दयोर उसकी कड़ी निगरानी (हुकमरानी) करता। हर वक्त उसके सिर पर सवार रहता। निहायत बेरुखी और हिक़ारत (नफरत) से पेश आता। लाली तन्हाई से उकताकर कभी खिड़की की जानिब जाने की कोशिश करता तो दयोर झट कमरे में जाता और लाली की गर्दन पकड़कर ज़ोर से धक्का देता। दो बार ऐसा ही हुआ। लाली उससे झगड़ा करना नहीं चाहता था। उसने खिड़की पर जाने का इरादा ही तर्क कर दिया। बिस्तर पर लेटता तो करवट बदलकर मुँह मोड़ लेता। कमरे से निकलकर वह सिर्फ़ बरामदे में आ सकता था या गुसलखाने तक जा सकता था और चौबीस घंटे में सिर्फ़ दो बार गैलरी से गुज़रकर तहखाने में जा सकता था। दयोर हर वक्त उसके साथ साये की तरह लगा रहता। कोई बात करने वाला भी न था।

माई जन्ते भी गूंगी थी और दयोर भी गूंगा था और बूढ़े रियाज़ से उसे बात करने की मुतलक़ इजाज़त न थी। इस दौरान हयात मोहम्मद वट्टू से भी उसकी मुलाक़ात नहीं हुई। लाली इस माहौल से जल्द ही उकता गया। फ़रार होने का कोई रास्ता न था। दयोर उसके रास्ते में दीवार बना खड़ा था। दयोर पर काबू पाना या उसे राम करना मुमकिन न था। उसका रवैया इस क़दर इश्तियाल-अंगेज़ (भड़काने वाला) था कि लाली ने जब भी उसकी तरफ देखा, हमेशा क़हर-आलूद (क्रोधित) नज़रों से अपनी जानिब घूरते पाया। दयोर सिर्फ़ रात को सोता था और लाली के कमरे के दरवाज़े के सामने चारपाई डालकर सोता था। मगर वह इस क़दर चोकन्ना और चोक्स रहता कि अगर लाली रात को पेशाब के लिए भी उठता तो उसकी चाप (पैरों की आहट) के साथ ही दयोर झट उठकर बैठ जाता। वक्त इसी तरह गुज़रता रहा। सुबह होती, शाम होती। मगर लाली ने सूरज न तुलू (उगते) देखा न

गुरूब (डूबते) होते। बंगले के बाहर की दुनिया के बारे में उसे कुछ भी पता न था। उसे रह-रहकर रहीम दाद का ख्याल आता। वह दिल ही दिल में कुढ़ता कि रहीम दाद उसके बारे में न जाने क्या सोचता होगा। हयात मोहम्मद का कहना था कि वह रहीम दाद को भूल जाए, उसका ख्याल दिल से निकाल दे। उसे मुर्दा समझ ले। मगर लाली के लिए यह मुमकिन न था। वह रहीम दाद को भूलना भी चाहता तो भूल नहीं सकता था। उसने रहीम दाद से हर हाल में मदद करने का अहद (वादा) किया था और वह अपना यह अहद पूरी नेक-नीति से निभाना चाहता था। लेकिन मियाँ हयात मोहम्मद खान वट्टू की क़ैद में रहकर वह रहीम दाद के लिए कुछ भी नहीं कर सकता था। पुलिस रहीम दाद की तलाश में सरगर्दां (लगी हुई) थी और रहीम दाद के मुख़ालिफ़ (दुश्मन) उसे क़त्ल करने के लिए घात में लगे थे। लाली की समझ में न आया कि क्या करे?

रात के ग्यारह बजे वह मामूल (नियम) के मुताबिक दयोर के हमराह तहखाने के दरवाज़े पर पहुँचा। इस वक्त भी मियाँ हयात मोहम्मद का कमरे खाली था। लाली तहखाने के अंदर गया। बूढ़े रियाज़ ने उससे कोई बात नहीं की। चुपचाप इंजेक्शन लगवाया और सोने के लिए फर्श पर लेट गया। लाली सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर पहुँचा तो यह देखकर हैरतज़दा रह गया कि ख़िलाफ़-ए-मामूल (नियम के विरुद्ध) तहखाने के दरवाज़े का एक पट ज़रा सा खुला है। वह भौंचक्का होकर इधर-उधर देखने लगा। इसी असना (दौरान) में हयात मोहम्मद की आवाज़ खामोशी में उभरी। "दयोर कमरे के बाहर खड़ा है। तहखाने का दरवाज़ा बंद कर दे और मेरे पास चला आ।"

लाली तहखाने का दरवाज़ा बंद करके हयात मोहम्मद खान वट्टू के पास चला गया। वह मद्धम रोशनी में सोफ़े की पुश्त (पीठ) से सर टिकाए इस तरह बैठा था कि दूर से नज़र न आता था। उसकी दोनों टाँगें सामने रखी हुई मेज़ पर फैली थीं। वह इस वक्त थका हुआ नज़र आ रहा था। उसके जूतों के तलवों में ताज़ा-ताज़ा मिट्टी थी। यह इस बात की अलामत (संकेत) थी कि वह भी तहखाने में गया था और ग़ालिबन (शायद) उस वक्त गया था, जब लाली गर्दन झुकाए रियाज़ के जिस्म में इंजेक्शन लगा रहा था। लाली फ़ौरन भाँप गया कि हयात मोहम्मद भी निहायत राज़दारी (गोपनीयता) से उसकी नक़्ल-ओ-हरकत की निगरानी कर रहा है। हयात मोहम्मद वट्टू का स्याह अलसेशियन करीब ही सोफ़े पर बैठा था। हयात की आँखें नशे से चढ़ी हुई थीं। उसने लाली से पूछा, "इस पागल ने तुझे तंग तो नहीं किया?"

लाली ने झट बताया, "नहीं मियाँ जी, बिल्कुल तंग नहीं किया।" उसने हिचकिचाते हुए हयात मोहम्मद के चेहरे की तरफ देखा। "वैसे तो जी वह पागल लगते नहीं।"

"नहीं," मियाँ हयात ने तल्ख़ (कड़वे) लहज़े में कहा, "वह पागल ही है। तुझे जल्द ही पता चल जाएगा।"

लाली ने सर झुकाकर धीरे से कहा, "समझ नहीं आती जी।"

"उसके साथ तेरी बातचीत तो नहीं हुई?"
"उन्होंने जी बात करने की कोशिश तो बहुत की, पर मैं बोला ही नहीं। बिल्कुल चुप रहा। अब तो जी वह भी नहीं बोलते। चुप करके इंजेक्शन लगवा लेते हैं।" लाली ने मियाँ हयात की तरफ नज़रें उठाईं, "मैं जी आपसे बिल्कुल सच कह रहा हूँ।"
"मुझे मालूम है तू ठीक कह रहा है।"
लाली ने एक बार फिर हिचकिचाते हुए कहा, "मियाँ जी, क्या आप भी तहखाने में गए थे?" हयात ने हैरत से चौंककर पूछा, "तुझे कैसे पता चला मैं तहखाने में गया था?"
लाली ने उसके जूतों की तरफ इशारा करते हुए कहा, "आपके जूतों में जी अभी तक तहखाने की कच्ची ज़मीन की मिट्टी लगी है। आज तहखाने का दरवाज़ा भी खुला था, दयोर भी दरवाज़े पर नहीं था।"
"तू देखने में जितना घामड़ (मूर्ख) लगता है, उतना है नहीं," हयात ने मुस्कुराकर कहा, "खासा तेज़ है। पुराना मुजरिम जो ठहरा।"
लाली ने हाथ बाँधकर इंकसारी (विनम्रता) का इज़हार किया, "मियाँ साहब, मैं आपसे बहुत डरता हूँ। इतना तो कभी पुलिस से भी मुझे डर नहीं लगा।"
मियाँ हयात ने उसकी बात नज़रअंदाज़ करते हुए कहा, "यह भी ठीक ही हुआ कि तुझे यह मालूम हो गया कि मैं ख़ुफ़िया (गुप्त) तौर पर मुआयना (निरीक्षण) करने तहखाने में गया था। मैं चाहता भी यही था कि यह बात तुझे मालूम हो जाए, ताकि तू आइंदा (भविष्य) भी इसी तरह एहतियात (सावधानी) से काम ले।"
"जैसा आप हुक्म करेंगे जी, वैसा ही करूँगा।"
"मैं चाहता हूँ तू इस पागल से बिल्कुल बात न कर।" हयात मोहम्मद तेओरी पर बल डालकर बोला, "वह बात भी करे तो सख्ती से रोक दे। ज़िद करे तो मुँह पर थप्पड़ मारकर उसकी ज़बान बंद कर दे। वह पागलपन में उल्टी-सीधी बातें करता है। मैं चाहता हूँ तू ऐसी बातें न सुन। उन पर बिल्कुल ध्यान न दे। मैं एक बार फिर तुझे ख़बरदार करता हूँ, मेरे इस हुक्म पर सख्ती से अमल करना। ठीक इसी तरह जैसे मैं कह रहा हूँ। समझ गया?"
"बिल्कुल समझ गया," लाली ने निहायत मुस्तैदी से जवाब दिया, "फ़िक्र न करें जी।"
"उम्मीद तो यही है तू ऐसा ही करेगा। तू खासा तेज़ और होशियार है और कोई होशियार बंदा जानते-बूझते गड्ढे में गिरने की कोशिश नहीं करता।"

कमरे की खामोशी में सिर्फ़ अलसेशियन के धीरे-धीरे ग़र्राने की आवाज़ उभरती रही। हयात ने नज़र भरकर लाली को देखा, "मैं सुबह गवर्नर के साथ शिकार खेलने जा रहा हूँ। शाम को वापसी होगी, लेकिन

यह भी हो सकता है प्रोग्राम लंबा हो जाए। दो-तीन रोज़ बाद वापस आऊँ।" "मेरी ग़ैर-हाज़िरी (अनुपस्थिति) में काम बिल्कुल ठीक-ठाक होना चाहिए।" उसने करीब रखी हुई बड़ी मेज़ की दराज़ खोली, सौ रुपये का एक नोट निकाला और उसे लाली की तरफ़ बढ़ाते हुए बोला, "यह रख ले। तुझे जिस चीज़ की ज़रूरत हो, दयोर से मँगवा लेना।”
जैसे मैं कह रहा हूँ। समझ गए?"

"बिल्कुल समझ गया," लाली ने निहायत मुस्तैदी से जवाब दिया, "फ़िक्र न करें जी।"
"उम्मीद तो यही है तू ऐसा ही करेगा। तू खासा तेज़ और होशियार है और कोई होशियार बंदा जानते-बूझते गड्ढे में गिरने की कोशिश नहीं करता।"

लाली ने नोट लेकर कहा, "साब! वैसे तो किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। पर मेरे पास कपड़े नहीं हैं, जो हैं बहुत मैले हो चुके हैं। धोने से भी साफ़ नहीं होते। मेरे लिए कमीज़ और शलवार बनवा दीजिए। बरसों से शहर में रहता हूँ, ऐसे ही कपड़े पहनता हूँ।" मियाँ हयात मोहम्मद ने गौर से लाली का लिबास देखा। "हाँ, तेरे कपड़े बहुत गंदे हैं। शिकार पर रवाना होने से पहले दयोर से कहता जाऊँगा, वह तेरे लिए नए कपड़े सिलवा देगा। फार्म में दर्जी मौजूद है। वह कल तेरे पास आ जाएगा।" उसने थोड़ा संकोच किया। "और कोई बात?"
"कमरे में पड़े-पड़े जी बहुत घबराता है। दयोर बंगले से बाहर निकलने ही नहीं देता। वह तो इतनी सख्ती करता है कि खिड़की पर खड़ा होता हूँ तो गर्दन से पकड़ लेता है। मेरा मतलब है..."
"मैं तेरा मतलब समझ गया," हयात ने उसकी बात काट कर कहा। "अभी तू बंगले से बाहर नहीं जा सकता। तेरी कुछ दिनों और इसी तरह सख्ती से निगरानी होगी।"
"जैसी आपकी मर्जी जी, मैं क्या कह सकता हूँ।"
"मैं चाहता हूँ कि तू इस मामले में कुछ न कहे। ठीक-ठाक रहेगा तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। तू यहाँ सुरक्षित भी रहेगा और आराम से भी रहेगा। मैं तेरी तनख्वाह भी लगा दूँगा और भी तेरे लिए बहुत कुछ करूँगा। लेकिन यह इसी सूरत में होगा जब तू आज़माइश (परीक्षा) पर पूरा उतरेगा। जैसा मैं कहूँगा, तुझे ठीक वैसा ही करना होगा।" लाली गर्दन झुकाए खामोश खड़ा रहा।

हयात चुप बैठा रहा, फिर उसने पूछा, "कोई और ज़रूरत हो तो साफ़-साफ़ बता दे। नशा-वशा तो नहीं करता तू?"

"करता तो हूँ जी!" लाली ने दबी ज़बान से अपनी इच्छा व्यक्त की। "पर बहुत दिनों से बिल्कुल नशा-पानी नहीं किया। सिगरेट भी पीने को नहीं मिली।"

मियाँ हयात मुस्कुरा कर बोला, "मुझे पहले ही अंदाज़ा हो गया था। इसीलिए यहाँ से भाग जाने की कोशिश कर रहा था। अब तेरी यह ज़रूरत भी पूरी हो जाएगी।" उसने हाथ उठा कर एक दरवाज़े की जानिब इशारा किया, "वह दरवाज़ा खोलकर अंदर जा। जो बोतल पसंद आए उठा ले। सिगरेट कल मिल जाएगी।"

लाली खामोशी से आगे बढ़ा। दरवाज़ा खोलकर अंदर गया तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं। कमरा बहुत कुशादा (विशाल) था। जगह-जगह कीमती सोफ़े पड़े थे। फर्श पर नरम-नरम कालीन बिछा था। हर तरफ हल्की-हल्की रोशनी थी। एक कोने में निहायत शानदार 'बार' था। शीशे की अलमारियों में किस्म-किस्म की शराब की बोतलें और 'डिकेंटर' (पात्र) थे। हर रंग की शराब थी और हर बनावट की बोतल। 'स्कॉच व्हिस्की' थी। आम व्हिस्की और 'डीलक्स' भी। 'जॉनी वॉकर' (जॉन बेग), 'ओल्ड स्मगलर', 'व्हाइट हॉर्स', 'डिम्पल', 'ब्लैक डॉग', 'शिवास रीगल', 'वॉकर्स ब्लैक लेबल', 'रॉयल सैल्यूट'। व्हिस्की के अलावा 'शैम्पेन' थी, 'शेरी' थी, 'मार्टिनी' थी, 'वोदका' थी, 'जिन' थी, 'पोर्ट' थी, 'रम' थी, हर तरह की 'ब्रांडी' और 'कॉग्नेक' (Cognac) थी। खुशनुमा बिल्लौरी पात्रों में फ्रांसीसी वाइन—'शैब्लिस थॉर्न', 'शैब्लिस अरदथ' थी, 'ब्लू नन' (Blue Nun) थी। लाली घबराई हुई नज़रों से हर चीज़ देखता था। कभी उधर नज़र डालता कभी इधर। उसके लिए चुनाव करना मुश्किल हो गया। आखिर उसने 'स्कॉच व्हिस्की' की वैसी ही बोतल उठा ली जैसी उसने हयात मोहम्मद की मेज़ पर देखी थी। बोतल सामान्य आकार की बोतलों से बड़ी भी थी।

व्हिस्की की बोतल हाथ में दबाए वह वापस आया। मियाँ हयात ने मुस्कुरा कर उसे देखा, "जा, मज़ा कर। आगे तेरे पीने के पानी का बंदोबस्त दयोर कर देगा। मगर एक बात याद रखना, तू शराब पीकर कभी मेरे सामने नहीं आएगा। न नशे की हालत में कोई गड़बड़ करेगा।"

उसने पीछे दीवार पर खूँटी से लटके हुए चमड़े के हंटर (कोड़े) को हाथ बढ़ा कर ज़ोर से खींचा और ऊँची आवाज़ में डाँट कर कहा, "कभी ऐसा हुआ तो खाल उधेड़ डालूँगा।"

लाली सहमा हुआ खामोश खड़ा रहा। कमरे की खामोशी में हयात की आवाज़ उभरी, "जा, बाहर दयोर तेरा इंतज़ार कर रहा है।"

लाली ज़बान से एक शब्द निकाले बिना कमरे से चला गया। दयोर दरवाज़े पर खड़ा था। उसने लाली के हाथ में दबी हुई व्हिस्की की बोतल को देख कर हैरानी से आँखें फाड़ दीं, मगर बिल्कुल चुप रहा। दोनों साथ-साथ चलते हुए आगे बढ़ गए। लाली ने अपने कमरे में पहुँच कर बोतल एक कोने में रख दी।

वह बहुत सहमा हुआ था। खामोशी से बिस्तर पर लेट कर सो गया। सुबह दिन चढ़े उठा। रात को देर से सोने के कारण अब वह देर से ही जागता था।

☆

दरवाज़े के पीछे से चीखने-चिल्लाने की आवाज़ें रुक-रुक कर उभर रही थीं। लाली को सख्त हैरानी हुई। वह डरते-डरते तहखाने के अंदर दाखिल हुआ। ज़ीने (सीढ़ियों) से उतर कर नीचे पहुँचा। सामने बूढ़ा रियाज़ बैठा था। लाली को देखते ही आँखें निकाल कर बोला, "आ गया कुत्ता मेरी हड्डियाँ चबाने।"
लाली को आश्चर्य तो हुआ, मगर वह बिल्कुल खामोश रहा और धीरे-धीरे रियाज़ की जानिब (ओर) बढ़ने लगा। रियाज़ मोहम्मद खान वट्टू ने लाली को अपनी ओर आते देखा तो ज़ोर से चीखा, "हट जा मेरी नज़रों के सामने से, हराम के तुख़्म!"
लाली उसके रवैये में यह अचानक आए बदलाव को देखकर बहुत सिटपिटाया। वह झिझक कर खड़ा हो गया। मियाँ रियाज़ और ज़्यादा ग़ज़बनाक (क्रोधित) होकर चिल्लाया, "बेगैरत कुत्ते! मैं तेरी मनहूस सूरत देखना नहीं चाहता।" उसने झट सामने रखी हुई एल्युमिनियम की प्लेट उठा कर दे मारी। प्लेट लाली के माथे पर खटाक से लगी। साथ ही रियाज़ की आवाज़ उभरी, "दफ़ा हो जा यहाँ से।"
लाली चोट खाकर तिलमिला उठा। वह गुस्से से बेकाबू होकर बूढ़े पर झपटा। उसके मुँह पर ज़ोर से थप्पड़ मार कर चीखा, "ओए, चुप कर के खड़ा हो जा!" उसने रियाज़ की गर्दन एक हाथ से दबोची और झटका देकर खड़ा कर दिया।
रियाज़ मोहम्मद खान अपनी गर्दन बेबसी से इधर-उधर झटक कर चिल्लाने लगा, "मार दे मुझे, जान से मार दे!" लाली ने उसे ज़ोर से धक्का दिया। मियाँ रियाज़ मोहम्मद ज़मीन पर गिर कर हँफने लगा। लाली ने उसकी जानिब कोई तवज्जो (ध्यान) न दी। अलमारी से सिरिंज निकाली। दवा भरी और करीब बैठ कर रियाज़ का बाज़ू (भुजा) अपने हाथ में थाम लिया। उसने न कोई प्रतिरोध किया, न चीखा। खामोशी से इंजेक्शन लगवा लिया। जब वह वापस जाने लगा तो लाली ने गहरी-गहरी साँसों की सरसराहट सुनी। पलट कर देखा तो बूढ़ा रियाज़ दोनों घुटनों पर सिर रखे सिसकियाँ भर रहा था। उसे रोते देख कर लाली के दिल को ठेस लगी, वह उदास हो गया।

लाली तहखाने से बाहर निकला और दयोर के साथ अपने कमरे में पहुँच गया। आज के वाकये (घटना) के बाद रियाज़ उसके लिए एक पहेली (मुअम्मा) बन गया था। वह एक बार फिर उसी रूप में नज़र आया था

जैसा उसने हयात मोहम्मद के साथ पहली बार देखा था। उसने सोचा कि हयात मोहम्मद ठीक ही कहता है, मियाँ रियाज़ वाकई पागल है।

दोपहर का खाना खाकर लाली बिस्तर पर लेटा ही था कि दर्जी आ गया। उसका कद ऊँचा था। चेहरे पर सफ़ेद छितरी हुई दाढ़ी थी। उसने लाली से कोई बात नहीं की। न मुस्कुराया, न नज़र मिलाई। गर्दन झुकाए विभिन्न कोणों (ज़वायों) से लाली के शरीर का माप लेता रहा। लाली ने उसकी खामोशी पर हँस कर बेतकल्लुफ़ी (घुलना-मिलना) दिखाई, "बाबा! तू भी गूंगा है?"
दर्जी ने कोई जवाब नहीं दिया।
लाली ने कहा, "एक कमीज़ और शलवार तो फटाफट तैयार कर दे। देख, मेरे ये कपड़े कितने गंदे हो रहे हैं।"
दर्जी फिर भी खामोश रहा। लाली की जानिब देखे बिना चुपचाप कमरे से बाहर चला गया। दोपहर बाद (से-पहरी) दयोर देशी शराब का अध्धा और सस्ते ब्रांड की सिगरेटों के कई पैकेट लाया। उन्हें लाली के हवाले किया और दरवाज़े के बाहर स्टूल पर बैठ गया। लाली ने अध्धा भी व्हिस्की की बोतल के पास रख दिया।
दिन गुज़रा और जब शाम (झुटपुटा) हुई तो लाली का मन डोल गया। उसने व्हिस्की की बोतल उठाई। उसे आँखों के सामने किया। मुस्कुरा कर होंठों से चूमा। बोतल खोली, नाक से लगा कर सूँघी। खुशी से उसका चेहरा खिल उठा। उसने व्हिस्की गिलास में उँडेली, पानी मिलाया और गिलास सामने रख लिया। दयोर खामोश बैठा लाली को देखता रहा। लाली ने दयोर की ओर देखा। गिलास उठा कर उसके पास पहुँचा। मुस्कुरा कर गिलास उसके सामने किया।
"ले यार, तू भी ज़रा सी लगा। विलायती शराब है, फर्स्ट क्लास चीज़ है। मज़ा आ जाएगा।" दयोर इस हरकत पर लाली से ज़रा भी खफ़ा (नाराज़) नहीं हुआ। उसने सिर्फ़ इनकार में धीरे-धीरे गर्दन हिलाई। लाली नहीं माना। बार-बार गिलास दयोर की तरफ़ बढ़ाता रहा। जब लगातार आग्रह (इसरार) के बावजूद दयोर पीने के लिए राज़ी नहीं हुआ, तो लाली ने उलाहना देने के अंदाज़ में कहा, "यार, अगर तू नहीं पिएगा तो मैं भी नहीं पियूँगा।"
उसने शराब फेंकने के लिए हाथ मोड़ा तो दयोर झट अपनी जगह से उठा। वह मुस्कुराया और गिलास लाली के हाथ से लेकर गटागट कई घूँट चढ़ा गया। लाली इतना खुश हुआ कि उसने बेसाख़्ता (अचानक) दयोर का मुँह चूम लिया। दयोर ने हमेशा के विपरीत इस के हाथ में दबी हुई व्हिस्की की बोतल को देख कर हैरानी से आँखें फाड़ दीं, मगर वह बिल्कुल चुप रहा। दोनों साथ-साथ चलते हुए आगे बढ़ गए।

लाली ने अपने कमरे में पहुँच कर बोतल एक कोने में रख दी। वह बहुत सहमा हुआ था। खामोशी से बिस्तर पर लेट कर सो गया। सुबह दिन चढ़े उठा। रात को देर से सोने के कारण अब वह देर से ही जागता था।

☆

इस बेतकल्लुफी (घुलने-मिलने) पर न लाली को घूरा और न ही उसे मारने के लिए झपटा, बल्कि वह खिलखिलाकर मुस्कुराने लगा। उसने गिलास लाली की तरफ बढ़ाया। लाली ने भी थोड़ी सी व्हिस्की पी। थोड़ी ही देर बाद दोनों लालटेन की मद्धम रोशनी में इत्मीनान से फर्श पर बैठे शराब पी रहे थे। दयोर भी अपना गिलास उठा लाया था। दोनों व्हिस्की की चुस्की लगा रहे थे और गिलास टकरा रहे थे। वे बेतकल्लुफी से हँस रहे थे। खिड़की के बाहर अंधेरा गहरा हो गया था। रात धीरे-धीरे अपना आँचल फैला रही थी। दोनों देर तक व्हिस्की का लुत्फ उठाते रहे। उन्होंने आधी से ज़्यादा बोतल खत्म कर दी। खाना भी साथ बैठकर खाया और काफी देर से खाया। ग्यारह बजे दयोर उठकर खड़ा हो गया। उसने लाली की ओर देखा और चलने का इशारा किया। दोनों गैलरी (राहदारी) में दाखिल हुए। हर तरफ खामोशी थी। हल्की नीली रोशनी में हर चीज़ मानो सपनों में तैरती नज़र आ रही थी। उनकी आँखें नशे से बोझिल (मखमूर) थीं। दयोर ने कुछ ज़्यादा ही पी ली थी। उसने बेतकल्लुफी से लाली की कमर में हाथ डाल दिया। दोनों झूमते-झामते दरवाज़ा खोलकर कमरे में दाखिल हुए। लेकिन कमरे में दाखिल होते ही वे एकदम संभल गए।

कमरा खाली था। हयात मोहम्मद अभी तक शिकार से वापस नहीं आया था। दयोर ने तहखाने का दरवाज़ा खोला। लाली सीढ़ियों से नीचे उतरा। उसके कदम नशे के कारण थोड़े लड़खड़ा रहे थे। वह जब तहखाने में पहुँचा, तो बूढ़े रियाज़ मोहम्मद खान वट्टू की आवाज़ आई: "आ गया तू? मैं तेरा ही इंतज़ार कर रहा था।"
लाली ने कोई जवाब नहीं दिया। वह उसके करीब जाकर खड़ा हो गया। रियाज़ ने जब उसकी नशे से चढ़ी हुई आँखें देखीं, तो मुस्कुराकर बेतकल्लुफी से बोला: "अच्छा, तो यह रंग है। कितनी पी?"

लाली फिर भी नहीं बोला। रियाज़ ने उसे एक बार फिर हैरानी में डाल दिया था। उस समय वह बिल्कुल ठीक-ठाक था और दोपहर वाले भड़के हुए रियाज़ से बिल्कुल अलग था। लाली को खामोश देखकर रियाज़ ने नरम लहज़े में कहा: "मेरे पास बैठ जा। लगा देना इंजेक्शन, ऐसी भी क्या जल्दी है।"
मगर लाली खड़ा ही रहा। रियाज़ मुस्कुराया, "डर क्यों रहा है? बैठ जा। मैं तुझे काट नहीं खाऊँगा।"
उसने ज़रा संकोच किया, "तेरे पास सिगरेट तो होगी?"
लाली ने धीरे से कहा, "नहीं।"
"तेरा नाम क्या है?"

"लाली।" उसने छोटा सा जवाब दिया।
"तू मुझे आबादकार (बसा हुआ किसान) नहीं लगता।" बूढ़े रियाज़ ने उसे गौर से देखा, "देखने में तो तू जंगली लगता है। तू जंगली है ना?"
"मेरी माँ भी यही कहती थी।"
"तू रहने वाला कहाँ का है?"
"गोकेरा के पास हमारा अपना गाँव (पिंड) है जी। पर मैं ज़्यादातर लाहौर में रहा।"
"तब तो तू इसी ज़िले का हुआ।" रियाज़ ने मुस्कुराकर लाली को देखा, "मगर तू लाहौर में रहकर भी सांड (डैलड़) जैसा लगता है। शराब पीकर तो तू अपनी इन आँखों से और भी ज़्यादा खौफनाक लगता है।" उसने आँख मारकर धीरे से पूछा, "यह बता, तू किस चक्कर में यहाँ आ गया?"
लाली ने उसकी बात टाल दी। वह खामोशी से अलमारी के पास गया और दवा से भरी हुई सिरिंज लेकर वापस रियाज़ के पास आ गया। वह जब इंजेक्शन लगाने के लिए उसके करीब बैठा, तो रियाज़ बोला, "ठीक से बैठ जा। आराम से लगा देना इंजेक्शन। मुझे ऐसी कोई जल्दी नहीं है।"
"पर मुझे तो जल्दी है," लाली ने थोड़ी बेरुखी से कहा, "नींद आ रही है, जाकर सो जाऊँगा।"
"नींद आ रही है, तो यहीं सो जा। एक दिन तो तुझे यहाँ सोना ही होगा।" लाली उसकी बात सुनकर चौंक गया, "क्यों?" उसके लहज़े में हैरानी थी।
"हर नया आने वाला यही बात पूछता है। जब मैं उसे जवाब देता हूँ, तो वह यकीन नहीं करता। तू भी मेरी बात पर यकीन नहीं करेगा। ऐसी बात पूछने से क्या फायदा जिस पर यकीन ही न आए।" रियाज़ के लहज़े में दबा हुआ दर्द (कर्व) था। उसका चेहरा कुम्हला गया।
लाली और ज़्यादा परेशान हो गया। घबराकर बोला, "मुझे ऐसा लगता है बाबा, तू पागल-वागल नहीं है?"
रियाज़ सिर्फ़ मुस्कुराकर रह गया। मगर यह मुस्कुराहट नहीं थी, बल्कि एक ज़हरीली हँसी (ज़हर-खंद) थी। लाली ने फिर ज़ोर दिया, "बाबा, क्या तू सचमुच पागल नहीं है?"

"यह सवाल मत कर। तेरी ज़िंदगी और छोटी हो जाएगी।" रियाज़ ने बुझे हुए मन से कहा, "जिसने भी मुझसे यह सवाल किया, वह कुछ ही दिनों बाद गायब हो गया। खैर, वह नहीं आया, उसकी लाश आई। तू यह जगह-जगह से खुदी हुई ज़मीन देख रहा है?" उसने तहखाने के फर्श की ओर इशारा किया, "यहाँ उनकी लाशें दबी हैं। अब तक ऐसी तीन लाशें यहाँ दबाई जा चुकी हैं। पिछले चार महीनों से..."

"...मैं तमाशा देख रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि तू चौथी लाश बनकर यहाँ आए और रात की तन्हाई में मुझे भूत बनकर डराए।" उसकी आँखों से खौफ झलकने लगा और चेहरे पर दहशत छा गई। "हर रात जब मैं अकेला होता हूँ, तो ये भूत अपनी कटी हुई गर्दनें और ज़ख्मी सीने लेकर, खून में लथपथ यहाँ आते हैं। हँसते हैं, नाचते हैं, शोर मचाते हैं। कभी मेरी गर्दन मरोड़ते हैं, कभी मेरी टाँग पकड़कर घसीटते हैं। मैं डरकर चीखता हूँ तो हयात आ जाता है और मुझे हंटर (कोड़े) से 'सटाक-सटाक' मारता है। यह देख मेरी पीठ।" उसने अपना कुर्ता उठाकर अपनी नंगी पीठ लाली को दिखाई। रियाज़ की पीठ और कमर पर लंबी-लंबी काली धारियाँ और निशान (विल्टें) पड़े थे। लाली ने यह भी देखा कि तहखाने का कच्चा फर्श जगह-जगह से खुदा हुआ था। लाली ने गिना, फर्श तीन जगहों से उखड़ा हुआ था। इसका मतलब था कि रियाज़ सच कह रहा था। लाली एक अनजाने डर से काँप उठा। उसने सिरिंज एक तरफ रखी और रियाज़ का हाथ मज़बूती से पकड़कर बड़ी विनम्रता (आजज़ी) से पूछा: "बाबा! यह तो बता कि यह सब क्या चक्कर है?"
"तू ज़्यादा देर यहाँ ठहरेगा तो हयात आ जाएगा। अगर उसने मुझे तुझसे बातें करते देख लिया, तो वह मेरे साथ-साथ तेरी खाल भी उधेड़ देगा।"
लाली ने झट से कहा, "वह तो शिकार पर गए हैं जी! कल या परसों आएँगे।"
उसे फौरन दयोर का ख्याल आया। लाली को उससे भी खतरा था। वह मियाँ रियाज़ से कुछ कहे बिना उठा और तेज़ी से सीढ़ियाँ (ज़ीना) चढ़कर ऊपर पहुँच गया। दरवाज़ा खोलकर देखा तो उसे यह देखकर चैन आया कि कमरा अभी तक खाली था। दयोर दरवाज़े के पास फर्श पर बेसुध सो रहा था। लाली फिर से तहखाने में पहुँच गया। रियाज़ ने हैरानी से पूछा, "तू अचानक कहाँ चला गया था?"
"मैं दयोर को देखने गया था जी।"
दयोर का नाम सुनकर बूढ़े रियाज़ का चेहरा उतर गया। उसने नफरत से मुँह बनाकर कहा, "वह नमक-हराम हयात का पालतू कुत्ता है। हयात के पास दो कुत्ते हैं—एक अलसेशियन और दूसरा दयोर। हर कत्ल के लिए वह इन्हीं का इस्तेमाल करता है। हयात खुद 'पैर-सैट' (परदे के पीछे रहने वाला) है। वह हर अपराध (जुर्म) में अपना हाथ साफ रखता है, क्योंकि वह कानून को अच्छी तरह जानता है।"

"मगर अभी तो दयोर सो रहा है। उसने भी मेरे साथ ही शराब पी थी और वह कुछ ज़्यादा ही पी गया था। अब वह नशे में धुत पड़ा है," लाली ने बताया।

बूढ़े रियाज़ मोहम्मद वट्टू ने पूछा, "तुझे पक्का पता है कि हयात आज रात शिकार से वापस नहीं आएगा?" "मुझसे तो जी कल रात उन्होंने यही कहा था कि अगर शाम तक वापस न आए, तो दो-तीन दिन बाद आएँगे।" मियाँ रियाज़ मोहम्मद खान ने जब लाली की बात सुनी, तो वह गहरी सोच में डूब गया। लाली ज़्यादा देर तक खामोश नहीं रह सका। वह इस मामले की तह तक पहुँचने के लिए बेताब था। उसने बूढ़े रियाज़ को कुरेदा, "मियाँ साहब! क्या वह आपके सगे भाई हैं?"
"हाँ।" रियाज़ ने संक्षिप्त जवाब दिया। वह अभी भी कुछ सोचता हुआ लग रहा था। लाली ने उसकी खामोशी से तंग आकर सवाल किया, "मगर उन्होंने आपको यहाँ तहखाने में क्यों बंद कर दिया है? कोई तो बात होगी।"
"तू भी सुन ले। कोई बहुत लंबी कहानी (दास्तान) नहीं है, मगर बेहतर होता कि तू न सुनता।" उसने चौकन्नी नज़रों से सीढ़ियों की ओर देखा और डरते हुए पूछा, "तुझे पूरा यकीन है कि हयात आज शाम वापस नहीं आया और दयोर नशे में धुत सो रहा है?"
"मैं क्या कोई झूठ बोल रहा हूँ जी? अभी आपके सामने ही तो देखकर आया हूँ।" लाली खिसककर रियाज़ के और करीब आ गया और अपनी बेचैनी ज़ाहिर करते हुए बोला, "मुझे कुछ तो बताइए जी। समझ नहीं आता कि यह सारा चक्कर क्या है? सोचते-सोचते थक गया हूँ। मेरा तो दिमाग (भेजा) भी काम नहीं करता।"
"बात सिर्फ़ इतनी है। हयात जब बहुत छोटा था, मुश्किल से दो साल का रहा होगा, तब माँ मर गई। एक साल बाद पिता (पियो) भी नहीं रहे। मेरी पहली पत्नी से कोई संतान नहीं थी। मैंने हयात को ही अपनी औलाद समझा और औलाद की तरह ही उसे पाला-पोसा। वह मेरा इकलौता भाई है। वह मुझसे लगभग 20 साल छोटा है। मेरी कोई बहन भी नहीं है। मेरी पूरी जायदाद का वारिस हयात ही था। वह भी यही समझता था कि सारी जायदाद का मालिक वही बनेगा।"
लाली ने उसकी बातों में दिलचस्पी दिखाते हुए कहा, "वैसे भी जी, आधी जायदाद तो उसकी बनती ही है।"
"नहीं, ऐसी कोई बात (गल-बात) नहीं है।" मियाँ रियाज़ ने फौरन सफाई दी, "यह जायदाद मुझे अपने पिता से विरासत में नहीं मिली है। वे तो बहुत मामूली ज़मींदार थे। उनके पास 25 एकड़ से भी कम ज़मीन थी। उन्हें ज़मींदारी से कोई खास दिलचस्पी भी नहीं थी। वे चाहते थे कि मैं पुलिस में भर्ती हो जाऊँ या पटवारी बन जाऊँ। इसीलिए उन्होंने मुझे 'मिडिल' तक पढ़ाई करवाई थी।" उसने अपने अतीत को याद

करते हुए एक ठंडी साँस ली, "मगर उन्होंने जो चाहा वह नहीं हुआ। होता तो वही है जो अल्लाह चाहता है।" मियाँ रियाज़ मोहम्मद ने थोड़े विराम के बाद बताया, "यह इतनी बड़ी जागीर मैंने अपनी योग्यता (काबिलियत) और मेहनत से हासिल की है।" लाली खामोश बैठा रहा। मियाँ रियाज़ मोहम्मद आगे बताते रहे, "फिर ऐसा हुआ कि मैंने दूसरी शादी कर ली। तब तक मैं इस जायदाद का मालिक नहीं था, बल्कि 'मैनेजर' लगा हुआ था।”

"दूसरी पत्नी से मेरा बेटा नियाज़ पैदा हुआ। हयात तब जवान था। उन दिनों वह लाहौर में पढ़ता था। जब यह जागीर मेरी हो गई तो वह भी इधर ही आ गया।" "ज़मींदारी की देखभाल में मेरा हाथ बँटाने लगा।" "सच पूछो तो सारी ही ज़िम्मेदारियाँ मैंने उसे सौंप दी थीं।" "अब नियाज़ भी कुछ बड़ा हो गया था और स्कूल में पढ़ता था।" उसका लहज़ा कुछ कड़वा हो गया। "पर हयात उससे खुश न था, चिढ़ता था।" "परेशान रहता। मैंने जल्द ही उसकी परेशानी का कारण जान लिया।"
"वह परेशानी क्या थी जी?" लाली बीच में बोल पड़ा।
"सीधी-सादी बात है," रियाज़ ने लाली को बताया। "नियाज़ के होते हुए हयात मेरी जायदाद का वारिस कैसे बन सकता था।" "मैंने हयात की परेशानी का इलाज यह निकाला कि उसे अपने दोस्त कर्नल जॉनसन के पास पढ़ने के लिए लंदन भेज दिया।" "यह जागीर और तमाम फार्म पहले कर्नल जॉनसन ही की मिल्कियत होते थे।"
"पर जी यह बात समझ नहीं आई कि कर्नल ने इतनी बड़ी जागीर कैसे दे दी?" लाली एक बार फिर बीच में बोल पड़ा। "देखो न जी, कोई अपनी जायदाद किसी को कैसे दे सकता है? कोई ऊँचा ही चक्कर चलाया होगा।"

"बकवास न कर," मियाँ रियाज़ मोहम्मद ने लाली को गुस्से से डाँटा। "बीच में बोलेगा तो मैं कुछ नहीं बताऊँगा।" वह रूठने के अंदाज़ में मुँह मोड़कर बैठ गया।
मगर लाली ने उसे खामोश न रहने दिया। रियाज़ का घुटना छूकर गिड़गिड़ाने लगा, "गलती हो गई जी। अब नहीं बोलूँगा।"
लाली ने मिन्नतें करके मियाँ रियाज़ को मना लिया। वह बताने लगा, "मैं चाहता था हयात बहुत तालीम हासिल करे। उसे बचपन में डॉक्टर बनने का शौक था। वह डॉक्टरी पढ़ने लंदन चला गया। पर डॉक्टरी पढ़ते-पढ़ते अचानक उसने अपना इरादा बदल दिया। मुझे लिखा कि बैरिस्ट्री पढ़ूँगा। मैंने उसे खुशी से इजाज़त दे दी।"

"बैरिस्ट्री को मैंने यूँ भी पसंद किया कि मैं चाहता था वह बैरिस्टर बनकर सियासत (राजनीति) में हिस्सा ले। असेंबली का मेंबर बने, वज़ीर बने, गवर्नर लगे। सारे ही राजनीतिज्ञ आमतौर पर वकील या बैरिस्टर ही होते हैं।" उसने थोड़ा संकोच किया और मुड़कर लाली की ओर देखा।
"फिर यह बात भी तो है," लाली ने मुस्कुराकर टिप्पणी की।
"बैरिस्ट्री के साथ-साथ वह सियासत में लग जाते तो जागीर और जायदाद की तरफ उनका ध्यान ही न जाता। न विरासत की सोचते और न नियाज़ से चिढ़ते।"
लाली ने प्रशंसा पाने वाली नज़रों से रियाज़ को देखा। "मैंने गलत तो नहीं सोचा जी?"
"तेरा ख्याल ठीक है। मैंने भी यही सोचा था।" मियाँ रियाज़ ने इस बार लाली की दखलअंदाज़ी पर खफगी के बजाय सहमति जताई। "वैसे यह भी है कि अपनी बिरादरी के कई ज़मींदार सियासत में हैं। पिछले प्रांतीय इलेक्शन में जो 1951 में हुए थे, इधर से मियाँ खुदा यार खान वट्टू जीता था। उनके ससुर खान बहादुर मियाँ नूर अहमद खान मानिका का नाम तो तूने भी सुना होगा। अपनी ही कौम का आदमी है।"
"नहीं जी, मैं उसे नहीं जानता।" लाली ने गर्दन हिलाकर अपनी अनभिज्ञता ज़ाहिर की।
"हद हो गई। तू उसे नहीं जानता। उसे तो सब ही जानते हैं।" रियाज़ ने हैरानी से कहा, "खान बहादुर नूर अहमद मानिका, पाकपट्टन का बहुत बड़ा ज़मींदार है। वह तो पाकिस्तान बनने से भी पहले पंजाब असेंबली का मेंबर रह चुका है।"
"वह तो जी मानिका हुआ और तुम ठहरे वट्टू। फिर वह तुम्हारी कौम का कैसे हुआ?"
"मानिका भी वट्टू ही होते हैं," रियाज़ ने लाली को बताया। "सारे ही वट्टू असल में सूरजवंशी राजपूत हैं। पहले हिंदू होते थे। कहते हैं बाबा फरीद गंजशकर ने उन्हें मुसलमान बनाया था। और अब तो बाबा फरीद के खानदान से वट्टूओं की रिश्तेदारी भी हो गई है। खान बहादुर मियाँ नूर अहमद मानिका की एक बेटी, बाबा फरीद के गद्दीनशीन दीवान गुलाम कुतुब-उद-दीन चिश्ती से ब्याही है।" उसने ज़रा संकोच किया। "मानिका, कालुका, तीजेका, ठाकरका, लालिका—वट्टूओं की गोत्र (गौतें) हैं। और भी न जाने कितनी हैं। हमारी गोत्र कालुका है।"

"मेरे साथ जेल में एक कैदी होता था। वह अपने को राजपूत बताता था।" लाली ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। "पर वह सियाल था। मियाँ नहीं चौधरी कहलाता था।"

"चौधरी और मलिक तो कोई भी हो सकता है।" मियाँ रियाज़ मोहम्मद ने स्पष्ट किया। "चौधरी और मलिक की कोई जात, कोई बिरादरी नहीं होती। चौधरी और मलिक तो एक तरह का खिताब (उपाधि) होता है। लेकिन 'मियाँ' सिर्फ राजपूतों का खिताब होता है।"

"वैसे तो अब अराइन और शेख भी खुद को मियाँ कहलवाते हैं। मगर असल में यह ऊँची ज़ात के राजपूतों का खिताब होता है।" "खास तौर पर पहाड़ी इलाके के राजपूत जो यहाँ होते हैं, इस मामले में बहुत सख्त होते हैं।" "वे खेती-बाड़ी नहीं कर सकते। अपनी बेटी किसी निचली ज़ात के राजपूत को नहीं ब्याह सकते।" "न वे अपनी बेटी के लिए रुपया-पैसा लेते हैं। उनकी स्त्रियाँ सख्त पर्दा करती हैं।" "अगर कोई मियाँ राजपूत उल्लंघन करता है तो वह मियाँ नहीं रहता, निचले दर्जे का राजपूत बन जाता है।" "उसको 'बल-बाह' या 'हाली' कहा जाता है। राजपूत तो क्षत्रिय होते हैं न।" "उनकी शान तो तलवार होती है। वे फौजी बनना पसंद करते हैं।"

"मियाँ सबसे ऊँची ज़ात के राजपूत होते हैं। उनके बाद राणा होते हैं, फिर ठाकर होते हैं।" "और सबसे निचले दर्जे के राव होते हैं। वे रान्धड़ कहलाते हैं।" "सियाल, चौहान, जोइया, मेहर, टिवाणा और राठौड़ भी राजपूत होते हैं।" "जंजुआ भी राठौड़ों ही की एक गोत्र है।"

मियाँ रियाज़ मोहम्मद को अरसे से किसी के साथ बातचीत करने का मौका न मिला था। लाली ने उसे कुरेदा तो बात से बात निकलती रही। मियाँ रियाज़ रुक-रुक कर बोलता रहा, अपनी और अपनी ज़ात-बिरादरी की बड़ाई जताने की कोशिश करता रहा। मगर लाली उसकी बातों से जल्द ही ऊब गया। उसे न राजपूतों से दिलचस्पी थी, न वट्टूओं से और न ही उनकी विभिन्न गोत्रों से। उसे सिर्फ मियाँ हयात मोहम्मद से मतलब था, जिसने उसे अपने बंगले में इस तरह कैद कर दिया था कि न वह बाहर निकल सकता था और न नियाज़ के पास पहुँच सकता था। लिहाज़ा मियाँ रियाज़ की बात नज़रअंदाज़ करके उसने एक बार फिर मियाँ हयात मोहम्मद का ज़िक्र छेड़ दिया।

"यह तो बताएँ जी, मियाँ साहब ने बैरिस्ट्री पढ़ी या उसे भी डॉक्टरी की तरह छोड़ दिया?"

"नहीं, वह 5 साल बाद बैरिस्टर बनकर लंदन से वापस आ गया।" "लंदन से अपने साथ मेम भी लाया था।" "मैंने तो जी यहाँ कोई मेम-वेम देखी नहीं।"

"वह थोड़े ही दिनों बाद इंग्लैंड चली गई। फिर वापस नहीं आई। मैंने हयात का विवाह कर दिया।"

"उससे एक बच्ची भी है। मगर पत्नी हयात के साथ नहीं रहती। वह बुरी लड़की नहीं है, पढ़ी-लिखी और समझदार है। यही कमिना और बदमाश है। शराब के नशे में धुत होकर उसे हंटर से मारता है। वह लग्गरियाल की बेटी है। इतने ऊँचे घराने की बेटी कब तक उसका ज़ुल्म बर्दाश्त करती, आखिर रूठकर अपने मायके चली गई। कभी-कभार आ जाती है।" रियाज़ ने थोड़े विराम के बाद बताया। "लंदन से वापसी के बाद हयात ने कभी बैरिस्ट्री नहीं की। मेरे बार-बार कहने पर भी उसने प्रैक्टिस शुरू नहीं की। हाँ, सियासत में ज़रूर हिस्सा लेने लगा।" "मगर न वज़ीर लगा, न गवर्नर और न कभी असेंबली की मेंबरशिप की कोशिश की।" "वह सिर्फ 'बादशाहगरी' (King-making) करता है।"

लाली ने मूर्ख की तरह मुँह फाड़कर हैरानी से पूछा, "यह बादशाहगरी क्या होती है जी?"
"वह यह होती है—किसी को असेंबली का मेंबर बनवा दिया, किसी को वज़ीर लगवा दिया।" "किसी पार्टी को ऊपर कर दिया, किसी को नीचे। कभी इस गुट के साथ, कभी उस गुट के साथ।" "कहता है असली सियासत यही है—पीछे बैठे डोरी हिलाते रहो।"
"अपना मियाँ साहब तो बहुत ऊँचा कारीगर मालूम होता है।" लाली ने हल्का ठहाका लगाया। नशे का एक बार फिर रेला आया, लाली बकने लगा, "वह फिल्म तो आपने देखी होगी जी, 'उस्ताद चक्रम', क्या ज़ोरदार फिल्म थी।" लाली ने अधखुली आँखों से रियाज़ को देखा और झूमकर अपनी बेसुरी आवाज़ में गुनगुनाने लगा, "आँखें शराबी, चेहरा गुलाबी..."
रियाज़ ने गुस्से से घूरा, "फिर तूने बकवास शुरू कर दी।"
लाली चौंक पड़ा। खिसियानी हँसी हँसकर बोला, "माफ करना जी! थोड़ी सी चढ़ गई है।" लाली ने मनाने के लिए एक बार फिर उसके घुटनों को छुआ। "अब नहीं बोलूँगा जी। रब कसम, बिल्कुल नहीं बहकूँगा।"
"मालूम नहीं मैं क्या कह रहा था।" रियाज़ कुछ देर खामोश रहकर सोचता रहा, फिर बोला, "याद आया। हाँ, तो मैं यह कह रहा था कि हयात सियासत में चोर दरवाज़े से हिस्सा लेने लगा।" "मगर वह ज़मींदारी के मामलों में ज़्यादा दिलचस्पी लेता। फिर उसने एक बहुत कमिनी हरकत की।" "इधर-उधर यह मशहूर कर दिया कि नियाज़ मेरा नहीं, कर्नल जॉनसन का बेटा है।"
लाली फिर बीच में बोल पड़ा, "यह तो बहुत शर्म की बात है जी! बहुत बदनामी हुई होगी।" लाली की दखलअंदाज़ी पर रियाज़ खफा नहीं हुआ, गहरी साँस भरकर बोला, "ठीक कह रहा है। नियाज़ की माँ ने यह बात सुनी तो उसे इतना दुख हुआ कि खुदकुशी कर ली।"

"मैंने तब ही सोचा था कि हयात को धिक्कार कर निकाल दूँ। मगर वह मेरे पैर पकड़कर रोने लगा, मैंने उसे माफ कर दिया। पर नियाज़ ने माफ नहीं किया। वह मुश्किल से 19 साल का था, लेकिन इतना नाराज़ हुआ कि उसका बस चलता तो हयात को गोली से उड़ा देता। वह बहुत सरकश (विद्रोही) और ज़िद्दी है।" "मैंने सोचा किसी दिन चाचा-भतीजे में गोली न चल जाए, नियाज़ को पढ़ने के लिए अमेरिका भेज दिया।" "उसे वहाँ गए हुए लगभग डेढ़ साल हो चुका है। अभी साल भर और अमेरिका में तालीम हासिल करेगा।"
"आपने जी अपने लिए यह ठीक नहीं किया।" रियाज़ बुझे हुए स्वर में बोला, "क्या करता। कोई और रास्ता भी नहीं था। मगर साल भर बाद मैंने उसे वापस बुलाना चाहा।" "हुआ यह कि नियाज़ के अमेरिका जाने के कुछ ही महीनों बाद मेरी पहली पत्नी भी मर गई।" "मैं बिल्कुल अकेला रह गया। मैं चाहता था

मेरा बेटा मेरे पास रहे।" "लेकिन हयात ने कोई न कोई बहाना करके उसे वापस न आने दिया।" उसने गहरी साँस भरी। "मैंने यह भी गौर किया कि ज़मींदारी के मामलों में हयात मनमानी करने लगा था। मेरी ज़रा परवाह न करता। जो जी चाहता, फैसला करता। मुझसे दूर-दूर रहता। बुलाता तो न आता, टाल-मटोल से काम लेता।"

"आपको तो जी तब ही होशियार हो जाना चाहिए था।"
"ठीक कह रहा है," बूढ़े रियाज़ ने लाली की ताईद (समर्थन) करते हुए कहा। "मुझसे यही गलती हुई।"
"क्या करता, भाई की मुहब्बत ने अंधा कर दिया था।" उसने लाली के चेहरे को गौर से देखा। "उन्हीं दिनों का ज़िक्र है। एक रात मैं देर से वापस आ रहा था। बंगले से कोई फर्लांग भर की दूरी पर अंधेरे में मुझ पर अंधाधुंध फायरिंग हुई। मैं बाल-बाल बच गया, अलबत्ता मेरा एक कारिंदा बुरी तरह ज़ख्मी हो गया।"
"बाद में पूछताछ करने पर पता चला कि मुझ पर यह कातिलाना हमला हयात के इशारे पर दयोर ने किया था।" "दयोर को तो मैंने ऐसी सज़ा दी कि वह ज़िंदगी भर याद रखेगा।" "साथ ही मैंने यह भी फैसला किया कि हयात को जागीर से अलग कर दूँ ताकि उसके दिमाग से वारिस बन जाने का खन्नास ही निकल जाए।" "मगर इससे पहले कि मैं उसे हटाता, उसने मुझे अपने रास्ते से हटा दिया। लगभग चार महीने से इस तहखाने में बंद हूँ।"

"पर यह चक्कर कब तक चलेगा?"
"मुझे नहीं मालूम। वह मुझे कत्ल भी करना नहीं चाहता।"
लाली ने पूछा, "क्यों?"
"मुझे कत्ल करने से अभी उसे क्या मिलेगा। मेरी जायदाद का वारिस हयात नहीं, मेरा बेटा नियाज़ है।"
"हयात मेरे सामने बार-बार वसीयतनामा लेकर आता है, जिससे वह चाहता है मैं नियाज़ को बेदखल (आक) कर दूँ और यह स्वीकार कर लूँ कि नियाज़ मेरा नहीं है।" "इस तरह नियाज़ को जायदाद से वंचित करके हयात को अपना वारिस बना दूँ।”

"वह तेरी तरह बेवकूफ नहीं है। दस्तावेज़ पर दस्तखत करते ही मुझे मारकर यहीं तहखाने में दबा देगा। वह एक साल पहले की तारीख वाले दस्तावेज़ पर मुझसे दस्तखत कराना चाहता है। वह बैरिस्टर है, बैरिस्टर; कानून को हर मामले में सामने रखता है।"

रियाज़ ने अपनी बात खत्म की तो तहखाने में गहरी खामोशी छा गई। कुछ पलों बाद लाली ने कहा, "तो इसका मतलब यह हुआ जी कि आप पागल-वागल बिल्कुल नहीं हैं?"
"वैसे तो उसने मुझे पागल ही बना रखा है। मगर ऐसा महसूस होता है कि मैं कुछ समय बाद सचमुच पागल हो जाऊँगा। कभी-कभी मुझ पर पागलपन का दौरा पड़ता भी है। तब मुझे किसी बात का होश नहीं रहता। जब से हयात ने ये इंजेक्शन लगाने शुरू किए हैं, उस समय से मुझे कुछ ऐसा ही महसूस होने लगा है।"
"यह बात तो मैंने भी नोट की है। मुझे भी इन इंजेक्शनों का ऐसा ही चक्कर लगता है।"
"वैसे तो मुझे इनसे नींद आ जाती है।" रियाज़ रुक-रुक कर बताने लगा, "इंजेक्शन लगने के बाद ऐसा लगता है जैसे मैं बादल की तरह बिल्कुल हल्का-फुल्का हो गया हूँ। कभी तेज़ हवाओं की आवाज़ें सुनता हूँ, कभी संगीत (धुनों) को सुनता हूँ, कभी पानी का शोर, कभी ऊपर से नीचे जाता हूँ, कभी खुद को हवा में उड़ता हुआ महसूस करता हूँ। फिर मेरी आँखें नींद से बोझिल हो जाती हैं।"
"नियाज़ को इन बातों का पता है?"
"नहीं! मेरा ख्याल है उसे कुछ नहीं मालूम। उसे मालूम होता तो फौरन यहाँ आता और मुझे कैद से निकालने की कोशिश करता। वह ज़रूर ऐसा करता। ऐसा हो ही नहीं सकता उसे ये बातें मालूम हों और वह चुप करके बैठा रहे। तुम ही सोचो यह कैसे हो सकता है? वह मेरा बेटा है, मेरा अपना खून है।"
रियाज़ भावुक हो गया।
लाली भी उसकी बातों से बहुत प्रभावित हुआ। "मुझे नियाज़ का पता बताएँ जी। मैं सारी बातें खत के ज़रिए उसे बता दूँगा।" लाली ने गर्मजोशी से रियाज़ का हाथ अपने हाथ में ले लिया और बड़े जोश से यकीन दिलाया, "चिंता न करें जी, यह काम तो मैं ज़रूर कर दूँगा।"
लाली की बात सुनकर रियाज़ परेशान हो गया। उसकी आँखों से खौफ झलकने लगा। वह इनकार में दोनों हाथ हिलाकर बोला, "नहीं नहीं, तू ऐसा नहीं कर सकता।" वह गहरी-गहरी साँसें भरने लगा। "तुझसे पहले उन तीनों ने भी ऐसी ही कोशिश की थी। अब वे इसी तहखाने में दफन हैं। मैंने मना भी किया मगर नहीं माने। अब वे मुझे रात की तन्हाई में अपने कटे हुए सिर और ज़ख्मी सीने दिखाकर डराते हैं।"

रियाज़ किसी अनजाने डर से काँपने लगा। "हयात तुझे ऐसा नहीं करने देगा। वह खूँखार चपला (चीते) की तरह बहुत चौकन्ना रहता है। तू उसे नहीं जानता।" यह कहते-कहते अचानक उसके चेहरे पर दहशत छा गई। वह उंगली से इशारा करते हुए ज़ोर से चीखा, "देख वह आ गया।"
लाली ने घबराकर पीछे देखा, मियाँ हयात सीढ़ियों (ज़ीने) के पास खड़ा है। उसके हाथ में हंटर था और लाल-लाल आँखों में शोले भड़क रहे थे। वह खूँखार नज़रों से दोनों को घूरता रहा। फिर धीरे-धीरे चलता

हुआ उनकी ओर बढ़ने लगा। उसके साथ उसका काला कुत्ता भी था। लाली ज़रा देर तो सहमा हुआ खामोश बैठा रहा, मगर जब हयात उसके करीब पहुँच गया तो उसने उठने की कोशिश की।
हयात मोहम्मद ने गरजदार लहजे में कहा, "बैठा रह।"
लाली जहाँ था वहीं बैठा रहा।
रियाज़ ने हयात से नज़रें नहीं मिलाईं। उसने डर से आँखें बंद करके गर्दन झुका ली। हयात तेज़ी से रियाज़ पर झपटा और उसे हंटर से 'सड़ाक-सड़ाक' मारने लगा। बूढ़े ने बेबसी से दोनों हाथ उठा दिए और गिड़गिड़ाकर बोला, "नहीं नहीं।"
मगर हयात बाज़ न आया; घुमा-घुमा कर हंटर चलाता रहा। रियाज़ बेसुध होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। उसका शरीर काँप रहा था। खौफ और दहशत से उसका पेशाब निकल गया और दोनों टाँगें और फर्श भी गीला हो गया। हयात ने हाथ रोक लिया।
कुछ पल खामोश रहने के बाद उसने लाली से पूछा, "इंजेक्शन लगा दिया तूने?"
लाली ने धीरे से कहा, "अभी नहीं।"
"इंजेक्शन लगा।" लाली ने खामोशी से सिरिंज उठाई और रियाज़ की कमर में इंजेक्शन लगा दिया। रियाज़ फर्श पर पड़ा धीरे-धीरे कराहता रहा और गहरी-गहरी साँसें भरता रहा। जब लाली इंजेक्शन लगा चुका तो हयात ने उसके हाथ से सिरिंज लेकर अलमारी में रख दी और लाली को संबोधित किया, "मेरे साथ आ।"
लाली उसके पीछे-पीछे चलने लगा। दोनों सीढ़ियों के पास पहुँचे तो पीछे से रियाज़ की आवाज़ आई, "सुनो।"

लाली ने पलटकर देखा। रियाज़ उठकर बैठ गया था और उसका चेहरा पीला पड़ गया था। वह चीख-चीख कर उससे कह रहा था, "अगर लाश बनकर यहाँ आए तो मुझे भूत बनकर मत डराना। अपनी कटी हुई गर्दन और खून से लथपथ सीना मत दिखाना।"
हयात ने तीखी नज़रों से लाली को देखा और अपने पीछे आने का इशारा किया। दोनों ज़ीने की सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर पहुँच गए। लाली सहमा हुआ भारी कदमों से चल रहा था। तहखाने के दरवाज़े से गुज़रकर दोनों कमरे में आ गए। दयोर मद्धम रोशनी में एक तरफ खड़ा था; उसने बढ़कर तहखाने का दरवाज़ा बंद कर दिया।
हयात मोहम्मद आगे बढ़ा और सोफे पर बैठ गया। हंटर अभी तक उसके हाथ में दबा था। लाली उसके सामने नज़रें झुकाए खामोश खड़ा था और उसकी पीठ के पीछे दरवाज़े के पास दयोर मौजूद था। हयात थोड़ी देर खामोश बैठा रहा, फिर लाली की तरफ मुड़ा और कड़वे लहजे में बोला, "क्या कहता था वह?"

लाली ने कोई जवाब नहीं दिया और गर्दन झुकाए खामोश खड़ा रहा।
हयात ने गुस्से से डाँटकर पूछा, "खामोश क्यों है? बोलता क्यों नहीं?"
लाली गिड़गिड़ाने लगा, "साहब गलती हो गई, माफ कर दीजिए।"
हयात भृकुटी ताने खूँखार नज़रों से उसे घूरता रहा और गर्दन को ज़रा सा झुकाकर बोला, "मुझे मालूम है उसने क्या कहा होगा।" उसके लहजे में तंज़ (व्यंग्य) था, "वह बहुत मजलूम (बेचारा) है।" "खुद को मजलूम साबित करने के लिए उसने तुझे भी एक दर्दनाक कहानी सुनाई होगी। मगर उसने यह नहीं बताया होगा कि खुद उसने कितना ज़ुल्म ढाया है। उसके ज़ुल्मों-सितम का जीता-जागता सबूत यह खड़ा है।" उसने दयोर की ओर इशारा किया, "इसकी ज़बान उसने सिर्फ इसलिए कटवा दी क्योंकि यह उसके शिकारी कुत्तों (ग्रे-हाउंड्स) के राशन से मांस चुराकर खा जाता था। यह दयोर तेरे सामने खड़ा है, इससे पूछ क्या मैं गलत कह रहा हूँ।"
लाली ने मुड़कर देखा, दयोर दरवाज़े के पास खड़ा धीरे-धीरे गर्दन हिलाकर इकरार (हाँ) कर रहा था।
हयात कहता रहा, "इससे यह भी पूछ कि उसने इसे खस्सी (नपुंसक) भी करा दिया है। यह अकेला नहीं है, इस बंगले में और भी ऐसे ही कई नपुंसक हैं। इन सबको उसी ने खस्सी बनाया है। पता है उसने ऐसा क्यों किया?"
लाली ने धीरे से इनकार में गर्दन हिलाई।
हयात ने बताया, "उसे अपनी दोनों पत्नियों पर भरोसा नहीं था।" वह कुछ पल खामोश रहा।

"उसने यह भी नहीं बताया होगा कि यह जायदाद और जागीर उसने कर्नल जॉनसन से किस तरह हासिल की। रियाज़ तो उसका मामूली कारिंदा (मैनेजर) था। वह ऐसा खुशामदी और वफादार था कि उसकी खातिर किसानों के खेत-खलिहान जलवा देता, उनके घर-बार तबाह कर देता और उनकी बेटियों और पत्नियों को उठवा लेता था। उन्हें बेदखल करना, उनके खिलाफ झूठे मुकदमे बनवाना, उन्हें जेल भिजवाना और कत्ल करा देना उसके लिए बहुत मामूली बात थी। इस कारगुज़ारी के बदले में वह कारिंदे से तरक्की करके 'मेजर' बन गया।"
हयात मोहम्मद ने तहखाने के दरवाज़े की ओर हाथ उठाकर कहा, "यह तहखाना पहले भी जेलखाना था। इसके अंदर न जाने कितनी लाशें दफन हैं। इस बंगले में ऐसे दो तहखाने और भी हैं। उनमें हमेशा कैदी बंद रहे और वे बहुतों का कब्रिस्तान भी हैं। अब तो सिर्फ वह अकेला कैदी रह गया है। दूसरे तहखानों को मैंने गोदाम बना दिया है।"
हयात ने थोड़े विराम के बाद ऊँची आवाज़ में पूछा, "सुन लिया तूने?"
"मियाँ साहब! आपने तो ऐसी बातें बताईं कि मेरा सिर चकरा गया।"

"वह यह कहता है कि यह जागीर और जायदाद उसने अपनी मेहनत और सलाहियत (योग्यता) से हासिल की है। जानता है उसने कैसी सलाहियत दिखाई? उसने अपनी इज़्ज़त भी दांव पर लगा दी। अपनी जवान पत्नी को कर्नल जॉनसन की रखैल बना दिया और फिर गला घोंटकर उसका कत्ल भी कर दिया। मशहूर कर दिया कि उसने खुदकुशी कर ली।"
हयात मोहम्मद खामोश होकर बेचैनी से अपना एक पैर धीरे-धीरे हिलाने लगा। कमरे में गहरी खामोशी फैल गई। कुछ पलों बाद हयात की आवाज़ आई, वह गुस्से से कह रहा था, "नियाज़ उसका बेटा नहीं है। वह झूठ बोलता है, बकवास करता है। दरबार हॉल में कर्नल जॉनसन की तस्वीर लगी है, नियाज़ को उस तस्वीर के पास खड़ा कर दे और देख ले वह जॉनसन का बेटा है या रियाज़ का। यह बात वह भी जानता है। वह अपने छोटे भाई को जायदाद का वारिस बनाना नहीं चाहता, बल्कि कर्नल जॉनसन के बेटे नियाज़ को वारिस बनाना चाहता है क्योंकि वह उसका वफादार है।"
हयात ने नफरत से मुँह बनाया, "हूँ! यह उसका भी तो वफादार नहीं। जब पाकिस्तान बना और अंग्रेज़ी राज खत्म हुआ तो उसने जागीर हथियाने के लिए उसके खिलाफ साज़िशों का जाल बिछा दिया। मेरे ज़रिए किसानों को भड़काया और बगावत पर उकसाया। किसानों से कहा कि फसल का हिस्सा देना बंद कर दो और फार्म पर काम करना छोड़ दो। दूसरी तरफ कर्नल की हिमायत (समर्थन) में उन पर फायरिंग भी कराई। ऐसे गंभीर हालात पैदा कर दिए कि जॉनसन बुरी तरह डर गया और परेशान होकर दो लाख रुपये सालाना पर अपनी तमाम ज़मींदारी उसे सौंपकर लंदन चला गया। और अब तो वह कर्नल जॉनसन को कुछ भी नहीं देता, सारी जागीर अपने नाम करा ली है।"

हयात मोहम्मद कुछ पल खामोश रहा, फिर तीखे लहजे में बोला, "वह मुझे कहता है कि मैं बेईमान हूँ, ज़ालिम हूँ। अब तू बता, बेईमान और ज़ालिम कौन है?"
लाली ने ज़बान से एक शब्द नहीं निकाला और नज़रें झुकाए चुपचाप खड़ा रहा। हयात ने ऊँची आवाज़ में पूछा, "बोल जवाब दे, खामोश क्यों है?"
लाली ने एक बार फिर गिड़गिड़ाकर कहा, "मियाँ साहब! गलती हो गई, माफ कर दीजिए।"
हयात खामोश बैठा रहा। लाली ने सफाई देने की कोशिश की, "वह ऐसा हुआ जी कि कुछ ज़्यादा ही चढ़ गई थी। बहुत दिनों बाद पी थी, बिल्कुल याद नहीं रहा। मैं तो जी उनसे कभी बात ही नहीं करता था और न ही उनकी सुनता था। फटाफट इंजेक्शन लगाकर आ जाता था। वे तो जी मुझे भी गूंगा-बहरा समझते थे। पर आज मेरी मति मारी गई।"

हयात मोहम्मद ने तीखे स्वर में कहा, "तेरी नहीं, इसकी मति मारी गई थी।" उसने दयोर की ओर गर्दन मोड़कर देखा, "मगर इसे भी पता चल गया कि मेरा हुक्म न मानने की क्या सज़ा होती है। इसका चेहरा ठीक से देख।"
लाली ने डरते-डरते नज़र उठाकर दयोर की ओर देखा। उसकी पेशानी (माथे) से कनपटी के नीचे तक एक काली लकीर फैलती चली गई थी। हयात बोला, "कुर्ता उठाकर इसकी पीठ भी देख लेना। मैंने तुझे इसकी निगरानी में इसलिए नहीं दिया था कि यह नशे में धुत होकर तहखाने के दरवाज़े पर सो जाए और तू तहखाने के अंदर आराम से बैठकर मेरे खिलाफ उस बूढ़े की बकवास सुने।"
लाली विनती करते हुए बोला, "साहब! माफ कर दीजिए, अब कभी ऐसी गलती नहीं करूँगा। आपसे बिल्कुल सच कह रहा हूँ।"
हयात ने एक शब्द नहीं बोला और चुपचाप हंटर मरोड़ता रहा।
लाली ने कुछ पल खामोश रहकर फिर विनती की, "साहब जी, इस बार माफी दे दीजिए। आगे ऐसी गलती हो तो मुझे गोली मार दीजिएगा।"
हयात ने उसे भेदती हुई नज़रों से देखा और ज़ोर से बोला, "इस तहखाने में पिछले कुछ महीनों में तीन लाशें दफन की जा चुकी हैं। यह बात शायद उसने भी तुझे बताई होगी। मैं नहीं चाहता कि चौथी लाश तेरी हो।" उसने पास बैठे अपने अलसेशियन कुत्ते की तरफ इशारा किया, "इसे जब दूसरा इंजेक्शन लगाया जाता है तो यह कुत्ता नहीं, तेंदुआ बन जाता है। इतना खूँखार कि जिस पर झपटे उसे चीर-फाड़कर हमेशा के लिए खत्म कर देता है। तूने दूसरा इंजेक्शन भी देखा है? लेकिन यह नहीं देखा कि उसके लगने के बाद यह कितना खौफनाक हो जाता है।" लाली डर से काँप उठा। कुत्ता हयात के पैरों के पास लेटा धीरे-धीरे गुर्रा रहा था।

लाली ने अलसेशियन की ओर नज़र उठाकर नहीं देखा। वह सहमा हुआ खामोश खड़ा रहा। अचानक कुत्ता ज़ोर से भौंका। रात के गहरे सन्नाटे में उसकी आवाज़ बहुत डरावनी लगी। लाली और भी ज़्यादा खौफज़दा हो गया। हयात मोहम्मद झुककर अलसेशियन की पीठ सहलाते हुए बड़बड़ाने लगा, "नहीं, अभी समय नहीं आया है।" उसने गर्दन उठाकर लाली की ओर देखा और एकटक देखता रहा। फिर भारी लहज़े में बोला, "लाली!" वह पल भर खामोश रहा, "आगे से ऐसी गलती न हो। मैं तुझे आखिरी मौका दे रहा हूँ और इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि व्हिस्की की बोतल मैंने ही तुझे दी थी। उसके नशे में तू सब कुछ भूल गया, मेरा हुक्म भी भूल गया। तुझे यह पता नहीं कि मैं कभी गाफिल (लापरवाह) नहीं रहता, हमेशा चौकन्ना रहता हूँ।"
लाली ने दोनों कान पकड़कर कहा, "मियाँ साहब! अब शराब को कभी हाथ भी नहीं लगाऊँगा।"

"मैं तुझ पर ऐसी कोई पाबंदी नहीं लगाना चाहता। सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि मैं जैसा कहूँ, तू बिल्कुल वैसा ही कर।" "जब तक यहाँ रहता है, तुझे गूंगा और बहरा बनकर रहना होगा, बल्कि आँखों से भी कम से कम काम लेना होगा। समझ गया?"
"समझ गया जी, बिल्कुल समझ गया।"
हयात ने हुक्म दिया, "जा, जाकर अब अपनी जगह सो जा।"
लाली नज़रें झुकाए दरवाज़े पर पहुँचा। दयोर ने दरवाज़ा खोल दिया और लाली को बाहर जाने का इशारा किया। लाली बाहर आ गया। मगर दयोर नहीं आया। कमरे का दरवाज़ा अंदर से बंद हो गया। लाली को दयोर के न आने पर आश्चर्य तो हुआ, मगर वह खामोशी से अपने कमरे में पहुँचकर बिस्तर पर लेट गया।

☆

रात के पिछले पहर अचानक लाली की आँख खुल गई। वह उठकर बिस्तर पर बैठ गया। कमरे के दरवाज़े के सामने दयोर अपनी चारपाई पर लेटा था। वह धीरे-धीरे कराह रहा था। लाली कुछ देर खामोश बैठा रहा। मगर जब दयोर लगातार कराहता रहा, तो वह उठकर उसके पास गया। दयोर बिस्तर पर औंधा पड़ा था। लाली उसके सिरहाने बैठ गया और धीरे-धीरे उसका सिर दबाने लगा। दयोर ने उसे रोका नहीं और न ही गर्दन मोड़कर उसकी ओर देखा। वह बेहाल पड़ा कराहता रहा।

लाली ने उसकी कमीज़ का दामन उठाया। लालटेन की मद्धम रोशनी में देखा कि दयोर की पीठ पर हंटर की मार से नीले निशान पड़ गए हैं। खाल जगह-जगह से फट गई है और ज़ख्मों से खून रिसकर जम गया है। लाली परेशान होकर बोला, "ओए दयोर! मियाँ साहब ने तो सचमुच तेरी खाल उधेड़ दी। कैसे लंबे-लंबे घाव पड़े हैं।"
दयोर खामोश लेटा रुक-रुक कर कराहता रहा। लाली कुछ देर दयोर की ज़ख्मी पीठ देखता रहा, फिर उठकर कमरे के अंदर गया। कोने में रखी व्हिस्की की बोतल उठाई और दयोर के पास आ गया। उसने डाट खोली, थोड़ी सी व्हिस्की हथेली पर ली और उसे दयोर के ज़ख्मों पर धीरे-धीरे लगाने लगा। व्हिस्की लगते ही दयोर ने तकलीफ से बिलबिलाकर 'हाय' की। लाली ने उसका सिर प्यार से थपथपाकर नरम लहज़े में कहा, "सब्र कर, थोड़ी देर में ठीक हो जाएगा।"
दयोर ने कोई विरोध नहीं किया। वह कराहता रहा और गहरी-गहरी साँसें भरता रहा। लाली चुपचाप बैठा उसकी पीठ पर व्हिस्की लगाता रहा। वह अपनी चोट और ज़ख्मों का इलाज भी इसी तरह करता था। यह नुस्खा उसने अनवर डकरा से सीखा था। उन दिनों अनवर उसके गिरोह का सरगना था। वह लंबा-चौड़ा बलवान युवक था और लगता भी डकरा (बाज़) जैसा था। लाली दयोर की पीठ के ज़ख्मों पर हौले-

हौले व्हिस्की मलता रहा। दयोर कुछ देर तो बेकरार होकर इधर-उधर गर्दन हिलाता रहा, फिर धीरे-धीरे ज़ख्मों की टीस कम होती गई। सुकून मिला तो उसने कराहना बंद कर दिया और कुछ देर बाद सो गया। लाली उसके पास खामोश बैठा रहा। दयोर मुँह औंधा किए पेट के बल बेसुध पड़ा था। उसका रिवॉल्वर तकिए के नीचे रखा था। लाली ने उसे देखा और कुछ क्षणों तक देखता रहा, फिर हाथ की सफाई दिखाई। चमड़े के होलस्टर से बड़ी ही सावधानी से रिवॉल्वर निकाल लिया और उसे घुमा-फिराकर देखा। दयोर को बिल्कुल खबर नहीं हुई। लाली धीरे से चारपाई से नीचे उतरा और कुछ पलों तक दयोर के सिरहाने चुपचाप खड़ा रहा। हर तरफ गहरा सन्नाटा छाया था। लाली ने वहीं खड़े-खड़े फरार होने की योजना बनाई। दयोर गहरी नींद में था और उसका रिवॉल्वर लाली के हाथ में था। वह दबे कदमों से चलता हुआ गैलरी (गुलाम गर्दिश) के दरवाज़े पर पहुँचा और हौले से दरवाज़ा खोला। सामने नीली रोशनी में अलसेशियन बैठा था। लाली को देखते ही उसने मुँह फाड़कर गुर्राया। लाली ने तुरंत दरवाज़ा बंद कर दिया और उलटे कदमों वापस हुआ। दयोर के पास पहुँचकर उसने जिस चतुराई से रिवॉल्वर निकाला था, उसी तरह वापस होलस्टर में रख दिया। वह अपने कमरे में गया और बिस्तर पर लेटकर सो गया।

दूसरे दिन दिन चढ़े दर्जी कुर्ता और शलवार सिलकर ले आया। लाली ने स्नान किया, नया लिबास पहना और दोपहर को दयोर के साथ तहखाने के दरवाज़े पर पहुँचा। वह अंदर गया, अलमारी से सिरिंज निकाली, दवा भरी और रियाज़ के करीब पहुँच गया। लाली ने उससे कोई बात नहीं की। वह बात करता भी तो लाली नहीं बोलता, क्योंकि उसने यही सोच रखा था। रियाज़ भी खामोश रहा। मगर जब लाली ने झुककर उसकी कमर में इंजेक्शन लगाया, तो रियाज़ ने फुसफुसाकर कहा, "भाग सकता है तो भाग जा, आज रात तुझे कत्ल कर दिया जाएगा।"
लाली का हाथ रुक गया। उसने डरी हुई नज़रों से रियाज़ को देखा, मगर ज़बान से कुछ नहीं कहा। रियाज़ ने गर्दन उठाकर सीढ़ियों की ओर देखा और लाली के चेहरे के करीब मुँह लाकर बोला, "कल रात हयात और दयोर यहाँ आए थे। उन्होंने तेरी लाश दफनाने के लिए कब्र का निशान डाल दिया है। वह देख!"
उसने उंगली उठाकर एक ओर इशारा किया। लाली ने देखा कि आतिशदान से ज़रा हटकर दीवार के पास की ज़मीन ताज़ा-ताज़ा उखड़ी हुई है। लाली परेशान हो गया। वह खामोश रहा। रियाज़ मद्धम स्वर में ऐसे बोलने लगा जैसे बड़बड़ा रहा हो, "ठीक बारह बजे रात को बंगले की सारी बत्तियाँ बुझ जाएँगी और हर तरफ अंधेरा छा जाएगा। रात के सन्नाटे में हयात के अलसेशियन के भौंकने की डरावनी आवाज़ आएगी। जब बत्तियाँ फिर जलेंगी, तो यहाँ एक लाश आएगी।"

रियाज़ रुक-रुक कर बोल रहा था, "हर बार ऐसा ही होता है—एक लाश, दूसरी लाश, और अब तेरी लाश, चौथी लाश आएगी।" उसने नज़र भरकर लाली का चेहरा देखा, "अभी तू मेरे सामने ज़िंदा बैठा है, पर जब रात बीत जाएगी तो खून में लथपथ लाश बन जाएगा। दयोर लाश उठाए कूबड़ की तरह झुककर सीढ़ियों से नीचे उतरेगा और उसके पीछे हयात होगा। दयोर लाश एक तरफ फेंक देगा, फिर न तू रहेगा, न लाश।"

यह कहते-कहते बूढ़े के चेहरे पर वहशत (पागलपन) छा गई, उसकी आँखें चमकने लगीं और वह ठहाका मारकर ज़ोर से हँसा।

लाली का पूरा शरीर काँप उठा। उसने काँपते हाथों से इंजेक्शन निकाला और बूढ़े की ओर देखे बिना जल्दी से उठा। मगर जब वह सिरिंज अलमारी में रख रहा था, तो उसने सीढ़ियों पर आहट सुनी। उसने घबराकर देखा कि हयात मोहम्मद सीढ़ियाँ उतरकर नीचे पहुँच चुका है। उसने तीखी नज़रों से लाली को देखा और पूछा, "इंजेक्शन लगा दिया?"

"जी साहब!"

"क्या तू आज समय से पहले यहाँ नहीं आ गया?"

"मुझे नहीं मालूम जी। मुझे तो दयोर जब इशारा करता है, मैं उसके साथ आ जाता हूँ।"

हयात मोहम्मद ने और कोई बात नहीं की। उसने बूढ़े रियाज़ की ओर देखा जो ज़मीन पर सिकुड़ा हुआ आँखें बंद किए पड़ा था। हयात ने लाली को पीछे आने का इशारा किया और सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। लाली उसके पीछे-पीछे चला। वे तहखाने से बाहर आए, जहाँ दयोर मुस्तैद खड़ा था। हयात मोहम्मद ने उससे भी बात नहीं की।

दयोर ने तहखाने का दरवाज़ा बंद किया, ताला लगाया और लाली को बाहर चलने का इशारा किया। हयात मोहम्मद वट्टू सोफे पर खामोश बैठा रहा और कुत्ता उसके करीब बैठा लाली और दयोर को देख रहा था। दोनों बाहर चले गए। कमरे में पहुँचकर लाली बेहाल होकर बिस्तर पर गिर पड़ा। थोड़ी देर बाद माई जन्ते खाना लेकर आई, मगर लाली ने ठीक से नहीं खाया। वह इतना परेशान था कि खाना गले से नीचे नहीं उतर रहा था। वह फिर लेट गया, पर नींद नहीं आई। वह करवटें बदलता रहा और सिगरेट पीता रहा।

कमरे का दरवाज़ा खुला था। उसने जितनी बार बाहर देखा, दयोर को स्टूल पर बैठा पाया। वह उस समय सफ़ेद ढीला कुर्ता और उजली लाल किनारे वाली धोती पहने था। कंधे पर परना (तौलिया) था जिससे वह बार-बार मुँह पोंछता था। पैरों में नई गामे-शाही जूती थी, बालों में तेल था और माँग निकाली हुई थी। वह खूब सज-धज कर बैठा था। लाली उसे देखता तो उसे डर लगता और उसकी बेचैनी बढ़ जाती।

दिन बीत गया, शाम हुई और कमरे में धुंधलका फैलने लगा। दयोर ने लालटेन जलाई और लाली के कमरे में आया, पर उसने लाली से नज़रें नहीं मिलाईं। वह चुपचाप लालटेन रखकर चला गया। लाली चारपाई पर गुमसुम बैठा रहा। रात गहराती गई। माई जन्ते खाना लेकर आई और चुपचाप रखकर चली गई। लाली ने खाना नहीं खाया और दयोर भी खामोश बैठा रहा। रात का एक पहर गुज़र गया और सन्नाटा और भी गहरा हो गया।
कुछ देर बाद दयोर उठा और धीरे-धीरे कमरे में दाखिल हुआ। वह लाली के सामने खड़ा हो गया। दोनों ने एक-दूसरे को देखा और पल भर तक आँखों में आँखें डाले रहे। फिर दयोर ने मुड़कर दरवाज़ा बंद कर दिया। लाली चारपाई से नीचे उतरा। दयोर ने व्हिस्की की बोतल उठाई, उसे खोला और गटागट कई घूँट पी गया। उसने बोतल लाली की तरफ बढ़ाई और लाली ने भी थोड़ी पी ली।

दोनों ने खड़े-खड़े बोतल खाली कर दी। दयोर देशी शराब का अध्धा भी ले आया और दोनों फर्श पर बैठकर पीने लगे। व्हिस्की और देशी शराब ने मिलकर नशा कड़वा और तेज़ बना दिया। लाली ने खाना उठाकर दयोर के सामने रखा और दोनों खाने लगे। खाना खाते-खाते दयोर अजीब तरह से हँसने लगा। लाली ने उसे देखा और वह भी हँसते हुए बोला, "हँस ले प्यारे, हँस ले। मुझे पता है तू क्यों हँस रहा है।"
दयोर ने गर्दन ऊँची कर लाली को देखा। लाली एक दम गंभीर हो गया और नवाला प्लेट में फेंककर ऊँची आवाज़ में बोला, "तू मुझे कत्ल करना चाहता है। बूढ़े रियाज़ ने मुझे बताया है। क्या यह सच है?"
दयोर ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और नज़रें झुकाकर खाना खाने लगा।
लाली कहता रहा, "तू मुझे क्यों मारना चाहता है? मुझे नहीं मालूम, पर मैं तुझे यह ज़रूर बता दूँ कि मैं चाहता तो कल रात ही तुझे मार डालता। मैंने तेरा रिवॉल्वर निकाल लिया था, पर जैसे निकाला था वैसे ही रख दिया। तुझे बिल्कुल पता नहीं चला, तू बेखबर सो रहा था।" दयोर ने हैरानी से लाली को देखा।
"देख क्या रहा है? मैं सच कह रहा हूँ।" लाली ने ठहाका लगाया और नशे की हालत में झूमकर बोला, "पर यार, मैं तुझे कैसे मारता? मुझे तुझ पर गुस्सा ही नहीं आया। जब तक गुस्सा न आए, कोई किसी को कैसे मार सकता है? कभी तूने यह सोचा? पर तू सोचता ही कब है!" लाली फिर हँसने लगा।
दयोर ने खाना छोड़ दिया, उठ खड़ा हुआ और लाली की तरफ देखे बिना कमरे से बाहर निकलकर अंधेरे में गायब हो गया।
लाली देर तक उसका इंतज़ार करता रहा, पर वह वापस नहीं आया। लाली ने दरवाज़े के बाहर झाँककर देखा, दयोर वहाँ नहीं था। लाली खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। बाहर अंधेरा था और लाली के दिमाग में कई विचार आ-जा रहे थे। नशे का असर बार-बार लहरों की तरह उठता और बिखर जाता। एक बार ज़ोर का झटका लगा और लाली ने खिड़की की सलाखें थाम लीं। उसने पूरी ताक़त लगाई, पर

सलाखें टस से मस नहीं हुईं। वह हाँफते हुए बिस्तर पर जा गिरा, पर चैन नहीं आया। वह फिर उठ बैठा। दयोर अभी तक गायब था। रात के ग्यारह बज रहे थे, यह तहखाने में जाने का समय था। लाली कमरे से बाहर आ गया। उसे लगा कि अब तक दयोर को आ जाना चाहिए था। वह कुछ देर इंतज़ार करने के बाद बंगले से फरार होने की योजना बनाने लगा। वह उस राहदारी की ओर बढ़ा जिससे वह पहले बाग में गया था। अंधेरे में वह दीवार का सहारा लेते हुए दरवाज़े तक पहुँचा, पर दरवाज़ा बंद था। उसने उसे हिलाया, तो बाहर से किसी के खाँसने की आवाज़ आई और वह डरकर वापस मुड़ गया। वह फिर बरामदे में खड़ा था और दयोर अब भी नहीं था। वह ज़्यादा देर नहीं ठहरा और सीधा गैलरी (गुलाम गर्दिश) में दाखिल हो गया। वहाँ सन्नाटा था। वह उस कमरे के पास पहुँचा जहाँ से तहखाने का रास्ता था। उसने दरवाज़ा खोला और अंदर गया। उसे हैरानी हुई कि तहखाने का दरवाज़ा खुला था। वह अंदर दाखिल हुआ और सीढ़ियों से नीचे उतरा। वहाँ बूढ़ा रियाज़ फर्श पर पड़ा था। लाली इंजेक्शन लगाने के लिए उसके करीब गया, पर वह हैरान रह गया। रियाज़ चित्त लेटा था, आँखें फटी थीं और मुँह खुला था। उसकी ज़बान बाहर थी और उसका एक गाल और कान खून से लथपथ थे। ज़ंजीर और लोहे के गोले पर भी खून था। लाली ने उसे हिलाया, पर उसकी गर्दन एक ओर लुढ़क गई। लाली बुरी तरह डर गया। उसने महसूस किया कि यहाँ खतरा है और वह घबराकर सीढ़ियों की ओर भागा। वह बाहर आया, कमरा अब भी खाली था।

लाली जल्दी से कमरे का दरवाज़ा खोलकर 'गुलाम गर्दिश' में पहुँच गया। दीवारों पर लगी लाइटों की हल्की रोशनी में हर चीज़ ऊंघती हुई नज़र आती थी। गलियारे के आखिरी सिरे पर हॉल का दरवाज़ा था। दरवाज़े के शीशों से हॉल की रोशनी झलक रही थी। हॉल बिल्कुल खाली सा था। गलियारे में कई दरवाज़े खुलते थे, जिन पर सुंदर पर्दे पड़े थे। लाली ने घड़ी देखी, बारह बजने में तीन मिनट बाकी थे। लाली बदहवास हो गया। उसे ऐसा महसूस हुआ कि दहीवर घात लगाकर कहीं पास ही छिपा बैठा है। थोड़ी देर में बत्तियाँ बुझ जाएँगी और दहीवर अंधेरे में किसी दरवाज़े से निकलकर उस पर तेंदुए की तरह झपटेगा। लाली ने डर भरी नज़रों से इधर-उधर देखा। छिपने की कहीं जगह नहीं थी। फरार होने के लिए हॉल से गुज़रना ज़रूरी था। उसने सोचा जब रोशनी चली जाएगी तो वह अंधेरे में हॉल के अंदर दाखिल हो जाएगा और बंगले से निकलकर चारदीवारी तक पहुँच जाएगा। चारदीवारी फाँदना उसके लिए कठिन न था। मगर अंधेरा होने से पहले ही उसे हॉल के दरवाज़े तक पहुँच जाना चाहिए। वह धीरे-धीरे हॉल की ओर बढ़ने लगा। करीब और करीब होता गया।

मगर जब वह हॉल के दरवाज़े से कुछ ही कदमों की दूरी पर था, तो उसने देखा कि हयात मोहम्मद वट्टू हॉल में दाखिल हो रहा है। उसके साथ कोई और भी था। लाली ने दरवाज़े के शीशों से दोनों की हल्की सी

झलक देखी। वह डर से कांप कर रह गया। जल्दी से मुड़ा। गलियारा काफी लंबा था। वह गलियारे से बाहर निकलने की कोशिश करता तो हयात मोहम्मद उसे दूर से ही देख लेता। उसने घबराकर चाहा कि कोई दरवाज़ा खोलकर अंदर चला जाए। उसने एक दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, मगर वह अंदर से बंद था। लाली लपककर दूसरे दरवाज़े पर पहुँचा। वह भी बंद था। लाली दीवार से सटकर आगे बढ़ा। उसने मुड़कर हॉल की तरफ देखा। मियाँ हयात मोहम्मद वट्टू दरवाज़े के करीब पहुँच चुका था। लाली ने घबराकर इधर-उधर देखा और जो दरवाज़ा सबसे नज़दीक पाया, उसके पर्दे के पीछे दुबक गया। उसने धीरे से दरवाज़े का हैंडल घुमाया। दरवाज़ा खुल गया। लाली झट से अंदर चला गया और दरवाज़े के पास ही खड़ा हो गया। यह एक शयनकक्ष (Bedroom) था। जिसे बड़ी नफासत से सजाया गया था। कमरे के बीच में एक बड़ा पलंग था। पलंग के पास ऊंचे स्टूल पर तेल का साफ़-सुथरा गुलदस्ता रखा था। उसमें गुलाब के सफेद और गहरे लाल फूल थे। पलंग से थोड़ा हटकर सोफा सेट तरीके से रखा था। दरवाज़ों पर झिलमिलाते रेशमी पर्दे थे। कमरा काफी बड़ा था और हल्की खुशबू से महक रहा था। कमरे में गहरा हरा बल्ब जल रहा था। लाली दरवाज़े के पास सहमा खड़ा था और रुक-रुक कर सांस ले रहा था।

बाहर गलियारे में कदमों की आहट हो रही थी और धीरे-धीरे करीब आ रही थी। 'धब-धब-धब', आहट दरवाज़े के पास आकर रुक गई। लाली का बेचैन दिल धड़कते-धड़कते पल भर के लिए ठहर गया। उसने चाहा कि लपककर पलंग के नीचे दुबक जाए। मगर तुरंत पलंग तक पहुँचने की गुंजाइश न थी। वह दरवाज़े से हटकर एक कोने में दीवार से चिपक कर खड़ा हो गया। दरवाज़ा धीरे से खुला। लाली ने डरी हुई नज़रों से देखा। मियाँ हयात मोहम्मद खान कमरे में दाखिल हुआ। उसके साथ एक औरत भी थी। उसने सफेद साड़ी पहनी हुई थी। उसके दाखिल होते ही तेज़ खुशबू का झोंका आया। हयात ने हाथ बढ़ाकर दरवाज़े की चिटखनी चढ़ा दी और यह कहते हुए औरत के करीब पहुँच गया, "नासिरा! तुम्हारे बिना यह कमरा कितना वीरान लगता है।"

हयात मोहम्मद ने उसकी कमर में हाथ डाला और उसे समेटकर अपने करीब कर लिया।

नासिरा ने कोई विरोध नहीं किया। वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

उसने बड़े नाज़ से कहा, "ऐसी बातें सोचने की तुम्हें फुर्सत मिल जाती है?"

"नहीं जान-ए-मन! ऐसी बात नहीं है। कभी-कभी तो तुम शिद्दत से याद आती हो।" मियाँ हयात मोहम्मद ने गहरी सांस भरी। "जब तुम आ जाती हो तो ऐसा महसूस होता है जैसे वीराने में चुपके से बहार आ जाए।"

"आज कुछ ज़्यादा ही मेहरबान नज़र आ रहे हो।" नासिरा ने हल्का सा ठहाका लगाया। "बात क्या है?"

"मैं तुम्हारा ही इंतज़ार कर रहा था।" हयात मोहम्मद वट्टू सोफे पर बैठ गया। उसने बड़े प्यार से नासिरा को अपने बगल में बिठाया। उसे बाँहों के घेरे में लेकर उसका सिर अपने सीने से लगा लिया और उसके बालों को उंगलियों से धीरे-धीरे सहलाने लगा। कुछ पल खामोश बैठा रहा फिर उसने कहा, "कल रात बंगले में बड़ी शानदार पार्टी है और तुम तो उस पार्टी की जान (आकर्षण) होगी। मैं तो सिर्फ मेज़बान रहूँगा।"

नासिरा ने अपना चेहरा ऊपर उठाते हुए कुछ बेज़ारी (नाराज़गी) से कहा, "मैं समझती हूँ, मेरा उसमें मौजूद होना ज़रूरी नहीं।"

"जान-ए-मन! पहले मेरी बात तो सुन लो।" हयात मोहम्मद ने उसे फिर सीने से लगाया। "यह पार्टी मैंने एक एम.सी.ए. के सम्मान में दी है। संविधान सभा (Constituent Assembly) में उसने अपना एक ग्रुप बना लिया है। तुम तो उसे जानती भी हो। मेरा मतलब है..."

नासिरा उसकी बात काटकर बोली, "मैं उसे अच्छी तरह जानती हूँ। औरतों से बातें करते हुए तुमने कभी उसके चेहरे और आँखों को देखा है? मुझे तो उसकी सूरत देखकर दहशत होती है।"

"कॉकटेल पार्टी होगी। तुम शेरी पीती रहना।" "मैंने 'सेलिब्रेशन क्रीम' और 'ड्राई फ्लाई' पिछले ही दिनों मंगवाई है। दोनों ही उच्च दर्जे की शेरी हैं।" वह होंठों में मुस्कुराया। "फिर कोई दहशत-वहशत नहीं रहेगी।" उसने धीरे-धीरे नासिरा के गाल थपथपाए। "जान-ए-मन! मुझे उसके ग्रुप के वोटों की सख्त ज़रूरत है।

"किसी को केंद्रीय मंत्री बनवाना होगा।"

"बिल्कुल ठीक समझीं तुम।" हयात ने हल्का सा ठहाका लगाया। "अब तो तुम राजनीति को पूरी तरह समझने लगी हो।"

"नहीं हयात! अपनी इस गंदी राजनीति में मुझे न घसीटो।" नासिरा ने कुछ आज़िज़ (निवेदन) होकर कहा।

"तुम जो चाहते हो अब वह मुझसे नहीं होगा। मैं तुम्हारी इस राजनीति से इतनी तंग आ चुकी हूँ कि मुझे खुद अपने वजूद से नफरत होने लगी है। कभी-कभी सोचती हूँ कि मुझमें और एक..."

हयात ने प्यार से उसके मुँह पर हाथ रख दिया। "फालतू बातें मत करो।" उसके लहजे में कड़वाहट थी। "तुम दो-तीन दिन यहाँ रहोगी और पार्टी में भी शामिल होगी।" उसने थोड़ा संकोच किया, फिर नासिरा के होंठ चूमकर बोला, "नासिरा मेरी जान! मुझे यह काम ज़रूर करना है और तुम इसमें मेरी मदद करोगी।

यूँ समझ लो, अगर वह केंद्रीय मंत्री बन गया तो सरकार में अपनी स्थिति बहुत मज़बूत हो जाएगी। जो चाहूँगा सरकार से करवा लूँगा। क्या समझीं?" उसने ठहाका लगाया और नासिरा को अपने सीने से चिपका लिया।

नासिरा उसके पहलू में इस तरह दुबक कर बैठी थी कि उसका चेहरा नज़र नहीं आ रहा था। हयात मोहम्मद उसे मनाने के लिए सिर झुकाए पूरी तरह उसकी ओर ध्यान दे रहा था। दोनों सोफे पर बैठे बातें करते रहे। लाली डरी हुई नज़रों से उन्हें देखता रहा। दोनों में से कोई भी पलट कर देखता तो हल्की हरी रोशनी में वह दीवार के साथ साये की तरह चिपका हुआ नज़र आता। मगर जब नासिरा छटपटाकर हयात की बाँहों की पकड़ से निकलने के लिए मुड़ी तो उसका चेहरा लाली की तरफ था।

ठीक उसी समय शयनकक्ष का हरा बल्ब बुझ गया। नासिरा के होंठों से एक हल्की सी चीख निकली।

फिर अंधेरे में हयात की आवाज़ उभरी, "लगता है जनरेटर में फिर गड़बड़ हो गई।"

कुछ पल खामोशी रही, फिर नासिरा की थरथराती हुई आवाज़ आई, "आधी रात को जब इस तरह ब्लैक-आउट हो जाए तो यह बंगला कितना खौफनाक लगता है। हर तरफ मौत की आहट सुनाई देती है।"

उसी समय बाहर गलियारे में तेज़-तेज़ कदमों से चलने की आहट हुई और उसके साथ-साथ घने अंधेरे में एलिशियन (कुत्ते) के ज़ोर-ज़ोर से भौंकने की आवाज़ भी उभरी। नासिरा ने डरे हुए लहजे में कहा, "ये खौफनाक आवाज़ें सुन रहे हो? यह सब क्या है हयात? मौत का यह खेल कब तक चलता रहेगा? आज कौन..."

हयात ने उसकी बात काटकर ऊँची आवाज़ में कहा, "बेमतलब की बातें मत करो। थोड़ी देर में रोशनी हो जाएगी। मैं तो कल सुबह तुम्हारे पास आने ही वाला था। मगर तुम इतनी रात गए अचानक कैसे आ गईं?"

"मैं मौत का खेल देखने नहीं आई थी। तुम्हें यह बताने आई थी कि नियाज़ कल रात कैलिफोर्निया से वापस आ गया है।"

हयात की घबराई हुई आवाज़ सुनाई दी, "नियाज़? नियाज़ वापस आ गया? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। वह कैसे वापस आ सकता है?"

"मैं तुमसे गलत नहीं कह रही हूँ।"

"कहाँ है वह? यहाँ क्यों नहीं आया?" लाली दीवार का सहारा लेता हुआ धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर खिसकने लगा। उसने सुना नासिरा कह रही थी, "नियाज़ अपने मामा के पास ठहरा है।" वह कुछ रुकी। उसने आराम से बताया, "वह तुम्हारे खिलाफ मुकदमा चलाने की तैयारी कर रहा है।"

"इसका मतलब यह हुआ कि उसे सब कुछ मालूम हो गया?"

"नहीं! वह कुछ नहीं जानता। वह सिर्फ जायदाद और ज़मींदारी पर कब्ज़ा करना चाहता है। अपने बाप की जागीर का वारिस जो हुआ।"
"तुम्हें कैसे पता चला कि वह मुकदमे की तैयारी कर रहा है?"
"आज शाम वह मेरे पास आया था।"
हयात गुस्से से चिल्लाया, "वह तुम्हारे पास क्यों आया था?"
"मेरा ख्याल है उसके साथ कोई समझौता हो सकता है। उसकी बातों से ऐसा ही लगता था।"
"नहीं! ऐसा कभी नहीं हो सकता। यह जागीर न उसकी है न उसके बाप की। और न ही वह किसी भी तरह इसका वारिस है।" हयात तेज़ लहजे में बोल रहा था, "मैं उसे जागीर पर कब्ज़ा करने की हरगिज़ इजाज़त नहीं दूँगा। वह समझता क्या है? मैं उसकी लाश भी यहीं तहखाने में लाकर दबा दूँगा।"
"हयात!" नासिरा के लहजे में विनती थी। "यह खतरनाक खेल अब खत्म हो जाना चाहिए।"
"बकवास मत करो।" हयात तिलमिला कर बोला। "मुझे ऐसा महसूस होता है, तुम्हीं ने उसे बुलाया है।"
वह पल भर के लिए रुका। "तुमने उसे सब कुछ बता दिया।"
"पागल मत बनो।" नासिरा ने शिकायत भरे अंदाज़ में कहा। "तुम्हें मेरे बारे में इस तरह नहीं सोचना चाहिए। मैं तुम्हारी पत्नी हूँ, तुम्हारी बेटी मोना की माँ हूँ। तुम्हें मुझ पर भरोसा करना चाहिए।"
"मैं किसी पर ऐतबार-वैतबार नहीं करता। मुझे मालूम है तुम यहाँ किसलिए आई हो। तुम मेरे खिलाफ इस साज़िश में बराबर की शरीक हो।"

लाली खिसकता हुआ अब दरवाज़े के करीब पहुँच चुका था। उसने सुना हयात अंधेरे में चिल्ला रहा था, "मैं यह साज़िश कामयाब नहीं होने दूँगा। मैं न उसे ज़िंदा छोड़ूँगा न तुझे।"
अंधेरे में किसी चीज़ के ज़ोर से टकराने की आवाज़ उभरी। साथ ही नासिरा की तेज़ चीख सुनाई दी, "हाय।"
कुछ पल खामोशी रही, फिर सोफे पर गुत्थमगुत्था होने की सरसराहटें उभरने लगीं। लाली ने आँखें फाड़कर उस तरफ देखा। घने अंधेरे में उसे कुछ नज़र नहीं आया। लाली दरवाज़ा खोलने के लिए उंगलियों से चिटखनी टटोलने लगा। अचानक उसे पीछे से नासिरा की घुटी-घुटी आवाज़ सुनाई दी। वह गिड़गिड़ा रही थी, "नहीं-नहीं, खुदा के लिए नहीं।"
लाली ने एक बार फिर गर्दन मोड़कर उधर नज़र डाली। उसी समय कमरे का हरा बल्ब जल उठा। लाली ने देखा नासिरा का सिर सोफे की पीठ से टिका है। हयात दोनों हाथों से उसकी गर्दन दबोचे हुए था। नासिरा के बाल बिखर कर उसके चेहरे पर आ गए थे। उसकी फटी-फटी आँखें लाली की ओर उठी थीं। उसने लाली को देखा और उसकी तरफ हाथ उठाकर घुटी हुई आवाज़ में बोली, "बचाओ... बचाओ..."

हयात ने मुड़कर लाली की ओर देखा। नासिरा की गर्दन पर उसकी पकड़ ढीली पड़ गई। वह हैरान होकर बोला, "तू अभी तक ज़िंदा है?"
लाली ने कोई जवाब नहीं दिया, खामोश खड़ा रहा।
हयात ने डाँटकर पूछा, "तू यहाँ आ कैसे गया?"
"मैं यह बताने आया था, आपका भाई मियाँ रियाज़ मोहम्मद मर गया।"
हयात बौखला गया, "नहीं, वह नहीं मर सकता। वह कैसे मर सकता है? तू झूठ बोल रहा है।" लाली ने बड़े आत्मविश्वास से कहा, "मैं बिल्कुल सच कह रहा हूँ।"
हयात बहुत बदहवास हो रहा था। "मगर वह कैसे मर गया?" वह धीरे-धीरे बड़बड़ाने लगा, "उसने वसीयतनामे के दस्तावेज़ पर दस्तखत नहीं किए। मुझे अपना वारिस नहीं बनाया। उसे अभी नहीं मरना चाहिए।" वह बेचैन होकर बोला, "उसे किसने मार डाला? उसे तूने कत्ल किया है।"
"मैं ऐसा काम नहीं करता। मैंने आज तक किसी का खून नहीं किया।"
"फिर उसे कौन कत्ल कर सकता है?" वह सोचते हुए बोला, "दहीवर? हाँ, दहीवर ही हो सकता है।" वह धीरे-धीरे अपनी गर्दन हिलाने लगा, "दहीवर ने आज अपना बदला ले ही लिया।" फिर वह गुस्से से पागलों की तरह चीखने लगा, "मगर उस कुत्ते को ऐसी हिम्मत कैसे हुई? कहाँ है दहीवर?"

"कहाँ है वह?"
"मुझे नहीं पता।"
"ऐसा नहीं हो सकता। तुझे ज़रूर पता होगा।"
"मियाँ साहब! आप कैसी बातें कर रहे हैं। मुझे तो यह पता है कि जब बारह बजे सब बत्तियाँ बुझ गई थीं, उस वक्त आपका खूनी कुत्ता मुझे चीर-फाड़ कर खत्म कर देता। मेरी लाश तहखाने में ज़मीन खोदकर दबा दी जाती।" हयात ने खूँखार नज़रों से लाली को देखा और सिर झुकाकर गहरी सोच में डूब गया।
उसकी पत्नी नासिरा सोफे पर खामोश बैठी थी। उसने अपने बिखरे हुए बाल समेटकर पीछे कर लिए थे। उसका हसीन चेहरा उजली चाँदनी की तरह सफेद पड़ गया था। बड़ी-बड़ी काली आँखों में डर था। वह अपनी लंबी गर्दन दाहिने हाथ की उंगलियों से बार-बार सहला रही थी। कमरे के माहौल पर गहरा सन्नाटा छाया था।
लाली ने सन्नाटा तोड़ा। नम्रता से बोला, "साहब! मैं जिसे इंजेक्शन लगाता था, वह तो मर ही गया। साथ ही मेरी ड्यूटी भी खत्म हो गई।" वह गिड़गिड़ाने लगा, "अब मुझे भी छुट्टी दे दीजिए। आपकी मेहरबानी होगी जी।"
"नहीं, तू अभी नहीं जा सकता। यहाँ से निकलते ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।"

लाली नशे की तरंग में था। जलकर बोला, "गिरफ्तार कर लिया जाऊँगा तो क्या होगा? जेल ही तो चला जाऊँगा। गोली तो नहीं मारी जाएगी।"
"तू यहाँ के कई राज़ जानता है। मैं नहीं चाहता कि तू पकड़ा जाए और मेरे खिलाफ कानून के हाथ मज़बूत करे।" "साहब! कौन सा कानून, कैसा कानून?" अब वह डर और दहशत के खोल से धीरे-धीरे बाहर निकल रहा था। "कानून तो मेरे जैसे छोटे आदमी के लिए है। मैं तीन बार जेल काट चुका हूँ। मैंने तो किसी बड़े आदमी को अपनी तरह जेल काटते नहीं देखा, न फाँसी पर चढ़ते देखा।" लाली खुलकर मुस्कुराने लगा, "मियाँ जी, आप बड़े आदमी हैं। आप कानून-वानून से क्यों डरते हैं?"
उसका लहजा नरम पड़ गया। उसने कसम खाकर हयात को संतुष्ट करने की कोशिश की, "रब की कसम! मैं किसी से कुछ नहीं कहूँगा। मैं तो यहाँ से सीधा रज्जे के पास जाऊँगा। उसके साथ आज ही रात बहुत दूर निकल जाऊँगा। आप मेरी बात मान लें। मैं बिल्कुल सच कह रहा हूँ।"

नासिरा, जो अब तक खामोश बैठी दोनों की बातचीत सुन रही थी, लाली के समर्थन में बोली, "इसे जाने दो हयात।"
"ताकि मेरे खिलाफ तुम्हारे हाथ चश्मदीद गवाह आ जाए।" मियाँ हयात मोहम्मद ने क्रोधित नज़रों से नासिरा को देखा। "मैं जानता हूँ, तुम इसकी सिफारिश क्यों कर रही हो।"
"तुम मेरे बारे में इतनी गलतफहमी में क्यों हो?"
"यह गलतफहमी खुद तुमने पैदा की है। नियाज़ क्यों वापस आ गया? वह क्यों तुम्हारे पास गया? मेरे पास क्यों नहीं आया?"
"मुझे क्या मालूम।" वह धीरे से बोली।
हयात मोहम्मद ने ऊँची आवाज़ में कहा, "मुझे मालूम है वह क्यों वापस आया और क्यों तुम्हारे पास पहुँचा!" वह अपनी मूँछों की नोकें उंगलियों से मरोड़ने लगा। "मेरे अलावा सिर्फ तीन बंदे हैं जो रियाज़ के बारे में सब कुछ जानते हैं। मगर वे बंगले से बाहर नहीं जा सकते। तुम और सिर्फ तुम हो जो बंगले से बाहर भी रहती हो। यह राज़ सिर्फ तुम्हारे ज़रिए नियाज़ तक पहुँचा। मुझे यकीन है तुम्हीं ने इसे नियाज़ तक पहुँचाया है।"
"उफ! मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ कि यह तुम्हारा वहम है। पूरी तरह वहम है।" नासिरा ने परेशान होकर कहा। "हरगिज़ नहीं!" हयात अपनी बात पर अड़ा रहा। "दो हफ्ते पहले फोन पर नियाज़ से मेरी बात हुई थी। उसका अमेरिका से यहाँ आने का कोई इरादा नहीं था। यह उसी दिन की बात है जिस दिन तुम मुझसे लड़-झगड़कर रोती हुई यहाँ से गई थीं। मुझे याद है, उस दिन तुमने खुदकुशी कर लेने की धमकी

भी दी थी।" उसने नासिरा की आँखों में झाँकने की कोशिश की। "उस दिन तुम गुस्से से पागल हो रही थीं। तुमने यहाँ से जाते ही गुस्से की हालत में नियाज़ को लिखा और उसे सारी बातें बता दीं।"
"तुम, तुम पागल हो गए हो।" वह जलकर बोली। "रियाज़ के जिस्म में पागल आदमी के कीटाणु इंजेक्शन के ज़रिए डालते-डालते खुद भी पागल हो गए हो।" हयात की आँखें जलता हुआ शोला बन गईं। वह साँप की तरह फुफकारने लगा। उसने ज़बान से एक शब्द नहीं निकाला। एकटक अपनी पत्नी को घूरता रहा, फिर तेज़ी से झपटा और उसका गला दबोच लिया। वह बेबसी से अपनी गर्दन इधर-उधर हिलाने लगी। लाली थोड़ी देर तक यह दहला देने वाला दृश्य देखता रहा। उसने...

लाली ने हयात की तरफ बढ़ते हुए कहा। "मियाँ साहब! यह क्या कर रहे हैं?"
हयात मोहम्मद ने उसकी ओर देखे बिना डाँटकर कहा, "बकवास मत कर।" उसने अपनी पत्नी को नीचे गिरा दिया और दोनों हाथों की पूरी ताकत से उसका गला दबाने लगा। साथ ही वह गुस्से में बड़बड़ाता रहा, "मैं सबूत भी मिटा दूँगा।" "मैं तुझे ज़िंदा नहीं छोड़ूँगा।"
लाली लपककर दोनों के करीब पहुँच गया। नासिरा सोफे पर बेबस पड़ी थी। उसके लंबे-लंबे बाल दूर तक बिखरे हुए थे। चेहरे पर दहशत छाई थी। हयात की पकड़ सख्त होती जा रही थी। नासिरा आँखें फाड़े बेबसी से लाली को देख रही थी। लाली बेचैन हो गया।
उसने हयात का कंधा पकड़कर खींचा और गिड़गिड़ाकर बोला, "साहब जी! अब छोड़ दीजिए।"
हयात ने पलटकर लाली को देखा और गुस्से में उसके मुँह पर ज़ोर से थप्पड़ मारा। "हट जा मेरे सामने से!"
उसने लाली को धक्का दिया। लाली लड़खड़ाकर गिरा। उसने उठना चाहा तो हयात ने और भी ज़्यादा ज़ोर से धक्का दिया। इस बार वह लुढ़कता हुआ मेज़ से जा टकराया। मेज़ उलट गई और लाली के सिर पर गिरी। चोट इतनी सख्त लगी कि वह चकराकर फर्श पर ढेर हो गया। नज़रें धुंधली पड़ गईं। धीरे-धीरे उसकी आँखें बंद हो गईं। वह रुक-रुक कर सांसें भरने लगा। नासिरा ने उठकर भागना चाहा, मगर हयात ने झपटकर उसकी साड़ी का पल्लू पकड़कर ज़ोर से खींचा। साड़ी खुलकर उसके हाथ में आ गई। उसने गुस्से से साड़ी एक तरफ फेंक दी। नासिरा के मुँह पर ताबड़तोड़ कई थप्पड़ मारे। पेट पर इस ज़ोर से ठोकर मारी कि वह डगमगाकर सोफे पर गिर पड़ी। हयात ने उसे संभलने का मौका न दिया। झपटकर एक बार फिर उसकी गर्दन दबोच ली। नासिरा गला फाड़कर चीखी, "नहीं... नहीं!"
लाली ने आँखें खोलकर देखा। मियाँ हयात मोहम्मद खान सोफे पर झुका हुआ था। नासिरा की दोनों टांगें बिल्कुल नग्न थीं और पतझड़ के पेड़ की शाखाओं की तरह झूल रही थीं। लाली थोड़ी देर खामोश रहने के

बाद फिर उठकर खड़ा हो गया। वह धीरे-धीरे चलता हुआ हयात की ओर बढ़ा। हयात ने आहट सुनी। पलटकर देखा और ज़ोर से चीखा, "हट जा यहाँ से कंजर!"

लाली ने उसकी आँखों में आँखें डालकर कहा, "यह नहीं होगा।"
हयात ने उसे क्रोधित नज़रों से घूरा।
लाली नरम पड़ गया और गिड़गिड़ाने लगा, "साहब! आपने इसके कपड़े उतार दिए। वह आपकी घरवाली है, आपकी इज़्ज़त है।"
हयात और भी आगबबूला हो गया। उसने झुंझलाकर लाली के मुँह पर थप्पड़ मारना चाहा, लेकिन लाली ने उसका हाथ पकड़ लिया। हयात ने झटका देकर अपना हाथ छुड़ा लिया और तेज़ी से पलंग की ओर लपका। नासिरा ने हांफते हुए कमज़ोर आवाज़ में लाली से कहा, "वह... वह पिस्तौल लेने गया है।"
लाली ने देखा कि हयात पलंग के तकिये की ओर झुक रहा है। लाली तेज़ी से उस पर झपटा और इस ज़ोर से धक्का दिया कि हयात चारों खाने चित बिस्तर पर गिर गया।
वह दाँत पीसते हुए उठा और चीखकर बोला, "कुत्ते नमक-हराम! तेरी यह हिम्मत!" उसने लाली के मुँह पर ज़ोर से थप्पड़ मारा। लाली का एक कान झुनझुने की तरह झनझनाने लगा। वह तकलीफ से तिलमिला उठा। नशे का ऐसा ज़बरदस्त झोंका आया कि वह हयात के दबदबे और रौब के घेरे से बाहर निकल आया। उसने खूँखार नज़रों से हयात को देखा और दोनों हाथ बढ़ाकर झूमता हुआ उसकी ओर बढ़ा। हयात मोहम्मद ने रौब और दबेदबे के साथ उसे डाँटा, "आगे मत बढ़!"
मगर लाली नहीं रुका। नशे के प्रभाव ने ऊँच-नीच के सभी बंधन तोड़ दिए थे। उसका उमड़ता हुआ सैलाब डर और दहशत के सारे बांध और रुकावटें अपने साथ बहा ले गया। हयात ने जल्दी से तकिये के नीचे हाथ डाला। लाली ने उछलकर उसकी कमर पर लात मारी। मियाँ हयात फिर बिस्तर पर लुढ़क गया। उसने उठने की कोशिश की। मगर लाली ने झपटकर दोनों हाथों से उसका गला दबोच लिया। हयात हाथ-पाँव मारने लगा। उसने पकड़ से निकलने के लिए लाली का मुँह नोच लिया, लेकिन लाली ने उसे नहीं छोड़ा। गिरेबान पकड़कर उठाया और धकेलते हुए दीवार तक ले गया।
हयात घुटी हुई आवाज़ में चीखा, "दहीवर!" लाली ने दीवार से सटाकर उसका सिर ज़ोर से दीवार पर दे मारा। आगे खींचा, फिर टकराया। खट-खट-खट। लाली नशे की झोंक में पागलों की तरह उसके सिर को झटके दे-देकर दीवार से टकराता रहा। लाली का चेहरा कठोर हो गया था। आँखों में शोले लपक रहे थे। मियाँ हयात मोहम्मद खान वट्टू के सिर से खून की धार निकली और माथे से टपकती हुई चेहरे पर फैल गई। उसकी आँखें बंद हो गईं।

गर्दन लटककर डगमगाने लगी। नासिरा उठकर खड़ी हो गई। उसने अपनी साड़ी उठाई और उसे बांधा। जल्दी-जल्दी अपना अस्त-व्यस्त पहनावा ठीक किया। हयात मोहम्मद की ओर बढ़ी। वह फर्श पर बेसुध पड़ा था। नासिरा ने झुककर देखा। हयात का चेहरा खून से तर-बतर था। आँखें बंद थीं। वह रुक-रुक कर सांस ले रहा था। नासिरा ने परेशान होकर लाली की ओर देखा। कांपती हुई आवाज़ में कहा, "यह क्या कर दिया?"

लाली ने बेपरवाही से कहा, "घबराओ नहीं। वह मरा नहीं है।"

दोनों खामोश खड़े रहे। मगर लाली अब वहाँ और ज़्यादा ठहरना नहीं चाहता था। वह उस दरवाज़े की ओर बढ़ा जो गलियारे में खुलता था।

"कहाँ जा रहे हो?" नासिरा ने पूछा।

"बाहर।" लाली ने दरवाज़े के पास पहुँचकर कहा, "मुझे अब यहाँ से निकल जाना चाहिए।"

"ठहर जाओ।"

"तुम ठहर जाओ।" लाली दरवाज़े के करीब पहुँच गया। "यहाँ रुककर तुम अपने 'खसम' (पति) की मरहम-पट्टी करो ताकि वह तुम्हें इत्मीनान से कत्ल कर सके। मैं नहीं ठहर सकता।"

"हिमाकत मत करो। बाहर हयात के बहुत से कुत्ते घूम रहे हैं। वे तुम्हें बंगले से बाहर निकलने नहीं देंगे।" वह कड़वाहट से बोली। "तुम्हारा मतलब शिकारी कुत्तों से है?"

लाली रुक गया। और मुड़कर नासिरा की ओर देखने लगा।

"नहीं, मैं उसके खूँखार परिंदों (आदमियों) की बात कर रही हूँ। उन्हें पता चल गया तो वे तुझे ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे।" उसने थोड़ा ठहराव लिया, "मैं भी यहाँ नहीं ठहरूँगी।" नासिरा ने अपने बिखरे हुए बाल एक बार फिर सँवारे, साड़ी की सिलवटें ठीक कीं। दरवाज़े की ओर बढ़ी। करीब पहुँचकर धीरे से दरवाज़े की चिटखनी खोली। गर्दन बढ़ाकर बाहर देखा। आराम से बोली, "बाहर कोई नहीं है।"

लाली ने पलटकर मियाँ हयात मोहम्मद को देखा। वह टांगें फैलाए मुर्दे की तरह दीवार के पास बेहाल पड़ा था। लाली दरवाज़े की ओर बढ़ा। पहले नासिरा बाहर निकली, उसके पीछे-पीछे लाली बाहर आया।

नासिरा हॉल के दरवाज़े की ओर नहीं गई। वह उस कमरे की ओर बढ़ी जिसमें तहखाना था। लाली ने नासिरा को उधर जाते देखा तो फुसफुसाया। "उस कमरे में मत जाओ"।

नासिरा ने धीरे से बताया, "इस कमरे का एक दरवाज़ा बगीचे में खुलता है"। "यह सबसे सुरक्षित रास्ता है"।
वह आगे बढ़ी और कमरे के दरवाज़े पर पहुँची। उसने दरवाज़ा खोलना चाहा, मगर दरवाज़ा अंदर से बंद था। जब नासिरा ने इसे खोलने के लिए धीरे-धीरे हिलाया, तो अंदर से एलिशियन (कुत्ते) के गुर्राने और ज़ोर-ज़ोर से भौंकने की आवाज़ आई। वह दरवाज़े के पास ही खड़ा था। उसकी खौफनाक आवाज़ सुनकर दोनों सहम गए और जहाँ थे वहीं दम साधे खड़े रहे।
गुलाम गर्दिश (गलियारे) में रहस्यमयी सन्नाटा था। दोनों खामोश खड़े रहे, फिर नासिरा मुड़ी। वह उस दरवाज़े की ओर बढ़ रही थी जो हॉल में खुलता था। लाली उसके पीछे-पीछे चला। नासिरा लंबे कद की खूबसूरत औरत थी। वह सफेद साड़ी पहने राजहंस की तरह गर्दन ऊँची किए चल रही थी। उसकी चाल में गरिमा और दबदबा था। लाली ने आगे बढ़कर दरवाज़ा खोला। दोनों दरवाज़े से गुज़रकर हॉल में आ गए।
हॉल में मद्धम रोशनी थी। सिर्फ एक बल्ब जल रहा था। वहाँ कोई नहीं था। मगर जब हॉल पार करके बाहर निकले, तो उन्होंने देखा कि दरवाज़े पर एक सशस्त्र (हथियारबंद) पहरेदार खड़ा है। नासिरा को देखकर वह अदब से झुक गया। नासिरा ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह गर्दन उठाए धीरे-धीरे फाटक की ओर बढ़ने लगी। लाली उसके पीछे-पीछे चलता रहा। फाटक के पास पेड़ों के नीचे एक काली 'सिडान' (कार) खड़ी थी। नासिरा ने धीरे से आवाज़ दी, "चौकीदार!"।
उसकी आवाज़ सुनते ही फाटक पर खड़ा चौकीदार अपनी बंदूक संभालते हुए दौड़ता हुआ करीब आया। नासिरा ने पूछा, "मेरा ड्राइवर कहाँ है?"।
"वह तो जी सो गया। वह तो शायद ही गाड़ी चला सके"। नासिरा ने तीखे लहजे में पूछा, "क्यों? क्या हो गया उसे?"।
उसने हिचकिचाते हुए कहा, "ड्राइवर ने तो जी नशा-वशा कर रखा है"।
"नीच सूअर!" नासिरा ने नफरत से मुँह बनाया। उसने चौकीदार को संबोधित किया, "तुम जाकर जल्दी से उसकी जेब से गाड़ी की चाबी निकाल कर लाओ। मैं खुद ड्राइव करूँगी"।

चौकीदार तेज़ कदमों से चलता हुआ अंधेरे में गायब हो गया। नासिरा और लाली डरी हुई नज़रों से हॉल की ओर देखने लगे। दरवाज़े पर सशस्त्र पहरेदार मुस्तैदी से खड़ा था। हॉल खाली था। अचानक बाग की ओर से कुत्तों के भौंकने की आवाज़ आई। दोनों घबरा गए। चौकीदार अभी तक वापस नहीं आया था। दोनों बेचैन होकर बार-बार उस दिशा में देखते थे जिधर चौकीदार गया था। कुत्तों की आवाज़ के साथ-साथ कदमों की आहट भी उभरी। लाली ने झुककर फुसफुसाया, "कोई आ रहा है?"।

"हाँ," नासिरा ने धीरे से कहा। "मगर वह हयात नहीं हो सकता। उसे अब तक होश नहीं आया होगा"।
उसने हॉल की ओर देखा। "हयात आएगा तो हॉल के ही दरवाज़े से आएगा"।
सूखे पत्तों पर आहट बढ़ती गई। लाली ने नासिरा की तरफ झुककर कहा, "मैं दीवार फाँदकर बाहर निकल जाऊँगा"। यह कहकर वह मुड़ा।
नासिरा ने उसे हैरानी से देखा और आराम से कहा, "ठहर जाओ"।
आहट और करीब आ गई। लाली सहमा खड़ा रहा। मगर आहट कुछ फासले पर बंद हो गई। ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई इस तरफ आते-आते अचानक ठिठक गया है और उनके करीब ही पेड़ों के नीचे अंधेरे में खड़ा है। दोनों की बेचैनी बढ़ गई। मगर न कोई आहट सुनाई दी और न कोई उनके पास आया। लेकिन चौकीदार ईंटों के पक्के फर्श पर तेज़-तेज़ चलता हुआ अंधेरे से निकलकर सामने आ गया। उसने करीब आकर कार की चाबी नासिरा को देते हुए कहा, "ड्राइवर तो जी ऐसा पड़ा है कि उसे बिल्कुल होश नहीं"। "मैंने बहुत मुश्किल से चाबी ढूँढकर उसकी जेब से निकाली"।
"गेट खोल दो"। चौकीदार ने लाली की तरफ देखा। "क्या इसे भी बाहर जाना है?"। नासिरा ने धीरे से कहा, "हाँ"। "यह कैसे हो सकता है जी! बंगले का कोई भी आदमी मियाँ साहब के हुक्म के बिना रात को बाहर नहीं जा सकता"।
चौकीदार ने लाली की तरफ इशारा किया, "यह तो जी हरगिज़ नहीं जा सकता"।
नासिरा ने कार का दरवाज़ा खोला और तेवर चढ़ाकर कहा, "नहीं, यह मेरे साथ ही जाएगा"।
चौकीदार नम्रता से बोला, "मियाँ साहब को तो आप जानती ही हैं जी। आपसे तो वह कुछ नहीं कहेंगे, मैं गरीब यूँ ही मारा जाऊँगा। मेरी तो वह चमड़ी उधेड़ डालेंगे"।

"वह मेरी तो खाल उधेड़ डालेंगे।" उसने मुड़कर हॉल के दरवाज़े की ओर देखा।
नासिरा ने अपनी परेशानी जाहिर करते हुए कहा, "मुझे जल्दी जाना है। मियाँ साहब की तबीयत खराब है। टेलीफोन में भी गड़बड़ है। मुझे खुद जाकर डॉक्टर को लाना है।"
"अगर ऐसी बात है जी, तो मैं साहब के ड्राइवर को बोलता हूँ। वह डॉक्टर को ले आएगा।"
"फालतू बहस मत करो। जो मैं कहती हूँ वह करो।" नासिरा ने चौकीदार को तीखी नज़रों से देखा और डाँटकर हुक्म दिया, "जा, जाकर गेट खोल।"

चौकीदार कुछ पल खामोश खड़ा सोचता रहा, फिर धीरे-धीरे गेट की तरफ बढ़ा। नासिरा तुरंत स्टीयरिंग व्हील संभालकर बैठ गई। उसने सिडान का पिछला दरवाज़ा खोला। कुछ सोचकर लाली को संबोधित किया, "नहीं, तुम अगली ही सीट पर मेरे बराबर बैठ जाओ।"
लाली कार के अंदर जाकर बैठ गया। नासिरा ने कार स्टार्ट की। कार की बत्तियाँ रोशन हो गईं। लाली ने उनकी तेज़ रोशनी में देखा कि बाईं हाथ पर एक पेड़ के तने के साथ कोई अंधेरे में दुबका खड़ा है। उसके पैरों का निचला हिस्सा साफ नज़र आ रहा था। वह नई गामे-शाही जूती पहने हुए था और उसकी उजली धोती का निचला किनारा गहरा लाल था। लाली को महसूस हुआ कि वह दहीवर है। कार तेज़ी से आगे बढ़ी और फाटक से गुज़रकर बाहर आ गई।
लाली चुप बैठा दहीवर के बारे में सोचता रहा। उसे गुमसुम देखकर नासिरा ने पूछा, "क्या सोच रहे हो?"
"मुझे ऐसा लगता है जी कि दहीवर हमारे पास ही पेड़ों के नीचे खड़ा था।"
"दहीवर!" नासिरा ने हैरानी से कहा। "नहीं, वह नहीं हो सकता। वह बहुत निर्दयी और खूँखार है, वह तुम्हें हरगिज़ गेट से बाहर आने नहीं देता।"
"यही मैं भी सोच रहा हूँ।" नासिरा खामोश बैठी रही। काली सिडान धूल उड़ाती सड़क पर दौड़ रही थी। लाली भी चुप बैठा था। कुछ दूर जाकर नहर आ गई। सिडान नहर के साथ-साथ आगे बढ़ी। यह रास्ता भी कच्चा था मगर चौड़ा था। ज़मीन भी कुछ नम थी। अब ज़्यादा धूल नहीं उड़ रही थी। एक तरफ नहर थी, दूसरी तरफ गेहूं और जौ की फसलें लहलहा रही थीं। चाँद चढ़कर आसमान के बीचों-बीच आ गया था। हर तरफ उजली-उजली चाँदनी बिखरी थी। लगभग चार मील का फासला तय करने के बाद सिडान बाईं ओर मुड़ी और एक अर्ध-पक्की सड़क पर आ गई।

लाली ने मुँह बाहर निकालकर पीछे देखा और दबी ज़बान में अपने डर का इज़हार किया, "अगर मियाँ साहब को होश आ गया और उन्होंने हमारा पीछा किया तो क्या होगा?"
"मौत।" नासिरा ने सामने देखते हुए कहा। "वह हम दोनों को कत्ल कर देगा। उसके लिए कत्ल करना वैसा ही है जैसे बच्चे के लिए खिलौना तोड़ना।"
नासिरा ने अपनी बात खत्म ही की थी कि कार हिचकोले खाने लगी। उसने रफ्तार कम कर दी और घबराए हुए लहजे में बोली, "पिछले पहिये में पंचर हो गया।"
उसने कार सड़क के किनारे खड़ी कर दी। दोनों कार से उतरकर बाहर आ गए। सड़क के दोनों तरफ वीरान और बंजर मैदान था। अलबत्ता कुछ दूर आगे सड़क के दाईं तरफ पेड़ों का घना झुरमुट था। रात चुपचाप खड़ी थी। हवा में शोर था। तेज़ झोंकों से नासिरा के बाल बिखर गए थे। साड़ी का आँचल बार-

बार ढलक जाता। वह अपने बाल दुरुस्त करती, साड़ी संभालती कार के पिछले हिस्से की ओर गई। उसने कार की डिक्की जल्दी से खोली।
लाली से पूछा, "तुम्हें पहिया बदलना आता है?"
"मैंने तो जी कभी यह काम नहीं किया।" लाली ने इनकार में गर्दन हिला दी।
"कोई बात नहीं। जैसा मैं कहूँ वैसा करना। यह ऐसा मुश्किल काम नहीं।" नासिरा ने स्टेपनी की तरफ इशारा करते हुए कहा, "यह पहिया बाहर निकाल और कोने में रखा हुआ जैक और टूल बॉक्स भी निकाल ले।"
लाली स्टेपनी उठाने लगा। इसी समय पीछे तेज़ रोशनी उभरी। नासिरा ने रोशनी देखी। उसकी आँखों में खौफ झलकने लगा। वह बदहवास होकर बोली, "वह आ रहा है, वह आ रहा है।" लाली ने मुड़कर रोशनी देखी। वह भी परेशान हो गया। मगर उसने जल्दी से स्टेपनी निकालने की कोशिश की। नासिरा ने उसे रोक दिया। बुझे हुए लहजे में बोली, "स्टेपनी बाहर न निकाल। अब कुछ नहीं हो सकता।"
लाली खामोश खड़ा रहा। नासिरा ने एक बार फिर रोशनी की दिशा में देखा और डिक्की के ढक्कन पर हाथ रखते हुए लाली से कहा, "भाग सकता है तो भाग जा।"
उसने डिक्की बंद कर दी। "नहीं जी, यह कैसे हो सकता है? मैं तुम्हें अकेला छोड़कर कैसे जा सकता हूँ?"

"नहीं, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगी। मुझे अकेला छोड़ दे। वरना तू भी मेरे साथ मारा जाएगा।" नासिरा ने गहरी सांस भरी। उसका लहजा भावुक हो गया।
"मगर वह मुझे कत्ल नहीं कर सकेगा। मैं उसके हाथों नहीं मरूँगी।" वह आगे के दरवाज़े की ओर बढ़ी।
लाली ने घबराकर कहा, "कहाँ जा रही हो?"
वह उसकी ओर देखे बिना बोली, "मैं खुदकुशी कर लूँगी। खुद को गोली मार लूँगी मगर उसके हाथों नहीं मरूँगी। मेरे पास भरी हुई पिस्तौल है।"
लाली बढ़कर उसके करीब पहुँच गया। नासिरा दरवाज़े के अंदर झुककर डैशबोर्ड के खाने का ढक्कन खोलने लगी।
लाली ने आगे बढ़कर कहा, "मेरी बात तो सुनो।"
नासिरा ने मुड़कर उसकी ओर देखा। घबराए हुए लहजे में बोली, "जल्दी से भाग जा। तू कुछ नहीं कर सकता।" वह ज़ोर से चीखी, "जा यहाँ से!" उसके बाल बिखरकर चेहरे पर आ गए थे। आँखें तेज़ी से चमक रही थीं।
"तुम्हारे पास भरी हुई पिस्तौल है। फिर परवाह न करो।"

"तू कुछ नहीं कर सकता। वह अकेला नहीं होगा। अपने खूँखार आदमियों के साथ होगा।"
"इससे क्या फर्क पड़ता है जी।" लाली ने बड़े आत्मविश्वास से कहा। "क्या गाड़ी आगे नहीं जा सकती?"

"जा तो सकती है मगर उससे क्या होगा?"
"गाड़ी सामने पेड़ों के नीचे ले चलो। सड़क से उतारकर कच्चे में डाल देना।"
उसने दूर तक फैले हुए बंजर मैदान पर नज़र डाली। "यहाँ तो छिपने की भी कोई जगह नहीं।"
देखते-देखते रोशनी बहुत करीब आ गई। सड़क पर किसी गाड़ी के तेज़ी से दौड़ने की आवाज़ साफ सुनाई देने लगी। नासिरा ने उसकी तरफ देखा और बदहवास होकर बोली, "लो, वह आ गया। अब कुछ नहीं हो सकता।" "फिक्र न करो। बहुत कुछ हो सकता है। लाओ पिस्तौल मुझे दो जल्दी से।"
नासिरा ने डैशबोर्ड के खाने से पिस्तौल निकालकर लाली को दिया। पिस्तौल लेकर लाली बोला, "तुम गाड़ी के पीछे बैठ जाओ।"
नासिरा बेज़ारी से बोली, "यह तू क्या कर रहा है? अब कुछ नहीं हो सकता।"
"ज़बान बंद रखो। जैसा कहता हूँ वैसा करो।" वह सिडान के पिछले हिस्से की ओर बढ़ा और घात लगाकर बैठ गया। रोशनी और करीब आ गई।

रोशनी इतनी करीब आ गई कि लाली ने यह भी देख लिया कि आने वाली सफेद रंग की कार है। उसने यह भी देखा कि कार की रफ्तार धीमी हुई और ब्रेक लगाने की आवाज़ आई। कार कुछ दूरी पर रुक गई।
लाली ने निशाना साधा और सतर्क होकर सामने देखने लगा। थोड़ी देर बाद कार का दरवाज़ा खुला। एक व्यक्ति निकलकर बाहर आया, मगर वह हयात मोहम्मद नहीं था। वह मध्यम कद-काठी का एक युवक था जो पतलून और बुश-शर्ट पहने हुए था। लाली अंधेरे में उसका चेहरा नहीं देख सका। उसके नीचे उतरते ही एक और व्यक्ति भी दरवाज़ा खोलकर बाहर आया।
दोनों सिडान की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगे। वे कुछ फासले पर रुक गए। एक ने टिप्पणी की, "यह कोई एक्सीडेंट तो नहीं लगता"।
वह क्षण भर के लिए रुका और ऊँची आवाज़ में बोला, "कोई है यहाँ?"।
लाली उसकी आवाज़ सुनकर खड़ा हो गया। उसने हाथ पीछे कर लिए। दोनों सिडान के करीब आ गए। बुश-शर्ट वाले युवक ने पूछा, "क्या हो गया जी?"।

लाली ने जवाब दिया, "पंचर हो गया है"। नासिरा भी उठकर खड़ी हो गई। वह अपने बिखरे हुए बाल ठीक कर रही थी। युवक ने उसे देखकर हैरानी से कहा, "अरे आप! आप तो मियाँ हयात मोहम्मद वट्टू की बेगम हैं ना?"। नासिरा ने धीरे से कहा, "हाँ जी"।
युवक मुस्कुराकर बोला, "मेरा नाम चौधरी वली दाद खाँ भट्टी है। इधर अपनी भी ज़मींदारी है"।
उसने थोड़ा रुककर कहा, "मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ?"।
नासिरा ने नरम लहजे में कहा, "शुक्रिया! मेरा ड्राइवर स्टेपनी लगा देगा"।
भट्टी ने कहा, "जैसी आपकी मर्ज़ी"।
आगे कोई और बात नहीं हुई। दोनों वापस चले गए। अपनी कार में जाकर बैठे और उसे स्टार्ट किया। थोड़ी ही देर में उनकी कार सड़क पर तेज़ी से दौड़ने लगी। जब कार दूर चली गई और उसकी पिछली लाल बत्तियाँ धुंधली पड़ गईं, तो नासिरा ने एक बार फिर डिक्की खोली। लाली ने स्टेपनी और टूल बॉक्स निकाला। नासिरा के निर्देशानुसार लाली ने जैक लगाकर कार का पिछला हिस्सा ऊँचा किया। व्हील-कैप उतारकर नट-बोल्ट खोले और पहिया निकालकर स्टेपनी लगा दी। नासिरा उसके पास बैठी ज़रूरी निर्देश दे रही थी और उसकी मदद भी कर रही थी। लाली ने पहिया और टूल बॉक्स डिक्की में रख दिए और उसे बंद कर दिया। दोनों फिर कार में बैठ गए।

लाली ने पिस्तौल नासिरा को वापस दे दी। नासिरा ने पिस्तौल डैशबोर्ड के खाने में बंद कर दी और कार स्टार्ट की।
वह लाली की ओर मुड़ी और पूछा, "जानते हो मैंने क्या सोचा था? अगर हयात आ जाता तो तुमसे कहती कि मुझ पर गोली चला दो"।
लाली ने कहा, "नहीं जी! मैं ऐसा काम नहीं करता। मैं किसी औरत का खून करने के बारे में तो सोच भी नहीं सकता। यह काम तो मियाँ हयात मोहम्मद ही कर सकता है। वह तो बहुत ही ज़ालिम है। उसने तो तुम्हें मार ही डाला था। ऐसा गला दबोचा था कि छोड़ता ही नहीं था"।
लाली यह कहते हुए नशे में झूमकर मुस्कुराने लगा। "बुरा न मानना, तुम सिर्फ बेगम हो, ताश की बेगम। उसकी मूँछें ही नोच लेतीं, काट खातीं या मुँह पर थूक देतीं, कुछ तो करतीं। अगर शादाँ होती और मियाँ हयात उसका गला दबाता, तो वह उसकी गर्दन छुरी से काटकर सिर अलग कर देती"।
नासिरा ने पूछा, "कौन है वह?"।
लाली बोला, "है कोई, पर वह बहुत ताकतवर है जी!
तुम्हारी घरवाली है?"।

"अपनी कोई घरवाली-वरवाली नहीं"। वह खिलखिलाकर हँसा, "भला अपने जैसों से कौन लड़की ब्याह करेगी"। "क्या यह सच है कि तुम तीन बार जेल काट चुके हो?"।
लाली इनकार न कर सका, "हाँ जी, और चौथी बार जेल में बंद करने के लिए पुलिस मेरी तलाश में है"।
नासिरा ने कहा, "समझ नहीं आता, तुम लोग अपराधी कैसे बन जाते हो?"।
लाली ने बताया, "छोटा सा था तो माँ मर गई, पिता जेल चला गया, पता नहीं ज़िंदा है या मर गया"।
लाली उदास हो गया। "मैं तो जी कूड़े का ढेर हूँ, कूड़े के ढेर पर पला और कूड़े का ढेर ही रहा, खाद भी न बन सका"। फिर मुस्कुराकर बोला, "माफ करना जी! मैं ऐसे ही बोलता हूँ"।
नासिरा ने कहा, "कहते जाओ, मैं तुम्हारी बात सुन रही हूँ"।
लाली ने पूछा, "मैं यह कह रहा था कि तुम्हारा पति मियाँ हयात मोहम्मद कैसे अपराधी बन गया? वह तो जी विलायत से बैरिस्टरी पढ़कर आया है और कानून को पूरी तरह जानता है"।
नासिरा ने कोई जवाब नहीं दिया और लाली भी खामोश हो गया। थोड़ी देर बाद लाली की आवाज़ आई, "मियाँ रियाज़ तो मर गया, अब क्या होगा बीवी जी?"।

नासिरा ने जवाब दिया, "वह ज़िंदा ही कब था, उसे तो मरे हुए भी तीन महीने से ऊपर हो गए। उसकी तो कब्र भी मौजूद है"। लाली ने हैरान होकर पूछा, "और वह जो तहखाने में था, वह कौन था?"।
नासिरा ने कहा, "वह रियाज़ ही था"।
"फिर वह कब्र किसकी है?" लाली अब भी हैरान था।
नासिरा बोली, "यह तो हयात ही जानता होगा कि उस कब्र में किसकी लाश दफन है, मगर उसने यही मशहूर कर रखा है कि वह रियाज़ की कब्र है"।
लाली और भी आश्चर्यचकित हो गया, "तो यह चक्कर भी चल रहा था"। नासिरा ने बताया, "हयात ने जब अपने भाई रियाज़ को तहखाने में बंद किया, तो कुछ ही दिनों बाद यह खबर फैला दी कि रियाज़ कार एक्सीडेंट में मर गया। हयात किसी लावारिस की लाश भी ले आया। अस्पताल के मुर्दाघर से रिश्वत देकर मंगवाई थी या किसी कब्र से निकाली थी। लाश ऐसी सड़ी-गली और क्षत-विक्षत थी कि न चेहरा नज़र आता था, न गर्दन। उसमें इतनी सड़ांध और बदबू थी कि मेरा जी मिचला गया। न जाने लाश को गुसल (स्नान) भी दिया या नहीं, रात ही को आनन-फानन में दफन कर दिया गया और कब्र भी बना दी गई"।
लाली ने टिप्पणी की, "पैसे में जी बहुत ताकत है, ज़िंदा को मुर्दा और मुर्दा को ज़िंदा बना सकता है"।
नासिरा ने आगे बताया, "शुरू में तो मैं यही समझी कि मियाँ रियाज़ मर गया, मगर एक दिन ऐसा हुआ कि मैं हयात की तलाश में तहखाने में चली गई। उस समय दरवाज़ा खुला था और दहीवर भी पहरे पर

मौजूद नहीं था। मैं तहखाने के अंदर गई तो क्या देखती हूँ कि रियाज़ ज़िंदा बैठा है। हयात भी वहाँ मौजूद था। वह इतना नाराज़ हुआ कि दहीवर को हंटर से जानवरों की तरह पीटा और मुझे भी मारा"।
लाली ने पूछा, "रियाज़ के बेटे मियाँ नियाज़ मोहम्मद को भी यह बात मालूम है?"।
नासिरा ने कहा, "नहीं, नियाज़ को कुछ नहीं मालूम। वह यही जानता है कि उसका पिता मर गया। हयात ने उसे जो कुछ बताया उसने मान लिया"।
"फिर वह मुकदमा-मुकदमा क्यों चिल्ला रहा है?"।
नासिरा ने जवाब दिया, "जागीर और जायदाद अपने कब्ज़े में लेने के लिए। मुझे तो ऐसा लगता है कि यह सारा मसूबा (योजना) नियाज़ के मामा का है"। नासिरा कुछ देर खामोश बैठी रही और विंडस्क्रीन से सुनसान सड़क को देखती रही। उसके चेहरे पर अचानक झुंझलाहट आ गई और तीखे लहजे में बोली, "यह जागीर सच पूछो तो ऐसी हड्डी है जिसके लिए तीन कुत्ते लड़ रहे थे"।

"एक मर गया, दो अभी बाकी रह गए हैं"।
लाली ने पूछा, "क्या यह सच है कि नियाज़, मियाँ रियाज़ का नहीं बल्कि कर्नल जॉनसन का बेटा है?"।
नासिरा ने बेपरवाही जताते हुए कहा, "मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता, मगर हयात यही कहता है"।
लाली ने कहा, "वे तो यह भी कहते हैं जी कि रियाज़ अपनी घरवाली को कर्नल के पास सोने के लिए भेजता था। मुझे खुद उन्होंने बताया था, मैं गलत नहीं कह रहा"।
नासिरा ने धीरे से कहा, "तुम ठीक ही कह रहे हो। मुझे भी यही बताता है, वह सबसे यही कहता है"।
उसके चेहरे पर गुस्सा छा गया, "रियाज़ भी निर्लज्ज था और हयात भी निर्लज्ज है, दोनों एक जैसे हैं"।
लाली ने हिचकिचाते हुए पूछा, "क्या तुम्हारा पति भी ऐसा ही चक्कर चलाता है? मेरा मतलब है..."।
नासिरा उसकी बात काटकर बोली, "मैं तुम्हारा मतलब समझती हूँ। इसी बात पर मेरा उससे झगड़ा शुरू हुआ। वह चाहता है कि मैं उसके मेहमानों का दिल बहलाऊँ और उनके साथ सोऊँ"। उसकी आवाज़ भर्रा गई और उसने ठंडी सांस ली, "मैं अब तक आठ मेहमानों के साथ सो चुकी हूँ। कल रात वह मुझे नौवें के साथ सुलाना चाहता था। उसे वह राजनीति कहता है और 'बादशाह गिरी' बताता है। जब मैं उसकी इस राजनीति और 'बादशाह गिरी' में मदद करने से इनकार करती हूँ, तो वह मुझे बेरहमी से मारता है, हड्डी-पसली तोड़ देता है और लहूलुहान कर देता है। तुझे किस तरह बताऊँ कि वह कैसे-कैसे ज़ुल्म करता है"। नासिरा की आवाज़ में बहुत दर्द था और वह खामोश हो गई। अंधेरे में लाली उसका चेहरा नहीं देख सका, शायद वह रो रही थी।
लाली भी उदास हो गया और काली सिडान सुनसान सड़क पर दौड़ती रही। वह उसे तसल्ली भी नहीं दे सका और बुत बना खामोश बैठा रहा। काफी समय गुज़र गया।

लाली ने खामोशी से ऊबकर कहा, "बीवी जी, एक बात पूछूँ?"।
नासिरा ने कहा, "पूछ, क्या पूछना चाहता है"।
"क्या नियाज़ को अमेरिका से तुमने बुलाया है?"।
नासिरा ने जवाब दिया, "नहीं, वह खुद आया है। हाँ, मैं यह ज़रूर चाहती हूँ कि जागीर और जायदाद नियाज़ को मिल जाए"।-

"इसलिए कि वह असली वारिस है। जायदाद पर उसका हक बनता है?"
"किसी का हक नहीं बनता और न ही मुझे किसी के हक से कोई दिलचस्पी है।" वह झुँझलाकर बोली। "मैं तो यह चाहती हूँ कि जागीर हयात के पास न रहे। अगर जागीर और ज़मींदारी उसके पास रहेगी, तो वह सारी उम्र अपनी इकलौती बेटी की शादी नहीं करेगा, इस डर से कि जागीर और जायदाद उसके खानदान से बाहर चली जाएगी। वह जागीर कम करने के बजाय बढ़ाना चाहता है। यह बात वह मुझे साफ-साफ बता चुका है। वह जागीर और जायदाद के सिवा किसी से प्यार नहीं करता।" नासिरा ने गहरी साँस भरी। "जब तक यह जागीर और ज़मींदारी है, न वह अपनी बेटी का पिता बन सकता है, न मेरा पति।"
"जायदाद और ज़मींदारी तो जी वह छोड़ेगा नहीं। यह बिल्कुल पक्की बात है।" लाली ने अपनी प्रतिक्रिया दी। "पर बीबी जी, तुम इतनी पढ़ी-लिखी हो, बड़े घर की बेटी हो। तुम्हारे पास किसी चीज़ की कमी नहीं। फिर तुम इसकी परवाह क्यों करती हो? कागज़ लिखवाकर उससे छुटकारा क्यों नहीं पा लेतीं?"
"कैसे छुटकारा पा लूँ? मेरा बाप नहीं मानता। वह खानदानी जागीरदार है। कहता है हमारे खानदान की किसी औरत ने आज तक तलाक नहीं लिया। जिसके साथ एक बार शादी हो गई, सारी ज़िंदगी उसके नाम पर काट दी। अगर मैंने कागज़ लिखवाया तो खानदान की नाक कट जाएगी।" नासिरा हिचकिचाई। "मगर सबसे अहम बात यह है कि मेरी बच्ची मोना का भविष्य खराब हो जाएगा। सब कहेंगे तलाकशुदा की बेटी है।"
"तुम्हारी मोना कितनी उम्र की होगी?"
"अभी तो बहुत छोटी है और बहुत मासूम है। अभी तो वह कुछ भी नहीं जानती। उसे कुछ पता नहीं।"
"जब मैं छोटा सा था, तो सारी बातें सीख गया था। उनका कुछ-कुछ मतलब भी जान गया था।" कहते-कहते लाली यादों के धुंधलके में खो गया। एक बार फिर नशा उस पर हावी हुआ। उसने ठहाका लगाया और झूमकर बोला। "एक बार ऐसा हुआ जी कि मैंने गाँव की एक सहेली (यार-खियार) को आँख मार दी। वह फसल कटने के बाद खेत में पड़ी गेहूँ की बालियाँ चुन रही थी। उसने आँखें निकालकर मुझे घूरा और जमकर पिटाई की। फिर तो जी चाचा ने मुझे ईंटों के भट्ठे पर लगा दिया।

सुबह तड़के काम पर जाता और शाम को घर आता। चिलचिलाती धूप में ईंट पथने वालों के साथ काम करता। बहुत दिनों तक ईंटें ढोता रहा। हाथों में घाव पड़ गए। सिर के बाल ऐसे उड़े कि बिल्कुल गंजा (घूँ-मूँ) हो गया। करता भी क्या, खाने को न मिलता था।"

नासिरा खामोश बैठी रही।
लाली कहता रहा। "मेरा चाचा बेचारा बहुत बूढ़ा था। ऊपर से उसे दमा भी था। पड़ा-पड़ा 'खूँ-खूँ' खाँसता रहता। मेरी छोटी बहन पूरे दस साल की भी न हुई थी कि सबने उसकी शादी कर दी। वह खाती बहुत थी और घर में खाने को नहीं था। शादी के बाद उसे सब कुछ पता चल गया। फटाफट बच्चे पैदा करने लगी। उसने तीन पति किए, पर रोटी को तरसती हुई मर गई।"
"हमारे घराने में ऐसा नहीं होता। हमारा खानदान बहुत ऊँचा है।" नासिरा ने गर्व से गर्दन ऊँची की।
"हम कोट कमालिया के लंगरियाल हैं। तुम्हें पता है लंगरियाल कौन होते हैं?"
"हमें तो जी कुछ पता नहीं।"
"पुराने ज़माने में हमारे पूर्वजों और बुज़ुर्गों के घर के दरवाज़े मोहताज़ों और ज़रूरतमंदों के लिए दिन-रात खुले रहते थे। वे बहुत अमीर होते थे। उनकी हवेलियों में लंगरखाने होते थे। जिसका जी चाहता, लंगर से रोटी खाता। कोई भूखा न जाता। उनके लंगरखाने इतने मशहूर थे कि हमारी बिरादरी का नाम लंगरियाल पड़ गया।" नासिरा कुछ पल खामोश रही। "हयात की जाति का कुछ पता नहीं। खुद को वट्टू कहता है। लेकिन कोई डोगर बताता है, कोई अराईं। डोगरों के बारे में मशहूर है कि वे मवेशी चोर (डिंगर चोर) होते थे और अराईं पहले शाही माली होते थे, अब खुद को मियाँ कहलाते हैं।" उसने नफरत से मुँह बनाया और तीखे लहजे में बोली, "पता नहीं पिताजी ने क्या सोचकर मुझे हयात के पल्ले बाँध दिया।"
लाली उसकी बातें सुनकर बेतकल्लुफी से हँस पड़ा। "यह खानदान और बिरादरी का भी अजीब चक्कर है। बात यह है जी कि अपना तो सिरे से कोई खानदान ही नहीं। मुझे तो ठीक से यह भी पता नहीं कि मेरा बाप कौन था।"
नासिरा ने हिचकते हुए पूछा, "तो क्या तेरी माँ..." उसने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।
"नहीं जी, वह कोई वेश्या (कंजरी-शंजरी) नहीं थी, बहुत नेक औरत थी।" लाली ने तीखे लहजे में कहा। "बुरा तो वह ज़मींदार था जिसकी हवेली में शादी से पहले मेरी माँ काम-काज करती थी। गरीब कामगार (कम्मी) थी। ज़मींदार ने उसे खराब कर दिया। फिर ऐसा हुआ जी कि मेरा नाना अपना गाँव छोड़कर मेरी माँ के साथ गोगेरा के पास एक चक (गाँव) में आकर बस गया। जब उसने मेरी माँ की शादी की, तो मैं उसके पेट में था।" वह खामोश हो गया। नासिरा भी खामोश बैठी रही।

खुली खिड़की से हवा के झोंके आ रहे थे। नशे की तेज़ लहर आई। लाली मुस्कुराकर बोला। "जब मैं जवान हो गया और चोरी-चकारी भी करने लगा, तो मुझे अपनी माँ के बारे में बहुत सी बातों का पता चल गया।"

"मुझे ज़मींदार पर बहुत गुस्सा था। एक रात मैं हत्या के इरादे से उसकी हवेली में घुसा। जैसे ही खिड़की के रास्ते कमरे में गया, क्या देखता हूँ कि वह एक लड़की के साथ बिल्कुल नग्न खड़ा है। वह उसकी बेटी से भी छोटी थी। मैंने चाकू खोलकर दिखाया और कहा कि अभी तेरा काम तमाम (खस्सी) कर दूँगा। वह इतना डरा कि थर-थर काँपने लगा। मुझे हँसी आ गई। मैंने उसे मारने का इरादा छोड़ दिया और उससे पूरे चार हज़ार रुपये लेकर चला आया। वह बहुत मालदार है जी। बड़ा ज़मींदार है। सुना है मलोट का जंजुआ मलिक है। असेंबली का मेंबर भी रह चुका है। अखबारों में उसकी तस्वीरें भी छपती हैं। आज कल वह अपनी ज़मींदारी में बहुत शानदार मस्जिद बनवा रहा है। उसके साथ अनाथालय और मदरसा भी होगा। और मैंने जो थोड़ा-बहुत पढ़ना-लिखना सीखा, वह जेल में सीखा।" लाली ठहाका मारकर हँसा।
नासिरा खामोश बैठी थी। उसकी लंबी-चौड़ी कार तेज़ी से सड़क पर दौड़ती रही और एक मोड़ काटकर पक्की सड़क पर आ गई।
कुछ देर बाद नासिरा ने पूछा, "तुझे कहाँ जाना है?"
"मुझे तो जी कादराबाद स्टेशन जाना है।"
"कादराबाद तो उधर रह गया।" नासिरा ने एक तरफ हाथ उठाकर इशारा किया। "आगे तो मोंटगोमरी शहर है। मगर मैं वहाँ नहीं जाऊँगी। कुछ दूर जाकर नहर आएगी और उसके साथ ही मैं लाल लंबे की ओर मुड़ जाऊँगी। मैं अपनी बहन के घर जाऊँगी।"
"ऐसा है जी तो मुझे यहीं उतार दो। अब तुम्हें अपने खेम का भी डर नहीं रहा।" नासिरा उसकी बात नज़रअंदाज़ करके बोली, "हयात के सिर से बहुत खून बह गया था। पता नहीं अब उसका क्या हाल होगा।"
लाली बेरुखी से बोला, "मर गया होगा।"
नासिरा अचानक उस पर फट पड़ी। "तू बिल्कुल जंगली है और बेरहम भी है।"
लाली उसकी नाराजगी खामोशी से पी गया। कार सड़क पर दौड़ती रही। न नासिरा ने उसे रोका न लाली ने रुकने के लिए कहा। दोनों चुप बैठे थे। कार किसी बस्ती के पास से गुज़र रही थी। पेड़ों के झुंड के पीछे रोशनी टिमटिमा रही थी। कार पलक झपकते ही बस्ती के आगे से गुज़र गई। सड़क के दोनों तरफ पेड़ और हरे-भरे खेत थे। पतझड़ के मारे पेड़ उजड़े-उजड़े नज़र आते थे। फिज़ा धूल भरी थी। चाँदनी धुंधली पड़ गई थी। लाली गहरी सोच में डूबा नज़र आ रहा था। नासिरा ने खामोशी से तंग आकर पूछा,

"क्या सोच रहा है?"
"तुम्हारे ही बारे में सोच रहा था।"
नासिरा ने कुछ हैरानी से कहा, "मेरे बारे में?"
"हाँ।" लाली ने सहजता से कहा। "मैं सोच रहा था जब वह झुका हुआ दोनों हाथों से तुम्हारा गला दबा रहा था। मैं नीचे ज़मीन पर पड़ा था। तुम्हारी साड़ी अलग पड़ी थी। तुम्हारी सुंदर-सुंदर आँखें फटी हुई थीं, बाल बिखरे हुए थे..."

लाली बिल्कुल भूल गया कि वह शादां से नहीं, मियाँ हयात मोहम्मद खान वट्टू की बेगम नासिरा से बात कर रहा है, जो एक खानदानी जागीरदार की बेटी भी थी। लाली नशे की तरंग में कुछ ज़्यादा ही बेतकल्लुफ हो गया। वह बड़ी बेबाकी से कहता रहा, "तुम्हारी दोनों टाँगें नंगी थीं, एकदम नंगी। हरी-हरी रोशनी में..."
नासिरा ने तुरंत ब्रेक लगाया। कार के पहिए सड़क पर तेज़ी से रगड़ खाने की आवाज़ के साथ सन्नाटे में चीख उठे। लाली की बात अधूरी रह गई। कार एक झटके से रुक गई। नासिरा क्रोधित होकर चीखी, "निर्लज्ज! अभी के अभी गाड़ी से नीचे उतर जा। बाहर निकल!"
लाली शर्मिंदा होकर बोला, "इतना नाराज़ क्यों होती हो।"
वह डाँटकर बोली, "मैं कहती हूँ बाहर निकल।" उसने जल्दी से हाथ बढ़ाया और डैशबोर्ड का खाना (बॉक्स) खोलने लगी।

"मुझे पता है तुम्हारे पास भरी हुई पिस्तौल है। पिस्तौल न निकालो, मैं चला जाऊँगा।" लाली ने दरवाज़े के हैंडल पर हाथ रखा, नासिरा की तरफ मुड़ा और ढीठ बनकर मुस्कुराते हुए बोला, "मुझे जी औरतों की नंगी टाँगें देखने का चस्का नहीं है। वह तो मैं दस रुपये खर्च करके भी देख सकता हूँ। सिर्फ टाँगें नहीं, पूरा बदन देख सकता हूँ। मेरे पास जागीर और जायदाद होती तो औरतों को नंगा करके देखता। खुद भी देखता, दूसरों को भी दिखाता।" उसने थोड़ा रुककर कहा। "मैं तो सिर्फ यह कहना चाहता था, तुम्हारा खेम बेरहम भी है और निर्लज्ज भी। मैंने उसके मुँह पर इसलिए थूका था और उसका सिर दीवार से टकराकर इसलिए फोड़ा था कि वह बहुत बड़ा निर्लज्ज है।"
लाली ने कार का दरवाज़ा खोला और नीचे उतर गया।

नासिरा गर्दन मोड़कर उसे गौर से देखती रही, फिर उसने धीरे से कहा।
"ठहर जा।" वह अपना पर्स खोलने लगी।

लाली ने कार का दरवाज़ा धीरे से बंद किया और उसका सहारा लेकर होठों ही होठों में मुस्कुराते हुए बोला: "इसे न खोलो। इसमें 70 रुपये थे, वो मैंने पहले ही निकाल लिए हैं। चिंता न करो। अपना काम चल जाएगा। अब मैं जाता हूँ"।
लाली अलग हटकर खड़ा हो गया। नासिरा ने मुँह से एक शब्द भी न निकाला। कार स्टार्ट की, गियर डाला और झुँझलाकर एक्सीलेटर इस कदर ज़ोर से दबाया कि काली सिडान चीखती हुई तेज़ी से भागी और देखते ही देखते बहुत दूर निकल गई। --204

*****पहला भाग समाप्त *****

शौकत सिद्दीकी
जानगलूस
निगार्ट 98